॥श्री॥ शायनमः॥

अथजरी मकारलि

ख्यते

अथमारा कवी

किस्सा

जानना चाहिये कि र ाग कितने ही प्रकार से होता है एक तो यह कि र ।वेश्याके ये राग होवे और पुरु ष काम देव से उन्म कर इसकी पराक्षी न करके उस्से सम्भोग करे ो कहावत है ज्वानी दिमानी ओ र जब वह भोग क ता है तो कई एक दिन के पी छे यह रोग प्रगट है और पेड़ वा लिंग पर वा अं ड कोषों पर एक फुन्सी हो जाती है उस्में खुजली के संग जलन हो फिर मनुष्य उसे खुजा डालता है जब वो घाव के ाला है तब अपनी मूर्खता से उस पर सेलखडी वा याल लगा देता है जब घाव पैसे के ब रावर हो जाता है लोगो से प्रकट करता है तो वे उस्को हुक्के से पीने दवाई देते हैं उस्से मुह आमयां वा वमन और हाये और कोई स्वा को दूध बताता है यद्यपि इस चि त्सा से कई दिन के लिये आराम -

होजाता है परंतु रोग की ज[illegible] जाती इस्से उचित है कि किसी विद्वान और [illegible]न जर्राह को बुला कर चिकित्सा करावे जर्राह कोभी चाहिये कि प्रथम घाव को देषे [illegible] कितना चौडा है परन्तु ये घाव केवल म[illegible]गाने से अच्छा नहीं होता इसकी इस प्र[illegible] चिकित्सा करे॥

नुस्खमा[illegible]

जमालगोटे की मींगी · [illegible]या सुहागा · मुनक्का इन सबको बराबर ले [illegible]पीस कर एक २ माशे की गोलियां बना[illegible]तु इस गोली के खाने से पहिले ये औष[illegible]िलावे॥

नुस्खमा[illegible]

गुलाब के फूल तीन माशे [illegible]का सान नग · सौं फ छै माशे · सूखी मकोय [illegible]शे · सनाय मक्ई दो माशे इन सब को [illegible] जल में औटा वे जब एक उफान आजाय [illegible]तार कर छानले फिर इस्मे एक तोले गुल[illegible] मिला कर पिला वे पीछे खिचड़ी भोजन क[illegible] फिर चौथे रोज उक्त गोली के दो टूक कर के खावे ऊपर से ग रम जल पिलावे और जब [illegible]लगे तब गरमही जल पिलावे और सायंकाल को [illegible] घृत डाल कर खिचड़ी दही के संग भोजन क[illegible] फिर तीन दिन य द वा पिलावे॥

नुस्खा ठंडाई का

बिहदाना दो माशे· रेशा खतमी ४ माशे मिश्री रत्तो ले· इन सब का लुआब निकाल कर उस्में मिश्री मिलावे प्रथम छै माशे इशब गोल को फांक कर ऊपरसे उस लुआब को पीवे इसी तरह तीन दिन सेवन करे फिर ये गोली खिलावे॥

भिलाये की गोली

अजवायन खुरासानी· अजवायन देशी· अकरकरा गुजराती· छोटी इलायची· ये सब नौ नौ माशे भिलाये सात माशे· काले तिल दो तोले पारा छै माशे· पुराना गुड़ एक तोले इन सब को एकत्र करि तीन दिन खूब घोटे और माशे भर की गोली बनावे और एक गोली नित्य खिलावे और घावों पर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम की विधि

प्रथम गौका घृत एक तोले लेकर खूब धोवे फिर सिंगरफ एक माशे· रस कपूर तीन माशे· मुरदासंग तीन माशे रसोत तीन माशे· गुजराती अकरकरा दो माशे· सफेदा कासगरी तीन माशे· इन सब को महीन पीस कर उक्त घीमें मिलाकर लगावें और देखें कि विरेचक देने से रोगी की क्या दशा है॥

जो रोग कम है तो मरहम लगाना बंद करे

और पूर्वोक्त गोलियां सात दिन तक खिलावे जो आराम होतो दो तीन गोली और खिलावे नहीं तो औषधी को इस प्रकार बदल देवे कि रोगी को विदित न हो ॥

गोली दूसरी

रस कपूर नौ माशे· लोंग फूलदार २१ नग· काली मिरच २१ नग· अजवायन खुरासानी· एक माशे· इन सब को महीन पीस· मलाई में मिला कर नौ गोली बनावे और एक गोली नित्य खवावे और खट्टी तथा वादी की वस्तुओं से परहेज करना चाहिये ॥

और कभी ऐसा भी होता है कि ये रोग होने वाला था कि अचानक वाल लेते समय उस्तरा लग कर घाव हो गया और उस्तरे का घाव समझ कर औषधियों की जब कुछ आराम न हुआ तब लोगों से प्रगट किया और उन मूर्खों नें धोया हुआ घृत आदि सुनी सुनाई दवा व तादीं तब उस्से और भी हानि हुई फिर उस की दवाई चतुर जर्राह से करावे और जर्राह को भी उचित है कि प्रथम रोगी के घाव को देखे· कि किनारे उस घाव के मोटे हैं और घाव के भीतर दाने है वा नहीं और घाव कितना चौड़ा है और रोगी की प्रकृति को देखे· जो उसे वि

रेचक लेने की शक्ती होतो देवे नहीं तो यह औषधि खवाना चाहिये ॥

गोली

नीला थोथा ढाई माशे· काली हर्ड डेढ माशे· सफेद कत्था दो तोले· सुपारी सात माशे· इन सब को महीन पीस कर दो सेर नीबू के रस में खरल करे फिर जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे और दोनों समय एक एक गोली खिलावे खटाई और बादी करने वाली चीज से परहेज करे

दूसरी दवा

अजवायन खुरासानी सात माशे काली मिरच सवा माशे काले तिल छै माशे· जमाल गोटा तीन माशे· पुराना गुड डेढ तोले इन सब को तीन दिन तक घोट कर जंगली बेर के प्रमाण गोलियां बनावे और एक गोली दही की मलाई में लपेट कर खिलावे और मूंग की दाल· मीठा कद्दू न खिलावे इस औषधि के खाने से एक दो दस्त हुआ करेंगे और जो वमन भी हो जाय तो कुछ डर नहीं है क्यों कि ये रोग बिना मवाद निकले नहीं दूर हो सक्ता प्राय देखा है कि इस रोग में सिर से पांव तक घाव हो जाते हैं । इस्से उचित है कि प्रति दिन मल्हम लगाया जावे जो एक दिन भी न लगे गा तो खुरंड जम जायगा और-

जहां यह रोगी बैठता है वहां कीच हो जाती है और सफेद पानी सा निकलता है अथवा सुरखी और जरदी लिये दुर्गंधि युक्त होता है और हाथ-पावों की उंगली यों में भी घाव हो जाते हैं इन-सब शरीर के घावों के वास्ते यह औषधि करनी चाहिये॥

मरहम

माखन आध पाव· नीला थोथा· सफेदा छै माशे· मुरदासंग छै माशे· इन दोनों दवाओं को पीस कर-घृत में मिला कर घावों पर लगावें और खाने को ये दवा देवे॥

गोली

छोटी इलायची सफेद कत्था· तुलसी के पत्ते हरे ए-क एक तोले मुर्दासंग छै माशे· पुराना गुड डेढ तो-ल इन सब को कूट पीस कर गोलियां बनावे औ-र नित्य प्रति सवेरे ही गोली एक खिलावे खटाई और बादी से परहेज करे और किसी वस्तु से पर-हेज नहीं है और ये रोग शीघ्र अच्छा नहीं होता दवा को सात दिन खिला कर देखे जो कुछ आ-राम हो तो इसी दवा को खिलाते रहें और जो इ-स्से आराम न हो तो ये गोली खिलावे॥

गोली

सिलाजीत·काली मिरच·काबली हड़·सूखे आमले·

रस कपूर· सफेदकथ्थाचिर मिठी· गुलबनफ्शा· सफेदक
त्था· ये दवा चार२ चार माशे ले इन सब को कूट पीस
कर रोगन गुल में खरल करे फिर इस की चने प्रमा
ण गोली बनावे और एक गोली आम के अचार
में लपेट कर प्रात काल खिलावे और इसी रीति
से एक गोली सायं काल को भी खिलावे मसूर की
दाल और लाल मिर्च से परहेज करे इस दवाई से
सब शरीर अच्छा हो जायगा परंतु उंगुली अच्छी
न होंगी और जो औषधि प्रकृति के माफिक गुण
कर जाय तो अंगुली भी सीधी हो जाय गी मैंने
बहुत पुस्तकों में देखा है और हमारे मित्र डा
क्टर साहब भी यह कहा करते थे कि इस रोग
वाले मनुष्य बहुत भले चंगे देखे परंतु किसी न
किसी जगह शरीर में शेष रह ही जाता है और
हमने भी बहुत से इस रोग वाले मनुष्यों का
इलाज किया परंतु यथोचित अच्छे होते न दे
खा और इस रोग में अंतर पश्चात् में बहुत से रो
ग उत्पन्न होते हैं एक तो यह कि मनुष्य कुष्टी-
हो जाता है दूसरे यह कि सब सरीर पर सफेद दा
ग हो जाते हैं तीसरे नाक गल कर गिर जाती है
चौथे गठिया हो जाती है और हम को ऐसा भी
मालूम होता है कि ये रोग पहिले जमाने में नहीं
था क्योंकि हकीम लोग तथा वैद्य लोग इस की-

चिकित्सा नहीं करते और करते भी हैं तो आराम नहीं होता बड़े आश्चर्य की बात है कि बड़े बड़े हकीम और वैद्य हो गये परंतु किसीने इस रोग के वास्ते ठीक औषधि नहीं लिखी और बहुत करिके ये रोग जरीहों की दवाईयों से जाता रहता है और एक कारण यह है कि ये रोग महा गरम है ठंडी दवाओं से अच्छा नहीं होता न जाने ये रोग क्या बला है और हमारे मित्र डाक्टर साहब भी कहा करते थे कि ये रोग कफ से होता होता है क्योंकि प्रत्यक्ष है कि रोगी के शरीर मे छोटी छोटी फुनसियां रतूबत दार जरदी लियें होती हैं और बहुत से मनुष्यों का यह रोग औषधियों के सेवन से जाता रहा और दो चार वर्ष के पीछे शरीर के निर्बल हो जाने से फिर हो गया और घाव भी फिर हरे हो आये· जब दवाई करी तो फिर जाता रहा इस रोग के वास्ते ये गोली बहुत उत्तम है

गोली

भुना नीला थोथा· मुरदा संग· सफेदा कासगरी· सफेद कत्था· ये सब चार चार माशे ले इन सबको नीबू के रसमें खरल करके लोहे की कढाई में डाल कर नीम के सोटे से खूब घोटे फिर इस को चने प्रमाण गोलियां बनाकर दोनों समय एक एक गोली खिलावे खटाई और गर्मी की-

चीजों से पस्हेज कराना चाहिये ओर जो इस्से भी आराम न होयतो ऐसी औषधि देवे कि जिस्से थोड़ा सा मुख आजावे जिस्से सब सरीर के जोड़ों की पीड़ा दूर हो जावे नहीं तो अधिक मुह आने की औषधि दें और इन औषधियों से घाव को भफारा देवे॥

नुखसा बफारे का

नरसल की जड़ · राम सर · सोये के बीज · खुरासानी अजवायन · मावन · नर्मो के पते · शहतूत के पते · इन सब को बराबर ले पानी में औटाकर घावों को बफारा दे और राति को तेल का मर्दन करे॥

अथवा भेड का दूध · गौ का दूध · चार चार तोले शोरंजान कडवा तीन माशे · अफीम तीन माशे रोगन गुल आध पाव · इन सब को मिला कर गरम करके मर्दन करे॥

बफारा दूसरा

जो इन्द्री घावों के जोर से तथा इन्द्री पर पट्टी बांधने से इन्द्री सूज जाय तो उस्के वास्ते ये बफारा दे छे माशे त्रिफला पानी में औटा कर इन्द्री को बफारा दे और इसी तरह एक दिन में तीन बार करें तो एक ही दिन में लिंगेन्द्री की समस्त सूजन जाय और पहिले की तुल्य हो॥

ओर जो मुख आजाय तो उसकी ये दवा करे॥

तुख़सा कुल्लों का

कचनार की छाल· महुए की छाल· गोंदनी की छाल सब एक एक छटांक चमेली के पते एक तोले सफेद कत्था एक माशे· सब को पानी में औटा कर कुल्ले करे॥

अथवा

चमेली के पते छटांक भर· कचनार की छाल छटांक भर इन दोनों को पानी में औटा कर दोनों समय कुल्ले करे॥

अथवा

अकरकरा· माजूफल· सिंगरफ· सुहागा कच्चा· ये चारों दवा पांच पांच माशे ले इन सब को कूट कर पानी में मिला कर चार हिस्से करे फिर सवरी राति में पहर पहर के अरसे से हुक्के में रख कर तमाखू की तरह पीना और सवरी राति जागते रहना· फिर सवेरे ही सर्द पानी से स्नान कर फिर खाने के वास्ते मुसलमान को तो मुर्ग का सोरवा और गेहूं की रोटी खिलावे और हिन्दू को मूंग की दाल रोटी खिलाना· चाहिये फिर भोजन करके सो रहे इस इलाज के करने से गरमी बहुत मालूम होती है और दस्त तथा उलटी भी होती है परन्तु इस इलाज·

के करने से एक ही दफे में घाव तक भी खुश्क हो जाते हैं॥

अथवा

सिंगरफ· माजूफल· अकरकरा· नागोरी असगंध· श्याह मूसली· सफेद मूसली· गोषरू छोटे· इन सव का चूर्ण करिके जंगली वेर के कोयले पर डाल कर तमाम वदन को धूनी देना इसी तरह सात दिन सेवन करने से ये रोग जड से जाता रहता है॥

अथवा

तूतिया भुना· वडी हर्ड का वक्कल· छोटी हर्ड ये सव दवा एक एक माशे· पीली कोडी चार माशे· इन सव को पीस छान कर नीवू के अर्क में तीन दिन घोटे फिर इस्की चने प्रमाण गोली वनावे फिर एक गोली नित्य खाय इसके ऊपर किसी चीज का परहेज नहीं है

अथवा

रस कपूर· चोवचीनी· कवावची· ये तीनों छे छे माशे· तिवरसा गुड दो तोले इन सव को दही के तोड में खरल करे और झाडी वेर के प्रमाण गोली वना कर रोगी को दोनों समय एक एक गोली दही के संग लपेट कर खिलाना और खाने को दोनों समय·

कल्थासफेद· सम्मलखार· इलायचीकेवीज· ख
डियामिट्टी ये सब बराबर गुलाब जल में पीस कर
ज्वार के बराबर गोली बनावे और एक गोली नि
त्य बारह दिन तक खाय और जो अजीर्ण होयतो
एक गोली बीच में देकर खाय और मूंग की दाल
गेहूं की रोटी खाय परंतु घी ज्यादा खाय और-
गरमी वाले की संधी संधी में पीडा होय तो ये द
वा करनी योग्य है॥

नुसखा

पारा· खुरासानी अजमायन· भिलावे की मींगी·
अजमोद असपंद ये सब दवा तीन तीन माशे·
गुड २८ माशे· सब को कूट पीस कर झर बेरी के
बेर प्रमाण गोली बनाय एक एक गोली दोनों
वक्त खाय और इस गोली को पानी से निगल
जाय दांत न लगने देय खाने को लाल मिर्च
खटाई बादी करने वाली वस्तु न खाय॥

अथवा

पारा· अजवायन· मूसलीस्याह· ये दवा छै छै मा
शे भिलाये तीन माशे· गुड चार तोला· इन सब
को कूटपीसकर २२गोलीबनावे और एक गोली नित्य
दहीके साथ खाय तो ग्यारह दिन में सब रोग जाय औ
र दूध चावल का पथ्य खाने को देतो बहुत शीघ्र आ
राम होय॥

अथवा

मदार की लकड़ी को कोयला पीस कर २॥ माशे· और कच्ची खांड २॥ माशे· इन दोनों को एकत्र करि इस्में चौदह माशे घी मिलाय सात-रोज खाय और मांस का भोजन करे तो सात दिन में आराम होय॥

अथवा

बडी हर्ड की छाल· छोटी हर्ड की छाल तूतिया· पीली कौडी की राख ये सब बरावर ले फिर नीबू का रस डाल कर कढाई में घोटे से १६ पहर घोटे फिर इस्की काली मिर्च के प्रमाण गोली बनावे और एक गोली नित्य २५ दिन खाय और थोडी सी गोली घिस कर कागज पर लगाय घावों पर लगावे और जो मुख आजाय तो-कचनार की छाल के काढे के कुल्ले करे॥

अथवा

तुलसी के पत्ते हरे एक तोला· तूतिया हरा १७ माशे· इन को पीस कर बेर के बराबर गोली बनाय एक गोली गरम पानी के संग नित्य खाय और मूंग की दाल की खिचडी विना घीके-खाया करे॥

अथवा

कचनारकी छाल·आध पाव· इन्द्रायनकी जड·

आधपाव· बबूलकी फली आध पाव- छोटी कटाई जड पते समेत आध पाव· पुराना गुड आधपाव· इन सब का तीन सेर पानी में काढा करै जब चौथाई जल रहे तब छान कर सीसे में भर राखे फिर इस में से अनुमान माफिक सात दिन पीवे तो निश्चे आराम होय· और इस्में परहेज कुछ नहीं है ॥

अथवा

सिरस की छाल सवा सेर· बबूल की छाल १। सेर· नीम की छाल सवा सेर· इन सब का सात सेर पानी में काढा करे जब एक सेर जल बाकी रहे तब छान कर सीसे में भर ले फिर इस्में से आधपाव रोज पीवे और खाने को चने की रोटी खाय तो पुरानी आत शक भी जाय ॥

अथवा

जिस कपडे को रज स्वला स्त्री योनि में रखती है उस कपड को रुधिर समेत जला कर उस की राख ले और उसी की बराबर गुड मिला कर बेर के प्रमाण गोलीयां बना कर एक गोली- नित्य खाय और अलोना भात रोटी भोजन करे तो आत शक जाय॥

अथवा

सिंगरफ· अकरकरा· नीमका गोंद· माजूफल· सुहा

गा प्रत्येक २५ माशे इन को पीस सात पुड़िया बनाले एक पुड़िया चिलम में रख बेरी की आग से पिये तो आराम होय और इस्से वमन हो जाय तो कुछ डर नही दिन भर में तीन दफे पीवे औ २ इस के गुल को पीस कर घाव पर बुरके खाने को मोहन भोग मीठा खाय और जो मुह आजावे तो चमेली के पत्तों का काढा करके कुल्ले करे

अथवा

सिंगरफ दो माशे· अफीम दो माशे पारा दो माशे· अजवायन पांच माशे भिलाये सात माशे· पुराना गुड पांच माशे· पहिले पारे और सिंगरफ को अदरक के रस में दो दिन खरल करे फिर सब दवा बारीक पीस कर उस्में मिलावे और भिलाये की टोपी दूर करदे फिर बेरके बराबर गोली बनाले और सात दिन तक एक गोली नित्य खाय और गुड शक्कर तेल लाल मिर्च खटाई बादी करने वाली वस्तु इन से परहेज करे॥

दैव योग से जो यह उपदंश का रोग इन औषधियों से भी न अच्छा हो तो जानले कि यह रोग दूर न होगा चिकित्सा वंद करदे और हकीमों ने भी इस के इलाज कमाल लिखे है और हमने बहुत सी खोज

नाकमी कैं उमदा उमदा नुकसे इसमें लिखे हैं और इस रोग में सबरे शरीर में छोटी छोटी फुनसियां सी तत्त के सहश होजाती हैं उन के वास्ते ये दवा उत्तम है

दवा

सिंगरफ तीन माशे· रसकपूर छै माशे· अकरकरा एक तोला· कत्था एक तोला· छोटी इलायची एक तोला· इन सब को पान के रस में मिलाकर चने के प्रमाण गोलियां बनावे और सवेरेही एक गोली नित्य खाया करे और चने की रोटी घी· और दही भोजन करावे इक्कीस दिन तक सेवन करने से समस्त रोग की निश्चे शांति होती है॥

अथवा

रस कपूर· सिंगरफ· लोंग· सुहागा· ये सब एक एक तोले ले· इन सब को महीन कर सात पुड़िया बनावे· फिर सवेरेही एक पुड़िया दही की मलाई में लपेट कर खिलावे दूध चावल का भोजन करावे और सब चीजों का परहेज करना चाहिये॥

और जो किसी मनुष्य के शरीर में काले वा नीले दाग पड़ गये होंय तो तीन दिन खिचड़ी खिलाकर पे जुल्लाब दे॥

नुसखा

काला दाना नौ माशे आधा भुना आधा कच्चा कूट कर बराबर की शकर मिला कर तीन पुड़िया बनावे और सवेरे ही एक पुड़िया गरम जल से खिलावे और प्यास लगे तब गरम जल पिलावे और जो किसी के बार पार छिद्र हो गया हो तो यह विरेचक देवे॥

नुसखा विरेचक

पिस्ते की मींगी· बादाम की मींगी· चिलगोजे की मींगी· पुराना खोपरा· मखाने की मींगी· पुरानी दाख· जमाल गोटे की मींगी· इन सब को बराबर ले जल में पीस कर जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे· और गोली के देने से पहिले तीन दिन तक अरहर की दाल और चावलों की खिचड़ी खिलावे फिर चौथे रोज दो गोली मलाई में लपेट कर खवादे· और ऊपर से गरम जल पिलावे फिर दूसरे दिन ये ठंडाई दे॥

नुसखा ठंडाई का

कोह दाने दो माशे· रेसा खतमी छै माशे· ईसबगोल छै माशे· मिश्री एक तोले इन सब को रात्रि को पानी में भिगो दे फिर प्रातःकाल मल छान कर पिलावे॥

और पीछे ये दवा देवे॥

गोली

कर पिलावे॥

और जुल्लाव के पीछे ये दवा दे

गोली

मुरदासंग एक तोले गेरू डेढ तोले सात वर्ष का पुराना गुड इन सब को पीस कर जंगली बेर के बराबर गोली बना कर एक गोली मलाई में लपेट कर सवेरे ही खाय खटाई और बादी से परहेज करे और जो आतशक वाले रोगी को किसी ने सिंगरफ बहुत खवाया होय इस कारण करि के इसका सरीर बिगड गया होय तो ये दवा देना योग्य है

दवा

कुटकी कडवी एक तोला आम की बिजली दो तोले। जमाल गोटा तीन तोले। खीरा ककडी के बीज दो तोले। सफेद मिश्री तीन तोले सब को महीन पीस छान पुराने गुड में मिला कर चार पहर कूटे फिर जंगली बेर के प्रमाण गोली बना कर खवावे और ऊपर से ताजा पानी पिलावे जो दस्त होजाय तो उत्तम है नहीं तो पहिले तीन दिन ये मुंजिस पिलावे॥

मुंजिस

हरीसोफ एक तोले। मूरची मकोय एक तोले। मुनका १५ नग खतमी एक तोले खुब्बाजी के बीज।

२तोले गुलकंद दो तोले इन दवाओं को रात्रि को जल में भिगो दे सवेरे ही औटा कर पिलावे और खिचड़ी खाय फिर चौथे दिन यह जुलाब देवे

दवा जुलाब की

गुलाब के फूल दो तोले· खतमी के बीज एक तोले ग़ारी क़ून छै माशे· सफेद निसोत छै माशे ख़रबूज़े के बीज तीन तोले · रालक़्क़ा एक तोले सोंठ छै माशे· करतम के बीज दो तोले· सकमूनिया छै माशे· सूखे आमले एक तोले · सनाय दो तोले बिस्फायज अर्थात् कंकाली एक तोला काबली हड़ एक तोले· इन सब को पीस छान कर पानी मिला कर जंगली बेर के समान गोली बनावे फिर एक गोली सवेरे ही खवावे- फिर दो पहर पीछे मूंग का घाट पिलावे और सायंकाल को मूंग की दाल की खिचड़ी खवावे इसी प्रकार से तीन जुलाब देवे जो इसी जुलाब के देने से आराम होजाय तो उत्तम है नहीं तो यह अर्क पिलावे॥

अर्क की विधि

सोंफ पाव सेर· सूखी मकोय पाव सेर· काबली हड़· छोटी हड़· मनाय मकई· पथरा· वाय विडंग पित पापड़ा· चिरायता· सिर फोका· जीरा· ब्रह्मदंडी· नकछिकनी सब पाव पाव सेर पुरानी सुपारी

बीज· जामन के बीज· बबूर की फली ·मुंडी· कच नार की छाल· ये सब ओषधि आध आध सेर अ मल तास की फली का छिलका महदी के पत्ते लाल चंदन· झाऊ के पत्ते· ये सब पाव पाव सेर इन सब को जो कुट करिके दरयाव के जलमें बा रह पहर भिगोवे फिर इस का आराब खींचे फि र पांच तोले अर्क में एक तोले शहत मिला कर पीवे चालीस दिन सेवन करने से चार वर्ष का बिगड़ा हुआ शरीर अच्छा होगा और जो इस सेभी आराम न होयतो हार के अंत में ये दवा करनी चाहिये॥

नुसखा

एक बड़ा मेंडका और बकरी का मांस दोनो को इकठ्ठा पकाकर खिलावे परंतु मुसलमानों को ऐसी दवाई खिलाना नहीं है और न हिन्दु ओंको· परंतु काया रखे धर्म है और जो किसी स्त्री के ये रोग हो कर जाता रहा हो और उसे ग र्भ रह गया हो और उस काल में रोग फिर उलट आवे और ऐसी चिकित्सा करनी हो कि गर्भ भी न गिरने पावे और रोग भी जाता रहे तो ये दवा देनी चाहिये॥

दवा

मुर्दासंग· गेरू· चने एक एक तोले· अमल दो तोले

उनको महीन पीस कर वारह वर्ष के पुराने गुड़ में गोली बनावे और एक गोली मलाई में लपेट कर नित्य खवावे जो पर गोली गरमी ज्यादा करे तो आधी गोली खिलावे तो सात दिन में रोग जाता रहे गा और जो इस गोली से आराम न होवे तो ये औषधि करनी चाहिये

नुसखा

कंघी के पत्ते दश तोले सिंगरफ तीन माशे इन दोनो को महीन पीस कर तीन माशे की गोली बनावे फिर एक गोली चिलम में रख कर मिट्टी के हुक्के को ताजा करके पिलावे और फिर दूसरे दिन हुक्के को ताजा न करे पहिले दिन का पानी रहने दे केवल नेचे को ही भिगा ले इसी प्रकार से सात दिन करे और जो चाहे सो खवावे रोग मिट जायगा॥

और जब वालक उत्पन्न हो चुके तो फिर स्त्री की यथोचित चिकित्सा जैसी कि आतशक के रोगी मरदों के वास्ते वर्णन करी गई है सोई स्त्री की करनी और जो वह वालक भी पेट में से उपदंश रोग युक्त आया होतो वह भी अपनी माता के दूध पीने से अच्छा हो जाय गा क्यों कि जो औषधि उस की माता की दी नी जायगी उस का असर दूध के द्वारा वालक

की माता को दोनों जायगी उस का असर दूध के द्वारा बालक में भी प्राप्त होगा और जो दैव योग से आराम नहो तो ये दवा दें॥

दवा बालकों की

कटेरी दो माशे वाय बिडंग दो माशे दाषतीन माशे इन तीनों को पीस कर आध सेर जलमें औटावे जब दो तोले रहि जाय तब किसी काच के बरतन में रख छोड़े फिर इस मेंसे एक रत्ती लेकर उस्की माता के दूध में मिला कर पिलावे परमेश्वर की कृपा से आराम होगा ये रोग तीन पीढ़ी तक सताता है

इति श्री जर्राही प्रकार नाम ग्रंथे
पंडित रंगीलाल संग्रहीते
आतशक चिकित्सा
या सम्पूर्णम्

अथ सुजाक की चिकित्सा

ये रोग तीन प्रकार से होता है एक तो आतशक से दूसरा स्वप्न में स्खलित होने से तीसरा वेश्या के संग से इस प्रकार से ये रोग होता है और जब ये रोग पैदा होता है तब आठ दिन तो बहुत ही दर्द होता है फिर दर्द कम हो जाता है॥

स्वप्न में वीर्य निकलने के सुजाक का यत्न

जो किसी मनुष्य को स्वप्न में काम विलास प्राप्ति हो और वीर्य्य स्खलित होजाय उस समय सोते से आंख खुलजाय तो वीर्य निकलने से रुकजाता है और सुजाक रोग को उत्पन्न करता है जिस मनुष्य को इस प्रकार से सुजाक हुआ हो उस्को ये दवा देनी चाहिये॥

दवा

दो तोले अलसी को रात्रि को आध सेर जल में भिगो दे और सवेरे ही उसका लुआब उठा कर छान कर एक तोला कच्ची खांड मिला कर पीवे और खटाई लाल मिर्च का परेज करे॥

अथवा

सोरा भुना हुआ तीन तोले ग्वार के पाठे का गूदा छै

तोले दो तोले गूदे में एक तोले सोरा मिला कर प्रात काल खाय तो तीन दिन के खाने से पुरानी सो जाक भी जाती रहे ये दवा सब तरह की सोजाक को फायदा करती है परंतु खाने में लाल मिर्च नोन उरद की दाल का परेज है

अथवा

त्रिफला डेढ तोले लेकर राति को सेर भर पानी में जो कुट करके भिगोदे फिर दूसरे दिन प्रात काल इसे छान कर इस्में नीला थोथा तीन माशे महीन पीस कर मिलावे फिर इस का तीन दिन तक दिन में तीन दफे पिच कारी लगावे तो बहुत जलदी फायदा होगा॥

अथवा

काहू· गोखरू· खीरा के बीज· भी फली· ये सब दवा छदाम छदाम भर ले सोंफ दमडी भरले इन सब को पानी में पीस ठंडाई बनाले परंतु जल दो सेर जल दो सेर से कम न लें जितनी दफे प्यास लगे इसे ही पीवे इसी तरह सात दिन सेवन करे तो सुजाक आदि सब रोग इन्द्री के जाय- निमक मिर्च खटाई का परहेज करे॥

अथ वेश्या प्रसंग के उत्पन्न सुजाक का यत्न

ये सोजाक इस प्रकार से होता है कि पहले किसी

वेश्या के पास रहे तो उस समय ये नहीं जाना जाता कि इ सके सोजाक है जब लिंग योनि में पहुंचता है तो ये मा लूम होता है कि जैसे भूभल में भुरस जाता है तो म नुष्य उसी समय उस्से अलग हो जाय तो उत्तम है न हीं तो दो तीन दिन के पीछे मूत्र नहीं उतरता और बड़ी कठिनता तथा पीड़ा से बूंद बूंद आता है फि र पीव निकलने लगती है जो पीव की रंगत स फेद जरदी मिली हो तो ये दवा दे॥

नुसखा सोजाक

सिरस के बीज· विनोले की मींगी· बकायन के बीज की मींगी· ये तीनो दवा एक एक तोले ले कर बारीक पीसे· और बरगद के दूध में मिला कर जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे और ए क गोली नित्य प्रात समय खाकर ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीवे खट्टी और बातल वस्तुओं से परहेज करना [illegible]ये॥

और जो पीव की रंगत सुरखी लिये होय तो यह औषधि दे॥

अथवा

कबाबचीनी· दालचीनी· गुलाब के फूल सफेद मूशली· रूसगंध नागोरी· सेल खड़ी ये समस्त दवा छै छै मासे लेना चाहिये- फिर इन सबको महीन पीस कर एक

तोले की मात्रा पाव भर गौ के दूध के साथ खावे तो और खटाई वादी लाल मिर्च इन का परहेज करे और इक्कीस दिन इस दवा का सेवन करे तो यह रोग अवस्य जाता रहेगा॥

और एक सुजाक इस प्रकार से होता है कि थोडे से अरसे में मनुष्य स्त्री से तीन चार वार संभोग करै और हर वार मूत्र करिके सो रहे और व्यर्थ स्त्री से लिपटा रहे उस समय वीर्य की थोडी सी बूंद लिंग के छिद्र में जम जाती है और उस्में मदिरा के सहश गुण है कि सवेरे तक घाव कर देती है यह अवस्था तो बुद्धि मानों की है और बाजे कैसे मूर्ख होते हैं कि थोडे कालमें स्त्री से तीन चार दफे संभोग करिके भी मूत्र नहीं करते और चिपटे ही जाते हैं और फिर कहते हैं कि हम को सोजाक होगया है और वे लोग अपनी मूर्खता से प्रकट नहीं करते और सोजाकका नाम बदनाम करते है ऐसे सोजाक के लिये ये दवा उत्तम है

दवा पिच कारी की

नीला थोथा· पीली कौडी· विलायती नील ये सब दो दो तोले ले इन को महीन पीस रक्खे फिर इस्मे से दो माशे आध सेर जल में मिला कर खूब हलावे फिर लिंगके छिद्र मे पिच कारी देवे—

परंतु जहांतक हो सके पिचकारी देना योग्य नहीं है क्यों कि इससे कई एक हानि होती हैं एक तो यह कि अंड कोषों में पानी उतर आता है दूसरे यह कि विंदु कुशाद हो जाता है अर्थात् लिंग का छिद्र चौड़ा हो जाता है इस सबब से जहांतक हो सके पिचकारी न दें॥

दवा

बतीरा एक तोला· लालमावाने एक तोला· इन दोनों को बारीक पीस कर इस्में बराबर की खांड मिला कर चार माशे तथा छे माशे की फंकी ले ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीवे

और जो मनुष्य वेश्या के पास इस रीत से रहे कि संभोग से पहिले आलिंगन करे और जब विषय करे तब पहिले मूत्र करके उससे संभोग करे तो उस मनुष्य के कभी ये सुज़ाक रोग नहीं होता ॥

और जो दैव योग से होभी जाय तो जानले कि इस वेश्या ही का सुजाक था ऐसे सुजाक वाले को ये दवा दे॥

दवा इन्द्री जुलाव की

शीतल चीनी· कलमी शोरा· सफेद जीरा· छोटी इलायची ये सब दवा एक एक तोले इन सब को पीस छान कर रक्खे फिर इस्में से छे माशे प्रात काल

खाकर ऊपर से सेर भर गौ का दूध पीवे तो दिन भर मू
त्र आवेगा और जब प्यास लगे तब दूध की लस्सी
पीवे और सायं काल के समय धोवा मूंग की दाल
और चांवल भोजन करे और दूसरे दिन ये दवा खा
ने को देवे॥

दवा

खार खश्क· खीरा के बीज· मुंडी· ये दवा छै छै
माशे लेकर रात्रि के समय पानी में भिगोदे
फिर प्रात काल मल छान कर पीवे और दही
भात का भोजन करे और जो इस दवा से आ
राम न होय तो फिर उसको यह औषधि -
देनी चाहिये॥

दवा

कतीरा· गेरू· सेलखड़ी· शीतल चीनी· ये स
ब दवा छै छै माशे ले और मिश्री सफेद दोनो
ले ले इन सब को कूट छान कर छै छै माशे की
मात्रा गौ के पाव भर दूध के संग खाय तो फाय
दा बहुत जलदी होगा
और ये रोग रज स्वला स्त्री से सम्भोग करने से
भी हो जाता है ऐसे रोगी को ये दवा दे

दवा

बीह दाना तीन माशे ले कर रात को जल में भि
गोदे प्रात समय उसका लुआब निकाल कर -

उस्में सवा सेर दूध मिलावे फिर सेल खड़ी और ई शाव गोल की भुसी छै छै माशे ले कर पहिलें फा क फिर ऊपर उस लुआब को पीले और खाने को मूंग की दाल रोटी खाय॥

और एक सोजाक इस प्रकार से भी होता है कि मनुष्य उस वेश्या से संग करे कि जिसने बाल क जना हो उस्में दो कारण हैं एक तो यह कि उन दिनों में वह गरम वस्तु बहुत खाती है और दूसरा यह कि वह बालक को दूध नहीं पिलाती है व सबब दूध की गरमी और गरम वस्तुओं की गरमी और शरीर का बुखार ये उस मनुष्य को हा नि पहुंचा कर सोजाक रोग को पैदा करता है इस रोग वाले को ये दवा है॥

दवा

बालंगू के बीज· बीहदाना· खीरे ककड़ी के बीज कुलफा के बीज· कासनी के बीज· हरी सोंफ सफेद मिस्री ए सब दवा छै छै माशे ले सब को पीस छान कर चार माशे नित्य खाया करे और इस के ऊपर यथोचित गौ का दूध पीवे और जो इस औषधि से आराम न होय तो यह औषधि देना चाहिये॥

दवा

गौ के बछड़े का सींग पुरानी रुई में लपेट कर-

बत्ती बनावे और कोरे दीपक में रख कर उसमें रेंडी का तेल भरदेवे फिर उसे जलादे और उसके ऊपर एक कच्ची मिट्टी का पात्र रख कर काजल पाडले फिर उस काजल को दोनों वक्त आंखों में लगाया करे खटाई और वादी से परेज करे॥

नुकसा सब प्रकार की सुजाक का

कुलफा के बीज· पोस्त के बीज· सफेद काकडी के बीजों की मींगी· नर बूज के बीजों की मीगी· ये सब पंद्रह पंद्रह माशे ले· और छोटा गोपरू· बबूल का गोंद· कतीरा· ये छै छै माशे ले इन सब को ईशब गोल के रस में पीस कर तीन-माशे की गोली बनाले· फिर एक गोली नित्य ग्यारह दिन तक सेवन करे तो सब प्रकार की सोज़ाक जाय॥

अथवा

पथिया घांसे के छोटे पेड़ को जला कर उसकी राख-में कतीरा का पानी मिला कर चने के बराबर गोली बनाले और गुल खैरा को रात्रि को भिगोदे सवेरे ही मल कर छान ले फिर पहिलें उस गोली को खा कर ऊपर से इस रस को पीवे तो सब प्रकार की सोजाक जाय॥

अथवा

हलदी और आंमले दोनों बराबर ले चूर्ण करे इसकी बराबर खांड मिला कर एक तोला नित्य पानी के साथ फांके तो आठ दिन में सोजाक जाय

अथवा

सफेद राल को पीस कर उसमें बराबर की मिश्री मिला कर नौ माशे नित्य खाय तो सोजाक जाय और पीव निकलना बंद होय

अथवा

ढाक की कौंपल· सूखे ढाक का गोंद· ढाक की छाल· ढाक के फूल· इन सब को कूट छान कर बराबर की खांड मिला कर इसमें से ७॥ माशे· कच्चे दूध के साथ खाय तो सब प्रकार की सोजाक और पीव निकलना बंद होय·

अथवा

महदी के पत्ते आमले· जीरा सफेद· धनियां गोखरू· ये सब औषधि एक एक तोले लेकर जव कुट करे फिर इस्मे से एक तोले रात्रि को पानी में भिगोदे प्रात काल मल छान के और तीन माशे कतीरा पीस कर पीछे इस्में एक तोला खांड मिला कर पीवे दिन ७ तो सोजाक जाक

नुखसा

धांत्वा हूली का काढा कर पीये तो सो जाक जाय

अथवा

कलंगा के बीज ६ माशे ले कर आध सेर दूध में भिगो कर राति को ओस में धर राखे फिर प्रातकाल छान कर उसमें थोडी खांड मिला कर पिये-परंतु कलंगा के बीजों को पीस कर भिजो वे तो सब प्रकार की सोजाक जाय

अथवा

बबूल की कोंपल गोखरू एक एक तोला लेकर इन का रस निकाल कर थोडा बूरा मिला कर पीवे तो सब प्रकार की सोजाक जाय

इतिश्री जरांह्वी प्रकार नाम ग्रंथे रंगीलाल संग्रहीते सोजाक विरचितं सम्पूर्णम्

अथ तृतीय प्रकार

अथ जिर्यान अर्थात् प्रमेह का यत्न

जानना चाहिये कि ये रोग किसी को सोजाक के कारण से और किसी को आतशक के कारण से होता है जब चिकित्सा करी जाती है तब आराम हो जाता है परंतु जड से बडी कठि-

न से आराम होता है

जो प्रमेह सोजाक के कारण से हो उसकी चिकित्सा

खरबूजे के बीजों की मींगी तीन तोले खीरे के बीजों की मींगी डेढ तोले घीया के बीजों की मींगी· पिटकव्वा· अजवायन खुरासानी· बंशलोचन· इसपंद के बीज· कुलफे के बीज· गेहूं का सत· बादाम की मींगी· कतीरा· मुलहठी का सत· पोस्त के दाने गेरू अजमोद· ये सब दवा सात सात माशे ले फिर इन सब को महीन पीस छान राखे· फिर बीह दाने सात माशे लेकर उस्का लुआ ब निकाल कर उस पिसी हुई दवा में मिला कर जंगली बेर के प्रमाण गोली बनावे औ र छै माशे गोखरू और छै माशे सूखा धनियां कूट कर पाव सेर जल में रात्रि को भिगो दे· फिर प्रातःकाल इस गोली को खाकर ऊपर से इस नितरे हुए जल को पीवे परंतु गोली को दांतों से न लगावे साबत ही निगल जावे तो प्रमेह जाय खटाई बादी लाल मिर्च· का परहेज करे॥

अथवा

अलसी पाव सेर· बंशलोचन चार तोले इस

व गोल· मेलषडी· इन सव को महीन पीस वराव रकी खांड मिला कर एक हथेली भर नित्य स वेरेही खाकर ऊपर से पाव भर गौ का दूध पी वेतो प्रमेह जाय परंतु गुड़ · खटाई· तेल इन से परहेज करना॥

और जव ये रोग सुजाक के कारण से होता है तो उस्की परीक्षा येहै कि लिंग के छिद्रमें से पी व निकल्तीहै और प्रमेह में वीर्य वहुत पतला होकर वह्या करता है और ये प्रमेह तीन प्रकार का होता है॥

एक तो यह कि सर्दी पाकर वीर्य पानी के समा न हो कर वहा करता है इस प्रमेह वाले को ये दवा देनी चाहिये॥

दवा

वर्गद की डाढी पाव सेर लेकर इस्को वर्गद ही के पाव सेर दूध में भिगो कर छाया में सु खावे और ववूल का गोंद सालव मिश्री सका कुल मिश्री ये सव दोदो तोले ले और मूसली स्याह· मूशली सफेद ये दोनो पांच पांच तोले इन सव को कूट छान कर वरावर की कच्ची षांड मिला कर एक तोले नित्य सवेरे खाकर ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीवे और खट्टी तथा वातल

वस्तुओं से परहेज करेतो सात दिन में निश्चयआ राम होय ॥
और दूसरा प्रमेह यह है कि गरमी पाकर वीर्य पिगल कर पीला पन लिये हुए बहता है इस रोग वाले को ये दवा उचित है ॥

दवा

बबूल की कच्ची फली सेमर के कच्चे फूल ढा क की कोमल कोमल कोंपल छोटी छोटी-अमियों की कैरी गुंडी· कच्चे अंजीर· अनार की मुड मुडी फली· जावित्री·ये सब औषधि एक एक तोले ले और सब को महीन पीस कर सब से आधी कच्ची खांड मि ला कर एक तोले नित्य सबेरे ही गौके दूध के संग खाय तो प्रमेह जाय॥
तीसरे यह कि वात पित के बिकार से प्रमेह होजा ताहै उसके वास्ते ये दवा दे

दवा

उर्द का आधा आध सेर· इमली के बीजों का चूर्ण आध सेर खिलपड़ी तीन तोले इन सब को पीस छान कर इसमें तीन पाव कच्ची खांड मिला कर पांच तोले नित्य प्रात काल के समय खाय ऊपर पाव भर गौका दूध पीवे तो सात दिनमें प्रमेह जाय॥

और कभी कभी रुधिर विकार से भी प्रमेह हो जाता है इस्में बासलीक फस्त खोले और इन्द्री जुलाब देकर ये दवा दे

दवा

भुने चने का चून पाव सेर· शीतल चीनी एक तो ले सफेद जीरा छेमासे· शकरतीगाल छेमाशे इन सब को कूट छान कर इस्में तीन तोले कच्ची षांड मिला कर सवेरे ही चार तोले नित्य फांके ऊपर से गौका दूध पाव भर पीवे और यथो चित परहेज करे और जब आदमी के सोजाक पैदा होता है उस वक्त बहुत से मनुष्य औषधियों की बत्ती बनाकर इन्द्री के छिद्र में चला देते हैं इस कारण करिके इन्द्री का छिद्र चौडा होजाता है इस को बिंदु कुशाद कहते हैं इस रोगवाले को ये दवा दे॥

बिंदुकुशादकी चिकित्सा

गौका घृत दो तोले रस कपूर· सफेदा काशगरी· शैलषडी· ये दवा एक एक माशे नीला थोथा एक रत्ती पहिलें घृत को खूब धोवे फिर सब-औषधि यों को पीस छान कर घृत में मिला कर मरहम बनाले और रुई की महीन बत्ती पर मरहमको लपेटकर इंद्रीकाछिद्रमें धरेतो आराम हो॥

आतशक के कारण से हुआ जो प्रमेह
उस्की चिकित्सा

जो आतशक के कारण से प्रमेह होय तो उस्की यह परीक्षा है कि इन्द्री के मुष पर एक छोटा सा घाव होता है और वीर्य भी पतला सुर्खी लिये हुए बहता है क्यों कि एक तो प्रकृति की गर्मी दूसरे आतशक की गरमी· तीसरे उन दवाईयों की गरमी जो आतशक में दीनी गई इनने दोषों के मिलने से प्रमेह रोग होता है इस के वास्ते ये दवा देनी योग्य हैं॥

दवा

अकरकरा· सुपारी के फूल· मूसली सफेद· भौफली· मींठ इन्द्रजो· गोषरू बडे गिलोय सत· कौंच के बीज· उटंगन के बीज· अजवायन· अजमोद· शीतल चीनी· कुलीजन· शोरंजान मीठा· सालव मिश्री· सका कुल मिश्री· अलसी· सतावर· तवाखीर· बडी इलायची के बीज· दम्मुल अषवेन· ये सब दवा एक एक तोले ले· सब को कूट छान कर सात तोले बूरा मिलाकर एक तोले नित्य प्रातः समय खाय ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीवै तो ग्यारह दिन में प्रमेह निश्चय जड मूल से जाय ये नुकसा निहायत उमदा है॥

और जो वीर्य स्याही लिये हुए बहता हो तो उस्के वास्ते ऐसी दवा देनी चाहिये जो प्रमेह और आत शक को गुण दायक हो

नुकसा प्रमेह

अकरकरा गुंज राती· हल हुल के बीज· गोष रू छोटे· गोषरू बड़े· सुपारी के फूल· स्याह मूश ली· सफेद मूशली· सेमर का मूसला· मीठे इं द्रजो· गिलोय सत· लिसोड़े· कौंच के बीज उटं गन के बीज लाल मखाने शीतल चीनी मीठा और जान ये सब दवा एक एक तोले तज कलमी बिजोरे का सत पठानी लोध ये तीनो माशे इ न सब को कूट छान कर सब से आधा बूरा मि ला कर एक तोले नित्य गो के दूध के संग प्रातः स मय खाय तो प्रमेह जाय और खटाई आदि से परहेज करना॥

और एक प्रमेह लाल मिर्च और खटाई औ र गरम अहार आदि के अधिक खाने से उत्पन्न होती है उस्के वास्ते ये दवा देनी योग्य है

दवा

दोनों मूसली पांच तोले कलोंजी स्याह पांच तोले सब को कूट छान कर बराबर का बूरा मि ला कर एक तोले पाव भर गो के दूध के संग प्रात काल खाया करे॥

तो प्रमेह जाय॥

अथवा

कुदरू गोंद पंद्रह तोले लेकर पीस छान कर इस्में दश तोले कच्ची षांड मिला कर नित्य सवेरे ही एक तोले गौके पाव भर दूध के संग खाय तो यह प्रमेह रोग जाय॥

इति श्री जरीही प्रकार नाम ग्रंथे
पंडित रंगीलाल संग्रहीते
प्रथम भागे प्रमेह
चिकित्सायांतृ
तीयप्रकारः

अथ चतुर्थ प्रकार

जिस मनुष्य का वीर्य पतला होगया
हो उसकी चिकित्सा॥

मूशली सफेद· खरबूजे की गिरी· पांच पांच तोले पेठे आध सेर· घी ग्वार का गूदा आध पाव कबाबचीनी छे माशे· इन सब को पीस कर एक सेर कंद की चाशनी करिके उस्में सब दवा मिला कर माजून बनाले फिर इस्में से एक तोला नित्य खाय तो वीर्य गाढा होय

अथवा

एक सेर गाजरों को छील कर घी में भून ले फिर

आध सेर कंद मिला कर हलुआ बनाले फिर पां
च तोले नित्य खाय तो वीर्य गाढा हो और ताक
त भी अधिक होय॥

अथवा

पाव सेर छुहारे गाय के दूध में पका कर पीस-
ले और पाव सेर गेहूं का निसासता और पाव
सेर चने का बेसन इन को भूनले फिर तीन-
पाव खांड और आध सेर घी डाल के सब का
हलुआ बनाले फिर इस्में बादाम पाव सेर·
पिस्ता पाव सेर· चिलगोजा पाव सेर· अखरो
ट की की गिरी आध पाव सब को बारीक
करिके हलुआ में मिलादें फिर इस्में से चार
तोले नित्य खाय तो बहुत ताकत करता है·
और वीर्य को गाढा करता है

अथवा

मीठे आमों का रस तीन सेर· खांड सफेद एक
सेर· गौ का घी आध सेर· गौ का दूध एक शे
र शहत पाव सेर· पहले इन नीचे लिखी दवा
ओं को पीस कर तैयार करले बहमन सफेद
बहमन सुर्ख· सोंठ· सेमर का मूशला·
एक एक तोले· बादाम की गिरी चार तोले
सालब मिश्री चार तोले· सिंघाडा चार तोले पीपल
छै माशे· खोलंजान छै माशे पिस्ता चार तो-

ले· बादाम· पिस्ता· सिंघाड़े· पहिलें पीस कर घीमें भूनले फिर आम का रस और खांड और शहत और दूध इन को कली के बरतन में मंदी आंच पर पकावे फिर सब चीज़ें डाल कर हलुआ की तौर भूनले फिर इस्में से दो तोले नित्य खाय तो वीर्य अधिक पैदा होय और पतले से गाढा हो जाता है॥

अथवा

बबूल की छाल और फली· और गोंद और कोंपल इन सब को बराबर ले कूटछान कर सब की बराबर खांड मिला कर एक तोले रोज खाय तो वीर्य गाढा होय

अथवा

बरगद के फल को सुखा कर पीस ले फिर इस्में से अनुमान माफिक गौ के पाव भर दूध के साथ फांके तो वीर्य गाढा हो

अथवा

सालब मिश्री· दोनों मूशली· सेमर का मूसरा· काम राज· सोंठ· ये सब डेढ डेढ तोले सलजम के बीज सोया के बीज· गाजर के बीज· प्याज के बीज· मिर्च पीपल· ये सब आठ आठ माशे शहत पाव सेर· लाल बूरा पाव सेर इन स ब को एक त्र करि सहत बूर की चासनी में मिला—

कर माजून बनाले फिर इस्में से एक तोले नित्य खाय और खटाई का पर हेज करै तो ये मज्जून इन्द्री को प्रबल करे और बिगडे हुए वीर्य को सुधारती है॥

अथवा

सालव मिश्री पांच तोले· सकाकुल मिश्री- तीन तोले· अकरकरा· कुलीजन· समंदरसोष· बिला येकी मींगी· असगंध एक एक तोले पीपल· मल्लंगी हालम के बीज· जायफल· सोंठ· दोनों बहमन· दोनों तोदरी· छै छै माशे· छिले हुए सफेद तिल कोंच के बीजों की मींगी· गाजर के बीज· एक एक तोले· जावित्री· केशर· तीन तीन· माशे· सब की बराबर कंदले और तिगुने सहत में सब मिलाकर माजून बनावे और छै माशे· नित्य खाय तो वीर्य गाढा होय

अथवा

रेगमाही· इन्द्रजो· सफेद पोस्त के दाने नरक चूर· सफेद· चंदन· नारियल की गिरी· बादाम की मींगी· पिस्ता· चिलगो जा की मींगी· अखरोट की मींगी· मुनक्का काले तिल· छिले हुए ये सब दवा दो दो तोले· प्याज के बीज· सलजम के- बीज· कोंच के बीजों की मींगी· हाल

म के बीज· माई असबंद के बीज· गाजर के बीज· मलगी· नागर मोथा· अगर· तेजपाते· बिजोरे का छिलका· चीता· सोया के बीज· मूली के बीज· दोनों तोदरी· दोनों मूशली· ये सब दवा एक एक तोले· मिला जीत अकरकरा· लोंग· जावित्री· जायफल· कालो मिर्च· दालचीनी· ये सब दवा नौ नौ माशे· सहत और सफेद बूरा सब से दूना लेकर पाक बनावे फिर इस्में से एक तोले नित्य खाय इस माजून के समान इन्द्री को बल वान करने में और वीर्य को गाढा करने में दूसरी कोई नहीं है

अथनपुंसकताका

यत्न

जानना चाहिये कि कामदेव की प्रबलता कई प्रकार से जाती रहती है एक तो यह कि मनुष्य हथ रस करिके नपुंसक बन बैठता है और हथरस के भी कई भेद हैं एक तो यह कि जाड़े के दिनों में सोते समय रात्रि को यह काम करते हैं यह तो साध्य है इस की चिकित्सा जलदी हो सक्ती है और दूसरा यह कि बाजे मनुष्य पाखाने में या किसी मैदान में हथरस करते हैं एक तो हथरस करना ही बुरा है दूसरे वे मूर्ष इसकाम कोकरिके उ—

सोवक्रपानीसेधोडालतेहैं गरमनसोंपरजोसीत ल पानी पड़ाऔरऊपरसेहवालगी इससवव् सेन सें नष्ट होजाती हैं इस्पर भी कोई कोई मूर्ष नित्य नियमवांधकर हथरस किया करते है औरवाजे आठवे दिन करते हैं जव तक दो चार वर्ष तरुण ताका वल रहा तव तक किया करे और कभी इस दुष्ट कर्म से नहीं रुकते अंत को वल हीन हो कर पछिताते हैं और हरएक हकीम वो जर्राह से औषधि पूछते है तिस नपुंसक को ये दवा देनी योग्य है

दवा

हाथीदांत का चूरा २ तोले मछली के दांतों का चूरा एक तोला लौंग आठ माशे जायफल गुजराती दो नग नरगिस की जड एक नग इन सव को महीन पीस कर दो पोटली वनावे और आध पाव भेड़ का दूध हांडी में भर कर औटावे जव उस में से भाप उठने लगे तव उस भाप पर उन पोटलीयों को गरम करिके पेडू जांघ और लिंग को सेके फिर इन्द्री के ऊपर वंगला पान वांध देवे और पानी न लगने दे फिर इस औषधि को खिलावे॥

दवा खाने की

खिलगोजे की मींगी सफेद पोस्त के दाने सया

ममूशली· कुलीजन· लोंग फूलदार· मालकंगनी जाविची· भोफली· नालमखाने· बीजबंद· सितावर· बहमदंडी· तज· ये सब दवा चार चार तोले पिटकव्वा नो माशे· इन सब को महीन पीसकर घृत में चिकना करके आध सेर सहत की चाशनी में मिलावे फिर इस्में से दोदो माशे दोनो समय खाया करे तो चालीस दिन में नपुंशकता जाय॥

अथवा

सफेद कनेर की जड· गुजराती जायफल– अफीम छोटी इलायची· सम्मुल की जड– पीपला मूल· छै छै माशे· इन सब को महीन पीस कर एक तोले मीठे तेल में मिलाकर खूब रगडे जब मल्हम के सदृश हो जाय तब इंद्री पर लगा कर ऊपर से बंगला पान गरम करिके बांधे और जो इस के कारण से प्रमेह हो जाय तो ये दवा दे

दवा

स्याह मूशली· नागोरी असगंध· धावे के फूल भुने चने· सोंठ· जरद के बीज· केवरा· ऊटंगन के बीज· पिस्ते के फूल· नालमखाने ये सब एक एक तोले इन सब को महीन करके बराबर का बूरा मिलाकर इस्में से एक तोले

नित्य खाय ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीवे खटाई बादी से परहेज करे॥

और जो हथरस करने से इन्द्री टेढ़ी होगई होय तौ ये दवा करे॥

दवा

अफीम तीन माशे· जायफल· अकरकरा· दालचीनी· ये दवा पांच पांच माशे· प्याज नर्गिस· २ तोले सफेद कनेर की जड़ का छिलका १॥ तोले सब को दो पहर तक मदिरा में घोट कर इन्द्री पर लगावे तथा लंबी बत्ती कर राखे और समय पर मदिरा में घिस कर लगावे तौ इन्द्री का टेढ़ा पन जाय॥

और बाजे मनुष्य लौंडे बाजी करने से नपुंसक हो जाते हैं और स्त्री से संभोग नहीं कर सकते उन की स्त्री यों से अन्य पुरुष आनंद प्राप्ति करते हैं और आप जर्राहों से दवाई पूछते फिरते हैं ऐसे लौंडे बाज मनुष्य की चिकित्सा करनी नहीं चाहिये क्यों कि इस की चिकित्सा करने से जब कामो द्दीपन होगा तौ फिर भी लौंडे बाजी करेगा- और जो इस की चिकित्सा करनी ही अवश्य होतौ प्रथम ऐसी दवा लगावे जिस्से इन्द्री की खाल उड़ जावे क्यों कि जब कष्ट से आराम-

होगा तो फिर कभी ऐसा काम न करेगा

नुस्खा पट्टी

संखिया· जमालगोटा· काले तिल· आक का दूध ये सब एक एक माशे ले कर महीन पीस थोड़े से पानी में मिला कर इन्द्री पर लेप करे ऊपर से बंगला पान गरम करिके बांध देवे जब छाला पड़ जाय तब घी धोकर लगावे अथवा यह रोगन मर्दन करे॥

रोगन की विधि

वीर बहोटी· अकरकरा· सूखे केंचुए· घोड़े का नख· कुलीजन· एक एक तोले लेकर सब को जो कुट करके आतशी सीसी में भरकर पाताल यंत्र द्वारा खींच कर एक बूंद इन्द्री पर लगा कर ऊपर से बंगला पान बांध देवे तो चालीस दिन में आराम हो जायगा॥

अथवा

जायफल· जावित्री· छबीला· मनुष्य के कान को मैल ये सब छैछै माशे गधे के अंड कोशों का रुधिर चार तोले इन सब को दुआतशा सराव में यहां ताईं घोटे जो पाव भर सराव शोष जाय तब इस को इन्द्री पर मर्दन करे

अथवा

कड़वे घीया की मींगी दो तोले सफेद चिरमिटी

अकरकरा छै छै माशे· तेजवल· पीपरा मूल· तीन तीन माशे· इन सब को गाय के घृत में तीन दिन तक घोटे और इन्द्री पर लगा कर ऊपर से पान बांधे तो नपुंशकता जाय॥

अथवा

जमाल गोटे को गधे की लीद में औटा के सफेद चिरमिठी· कुचला को राख· अकरकरा· सफेद कनेर की जड़ का छिलका दो दो तोले सब को पीस कर गौ के दूध में इतना घोटे जो तीन सेर दूध को शोष जाय पीछे इसे चौरा की तरह खींचे फिर इस्का लेप इन्द्री पर सुपारी बचा के करे ऊपर से पान बांधे तो नपुंशकता जाय॥

अथवा

सफेद कनेर की जड़· लाल कनेर की जड़· इन दोनो का छिलका डेढ़ डेढ़ तोले बड़ा जाय फल· एक नग· अफीम नौ माशे· सब का चूरन कर के घेट गोह की चरवी दो तोले मिला के एक दिन घोट कर गोली बना राखे शराब इआनशी में घिस के सब इन्द्री पर लगावे और ऊपर से पान बांधे परंतु इस दवा को इन्द्री की सुपारी को बचा कर लगावे॥

अथवा

सफेद कनेर का छिलका आध पाव· सफेद चिरमि

डी आधपाव · कड़वाकूटदोतोले · जमालगोटा दो तोले इन सब का चूरन कर २५ सेर गौके दूध में मिला कर पकावे फिर इसका दही जमा कर प्रातःका ल चार सेर पानी मिला कर इस्को रई से बिलो के माषन निकाले और इस्की मठा को जमीन में गा ड़दे क्योंकि ये विषके समान है और माषन को ताय कर रखे फिर इस्में से इन्द्री पर लेप करे ऊपर से पान बांधे और एक रती के प्रमाण पान में धरके खाय तो पंद्रह दिन में आराम हो जायगा ॥

और जो मनुष्य गुदा भंजन कराने से नपुंशक हुआ होय उस्का यत्न ॥

और जो किसी मनुष्य ने बालक पन में गुदाभंज न कराई होय और [illegible] का मल खाई होय इसी कारण से नपुंशक हुआ होय तो उस्की चि किसा नहीं हो सक्ती और जो केवल गुदा भंजन ही क राया होय तो इस्की दवाई इस रीत से करे कि पहि ले उस नुकसे से सेक करे जिस्में हाथी दांत का चू रा लिखा है और इस पुस्तक के ४६ के पत्र में लि ख आये हैं फिर ये दवा पिलावे

दवा

गेहूं का मेदा पांच तोले · बेसन सात तोले · इन को

पांच तोले घीमें भूनले पीछे बादाम की मीगी पिस्ते चिल गोज़े की मीगी नारियल की गिरी खूबा नी छै छै माशे सालव मिश्री एक तोले ला ल बहमन सफेद बहमन तीन तीन माशे सका कुल छै माशे अंबर छै माशे असहव कल लमी दार चीनी प्रत्येक तीन माशे इन सब को कूट पीस कर बेसन मैदा में मिलावे और द श तोले मिश्री और पांच तोले सहत इन को दश तोले गुलाब जलमें चाशनी करिके इस्में - सब दवा मिला कर माजून बनाले फिर इस्में से दो तोले नित्य खाय और खटाई बादी से पर हेज करै ॥

और एक नपुंसक इस प्रकार से भी होता है कि बहुत से मनुष्य यौवन अवस्था में स्त्री से म भोग करते हैं उस संभोग करते समय घरमें कोई आगया हो उस वक्त संभोग करते से उठ खडा हो और वीर्य स्खलित न हुआ हो और - फिर थोडी देर के बाद संभोग करने लगे इस्में इन्द्री को हवा लगने से इन्द्री की नसें ढीली हो जाती हैं ऐसे नपुंशक को ये दवा देवे

दवा

ग्वार पाठे का रस १० तोले मूंग का आटा १० तोले इन दोनो को पृथक २ घृत में भूने फिर छोटे बडे -

गोषरू· पिस्ता· तालमखाने· बादाम की मींगी· ये सब दोदो तोले कूट छान कर मिलावे और पाव भर कंद की चाशनी में सब को मिला कर माजू न बानाले फिर दो तोले नित्य खाय और इंद्री पर ये दवा लगावे॥

दवा

अकर करा· सफेद कनेर की जड़· मालकांगनी· सोहन मारवी· काले तिल· सिंगरफ· हरताल· नवकिया· सफेद चिरमिठी· मूली के बीज· शलजम के बीज· बार बहोटी· शीतल चीनी· सिंह की चरबी· ये सब दवा एक एक तोले लेकर सब को जो कुट करके आतसी सीसी में भर कर पाताल यंत्र के द्वारा तेल निकाले और राति को सोने समय एक बूंद इन्द्री पर मल कर ऊपर बंगला पान गरम करिके बांध देवे तो २१ दिन में नपुंशकता जाता रहेगा॥

अथवा

अकर करा· लोंग· केंचुरा· आसबच· ये सब एक एक तोले बीर बहोटी चार मासे· सुरदासंग ४ मासे· रोहू मछली का पित्ता· ४ नग· सिंगरफ ४ मासे· जमालगोटा ४ मासे· सांडे की चरबी तीन तोले मोम दो तोले· पारा १ तोले इन सब को मिला के

खूब रगडे जब मल्हम के सदृश होजाय तो राति को गरम करिके लिंग पर लेप करे और ऊपर बंगला पान गरम करि के बांधे पानी न लगावे

अथवा

धतूरे की जड का छिलका· सफेद कनेर की जड का छिलका· आक की जड की छाल· अकरकरा गुजराती· बीरबहोटी· गौका दूध ये सब एक एक तोले ले पीस कर दो तोले तिल के तेल में पकावे जब दवा जल जाय तब तेल को छान ले फिर लिंग पर मर्दन करे ऊपर बंगला पान गरम करके बांधे और पानी न लगने दे

और एक नपुंशक इस प्रकार से भी होता है कि बहुत से मनुष्य स्त्री को इन्द्री पर बिठा के खडे हो जाते हैं और बहुत से मनुष्य आप नीचे हो जाते हैं और स्त्री को उपर रख कर काम विलास करते हैं इस प्रकार संभोग करने से भी मनुष्य नपुंशक होजाता है क्यों कि लिंग में हड्डी नहीं है न जाने मनुष्य क्या समझ कर ऐसा अयोग्य काम करते हैं ऐसी बातें मनुष्यों की देख कर विदित हुआ कि मनुष्य युवा वस्था में काम देव की प्रबलता से अंधा हो जाता है ऐसे नपुंसक के वास्ते ये दवा दे॥

बादाम की मींगी २१ नग ताजे पानी में पीस कर दो तोले सहत मिला कर ग्यारह दिन तक पीवे तो नपुंशकता जाय॥

अथवा

सफेद कनेर की जड का छिलका दो माशे माल कांगनी दो माशे कोंच के बीज सफेद प्याज अकर करा असवंद ये सब चौदह चौदह माशे इन सब को जो कुट करिके दश तोले तिल के तेल में मिला कर औटावे जब दवा जल जांय तब छान ले फिर इसमें से थोडा सा रात को इन्द्री पर मल कर ऊपर से बंगला पान गरम करके बांधे॥

और एक नपुंशक जन्म से ही होता है उस्के कुई भेद हैं एक तो यह कि मनुष्य माता के गर्भ से जब उत्पन्न होता है तो उस का लिंग स्थान सब सपाट होता है यानी किसी प्रकार का कुछ भी चिन्ह नहीं होता उस्को सदली ख्वाजे सरा कहते हैं और दूसरा यह कि कुछ कुछ लिंग होता है और उस्को स्त्री संग की इच्छा भी होती है और उस्के संतान भी होती है॥

और तीसरा यह कि लिंग तो पूरा होता है परंतु उस्में तेजी नहीं होती ऐसे तीनों की चिकित्सा नहीं होती है

चौते यह कि लिंग केवल मूतने के समय चला यमान होता है और फिर नहीं चलाय मान होता ऐसे नपुंशक की ये दवा करे

दवा सक

वीर बहोटी· सूखे केंचुए· नागोरी असगंध· हलदी· आमा हलदी· भूने चने· ये सब छे छे माशे इन सब को महीन पीस कर रोगन गुल में चिकना कर दो पोटली बनावे और किसी पात्र को आंच पर रख कर उस्पर पोटली गरम कर जाय पेड़ और लिंग को खूब सेके और फिर पोटली यों की दवा लिंग पर बांधे॥

अथवा

अकर करा दो माशे· वीर बहोटी दो माशे· लोंग नग २० बकरे की गरदन का मांस दश तोले इन सब को कूट पीस कर लिंग के परमाण खोली बनावे और उस्को भून कर लिंगपर चढावे और पानी न लगावे॥

अथवा

सिंह की चरबी· मालकांगनी· अकर करा· सोंठ· जावित्री· कुचला· तज· लोहवान· कौडिया· लोंग· मीठा तेलिया· हरताल तबकिया· जमालगोटा· पारा· हाथी दांत का चूरा· गंधक आ

मलासार· कटेरी · सफेद चिरमिठी · केचुआ जायफ
ल गुजराती· सफेद कनेर की जड अजवायन
खुरासानी · प्याज के बीज· असपंद सफेद
सांखिया· रेंडी के बीजों की मींगी कालीज़ी
री· ये सब एक एक तोले मुरगी के अंडे की
जरदी पांच नग इन को कूट कर आतशी
शी शी में भर पाताल यंत्र द्वारा तेल निकाल
ले फिर इस्मे से एक बूंद नित्य लिंग पर मर्द
न करे और ऊपर से बंगला पान गरम कर
के बांधे और पानी नही लगने दे और
और खटाई तथा बातल वस्तुओं से परहेज-
करे चालीस दिन तक इसी प्रकार सेवन कर
ते रहे और षाने को ये दवा है

दवा

ग्वार पाठे का रस· गेहूं की मेदा· बिनोले की मीं
गी· घृत· कंद· ये सब एक एक सेर पहिले ती
नों को पृथक पृथक घी मे भूने फिर कंद की
चासनी करिके गोषरू एक छटांक जायफ
ल· पिस्ता· खोपडा· चिलगोजा की मीं-
गी अषरोट की मींगी· ये सब पाव सेर इन
को कूट कर उस्मे मिला कर हलुआ बना पां
च तोले नित्य खाय तो निश्चै नपुंशक
ता जाय ॥

और जो किसी मनुष्य नें अपनी स्त्री तथा वेश्या से विषय बहुत किया हो इस सबब से उस का काम देव कम जोर हो गया हो तौ उसको ये माजून खवाना चाहिये ॥

माजून

कुलीजन दो तोले सोंठ २ तोले · जायफल रूमी मस्तगी · दाल चीनी · लोंग · नागर मोथा · अगर · ये सब एक एक तोले ले महीन पीस छान कर तिगुने बूरे में चासनी कर माजून बनाले फिर इस्में से छै माशे नित्य खाय तौ कामदीपन बहुत होय ॥

और जो वीर्य पतला पड़जाने के कारण से काम देव कम होगया होतो ये दवा करे

दवा

ताल मखाने आध पाव · ईशब गोल आध पाव · इनको बरघर के दूध में भिजो कर छाया में सुखाले फिर चालीस छुहारे की गुठ्ली निकाल कर उनमें उपर लिखी दवा भर कर गौके सेर भर दूध में औटावे जब खोय के सदृश होजाय तब उतार कर चिकने बासन में रख छोड़े फिर एक छुहारा नित्य ४० दिन तक खाय और दूध रोटी भोजन करे और लिंग पर ये दवा ई लगाया करे ॥

दवा लगाने की

अकर करी दघनी· लोंग फूलदार· वीर वहोटी निर्विसी· सखे केंचुए· सब एक एक तोले ले इन सब को पाव सेर मीठे तेल में मिला कर मिट्टी की हांडी में भरकर उसका मुख बंद कर चूल्हे में गढ़ा खोद कर उस्में इस हांडी को दाब कर ऊपर से सात दिन बराबर राति दिन आग जलावे फिर आठमें दिन निकाले और इस्में से एक बूंद लिंग पर मले ऊपर बंगला पान गरम करके बांधे और पानी न लगने दें॥

इतिश्री जर्राही प्रकारनाम ग्रंथे नपुंशक भेद चिकित्सानाम चतुर्थः प्रकारः

अथ पंचम प्रकारः

इस प्रकार में बाजी करण के वास्ते बहुत अच्छी २ अजमाई हुई दवा लिखी हैं परन्तु बहुत से मनुष्य यों कहते हैं कि ये दवा झूंठी हैं सो उनका कहना सत्य है क्यों कि ये कसूर हकीम लोगों का तथा वैद्य लोगों का है क्यों कि ये लोग अच्छी तरह से प्रकृति का निश्चै नहीं करते इसी सबब से उन लोगों को दवा फायदा नहीं करती क्योंकि दवा जब गुण करेगी तब दवा की प्रकृति और रोगी की प्रकृति एक मिल जावेगी· इसी कारण पहिले बुद्धिवान हकीम और वैद्यों ने एक एक रोगी पर

कई कैई दवा लिखी हैं ये बात प्रत्यक्ष है कि जो प्रकृति भेद न होता तो एक एक रोग के वास्ते एक ही दवा लिषी जाती काहे को हकीम लोग अपनी अपनी कितावों में अपनी अपनी समझ के नुकसे लिखते बस हमारा इस बात के लिखने से प्रयोजन येहे कि वैद्य हो या हकीम या जर्राह हो पहले रोगी की प्रकृति को देषे फिर उसी के माफिक दवा देवे जो मनुष्य इस प्रकार से रोगी का इलाज करेंगे तो ये दवा सब राम बाण के समान काम देंगी और जो बिना विचारे रोगी को दवा देंगे उनके वास्ते ये दृष्टांत है कि लगा तो तीर नहीं तुक्का ही सही अर्थात् जो दवाई प्रकृति के माफिक बैठ गई तो आराम हो गया तो कहने लगे कि ये दवा सही है और जो प्रकृति के माफिक दवा न मिली तो उसने कुछ फायदा न किया तो कहने लगे कि ये दवा झूठी है परंतु वे मूरख दवा को तो दोष देते हैं परंतु अपनी मूर्षता को दोष नहीं देते इस लिये हकीम तथा वैद्य या जर्राह को मुनासिब है कि पहले प्रकृति को पहिचान कर रोगी का इलाज करेंगे तो उनको मेरी लिषी दवाओं का गुण मालूम होगा और फायदा उठावेंगे॥

अथवाजीकरणम्

दवा १

सिंगरफ एक तोले· सुहागा एक तोले· पारा छै माशे· इन तीनो को महीन पीस कर मुर्गी के अंडे की सफेदी में राखे फिर ढाई सेर ढाक की राख ले कर एक मिट्टी की हांडी में आधी राख भर कर उस अंडे को उस राख पर रख कर आधी राख को ऊपर से रख दे और हांडी का मुख बंद कर कपरोटी करके सुखा दे जब सूख जाय तब चूल्हे पर रख कर ढाक की लकड़ी की चार पहर आंच उसके नीचे जलावे फिर सीतल हो जाय तब सिंगरफ को निकाल ले फिर इस्मे से एक रती पान में धरके खाय तो काम विलास अत्यंत करे परंतु इस दवा को जाड़ो में खाना योग्य है

दवा २

सिंगरफ· कपूर· लोंग· अफीम· उटंगन के बीज इन को महीन पीस कर कागजी नीबू के रस में मिला कर मूंग के प्रमाण गोली बनाले फिर एक गोली खाकर ऊपर से पाव भर गौ का दूध पीकर काम विलास करे तो स्तंभन होय ये दवा अजमाई है॥

दवा ३

सूखा तमाखू· और लोंग दोनों बराबर ले महीन·

पीस के सहत में मिला कर उर्द के प्रमाण गोली बनावे फिर एक गोली खा कर भोग करे॥

दवा ४

एक तोले पोस्त के डोडों को पानी में भिगो दे जब खूब भीग जाय तब उसको निंतरे जल में गेहूं का आटा गूंद कर उसका एक गोला बना कर गरम चूल्हे में दबा दे जब सिक कर लाल हो जावे तब निकाल कर कूट ले फिर थोड़ा घी बूरा मिला कर मलीदा बना रखे जब एक पहर दिन बाकी रहे तब उसे खाय और रात्रि को काम विलास करे तो काम देव की इतनी प्रबलता होगी कि एक स्त्री से मन तृप्ति न होगा॥

दवा ५

थूहर का दूध और गौ का दूध इन दोनों को बराबर लेके मिला कर चार पहर धूप में सुखावे फिर पांव के तलुओं में लेप कर स्त्री से भोग करे पांव को धरती में न धरे॥

दवा ६

कोंच की जड़ एक पोस्त की बराबर लेके मुख में राखे जब तक मुख में रहेगी तब तक वीर्य न निकलेगा॥

दवा ७

चछूंदर का अंडा चमड़े के पत्र में धर कमर में बांध कर स्त्री संग करे जब तक पत्र कमर से न हटे खु

लेगा तब वीर्य निकले॥

दवा ८

सिंगरफ़ मोचरस अफ़ीम ये चार २ माशे सुहागा २ माशे इन सब को पीस कर मिरच प्रमाण गोली बनावे फिर २ गोली खाकर भोग करे तो स्तंभन होय॥

दवा ९

माजू मायन ४ माशे धतूरा के बीजों की मींगी ६ माशे इसपंद नौ माशे भांग के बीज ४ मा॰ खिले चने ७ मा॰ भांग के बीज ४ मा॰ पान की बोंडी ३ नग इन सब को पीस छान कर पान की बोंडी के रस में बे र के बराबर गोली बंधे एक गोली खाकर एक घड़ी पी छे मैथुन करे तो स्तंभन होय॥

दवा १०

खरगोस के पिते का रस अपने लिंग पर मर्दन क रके स्त्री के काम विलास करे तो वह स्त्री उस पु रुष पर आशक्त होय॥

दवा ११

चितकबरे बिलाव के लिंग को सुखा पीस कर लिंग पर मले फिर स्त्री से भोग करे तो वो स्त्री बांदी हो जायगी

दवा १२

गधे का भेजा तेल में जला कर उसको इन्द्री पर मर्दन करे तो इन्द्री इतनी मोटी होगी कि स्त्री पर सहारी न जावेगी और रुकावट भी अ

धिकहोगी॥

दवा१३

सिंह की चरबी को तिल के तेल में मिला कर इ द्रीपर मर्दन करे तो स्त्री भंग करने में ताकत अ धिक होय॥

दवा१४

ऊंट के दोनों नेत्रों को भुजा पर बांध कर संभोग क रेतो वीर्यस्तंभन होय॥

और जो कोई मनुष्य चाहे कि ये स्त्री किसी दूसरे पुर्ष के पास नजाय तो ये तंत्र करे

दवा१५

ककरोंदे की जड कंघी इन दोनो को बराबर लेकें जल मे पीसे और इन्द्री पर लगाके स्त्री से भोग करे तो वह स्त्री फिर दूसरे पुर्ष की चाहना नहीं करेगी॥

दवा१६

और जो उसे खोला चाहे तो एक तोले ककरोंदे की जड कूट कर खवावे तो फिर वह स्त्री पर पुर्ष की चाहना करेगी॥

इति जराही प्रकार नाम ग्रंथे रंगीलाल संग्रहीते बाजी कर्णचिकित्सायां पंचम प्रकार:

अथ गठिया को यत्न

ये रोग उपदंश और सोजाक और ज्वर के अंत में अवस्य होता है उपदंश रोग में पारा भिलावा या सिंगरफ आदि के खाने से और शरीर को धूनी देने से अथवा सोजाक में शीतल औषधियों के सेवन करने से गठिया हो जाती है और ज्वर में पसीना या कोथा आवे और उसमें वायु लगजावे तो तमाम बदन के जोड़ों में पीड़ा हो जाती है अर्थात् दर्द हुआ करता है तो उसके वास्ते अक्सर तेल का मर्दन करते हैं परंतु ज्वर में तेल मलना सूजन करता है इस लिये गठिया की चिकित्सा जब करै कि बदन में कोई दूसरा रोग मालूम न हो तो इसकी दवा इस प्रकार से करनी योग्य है

दवा गठिया

पहले मुर्गी के चालीस अंडों को औटावे फिर उन की सफेदी दूर करिके जरदी को लेवे फिर अकरकरा दालचीनी जायफल लौंग ये सब दवा एक एक तोले समुद्र खार एक माशे इन सब को महीन पीस कर अंडे की जरदी में मिला के एक हांडी में भर कर फिर उसमें दो तोले मीठा तेल छिड़क देवे और उस हांडी को पेंदे में एक छिद्र करै फिर एक गढा खोद कर

उस के ऊपर हांडी को रक्खे और इस हांडी के नी
चे उस गढ़े में एक प्याला चीनी का रक्खे और हां
डी के चारों तरफ कंडे जला कर आंच लगा देवे
तो उस हांडी के छिद्र द्वारा तेल प्याले में टपक
आवेगा फिर इस तेल को जोड़ों पर मर्दन करे
और हवा न लगने दे तो ईश्वर की कृपा से ए
क सप्ताह भर में बिलकुल दर्द जाता रहेगा यह
दवा बहुत सही है और इस दवा के लगाने से कि
तने ही रोगियों को आराम हो चुका है

अथवा

धतूर के पत्ते· अमलतास के पत्ते· सहूंजने के
पत्ते ये तीनों पत्ते सरस हरे दो दो तोले लेना और
सांप के बीज· अजवायन खुरासानी· तीरजा
न कडवा· गेरू· सेंधा नोन· ये सब दवा छै छै मासे
इन सब को पीस कर छान ले और जोड़ों पर
मालिश करे ॥

अथवा

एक गाठिया रोग इस प्रकार से भी हो जाता
है कि कोई मनुष्य मार्ग में चला जाता है
और मार्ग में उसको प्यास लगे उस वक्त प्या
स के समय पहिले वह अपने पावों को धो
ता है और फिर जल पीता है और वि
शेष करिके मार्ग में नहीं चाले–

निकलते हैं जो यह मनुष्य अपनी मूर्खता से उसमें बैठा रहता है और गर्मी से व्याकुल होकर सिर पर पानी डालता है जो किसी की प्रकृति निर्बल होती है तो उसी समय बीमार हो जाता है और अंत में उस को गठिया ग्रस लेती है फिर जो घोड़े पर चढ़ कर चलने से हाथ पांवों पर सूजन हो जाती है ऐसी गठिया के वास्ते ये दवा है

दवा

बेद अंजीर के पत्ते खुरासानी अजवायन की ये के बीज [illegible] के फूल [illegible] ये दवा एक २ तोले सेंधानोन खारीनोन [illegible] मासे इन सब को पानी में औटा कर बफारा दे और जो जोड़ों पर सूजन भी होवे बफारे के पीछे ये औषधि मले

दवा

भुने मूंग का आटा छोटी माई बड़ी माई दो २ तोले कालीजीरी माजू सोंठ [illegible] अजवायन देशी ये दवा एक एक तोले इन सब को महीन पीस कर मले जो मनुष्य [illegible] स्नान करते हैं उन को यह रोग कम होता है और यह रोग इस प्रकार से भी होता है कि दो चार [illegible] कि मनुष्य [illegible] [illegible]

से नीचे गिर पड़ा हो और सन्नपात कर सर्दी से
वा लूअ की वायु के लगने से चोट कसक जावे
और सुद्धी पाकर गठिया हो जाय तो उसके
वाले ये दवा देवे

दवा

एक रेंडी नित प्रति खाया करे और इस तेल
की मालिस करे

तेल की विधि

माल कांगनी दो तोले· कायफल· पकायन· सौं
ठ· जायफल· अकरकरा· लोंग· आंबा हलदी·
समुद्र खार· दारु हलदी· कुचला· बादाम की मीं
गी· केजा के बीज· कुलीजन· सिरमोर· काले धतू
रे का रस· आख का दूध· सहजने की छाल पोमा
का रस हरी मकोय का रस· इमली की छाल·
भांगरे का रस· ये सब दवा एक एक तोले क
दवा तेल पंद्रह तोले मीठा तेल पंद्रह तोले रे
डी का तेल पांच तोले इन सब को मिला कर
औटावे जब तेल मात्र रह जाय तब छान कर
सीसी में भर रक्खे फिर इस तेल की मालिस क
रे तो दर्द जाता रहेगा॥

अथवा

पहिले तिलों का तेल चार तोले गरम करे फिर
उस्में मोम सफेद एक तोले चलाय की बत्ती-

एक तोले माल कांगनी दो तोले सफेद संखिया छै माशे इन सब को तेल में डाल कर औटावे और खूब रगड़े फिर छान कर जोड़ों पर मालिश करे और खाने को मूंग की धोवा दाल और गेहूं की रोटी दे और मुसल्मान को मांस रोटी खवावे ॥

और जो गठिया आतशक के कारण करिके हो गई हो तो पहिले विरेचन देवे फिर यह तेल मर्दन करे ॥

तेल की विधि

मदिरा दो सेर कूट दो तोले तज दो तोले सोंठ दो माशे कालीमिर्च पांच माशे आकरकरा एक माशे दरियाव का पानी एक सेर इन सब को चार पहर भिगो कर औटावे जब पकने लगे तब उसमें एक सेर कड़वा तेल मिलावे और आंच कम कर देवे जब और का तेल मात्र रहि जाय तब छान कर इस की मालिस करे और खाने को ये दवा दे

दवा

मुरदा संग दो माशे कूजा की मीनी मस्त माशे घी दो माशे सफेद कत्था है रत्ती इन सब को महीन पीस कर गुड़ में मिला कर तीन गोलियां बनाले पहिले दिन

एक गोली खिलावे और मूंग की दाल का पथ्य देवे दूसरे दिन दो गोली खिलावे और गेहूं की रोटी और मूंग की दाल भोजन करावे इस के सिवाय और कुछ न देवे जो इस दवा से आराम होजाय तो और कोई पुष्ट माजून बनाकर खिलावे और इस तेल का मर्दन करते रहें

तैलकीविधि

भिलावे सोंठ मालकांगनी कडुवा ये तीनों दवा दो दो माशे इन सब को आध पाव मीठे तेल में मिला कर जलावे जब ये सब दवा जल जांय तब तेल को छान कर कांच की शीशी में धर रक्खे फिर इस तेल का सोते समय मर्दन करावे ऊपर से धतूरे के पत्ते गरम करि के बांध देवे इसी प्रकार से सात रोज तक सेवन करे तो सब जोड़ों का दर्द दूर होय॥

दवा

केकोदन चार माशे नक छिकनी चार माशे अफीम तीन माशे मीठा तेल तीन तोले इन सब को मिला कर जलावे जब सब दवा जल जाय और तेल मात्र रहि जाय तब छान कर जोड़ों पर मालिश करावे तो आराम होजाय॥

अथवा

और जो जोड़ों में दर्द ज्यादा होते हों तो ऐसा रोगी दस्तों के द्वारा निकल जाना चाहिये॥

दस्तावर चूर्ण

सौरंजान मीठा, चूबीदा, छै छै माशे, सोंठ निसोत चोबचीनी हार [illegible] की मींगी, और [illegible] के पत्ते, तीन तीन माशे, [illegible] [illegible] अनीसू, इन सब दवाओं को सात सात माशे ले इन सब को [illegible] के [illegible] एक तोले लाल बूरा मिला कर पीवे इस के पीने से थोड़े थोड़े दस्त होंगे॥

अथवा

और जांघ तथा पीठ में पीड़ा होती हो तो उसको ये दवा देनी चाहिये॥

चूबीदा पांच माशे, [illegible] पांच माशे, सोंठ पांच माशे, सौरंजान चार माशे, [illegible] की जड़ चार माशे, [illegible] की जड़ का छिलका चार माशे, सौंफ के जड़ की छाल चार माशे, मुनक्का दश माशे, मिश्री दश माशे, इन सब को औटा कर [illegible] तीन माशे [illegible] तेल मिलाकर पीवे तो दस्त होंगे इस दवा के करने से दर्द में बहुत आराम मालूम होगा॥

अथवा

सौरंजान· सौंफ· सौंफ की जड़ का छिलका· अ
जमोद· अनेसू· ये सब दवा पांच पांच माशे·
हंस राज चार माशे· गाजवां चार माशे· बिल्ली
लोटन चार माशे· गुलाब के फूल सात माशे
बड़ी हड़ छे माशे· मुनक्का सात माशे
गुलाब को गुलकंद डेढ़ तोले ले कर औटावे
फिर इसको छान कर इसमें एक तोले गुलकं
द को घोट कर मिलाके पीवे तो दस्त होंगे दर्द क
म हो जायगा॥

और जो किसी मनुष्य के कूल्हे की हड्डी की
जड़ में और जांघ से लेके नलुआ पर्यंत दर्द हो
उसके वास्ते ये दवा देनी

दवा

मलंगी पांच माशे अनेसू पांच माशे· सोंठ
तीन माशे· अजपर की जड़ तीन माशे· मजीठ ४ मा
चीता चार माशे· सौरंजान चार माशे· बूलीदा
चार माशे· अजमोद चार माशे· मेथी चार मा
शे· सौंफ चार माशे· मुनक्का १५ दाने· इन सब-
को आठ पहर तक तीन अंडी का तेल मिलाकर प्रा
त समय पीवे तो इसके पीने से दस्त हों
गे और पथ्य वैद्य अपनी मत के अनुसार
देवे॥

और जो सब सरीर में बादी से दर्द होता हो तो ये दवा करनी चाहिये ॥

दवा

महूआ तीन भाग॰ खाने का नमारव एक भाग॰ इन दोनों को पीस कर गरम करके जहां सरीर में दर्द होता हो वहां बांधे ये दर्द गठिया का नहीं होता है इस्को साधारण बादी का दर्द कहते हैं ॥

और गठिया के वास्ते जोग राज गूगल बहुत गुण करता है और दूसरी माजून चोबचीनी भी बहुत फायदा करती है और हमने ये दोनों नुस्खे इस वास्ते नहीं लिखे क्यों कि ये दवा अमृत सागर आदि ग्रंथो में लिखी है सो समझ कर बना लेना लेकिन इस्में इतनी बात करनी चाहिये कि जो गठिया थोड़े दिन की होय तो केवल जोग राज गूगल के खाने से आराम होजायगा और जो बहुत दिन का रोग होतो उस रोगी को एक वक्त गूगल खवावे और वक्त माजून चोब चीनी खवावे इस प्रकार के इलाज करने से बहुत दिन की गठिया होगी तोभी बहुत शीघ्र आराम हो जायगा और बहुत से मूर्ख जराह वो हकीम अपने लेने की खातर रोगी को भिलाये आदि की गोली

खिला देते हैं और उस गोली के खाने से रोगी को मुंह आजाता है उस वक्त वह रोगी बड़ा दुख पाता है बस हमारा इन बातों के लिखने से ये प्रयोजन है कि इन गोलियों के देने से आराम तो हो जाता है परंतु एक यह बड़ी हानि होती है कि उस रोगी के दांत किसी काम के नहीं रहते और दांत बहुत जल्दी गिरजाते हैं तो वह विना दांतों के जन्म भर दुख पाता है और उसको सता है इस वास्ते जहां तक बने वहां तक इस को मुख आने की दवा न देनी चाहिये

और जो साधारण छाती और पीठ और हाथ पांव में वायु का दर्द होने लगे तो उन के वास्ते दो चार दवा नीचे लिखते हैं कि जिन के लगाने से ये दर्द बहुत जल्दी आराम होता है

दवा

वनपसा का तेल· पांच तोले आंच पर धरके उसमें सफेद मोम दो तोले कतीरा नो माशे मिलावे और जहां दर्द होता हो वहां मर्दन करावे तो इस लगाने से बहुत जलदी फायदा हो जाता है॥

दवा

वनपसा के पत्ता· सफेद चंदन· खतमी के बीज· नाखूना· जौ का चून· गेहूं की भुसी -

ये सब दवा बराबर लेके कूट छान के इन सब को मोम रोगन में और कनस्प्राके तेल में तथा गुलरोगन में मिला कर पकावे जब रोगन् मात्र रहजाय तब उतार कर इस का मर्दन दर्द के मुकाम पर लगावे तो दर्द बहुत जलदी रफे होगा

अथवा

खतमी के बीज अलसी· मकोय· के पत्तें का रस अमल तास का गूदा इन सब को पीस कर छाती पर लेप करना॥

अथवा

मीठे तेल में थोडा मोम औटा कर उस का- लेप करना ॥४॥

अथवा बारह सींगे का सींग सोंठ अरंड की जड इन को पानी में घिस कर लगाना॥

अथवा मीठे तेल में अफीम औटा कर मलवाना अच्छा है

अब जानना चाहिये कि इन रोगों के वास्ते बडे बडे हकीमों नें हजारों नुस्खे और लेप आदि लिखे हैं जो सब को हम लिखते तो एक बडा भारी ग्रंथ हो जाता इस वास्ते जो दवा हमारी अजमाई है वही दवा इस पुस्तक में वर्णन करी गई है

और अब सबरे शरीर के फोड़ो और घाव तथा
शस्त्रा दिकों के घावों की चिकित्सा मय
तसवीरों के इस पुस्तक के दूस
रे भाग में बिस्तार पूर्वक
लिखे गये हैं और
समस्त नेत्रों के
यत्न इसके
तीसरे भाग
में लिखे
हैं

इति श्रीजर्राही प्रकार नाम ग्रंथे पंडित रंगी
लाल संग्रहीते प्रथम भाग सम्पूर्णम्
सम्वत्
१९४५

सूचीपत्र

इस से सिवाय जो और भी पुस्तकें हमारे यहां मौजूद हैं सो उन के नाम और कीमत नीचे लिखे हैं सो जिन महाशयों को लेने की इच्छा हो वे सहर मथुरा नया बजार लाला श्यामलाल की दुकान से मंगाले

नाम पुस्तक	की	डा.	नाम पुस्तक	की.	डा.
जराही प्रकार दूसरा-			किस्सा तोता मै		
भाग	।)	-)॥	नाका जिस्में च		
तथा तीसरा भाग	।)	-)॥	हुत उमदा उमदा		
अनोपान चिंतामनी			चुटकलेदार सती		
सटीक	।)	-)	के लिखे हैं आठों		
स्त्री चिकित्सा प्रथम			भाग	॥।)	।)
भाग	=)	-)॥	ब्रज विहार का		
योग चिंतामणि भाषा			री भाग जिस्में रा		
टीका	८)	=)	सधारियों की वा		
कराबादीन सिकानी	॥=)	=)	ल पर बहुत सी		
अर्क प्रकाश	=)	-)॥	लीला श्री कृस्न		
रिसाले आब शाक	-)॥	-)॥	राधिका की ललि		
नाड़ी प्रकाश	-)॥	-)॥	त ललित पदों में		
अजीर्ण मंजरी	-)॥	-)॥	मथनसवीराल		
मीजान तिब्ब हिंदी	॥)	=)	लिखी है	२॥)	
औषधि कल्पद्रुम प्र			तथा पतले काग		
थम भाग	-)॥	-)॥	जका	॥।)	=)

इश्तिहार

प्रकट हो कि यह पुस्तक जरा ही प्रकार तीन हिस्सों में पंडित रंगी लाल मथुरा निवासी ने संग्रह करि के बनाया और इसके छापने का हक्क मुसन्नफी लाला श्यामलाल मुहत मिम मतवे श्याम काशी प्रेश को दिया और लाला श्याम लाल ने इस के छापने का हक्क लाला हरि प्रशाद महोत मिम मतवे काशी समान प्रेश को दिया है इस वास्ते कोई साहब विना इजाजत मालिक मतवे के छापने का यत्न न करै और अब अपनी मरजी से लाला हरि प्रशाद ने लाला श्याम लाल को एक वार छापने की इजाजत दी है

फकत

सन १८८९ ईशवी

जर्राहीप्रकार

दूसराभाग



श्रीमथुराश्यामकाशीयंत्रमेंलाला

श्यामलालकेप्रबंधसेछापागया-

निघंटभाषा·	।)	)	मुत्फर्कात		
वैद्यमंजरीभाषा	।)	)	ब्रजविहारचारोंभाग		
वैद्यमनोत्सवभाषा	)	-॥	जिस्में३२लीलारा		
अमृतसागरछापाम			शधारियोंकीरीति		
थुरा	॥)	)	परललितपदोंमें		
शालहोत्रजिस्मेंघो			लिखीहैंमोटाकाग		
डोंकेइलाजहैं	)	-॥	जमोटाअक्षर	२॥)	०
इलाजुलगुरबा	॥)	)	तथा	॥)	)
करावादीनसफाई	॥)	)	किस्सातोतामैना		
औषधिकल्पद्रुमप्र			काआठभागोंमेंपं		
थमभाग	।=)	-॥	डितरंगीलालकृत		
औषधिसार	।=)	-॥	जिस्मेंतोताऔरमैना		
मुजरबातवसीर	)	-॥	केबहुतउमदाउम्दा		
इलाजिस्मानी	।)	)	जबावसवालइश्क		
योगचिंतामणिस			मेंढ़ोहोदिलचस्प		
टीक	॥)	)	लच्छेदार दोहा·सो		
मदनसुधाकर	)	-॥	रठा·कवित चोबोला		
वाजीकर्णप्रकाश			ग़ज़लआदिरागिनी		
सटीक	)	-॥	योंसहितलनीफों		
विरेचनकल्पलता			मेंवर्णनहै	॥)	)
सटीक	)	-॥	मजमेउलअसारहिं		
माधवकृतकूटस			दीजिस्मेंहरेकशायरों		
टीक	)	-॥	कीग़ज़लेंलिषीहैं	।)	=॥

॥श्रीगणेशायनमः॥

अथजर्राहीप्रकार दूसराभागलिख्यते॥

मंगलाचरण

दोहा

श्रीधन्वंतरिकेचरणरजनिजमस्तकधार॥
जर्राहीपरकारयेसबौषधसुखकार॥१॥
मुनिगुरुचरणसरोज [illegible]
रोगिनकेउपकारहितपूरणकियाबनाय॥२
नानाग्रंथनकोरतनअरुनिजमतिअनुसार
लिखीचिकित्सादेहकीसुखपावेसंसार॥

अथमाथेकेफोड़ेका

यत्न

जाननाचाहियेकिएकफोडासिरकेतालूपरहोताहै सूरतउसकीयहहै किपोस्तकेदानेकीबराबरहोताहै औरउसकेआसपासहथेलीकेबराबरस्याहीहोतीहै औरयहस्याहीहवाके सदृशदौडतीहै औरजहरवादसेसंबंधरखताहै यहांतकयेस्याहीफैलतीहैकि सबसरीरस्याहहोजाताहै औरवहरोगीचारपहरयाआठपहरकेपीछेमृत्युकेसमीपपहुंचजाताहै

परंतु परमेश्वरके अनुग्रहसे कोई अच्छा जर्राह चिकित्सा करनेवाला मिलजाताहै तो निस्संदेह आराम होजाता है और चिकित्सा करनेवालेको चाहिये कि जो यह स्याही कंठसे नीचे न उतरी होय तो चिकित्सा करनेमें आराम होजाताहै और जो स्याही कंठसे नीचे उतर आई होय तो इलाज करना नहीं चाहिये और इस फोड़ेके निसान नीचे लिखीत सवीर में देखलेना और जो इसकी चिकित्सा करे तो इस प्रकारसे करे कि पहिलें सरेरूनसकी की फस्त खोले और पंद्रह तोले रुधिर निकाले और फस्तके बाद वमन करावे क्योंकि ये रोग दिल अर्थात हृदयका हानि करनेवाला होताहै ऐसा नहो कि फोड़ा नीचे उतर आवे -



इससबबसे वमन कराना उचित है॥

नुकसा वमन का

सिरका १० तोले लालबूरा २ तोले मैनफल ६ माशे इन सबको दो सेर जल में औटावे जब आधा जल बाकी रहिजाय तब ठंडा कर रखले फिर इसको दो तथा तीन बार में पिलादे तौ वमन होजायगी और उस फोडे पर तथा उसस्याही पर तेजाब लगावें तथा पत्नास्टर रक्खें जब खाल पकजावे तो दूसरे दिन मात:काल के समय काटडाले फिर ऐसा मल्हम लगावै कि जिसमें घाव भरजावे और खूब मवाद निकल जावे॥

नुकसा मल्हम

नीलाथोथा १ तोले जंगार हरा १ तोले नव कियाहर ताल ६ माशे इन सब दवाइयों को महीन पीस कर सुहागा चौकिया १ तोले बिरोजा तर ४ तोले फिटकरी १ तोले आंबांहलदी १ तोले इन सबको भी पीस कर फिर सबको बिरोजे में मिलावे फिर उस्में गौ का घृत ४ तोले थोडा थोडा करके मिलावे फिर बरांडी शराब तथा तेजाब शिरके से इस मल्हम को खूब धोकर घाव पर लगावे जब वो घाव सुरखी पर आजाय तब यह दूसरी मल्हम लगाना चाहिये॥

दूसरी मल्हम

काले तिलों का तेल ३ सेर लेकर गरम करे फिर आदमी की सिर की हड्डी २ तोले नीम के पत्ते २ तोले इन दोनों को तेल में डालकर जलावे जब जल जाय तब निकाल डाले पीछे ६ तोले मोम मिलावे और मुरदासंग ६ माशे सफेदा का

शकारी ६ माशे इनसबको पृथक पृथक उस तेलमें डाले और आंच मंदी करदे कि चासनी मल्हमकी खूब होजावे जब उस चासनी का तार बंधने लगे तब अफीम छै माशे मिला वे जब अफीम उसमें मिल जावे तब उतार कर ठंडा करके रख छोडे। फिर इस मल्हमको उस घाव पर लगावे और देखे कि किसी तरफ को सूजन तो नहीं है और जो सूजन होवे तो उस सूजन पर ये लेप लगावे॥

लेपकी विधि

मोरंजानेकडवा २मा० नाखूना २तोले अमलतास का गूदा २ तोले बाबूनेके फूल एक तोले अफीम २ माशे इन सबको हरी मकोय के रस में पीस कर गुन गुना करके लगावे फिर दो चार दिन के पीछे फिर उसको देखो कि उस घाव में से पीव निकलती है या पानी निकलता है जो पानी निकलता हो तो ये मल्हम लगावे॥

मल्हमकी विधि

पहिले गुलाब के फूलों का तेल गरम करे १२ तोले और पीला मोम दो तोले उसमें डाल कर पिघलावे फिर मेलखडी दो माशे रस कपूर दो माशे सफेदा काशकारी २ माशे मुरदासंग २ माशे मुरगी के अंडे के छिलके की भस्म ३ माशे नीला थोथा जला हुआ २ रत्ती इन सबको पीस छान कर उस तेल में मिलावे जब थोड़ी सी चासनी हो जाय तो नी चे उतार रक्खे और ठंडा करके घाव पर लगावे और जो यह फोड़ा मुसलमान के माथे में होय तो उसको हलवान

के मांस का शोरवा और रोटी खिलाना चाहिये और हिंदू को मूंग की दाल रोटी खिलावे और खटाई लाल मिर्च व गैरह सबसे परहेज करना चाहिये और जो इस दवा के लगाने से पानी निकलना बंद न होतो इसकी चिकित्सा करनी छोड़दे और जान ले कि ये फोड़ा जहर बाद का है आदि में छाला प्रगट होवे तो उस्में चीरा देवे और दो तीन दिन तक नीम के पते बांधे पीछे ये मल्हम लगावे॥

मल्हम की विधि

पहिलें ११ तोले गुलाब के फूलों का तेल गरम करे फिर उस्में नीम के पतों का रस ४ माशे बकायन के पतों का रस ४ माशे बेरके पतों का रस ४ मा॰ हरे आमलों का रस ४ मा॰ इन सब रसों को उस तेल में मिलावे जब सब रस जल जाय और तेल मात्र रहिजाय तब पीला मोम २ तोले सफेद मोम २ तोले डाले फिर सफेदा २ तो॰ मुरदासंग ४ मासे दम्मुल अखवेन ४ मा॰ नीला थोथा चार रती इन सब को महीन पीस कर उस तेल में मिलावे जब चासनी हो जाय तब उतारले फिर इसको घाव पर लगावे॥

और एक फोड़ा माथे पर तथा कान पटी पर तथा गुदी पर ऐसा होता है कि उस्में कुछ भय नहीं होता याती वे आपही फूट कर अच्छे हो जाते हैं या चीरने से या मल्हम लगाने से अच्छे हो जाते हैं ऐसे सब प्रकार के फोडों के वास्ते बहुत अच्छी अच्छी दो चार मल्हम इस ग्रंथ के अंत

में लिखेंगे सब प्रकार के फोड़ा और घावों को बहुत जल्दी अच्छा कर देती है और एक रोग सिर में यह होता है कि बहुत सी छोटी छोटी फुनसियां सिर में हो जाती है और उनमें से पानी निकलता है और जहां वह पानी लग जाता है वहां छत्तासा हो जाता है और वह पानी चेपदार गोंद के पानी के सदृश होता है इन फुनसियों का स्थान इस नीचे लिखी तसवीर में समझ लेना और इस रोग की चिकित्सा इस प्रकार से करनी चाहिये कि नीचे लिखा मल्हम लगावे ॥

मल्हम की विधि



गौका घृत धोया हुआ ७ आधपाव कथेला ६ माशे काली मिर्च दो माशे सिंगरफ २ माशे इन सब को पीस छानक र उस घी में मिलावे फिर उस घी को एक रात्रि भर ओस में धर राखे दूसरे दिन उन फुनसियों पर लगावे परंतु इस दवा के लगाने से पहिले उस स्थान को गरम जल में सांभ र नोन मिला कर धो डाले फिर उस मल्हम को लगावे इ सी तरह सात दिन तक मल्हम लगावे तो आराम हो जाय गा और जो इस से आराम न हो तो पारा छै माशे अजावाय न खुरासानी पान बंगला मसाले समेत चार नग और प हिले मल्म की दवाइयां उसमें मिलावें फिर सांभर नो न और गरमजल से धो कर यही मल्हम लगावे और यह औषधि पिलावे ॥

दवा पीने की

गुलाब के फूल ४ माशे मुनक्का ७ दाने बनपसा के फूल ६ मा सुखीमकोय ६ मा इन सब को रात को पानी में भिगोदे और सबेरे ही औटा कर छानले फिर इसमें २ तोले मिश्री मिलाक र पिलावे और चौथे दिन यह दवा देवे ॥

दवा दूसरी

रेवतचीनी का सत २ माशे ले कर एक तोले गुलकंद में मि लाकर पिलावे इस के पीने से वमन होगी और दस्त भी आ वेंगे और दो पहर के बाद ऐसा भोजन करावे कि जो अव गुण न करे फिर दूसरे दिन ये दवाई देवे ॥

दवा तीसरी

बीदाना २ माशे रेसाखतमी ४ मा॰ मिश्री १ तोले इनका श र्बत तथा लुआब बना कर पिलावे जब मवाद निकल जा वेगा तब आराम हो जायगा ॥

गले के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा गले पर होता है सूरत उसकी यह है कि पहिले तो सूजनसी मालूम होती है उस वक्त उसके घर के माता पिता तथा अन्य पुर्ष अपनी मत के अनुसार सुनी सुनाई दवा तथा सेका दिक करते हैं जब ये पांच चार दिन का होजा ताहै तब उसमें पीड़ा और जलन पैदा होती है तब हाकीम के पास जाते हैं जब उस पीड़ा के कारण करके ज्वर होजा ताहै तब बहुत से मूर्ख हकीम उसको अमल देते हैं जब उ स्से कुछ नहीं होता तब जर्राह को बुलाते हैं और कोई जर्राह भी ऐसा मूर्ख होता है कि उस सूजन पर तेल लेप लगा देता है तो उस्से भी रोगी को कष्ट पहुंचता है और जब ये सूजन पैदा होती है उस वक्त इस्की सूरत ककुए कीसी होती है फिर भिंड के छत्ते के समान होजाता है इस का निशान इस आगे लिषी तसवीर में समझ लेना इस रोग पर ऐसा लेप लगाना चाहिये जो इस सूजन को नर म करे और इस्को फोड़ कर मवाद को निकाले वो दवा ये है

लेप

बालछड़ १ तोले नागरमोथा ६ माशे रेवंद खताई- ६ माशे॰ नाखूना ६ माशे उश्नक रूमी ६ माशे अमल तास का गूदा २ तोले इन सब को हरी मकोय के



केअर्कमेंपीसकरगुनगुनालेपकरैऔरमेरोनसुकीफस्द
खोलेजवउसफोड़ेकीसूरतवदलजावेतववोमल्हमलगा
वेजोपहिलेंवर्णनकियागयाहैऔरघावोंपरयेदवाल
गावे॥

दवा

नानपावकागूदा५तोलेलेकरवकरीकेदूधमेंभिगोदे
फिरउस्कोनिचोड़कर खरलकरेऔरउसमेंदम्मुलअख
वेनकेशरअंजरूतअफीमयेसवदवाछैछैमाशेलेऔ
रशहत४तोलेमुर्गीकेअंडेकीजरदी३नगइनसवको
एकत्रकरखरलकरैऔरफोड़ाजहांतकफैलाहोउस
नाहीवड़ाएकफायावनाकरउसपरइसदवाकोलगाक

र इस फाये को फोड़े पर लगादे जब उसमें ठीक देदी री तो काट कर निकाल देवे जब फोड़ा लाल हो जाय और उसमें से दुर्गंधि न आवे तब इस दवा को बंद करे और ये मल्हम लगाना सुरू करे ॥

मल्हम की विधि

गुलाब के फूलों का तेल परम करके उसमें रतनजोति २ तोले डाले जब उस का रुन्चर रंग कबूतर के रुधिर के समान होजावे तब उसको छानले फिर उसमें मोम २ तोले नीला थोथा २ रत्ती मिलावे और इसमें एक तोले जैतून का तेल मिलाकर रख छोड़े और उस घाव पर लगावे और इस रोग वाले मनुष्य को धोवा मूंग की दाल और रोटी खिलाना चाहिये फिर एक सेर पानी को औटावे जब आधा पानी जल जावे तब ठंडा करके रख छोडे फिर प्यास लगे जब इसी पानी को पीवे कच्चा पानी न पीवे ॥

कान की लौ के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा कान की लौ के नीचे होता है और यह फोड़ा भी पहिले मालूम नहीं होता केवल सूजन की गांठ सी होती है पीछे पक कर फोड़ा हो जाता है इस फोड़े का निशान आगे लिखी तसवीर में समझ लेना इस फोड़े की चिकित्सा इस प्रकार करनी चाहिये कि पहिले इस पै रासीद वा लगावे जिस समय ये फोड़ा नरम हो जावे क्योंकि जो इस कच्चे फोड़े में चीरा लगाया जावे तो अपयश होता है अर्थात् रोग बढ़ जाता है इस लिये चार दिन की देरी हो जाय

तो कुछ डर नहीं परंतु पके पर चीरा देने से रोग को बहुत जल
दी शांति होती है और पकने में दवा लगावे॥

दवा

सहतूत के पत्ते २ तोले नीम के पत्ते २ तोले सफेद प्याज २
तोले सांभरनोन ६ मासे इन सब को महीन पीस गरम क
रिके लगावे जो इस दवा के लगाने से फूट जाय तो बहुत
अच्छा है नहीं तो इसको नश्तर से चीरा देवे अथवा
जैसा समय पर उचित समझे वैसा करैं और ये मल्हम
लगावें॥

मल्हम

सरसों का तेल सात तोले लेकर इसको आंच पर गरम-



करे फिर इसमें पीला मोम एक तोले खपरिया ॰ तोले उड़द
का आटा दो तोले इन सब को उस तेल में मिलाकर खूब
गड़े और ठंडे करिके फोड़े पर लगावे और जो इस मल्हम
से आराम न हो तो वह मल्हम लगावे कि जिस में रसजोत
मिली है और इस पुस्तक के ४१ के सफे में वर्णन कर
आये हैं और जब मांस बराबर होजावे तब ये काली मल्ह
म लगावे॥

काली मल्हम की विधि.

कड़वा तेल ४० तोले सिंदूर ४ तोले इन दोनों को कढ़ाई में
गेर कर आंच पर पकावे और नीम के घोटे से घोटे जब इ
सका तार बंधने लगे तब उतार कर ठंडा कर रख छोड़े-
फिर समय पर लगावे और फोड़े में चीरा दे उस वक्त चौड़ा
चीरा देवे क्योंकि कम चीरा देने से इसमें चीरा रह जाता है
इस वास्ते चौड़ा चीरा देना अच्छा होता है

नेत्र के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा आंख के
कोने में होता है औ
र यह आप ही फूट
जाता है इस फोड़े
का निसान इसी त
सवीर में समझ
लेना॥



इसफोडेकीचिकित्सा यहहैकि पहिलें तौ वह मल्हम लगावे जिस्में नीला थोथा और जंगाल पडाहै जब इसका मवा दा निकल जावे तब यह मल्हम लगावै॥

मल्हमकी विधि॥

ऊंटके दाहने घुटनेकी हड्डी २ तोले घुटने जलाकर निकाल डाले और मोम सफेद ६ माशे सिंदूर ४ माशे मिलाकर रख वरगडे और लगावे और नाकमें यह दवा सुंघावे॥

सूंघनेकी दवा

नकछिकनी एक तोले सूखा नमारवू ६ माशे कालीमिर्च ३ माशे सबको पीसकर सुंघावे क्योंकि मादा ऊपरकी ओर झुकजायगा तौ शीघ्र आराम होगा किसवास्ते कि यह स्थान नासूरका है और जो इस दवासे आराम न होवे तौ ऊंटके दाहिने घुटने की हड्डी बासी पानी में घिसकर उसकी बती रक्खे और उस्में का फाया बनाकर रक्खे क्योंकि यह चिकित्सा नासूरकी है और यह फोडा भी नासूर हीके भेदों में से है दूसरे उपायसे कम आराम होता है

नेत्रोंकी बाफनीका यत्न

एक रोग पलकोंमें ऐसा होता है कि वह तमाम पलकों के बालोंको उडा देता है और पलक लाल पड जाते हैं इसका इलाज इस प्रकारसे करै॥

दवा

तिलोंका तेल पौने छटांक लेकर उसे इमरतबान में करै और उस्में गुलाबके फूल २ तोले ताजा मिलाकर-

४० दिनतक धूपमें रक्खे और जो मस्से फूल हों तो बेरे के पत्तोंमें औटावे जब आधा पानी रहे तब छानलेवे फिर उसमें तिलका तेल डालकर औटावे जब पानी जलजाय और तेल मात्र रहिजाय तब ठंडा करिके सीसी में भरर क्खे इसको हकीम लोग गुलरोगन बोलते हैं और अक मरबना बनाया अतारों की दुकान पर मिलता है रोसा गुलसोन दो मासे मुर्गीके अंडे की सफेदी दो मासे कुलफा के पत्ते दो मासे इन सबको मिला कर पलकों पर लेप करै

दवा दूसरी

बादाम की मींगी स्त्री के दूध में घिस कर लगाया करै अथवा अजमोद को मुर्गी के अंडे की सफेदी में घिसक र लगाया करै २ अथवा धतूरे के पत्तों का अर्क और भांगरे के पत्तों का अर्क इन दोनों को मिला कर इस में सफेद धा कपड़ा भिजो कर सुखाले और गौ के घी में उस कपड़े की बत्ती बनाकर जलावे और मिट्टी के बरतन में उसका का जल पाड़ कर नित्य प्रति लगाने से सब पलक ठीक अप नी असली सूरत पर आ जावेंगे॥

और दूसरा रोग यह होता है कि नेत्र की ऊपर की वा पलकों में खपटा सा जम जाता है इस रोग के होने से पल क भारी हो जाते हैं और भैंडे आदमी की तरह दीखने लग ता है ऐसे रोग की यह चिकित्सा करे कि इसकी आंखों में सलाई का फेरना बहुत गुण करता है॥

॥२॥

नेत्रकेनासूरकायत्न

एक फोड़ा आंखके कोनेमें जिसजगहसे गीड़ निकलती है उस मुकाम पर होता है और परीक्षा इस फोड़े की यह है कि पहिले तो इसकी रंगत सुर्ख होती है फिर इसका मुख सफेद होजाता है फिर पककर घाव होजाता है फिर घावके होनेपर नेत्रोंको बड़ा दुख दाई होता है इसको पहिले हकीमोंने नासूर वर्णन किया है और इस फोड़े में और पहिले आंखके फोड़े में जो वर्णन पहिले कर आये हैं इतनाही भेद है कि इसका मुख सफेद होता है और पहिले फोड़े का मुख लाल होता है इस रोगका निसान नीचे लिखी तसवीर में समझ लेना॥



और ये फोड़ा कभी तो बहने लगता है और कभी फिर भर आता है इसकी चिकित्सा यह है॥

इलाज

अलसी और मेथी का लुआव निकाल कर आखों में टप काने से ये रोग जाता है १ अथवा मुर्गी के अंडे की जर्दी और केशर इन दोनों को पीस कर घाव पर लगाना॥ अथवा अफीम केशर इन दोनों को पीस कर नेत्रों के ऊ पर लगाना॥ और जो ये रोग बहुत ही दुष देने लगे तो कु त्ते की जीव जला कर उसे मनुष्य की लार में घिस कर नेत्रों में लगाने से नासूर बहुत जलदी अच्छा होता है॥ और पहिले जो आंख के कोने में फोड़ा का इलाज हम लिख आये हैं वे भी इसको फायदा करते हैं अथवा ए लुआ· लोबान· अनार के फूल· सोहन मारखी· दम्मुल अखवेन· फिटकरी ये सब दवा तीन तीन मासे ले औ र इनको महीन पीस कर गुलाब जल में मिला कर इस की लंबी गोली बनाले फिर नासूर के मुख को पोंछ कर उसमें टपकावे तो सात दिन के लगाने से बिलकुल आरा म हो जायगा॥

नेत्रों के घाव का यत्न

एक फोड़ा इस प्रकार का होता है कि नेत्रों में गेहूं के आकार का एक घाव हो जाता है उसका निशान इस नस्तर में समझो इस रोग की चिकित्सा ये है

गोली

सोना माषी को गधी के दूध में आठ पहर भिगो कर छाया में सुखावे और अफीम ३॥ मासे कतीरा ३॥ मासे-



गों दरयाई २॥। माशे कुंदरू गोंद २॥। माशे सफेदा २ तोले चार माशे बबूल का गोंद २४ माशे सब को कूट छान मु रगी के अंडे की सफेदी में मिला कर गोली बनावे औ र एक गोली को पानी में घिसकर नित्य आंखों में लगा या करै तो यह घाव अच्छा होय॥

पलकोंकीसूजनकायत्न

एक रोग यह होता है कि नेत्रों के किनारों पर सूजन हो ती है इस की चिकित्सा यह है॥

दवा

मोम को गरम कर के लगावे १ अथवा किस मिस को ची र कर उसे गुन गुनी करि के सूजन पर लगावै २ अथवा ब ड़ी कौड़ी पानी में पीस कर पलक की सूजन पर लगावै मक्खी के सिर को काट कर सूजन पर मलै तो सूजन अ च्छी होय अथवा रसौत को पानी में घिस कर पलक

की सूजन पर लगाया करै तो सूजन जाती रहै ५ प्रकट हो कि नेत्रों के रोग तो बहुत हैं इस वास्ते उन सब नेत्र रोगों के इलाज विस्तार पूर्वक इस के तीसरे भाग में लिखेंगे यहां तो केवल घाव और फोडों का इलाज लिखा गया है॥

नाक के फोडे का यत्न

एक फोडा नाक में होता है उसको नाकडा कहते हैं इस फोडे का निशान नीचे लिखी तसबीर में सम झ लेना इस रोग की चिकित्सा हकीमों ने इस प्रकार लिखी है कि पहिले यह सूघने की दवा सुंघावै॥



सुंघनीदवा

सेंधानोन चौकिया सुहागा फिटकरी कच्ची जंगाल ज ला हुआ इन सब को बराबर ले महीन पीस कर नाक में नास देवे जब वह फोड़ा चारों तरफ से नाक की त्व चा को छोड़ देवे तो उस बुरे मांस को सुई से छेद क र निकाल डाले फिर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

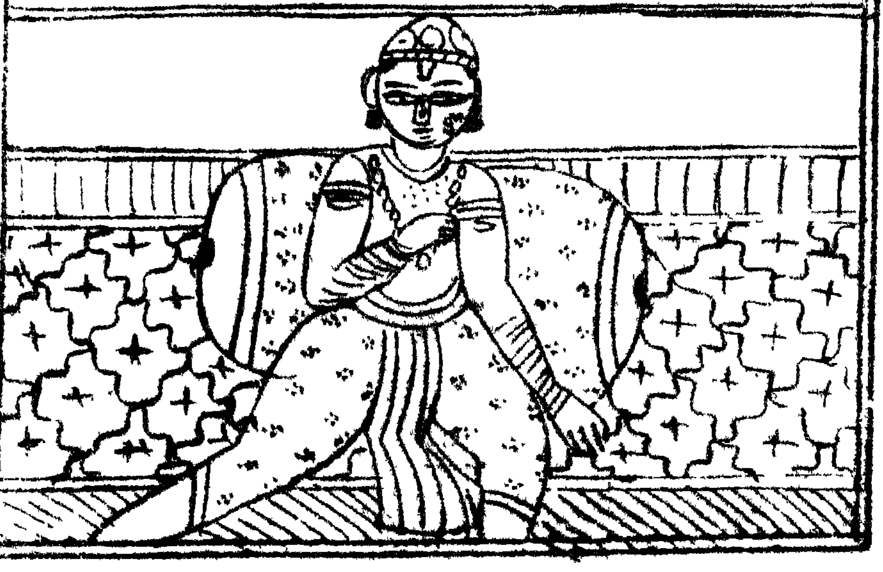
गौ का घी २ तोले नीला थोथा २ माशे जंगाल दो माशे पीली राल २ माशे सफेदा कासगरी ६ माशे इन सब को महीन पीस कर उस घृत में मिला कर पानी से खूब धोके लगावे ईश्वर की कृपा से बहुत जलदी आराम होगा॥ अथवा नाक के भीतर घाव होय तो ये द वा लगाना चाहिये मोम पीला १ तोले गुल रोगन ३ तोले लेकर इस्में मोम को पिघलावे फिर उस्में मुरदासंग २ माशे थंग ४ मा॰ मिला कर नाक में भरे तो घाव अच्छा होय अथवा बनपसा के फूल ६ मा॰ बीहदाने ६ मा॰ इन दोनों को पानी में औटावे फिर इन को मसल कर छान ले फि र इस्को दो तोले गुल रोगन में मिलावे और एक तोले सफे द मोम मिला के मल्हम बना के घाव पर लगावे॥

नाक के दूसरे घाव का यत्न

एक घाव नाक के भीतर ऐसा होता है कि उस्में से कभी तो राधि निकलती है और कभी बंद हो जाती है इस घाव के वा स्ते ये दवा बहुत फायदा करती है॥

मुरगे की चर्बी और मोम दोनों को बराबर ले कर घी में पका वे जब ठंडा होजाय तब उस्मे सफेद कपडे की बती बनाकर उसे नाक में रक्खे अथवा कत्था सफेद मुरगी की चर्बी इन दोनों को पीस कर नाक के भीतर लेप करे॥ अथवा मुरदा संग भेंस के सींग का बूरा मुरगे की चर्बी इन सब को गुल रोगन में पकावै जब मल्हव होजाय तब रुई की बती भिगो कर नाक में रक्खे॥

अथवा मोम कपूर ३॥ माशे शफेदा २॥॥ तोले गुल रोगन २५ माशे पहिले गुल रोगन को गरम करे फिर उस्में मोम को मिलावे और सफेदा को पानी में धोकर मिलावे फिर इसे गरम कर खूब घोटे जब मल्हम के सदृश हो जाय तब रख छोडे फिर उस घाव को देखे जो घाव नाक में बहुत भीतरा होवे तो इसकी बती बना कर नाक में रक्खे और जो घाव पास होतो वैसे ही लगादे इन घावों का निसान नीचे लिखी तसवीर में समझ लेना चाहिये॥



नकसीरकीचिकित्सा

औरजोनाकसे रुधिर वहाकरता है उसेनकसीर कहते हैं येदो प्रकारकी होती है एकतो वो हरानसे दूसरी खून की गरमीसे जो नकसीर वहरानके कारणसे होती उसके लक्षण येहैं कि चौथे सातवें नवें ग्यारवें और चौदमे दिनगरमीकेदिनोंमें उत्पन्न होती है उसे वंदन करें क्यों कि इस केवंद करनेसे जानका भय है और जो वोहरान के कारण से नहोतो कुदरू गोंद से वंद करदें॥

विधि

कुदरू गोंद को महीन पीसकर नास लेवे॥ अथवा धनियेकेसीरमें कुदरू गोंद को पीसकर मिलावे और धनियेकेसीरमें मिलाकर नाकमें डाले २ अथवा इसकी वती वनाकर नाकमें डाले॥ अथवा जूफा अफीम कुदरू गोंद· काही· ममर· अनार के फूल· ववूलकी पतियोंका सत· कपूर इनसव को पीसकर ललाट में तथा कनपटी परलेप करे॥ इति॥

और दूसी नकसीरऐसी होती है कि उसका खून वंद नहीं होता उस रोग में मनुष्य मृत्यु के समीप पहुंचजाता है· जराहि को चाहिये कि इस रोगवाले मनुष्य की सरे रोनस की ओर वासलीक नसकी फस्त खोले ये लगावे॥

दवा

मुंडी छै माशे खवा धनियां ६ माशे· गाजवां ४ माशे सफेद चंदन ४ माशे इन सव को रात्रि के समय जल में भिगोदे

मेंभिगोवे और सबेरे ही मलछानकर उसमें अनार का शर्बत मिलाकर पीवे और नाक में यह दवा ईसूंघे॥

नुसखा

खारेके फंदे की भस्म चंडे के छिलके की भस्म जंगालज महुआ इन सब को पीस कर सुंघावे॥ और जो इससे बंद नहीं तो यह नास दें॥

दवा

जहरमोहरा खताई वंशलोचन सफेद कत्था बड़ी इलाय चीके बीज सेलखड़ी इन सब को समान ले पीस कर सुंघा वे और माथे पर तथा कनपटी पर ये दवा लगावे॥

दवा

बबूल की फली १ तोले बबूल के पत्ते १ तो हरी मह्दी १ तो सूखे आमले १ तो सफेद चंदन १ तो इन सब को पीसक र लगावे जो इस्से भी न बंद हो तो यह लगावे॥

दवा

नाजके बीज सफेद चंदन एक एक तोले कपूर ६ मा इनको महीन पीस हरे धनिये के अर्क में मिलाकर लेप करै ये चि कित्सा याद रखने योग्य है॥

पीनस का यत्न

और एक रोग नाक में ये होता है और उसे पीनस कहते हैं ये उपदंश रोग से संबंध रखता है जो रोग उपदंश को प्रकट न करे और वो कहे कि मुझे उपदंश नहीं हुआ तो कभी विश्वास न करे क्यों कि उपदंश की नासी बापदादे से भी

हुआ करती है क्योंकि बहुतसे हकीमोंने और डाक्टरोंने लि
खा है और कोई २ कहते हैं कि पीनस गरम न जलसे भी होती
है और अपनी आंखोंसे भी देखा है सूरत उस्की यह है कि प
हिले तो सुगंध और दुर्गंधि कुछ नहीं आती जाती फिर म-
स्तक और ललाट में पीड़ा हुआ करती है और बाणी में भी कु
छ विक्षेप होजाता है और उस्की चिकित्सा यही है उस रोगी
को जुलाव देवे और फस्त खोले और वमन करावे और
ये दवा सुंघावै॥

दवा

पालास पापड़ा· कंजाकी मींगी· लाल फिटकरी· नकछि
कनी स्वरवातमारव· इनसबको बराबर ले पीसछानक
र सुंघावे जो छींकें बहुत आवें तो शीघ्र आराम होगा॥
नहीं तो नाक के बीच की हड्डी जाती रहती है उस्के लिये देव
दारू का तेल और तारपीन का तेल अंग्रेजी बहुत गुणदा
यक होता है अथवा कदू का तेल वा काहू का तेल वा मी
ठके बीजों का तेल गुण करता है और जो सामर्थ्य हो तो
चोबचीनी का या उस्की माजून का सेवन करे अंत को ह
डी बैठकर नाक बैठ जाती है और बाणी बदल जाती है -
एसी दशा में सिवाय पछताने के कुछ नहीं होता है परंतु रूप तो बिगड़
हो जाता है और जो रोग उपदंश के कारण से होवे उस्की चि
कित्सा यह करे कि पहिले तो जमाल गोटे का जुलाब देवे
फिर वे गोली खिलावे जो उपदंश की चिकित्सा में लिखी
है और यह गोली देवे॥

गोली

कालीमिर्च·पीपल·सूखे आमले एक एक तोले ले और स
बको कूट छानकर सात वर्ष के पुराने गुड़ में मिला कर जंग
ली बेर के प्रमाण गोली बनावे और प्रात काल के समय ए
क गोली मलाई में लपेट कर खिलावे और ऊपर से दही का
तोड़ पिलावे और दाल मूंग की रोटी खवावे और ओटा हु
आ जल पिलावे इस गोली के सेवन करने से नाक के स
ब रोग अच्छे होंय॥

नाक की नोक के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा नाक की नोक पर होता है और रंगत उसकी काली
होती है और वो जोंक के सदृश बढ़ जाता है परन्तु काटना
उसका कठिन है क्योंकि इसका रुधिर बंद नहीं होता है॥
और ये रोग मैंने एक बार एक मनुष्य के देखा है और उसकी
चिकित्सा को देखी और अपने हाथ से करी परंतु ठीक नहीं
बनी अंत को मैंने और हमारे मित्र डाक्टर बाबू जमना पर
शाद साहब ने उसके कुटुंब के लोगों से खून क्षमा करा लिया
और फिर उसकी चिकित्सा बहुत प्रकार से अपनी बुद्धि
माफिक करी परंतु कुछ बस नहीं चला ये बातें इस लि
ये वर्णन करी हैं कि यदि कोई सज्जन मनुष्य इस फोड़े
वाले मनुष्य को देखे तो एक ही बार इसकी चिकित्सा का म
यत्न न करे क्योंकि मेरी बुद्धि में यह रोग असाध्य है और सर
न इसका इसन सर्वार में समझ लेना॥
और एक फोड़ा मुख के भीतर कान के पास होता है॥



उस्को रवुनाक कहन है उस्की चिकित्सा यह है कि पहिले सरो नस की फस्त खोले फिर ये जुलाब दे॥

दवा

शाहतूत के पत्ते ४नग कोकनार ४ नग इसपंद २तोला मस्सूर सावत २तोले इन सब को दो सेर पानी में ओटा वे आधा पानी रहे तव इस्के कुल्ले करै पीछे यह दवा दे॥

दवा

गेहूं की भुसी ६मा· नारवूला १तो· खतमी के फूल एक तोले· तूंभर १तो· सरवाजूफा १तो· सेंधा नोन ६ माशे इन सव को तीन सेर पानी में ओटावै जव एक सेर पानी रहे तव कुल्ले करै॥

और जो इस दवाई करने से फोड़ा फूट जावे तो उत्तम है नहीं तो इस दवा के कुल्ले करै

दवा

अनार की छाल ६माशे· मूली के वीज छै माशे स

सफ़ेदजाज छै माशे नौसादर दो माशे इन सब को आ
धसेर तेज सिर के में औटा कर कुल्ले करावे जव फो
ड़ा फूटजावे तो ध्यान रक्खे कि घाव है या मिलगया
जो मिलजाय तो ये दवा करे॥

दवा

कोकनार २नग गेहूं की भुसी ६माशे खतमी के फू
ल ६माशे गुलनार ६मा· इन सब को पानी में औटा
कर कुल्ले करावे जो घाव होय तो ये दवा करे

दवा

खतमी १तो· खतमी के फूल १तो· बनपसा के फूल १तो
लिसोडे १तो· मेथी के वीज १तो· इन सब को जो कुट क
रके सेर भर नदी के जल में औटावे पहिले भिगो कर
फिर काले तिलों का तेल मिला कर औटावे जब पानी
जल जाय और तेल मात्र रहिजाय तब छान कर उ
स घाव पर लगाया करे॥

एक फोडा मुख में जीभ के नीचे होता है और
उस की सूरत छाले कीसी होती है और एक फोडा
कोने की ओर झुका हुआ होता है और उस के कार
ण करिके बाहर की ओर एक गुठली सी हो जाती
है उस गुठली पर यह लेप लगावे॥
निर्विसी हरी मकोय इन दोनो को पीस कर गरम
करके लगावे॥ और जो छाला सा होता है उस्की
चिकित्सा बद है॥

दवा

वायविडंग· माईछोटी· माईबडी· माजूफल हरा· सेंधनो न· बराबर ले पानी में ओटाकें कुल्ला करे और फूटजा वे तब ये दवा करे

दवा

धनियां सूखा· कत्था सफेद· माजूफल· इन को बराबर ले महीन पीस कर लगावे और इन्हीं को जल में ओटा कर कुल्ले करे और उसमें बुरा मांस उत्पन्न होजाता है और सबरी जीभ पर छाजाता है तो उसको बीस बाईस वर्ष के उपदंश का मवाद जानो इस की दवा बहुत क ठिन है और बहुत से फोडे इसी के कारण करिके हो ते हैं इसी सबब से कोई मनुष्य रोग की चिकित्सा क री जाती है कि उस बुरे मांस को जीभ परसे काट डाले तब उसमें से रुधिर निकलने को ये दवा करे॥

दवा

बनात की भस्म· सीपकी चूना सरबूका कोयला· से लखली· रूमी मस्तगी· खरगोश की खाल· गोमाका रस छुधांटे के पत्तों का रस· इनको पीस कर लगावे जब रुधिर बंद होजाय तब जुलाब देवे और प्रकृति के अनुसार दवाई खिलावे घाव पर ये लगावे

दवा

फिटकरी कच्ची ४मा· नीलाथोथा भुना ४मा शे गौका घृत ४ तोले इन दोनो दवाओं को पीस कर घीमें मिला वे और जल में खूब धो कर लगावे और जो

रोगी माने तो यही चिकित्सा करे और जो न माने तो कभी उस्की चिकित्सा न करे जैसा सुना सिवहो करे और दूसरा फोड़ा जो मुख के कोने की ओर को मुका हुआ होता है और बाहर की ओर उस्की गुठली होती है उस गुठली पर तो यह लेप करे जो वर्णन कर चुके हैं और भीतर ये दवा लगावे॥

दवा

रूमी मस्तगी सफेद कत्था माजूफल भुना वंशलोचन गाजवां की भस्म ये सब दवा चार२मा॰ इन को महीन पीस कर लगावे और मुंग की धोवा दाल और विना चुपड़ी गेंहूं की रोटी खाय॥

होठके फोड़े का यत्न

एक फुनसी होठों पर होती है उस पर मुदु करने वाला मल्हम लगावे जिससे मवाद शीघ्र ही निकल जावे और केले के पत्ते घृत में चिकने कर गले में बांधे कि सूजन को गुण करता है और इस्की चिकित्सा शीघ्र करे क्योंकि ये फोड़ा पेट में उतर जाता है और उस्के बाहर फूटने का यह मल्हम है॥

दवा

विरोजा२तो॰ रेवतचीनी२मा॰ अंजरूत४मा॰ इन को पीस विरोजे में मिला जल से खूब धोवे कि मल्हम हो जाय तब लगावे जब फूट जाय और मवाद निकल जावे तब ये लगावे॥ दवा

रसोत २मा· नगरकी लकडी २मा· इन सवको पीसकर गौके घीमें मिलावे और औरजो कढाई में डाल कर खूब घोटे तो बहुत उत्तम है इस दवा के दस पांच वार लगाने से आराम हो जाय॥

डाढ के फोडे का यत्न

एक फोडा दाढ में होता है उसकी दवाई यह है

दवा

नीमके पते चकायन के पते· सम्भालू के पते· नर्मा के- पते इन चारों को वरावर लेकर जलमें औटावे और वफारा दे और उसी को वांधे और उसी के जलसे कुल्ले करे औरजो भीतर ही फूट जावे तो उत्तम है और वाहर फूटे तो विनादांत के उखाडे आराम न होगा औरजो यह फोडा वाहर हुआ हो और वाहर ही फूटे तो उसको चीर- डाले और चार फांक करे और नीम के पते तथा नोन वांधे औरजो मल्हम ऊपर वर्णन किये गये हैं उनमें से कोई सी मल्हम लगावे॥

अथवा

काले तिलों का तेल पांच तोले मोम सफेद एक तोले लोहवान एक तोले मुरदा संग पांच माशे नीला थोथा एक माशे पहिलें तेल को गरम करे फिर मोम डालकर पिघलावे पीछें सव दवाई यों को पीस कर मिलावे- जव पक जावे तव खूव गाढे ठंडा करकाम में लावे औरजो भीतर फूटे तो वह कुल्ले करावे जो खुनाकराग में वर्णन कर

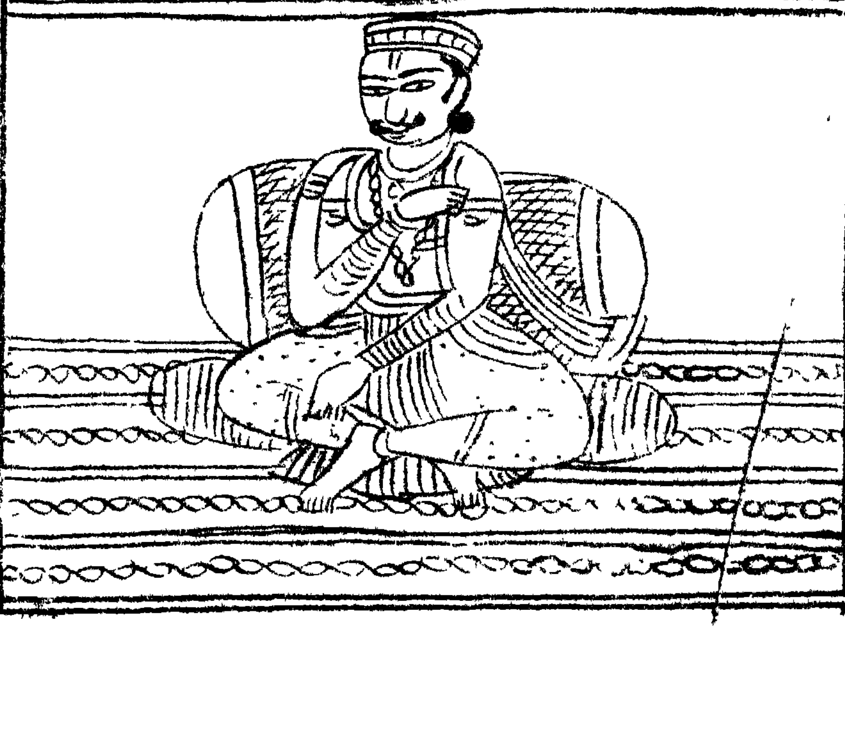
आये हैं और जो घाव भीतर से शुद्ध हो जाय तो तेल भर दें जो जो ऊपर कह आये हैं और यहां भी लिषते हैं कि वह तेल नारवीन या जल पाई का तेल है और जो मुख के भीतर छोटे २ छाले होंय तो बरफ के पानी से कुल्ले करावे तो निश्चै आराम हो

ठोडी के फोडे का यत्न

एक फोडा ठोडी पर होता है और उस के पास लाल सूजन होती है इस फोडे का निसान आगे की नस बीर में लिखा है

इलाज

इस फोडे पर जंगाली मल्हम लगाना चाहिये और जंगाली मल्हम वह है जिस्में रेवत चीनो और विरोजा मिला है जब मवाद निकल जावे तब स्याह मल्हम लगावे और जो उस के नीचे गुठली हो जाय तो उस्पर नीम के पत्ते और नोन पीस कर बांधे जब वो पक जावे तब वे मल्हम लगावे जो अभी वर्णन किये हैं॥



कानके फोडेका यत्न

एक छोटासा फोडा कानके भीतर होता है उस्की सूरत येहै फिटकरी सफेद तथा समुद्र फेन पीसकर कानमें डाले-और ऊपर से कागजी नीबू का रस डाल देवे जब मवाद बंद होजाय और पीडा शांति होजाय तौ मूलीके पते मीठे तेल में जला कर छानले और उस तेल को कानमें डाले तो आराम हो और इस का निसान इस तसबीर में देषो॥



दांतोंकी पीडाकायत्न

जो दांतों में पीडा हो अथवा दांत हिलते होंय या दांतों से रुधिर बहता हो तथा दांतो से दुर्गंधि आती हो तौ ये दवा करे॥

दवा

माजूसफेद तीनमाशे अनारकाछिलका तीनमाशे इन दोनों को एक सेर पानी में ओटा कर कुल्ले करावे

ओर जमीरी के पत दांतों पर मले अथवा हरा धनिया ने जा सिर के में पीस कर मले अथवा ताड़ के वृक्ष का छिल का खजूर का छिलका कचनार की छाल महुए की छाल इन सब को एक२ तोले लेकर जलावे अथवा इन सब की राख एक२ तोले ले और रूमी मस्तगी चार माशे सफेद मूंगे की जड़ छे माशे माजूफल भुना हुआ छे माशे मायासफेद कत्था छे माशे सोना मारवी तीन माशे इन सब को पीस कर मिस्सी के सदृश दांतो पर मले॥

अथवा

सफेद कत्था एक तोले फिटकरी सफेद छे माशे माजू-फल छे इन तीनों को जो कुट करके एक सेर जल में औटा वे जब आधा पानी जल जाय तब कुल्ले करावे॥ अथवा लोह चूरा ८ तोले हरा माजूफल ४ तो॰ लीला थोथा भुना हुआ १ तोले सफेद कत्था २ तोले छोटी इलायची के दा ने ६ माशे इन सब को महीन पीस कर मिस्सी की तरह दां तो पर मले अथवा

लोह चूरा ऽ। सेर विना छेद के माजूफल ऽ= पाव छोटी इला यची छिलके समेत एक तोले लीला थोथा १ तोले लाल कत्था २ तो॰ रूमी मस्तगी ४ मा॰ हीराकसीस ४ मा॰ सोना माखी ४ माशे सब को महीन पीस कर दांतो पर मले अथवा तांवे का बुरादा १ छटांक अनार का छिलका ऽ- माजूफल २॥ तो॰ फि टकरी १ तो॰ इन सब को महीन पीस कर दांतो पर मले अथवा रूमी मस्तगी माजूफल- हीराकसीस मई

बड़ी हर्ड का छिलका· फिटकरी भुनी· नीला थोथा भुना मौलसिरी के पेड़ की छाल· सब को बराबर लेके महीन पीस कर दांतो के मलै और मुख को नीचा करके लार टपकावे फिर पान खा कर लार को बंद करे

अथवा

कपूर को गुलाब जल में और सिरके में मिला कर गौ के दूध में मिला कर कुल्ले करे॥

अथवा

फिटकरी भुनी एक भाग· सहद दो भाग· सिरका एक भाग· इन तीनों को आंच पर पकावे जब गाढा होजावे तब दांतो पर मलै

अथवा

सुपारी की राख· कत्था सफेद· काली मिर्च· रूमी मस्तगी· सेंधा नोन इन सब को बराबर ले महीन पीस दांतों के मले॥

अथवा

माजूफल· कुलफा के बीज· इन को पानी में पीस कर कुल्ला करे तो मसूड़ों से खून बहना बंद होय॥

अथवा

बारह सींगे के सींग की भस्म और सेंधा नोन महीन पीस कर मले तो मसूड़ों से खून निकलना बंद होय

अथवा कुदरू गोंद मस्तगी· इन को महीन पीस मसूड़ों के घाव पर लगाना॥

गंजे का इलाज

जो सिर में गंज हो तो काली मिर्च २ मा॰ कलोंजी २तो॰ दो
नो को गोके घी में जलावे और घोटे जब मल्हम के सद
श हो जाय तब पानी में घोले फिर नितार ले पहिले इस
के जल से सिर को धोवे फिर इस इस मल्हम को लगा
वे॥ अथवा

काली मिर्च छै माशे कवेला हरा छै माशे महदी के
पते हरे छै माशे सूखे आमले छै माशे नीम के पते
छै माशे नीला थोथा छै मा॰ सरसों का तेल ५तो॰ ८ सब
दवाओं को तेल में जलाकर घोट कर ठंडा कर लगावे

अथवा

हालम दो तोले लेकर जलावे जब जल कर राख हो
जाय तब पीस कर कडवे तेल में मिलावे फिर इ
सको दो पहर तक धूप में धर राखे फिर इस को–
लगावे तो गंज मिटि जाय॥

हाल

जानना चाहिये कि सिर के फोडों के भेद
तो बहुत हैं जो सबों को वर्णन करता तो ग्रंथ
बहुत बढ जाता इस लिये संक्षेप से लिखा है परं
तु जो फोडे सिर में होते हैं उन सबों का इलाज इ
न्ही मल्हमों से करना चाहिये क्योंकि ये सब मल्हम
बहुत ही गुण दायक हैं॥

कंठ के फोडे का यत्न

एक फोड़ा कंठ में होता है उसे कंठ माला भी कहते हैं उसकी सूरत पहिलें ऐसी होती है कि बाईं ओर वा दाहिने ओर गले में गुठली सी हो जाती हैं फिर बढ़ कर बड़ी गांठ हो जाती है इस फोड़े का निशान इस तसवीर में समझ लेना ॥



इस फोड़े की चिकित्सा इस प्रकार से करनी चाहिये कि पहिलें तो बैठाने वाली दवाई लगाना चाहिये क्योंकि जो ये बैठ जावे तो बहुत ही अच्छा है। बैठाने की दवा ये है ॥

खूब कला पांच तोले और जान कड़वा एक तोले कुदरू गोंद एक तोले इन सब को हरी कासनी के रस में पीस कर लगावे और उसके पत्ते या मकोय के पते गरम कर के बांधे जब गुठलीयां न बैठें तो फस्त खोले और वमन करावे और ये दवा लगावे

कि उक्त दवाईयों को सोये के अर्क में पीस कर लगा वे और जो वर्णन करी हुई दवा ओंसे गुठलियां न बै ठे तो यह लेप करे॥

लेप

गुलाब के फूल गेरू गुलनार सखी मकोय दम्मुल अखवेन मूरिद के बीज· इन सब दवाओंको एक एक तोला ले महीन पीस मुरगी के अंडे की सफेदी में मिला कर गोलियां बना कर छाया में सुखा वे फि र एक गोली अंगूर के सिरके में पीस कर लगावे औ रजो इसके लगाने से भी न बैठे और पक जावे तो ये दवा करे॥

अथवा

कड़वा तेल ।= आधपाव और एक गिरगट रवि वार वा मंगल वार को मार आक के पते नग ७ मिलाये नग ७ इन सब को तेल में जला कर खूब घोटे और ठंडा क रके लगावे और कदाचित इस घाव के आस पास- स्याही आजाय और घाव में से पानी निकलता हो तो बहुत बुरा है॥

और जो स्याही न हो और गांठ फूटी भी न हो तो उ सके बठाने को और दवा लिखते हैं॥

छुहारे की गुठली· इमली के चींयां· महदी के पते इनको पीस गुनगुना पतला लेप करे अथवा मूसेको मीठे तेल में पका उस तेल को लगावे॥

अथवा दो मुहडे के सांप को मार कर जमीन में गा-

टदे जब उस का मास गल जावे तब हड्डी को डेरे में बांध ग
लेपर बांधे॥ अथवा वृदारच मडा बांधना अच्छा है॥

धुकधुकी का यत्न

एक घाव कंठ में होता है उस्को लोकिक में धुकधुकी क
हते हैं उस्में से दुर्गंधि आया करती है और कंठ से लेकर
छाती के नीचे तक घाव होता है जो घाव में गढे हों तो वे
इलाज न करै क्यों कि महान वैद्यों ने लिखा है कि य
ह फोडा अच्छा काम होता है और जो दवा करनी अव
श्य होतो ये करै और इस घाव का निशान इसनस
वीर में लिखा है॥

दवा

समुद्र फेन २० तोले को पीस छान कर एक तोले नि
त्य फकावे और उस्के ऊपर जामुन के पते पानी में
पीस कर पिलावे और उस घाव पर ये दवा—



मनुष्य के सिर की हड्डी वासी जल में पीस लगावे॥

अथवा

सूअर की विष्टा कन्या के मूत्र में पीस कर लगाया करे

अथवा

एक घूंस को मार कर शुद्ध करे और छछूंदर मार कर शुद्ध करे फिर इन को आध सेर कडवे तेल में जलावे फिर इस तेल को छान कर लगावे॥

कखलाई का यत्न

एक फोड़ा बगल में होता है उसे कखलाई कहते हैं बगल में एक या कई गुठली सी होती हैं और एक उन में से पक जाता है जब तक वह अच्छी नहीं होने पाती तब तक दूसरी पक जाती है इसी प्रकार से कई बार करिके छै सात हो जाती हैं और एक लक्षण ये हैं कि एक गुठली सी हो कर पक जाती है फिर वह पक कर शीघ्र ही फूट जाती है तो अच्छी है नहीं तो बिना चीरा देने के अच्छी नहीं होती जो रोगी बलवान होतो फोड़े की वो सूरत होती है जो ऊपर कहि आये हैं और जो बल हीन होतो ये सूरत होती है कि पहिले बगल में सूजन सी होती है और बहुत सखती होती है वह बहुत दिनों में पकती है देर होने के कारण करके नश्तर या तिजाब लगाते हैं तो रुधिर निकलता है घस यही हाल है जब नीम के पत्ते बांध चुकते हैं तो मल्हम लगाने के पीछे पानी निकला करता है यो इसी प्रकार से रोग बढ जाता है

इस फोडे का निशान नीचे की तसवीर में समझ लेना इस फोडे का यत्न यह है कि पहिलें वे पत्तियां बांधे जो हाद के फोड़े के वास्ते लिख आये हैं जब नरम हो जाए तब चीरे मल्हम लगावे जिसमें बान पाव का एहतलिया है अ पचा ये दवा लगावे॥



गेहूं का मेदा सहत मुरगी के अंडे की जरदी तीनों को मिलाकर लगावे इस दवा के लगाने से फूट जावेगा और जो नरम होतो चीर देवे फिर नीम के पत्ते नोन सहत बांधे और ये मल्हम लगावे।

मिला थोथा ३ मा॰ कोकनार जला हुआ १ तो॰ इन दो नों को पीस थोडा सहत मिला कर रगडे जब मल्हम के समान हो जाय तब लगावे॥

अथवा

सूअर की हड्डी और सूअर के बाल जला कर सूअर की चरबी में मिला कर खूब रगडे और लगावे॥

और घाव सूखा नहो तो सूअरकी हड्डी तथा बालों की भस्म बुरके तो घाव सूखजाय॥

और जराहि को चाहिये कि घाव पर निघा रक्खे कि घाव पानी न देवे जो घाव में से पानी निकलता हो तो उसके कारण को जाने कि किसी कारण करिके उस में से पानी निकलता है मनुष्य की प्रकृति चारप्रकार की होती है पानी तो रतूबत के कारण से निकलता है और रुधिर पित के कारण से और पीली पीव कफ के कारण से और असल पीव खुस्की के कारण से निकला करती है और उचित है कि जो मल्हम योग समझे सो लगाया करे॥

छाती के फोडे का यत्न

एक फोडा छाती में तीन चार अंगुल होता है उसकी सूरत यह है कि प्रथम तो ददोंडासा होता है फिर बढ जाता है फिर अपना विकार बहुत फैला देता है इस फोडे को बैठाना अच्छा नहीं क्योंकि दाहिनी ओर को होता है तो इसमें बड़ा भय रहता है कि फोडा पेटमें न उतर जावे और जो बाईं ओर होवे तो कुछ डर नहीं और जो आदि में बैठि जाय तोभी कुछ डर नहीं॥

और पकजावै तो चीर डाले और नीम के पत्ते बांधे फिर उसके घाव पर ये मल्हम लगावै॥

मल्हम की विधि

सफेदराल २ तोले नीला थोथा ९ रत्ती विलायती साबन

एक माशे इन सबको पीसकर गौ के पांच तोले घी में मिलावे
फिर इसको पानी से धोकर घाव पर लगावे इसी सूरत का फो
ड़ा बालक के हो वा तरुण के तो शुद्ध मर्मी से चिकित्सा करे
और इस फोड़े का पीब सफेद पीलापन लिये निकले तो शी
घ्र आराम हो और जो पीब पुलाबी हो तो इसी मल्हम में का
शगारी सफेदा चार माशे मिलावे और घाव पर लगावे तो
घाव अच्छा होय ॥



स्त्री की छाती के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा स्त्री की चूंची पर होता है उसकी चिकित्सा -
भी इसी प्रकार हो सकती है जैसा कि ऊपर छाती के फो
ड़े में अभी लिख चुके हैं और उस फोड़े पर पहिले कोम
ल्हम लगावे जिसे मैंने फौजदारी लिखी है अथवा जो
मल्हम लगावे जिससे जान घाव का पूरा लिखा है इन

मल्हमों के लगाने से फोड़ा फूट जाता है अथवा जो म
ल्हम लगावे जिसमें आधा हल्दी लिखी है इनके लगा
ने से न फूटे तो चीरा देवे और जो फूटे फोड़े के घाव का
मुख ऊपर को हो और दबाने से पीव निकलती हो तो उ
सके नीचे नल लगावे वा पुट्टी के नीचे बांधे और बालक
को दूध पिलाना बंद न करे और जो दूध पिलाने में हानि
समझे तो न पिलावे और ये मल्हम लगावे ॥

मल्हम

सुपारी अधभुनी छै माशे कत्था सफेद अधभुना छै मा
शे सिंदूर गुजराती छै माशे सफेदा कासगारी छै माशे-
गौ का घृत सात तोले पहिले घी को गरम करके उसमें
एक तोला पीला मोम पिघलावे फिर सब दवाईयों को
पीस कर मिलादे और खूब घोटे जब ठंढा हो जाय तब छै
माशे पारा मिला कर खूब रगड़े फिर इसको लगावे तो घा
घाव शीघ्र अच्छा होय ॥

और एक फोड़ा बिना दूध की चूंची में होता है उसकी
सूरत यह है कि पहिले एक फुन्सी मसूर की दाल की बरा
बर होती है और भीतर एक गुठली चने के प्रमाण होती
है वह दिन प्रति बढ़ती जाती है और वो फुन्सी अच्छी हो
जाती है और वो गुठली नारंगी के होते एक अथवा
दो वर्ष के पीछे आम की बराबर हो जाती है और जो बृद्ध
स्त्री के हो तो आठ वा नौ महीने के पीछे आम की बराबर
हो जाती है जब गुठली इतनी बढ़ जाती है तब उसमें पीड़ा

होतीहै औरज्वरभीहोआताहै यपाषाण केभेदोंमेसेहै इसको कंकर बैल कहते है और इसकेकाटनेसे भीनही कटती इसकीचिकित्साकरने वाले को उचित है कि हकीमकी सम्मति भीलेता रहै क्योंकि दवाइयों की प्रकृति को वे लोग खूब जानते है उनकी सम्मति और अपनी सम्मति मिलीहुई रक्खें अंग्रेजी दवाई वो लोग शक्ति नहीं रखते इसी लिये हकीम की सम्मति लेना अच्छाहै कि वो प्रकृति के अनुसार चिकित्सा करेगा पीने और लेप करने की य औ षधि है पहिले ये बफारा देवे॥

बफारेकीदवा

संभालू के पते· मकोके पते· इनदोनों को पानी में औटा कर बफारा देवे और इन्हीं पत्तों को बांधे अथवा सोये का साग औटाकर बांधे अथवा ये लेप करे॥

लेपकीविधि

नाखूना एकतोला· खुब्बाजी के बीज एक तोला खत मी के फूल एक तोला· खतमी के बीज एक तोला· अ मलतास का गूदा दो तोला· बारंजासफ छै माशे· बनफ्शा के फूल छै माशे· अक्लकरा छै माशे· अलसी छै माशे· इन सब को पीसगरम करके लगावे॥ अगर इसके लगाने से आराम न होतो इस रोगी को जुलाब देवे तथा फस्त खोले और जो आराम न होतो ये दवाई लगावे कि जिससे खरखरा है और हाल उसका ऊपर क हागया है और एक नुकसा लेप का यह है॥

लेपकीविधि

सुरदासंग· सोरंजान कडुवा· गेरू· मुलीमकोय· लवब
राबरले इन सबको पानीमें पीसकर लगावे और फो
डेको देखे किकहांसेनरम है उस्पर जैतके पते औरनी
मकेपते और सांभरनोन पानीमें पीसकर बांधे और
आसपास वोहलेप लगावेजोऊपर कहेआये हैं और
जो इनसेन फूटेतौनीमकी छाल पानीमें घिसकेल
गावे औरजो किसीसे आरामनहोतोये फायालगा
वे॥

फायेकीविधि

लालमैनफल· बबूरकागोंद· लोंग· विलायतीसाबन
भैंसागूगल· सबको बराबरले पानीमें पीसकरक
पड़ेपरजमाकर रखछोड़े फिरसमयपर फोड़ेकी बरा
बर फायाकतर करलगावेजब फूटजाय तो जैतके प
ते औरनीमके पते बांधेजब फोड़ेमें सख्तीनरहे तो ऊ
परकहेहुए मल्हमोंमें से कोई तेजसा मल्हम लगावे।
औरजो फोड़ाके फूटनेके पीछे उस्में बुरा मास उत्पन्न
होजावेतो चिकित्सा न करे औरजो करे तो सबी चूंबी
कटवाडाले और हकीमको चाहिये कि दवा प्रकृति
के अनुसार करे और वो मल्हम लगावे जिस्से घाव पा
नी नदेवे औरजो चूंबी न काटी जावे वो मल्हम येहै॥

मल्हम

जंगाल एकतोले· शाहत एकतोले· सिरकादो तोले·
इन सब को मिलाकर पकावे जबतार बंधनेलगे नबउतारा

करकेलगावे और घावको देषे कि घावमें रुधिरनिकलताहै या पानी निकलताहै और असाध्यका लक्षणयेहै कि घावके चारो ओर स्याही होतीहै और दुर्गंधि आती है और पीवकासी निकलतीहै और फफोंदीके महश सफेदी होती फिर उसघाव घावकी चिकित्सा न करे क्योंकि उस्को कभी आराम नहीं होगा और साध्यका यह लक्षण है कि घाव चारों ओर से लाल होताहै और पीव गाटी पीलापन लिये निकलतीहै जो घावकी सूरत ऐसी हो तो निस्संदेह चिकित्सा करे परमेश्वरके अनुग्रह से निश्चे आराम होगा॥

एक फोडा छातीपर कोडोके पास अथवा कोडोके स्थानपर होताहै उस्को तेजमल्हमों पकाकर फोडे अथवा चीर डाले उस्के भी चिकित्सा शीघ्र करनी चाहिये क्योंकि ये फोडा रहजाताहै॥ और जो घावमे सामान्य वर्तीजावे तो चिकित्सा न करे और जो दाहीन या वाहीं ओर बनीजावे तो इसी प्रकारसे चिकित्सा करे जैसी कि ऊपर वर्णन कर आये हैं॥

और एक फोडा पेट पर होता है उस्की चिकित्सा इस प्रकार से करनी चाहिये जैसी छाती के ऊपर के फोडे की वर्णन कर आये हैं और यह मल्हम लगावे जिस्में जलाहुआ कांकनार लिखा है

और एक फोरा नाभि के ऊपर होता है उस्की चिकित्सा वैसी करनी उचित है जैसी कि पेट के-



फोड़े की वर्णन करी है और वह मल्हम लगावे जिस्मे रसोत और तगर की लकड़ी लिखी है इनतीनों फोड़ों की एकही चिकित्सा करी जाती है

और एक फोड़ा पेट के ऊपर होता है उसका चौड़ाव और लंबाव वहुत होता है यहां तक वढ़ता है कि तरबूज की बराबर हो जाता है इस की चिकित्सा भी शीघ्र करनी चाहिये कि स्याही न आने पावे और जब स्याही आजावे तो चिकित्सा न करै क्योंकिये असाध्य है परंतु जो चिकित्सा करनी अवश्य हो तो इस प्रकार से करै और ये मल्हम लगावै॥

मल्हम

नीमके पत्ते एकसेर आबाहलदी आधपाव हलदीक च्ची आधपाव कालेतिलों का तेल सेरभर पहिले तेल को तांबे के बरतन में गरम करे फिर उसमें नीमके पत्ते डाले जब नीम के पत्ते जल कर स्याह हो जावें तब उन को निकाल कर दोनों हलदियों को जौ कुट करिके तेल में डाले जब वोभी स्याह होने लगे तब तेल को छान कर रक्खे और फोड़े पर लगावे और जो इस के लगाने से कुछ आराम न होतो वही करे जो ऊपर वर्णन किया है और समय पर जैसी सम्मति हो वैसा करै परंतु मेरी समझ में तो यह बात आती है कि इस रोग की चिकित्सा करनी योग्य नहीं है

और बहुत से फोड़े आगे की ओर को होते हैं और ये फोड़े जो कहे हैं उनकी चिकित्सा करने से अच्छे हो जाते हैं और ये फोड़े पेट के जो कहे हैं उनकी चिकित्सा बहुत ही कठिन है जैसा मेरी बुद्धी में आया वैसा तो मैंने लिखा आगे जराह अपनी सम्मति के अनुसार करे॥

और एक फोड़ा पेडू और जंघा के बीच में होता है वहभी फंदमाला के भेदों में से है और लोके में उसका नाम (वद) विख्यात है उसकी सूरत यह है कि पहिले एक फुन्सी सी होती है और लोग उसको

पदंसकेसंदेहमें छिपाते हैं यद्यपिवोबालकोंकुभीहो जातीहै और जोउसको न छिपावे तो शीघ्र आराम होसक्ता है और फिर इसकी चिकित्सा कठिन पड़जाती है और इसके इलाज बहुतसे हकीमोंने अपनी अपनी किताबों में लिखे हैं अपनी बुद्धिके अनुसार अबहममी लिषते हैं बुद्धिमानोंको चाहिये कि पहिलेंवे दवा लगायें जिससे बैठजावे बैठालनेवाली दवा ये हैं

दवा

एकतोले चूनेकोलेकर मुर्गीके अंडेकीसफेदी में मिला करलेपकरे॥

अथवा मनुष्य के सिर की हड्डी को पानी में घिस कर लगावे॥

अथवा ईसबगोल को पानी में पीस कर बद पर लेप करे॥

अथवा सफेद कत्था कलमीनज · कवेला · व बूल का गोंद · छै छै माशे इन सबको पीस पानी में पीस गाढा गाढा लेप करे॥

और जो नहीं बैठे तो पकाने वाली दवाई लगावे- वो दवाई यह है

दवा

एक अंडे की जरदी · निरवालिस सहत एक तोले गेहूं का मैदा एक तोले इनको मिलाकर लगावे॥

और जो न फूटे तो नश्तर देवे जो नश्तर देनेसे कच्चा नि-

कच्चे तो नीम के पत्ते और हरी मकोय और नर्गो के पत्ते औ
रजैन के पत्ते और घकायन के पत्ते इन सब को पानी में औ
टा कर भपारा देवे और इन्हों को बांधे सात दिन तक यही
करते रहें इससे खूब नरम होकर मवाद को निकल जावे
फिर ये मल्हम लगावे

मल्हम

प्रथम आध पाव गौ का घृत लेकर गरम करै फिर उ
स्में दो तोले पीला मोम पिघलावे फिर सफेद राल सा
त तोले मिलावे जब खूब मिल जावे तब एक सकोर
में रख कर पानी से धोवे और चार तोले भांगरे का रस मि
ला कर घाव पर लगावे और एक लेप यह है कि आदि
में फोड़े को तहलील करता और पके हुए को फोड़ देता
है और कच्चे को पका देता है॥

लेप

हहालों · तज · अलसी · मेथी के बीज · ये सब एक एक
तोले एलुआ कमंगरी · सावन · भैंसा गूगल · रेवतचीनी ·
गुलाबी सज्जी · ये सब छै छै मासे इन सब को पानी में
पीस गरम कर गाढ़ा गाढ़ा लेप करै और ऊपर से चग
ला पान गरम करके बांध देवे और इस लेप के बहुत
से गुण हैं और जो इस लेप को चोट पर लगावे तो स
ज्जी न डाले किंतु सज्जी के बदले सेंधा नोन मिलावे
और जो चोट से हड्डी टूट गई हो तो आंबा हल्दी और ब
ढ़ा कर लगावे॥

एक फोड़ा अंडकोषों के नीचे होता है उस्को भगंदर कहते हैं उस्में सूजन होती है और ज्वर भी हो आता है उस्की चिकित्सा वद की चिकित्सा के अनुसार करनी योग्य है और वन्हीं पत्तियों का वफारा देवे और वो मल्हम लगावे जिस्में अलसी और मेथी लिखी है जव नरम हो जावे तो चीरने में देरी न करै पीछे नीम के पत्ते और नोन वांधे और ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

पहिले सात तोले गौ का घृत गरम करो फिर तोले भर सफेद मोम उस्में पिघलावे फिर गुजराती सिंदूर दो तोले सिंगरफ रूमी· सफेद जीरा· खिलखडी· काली मिर्च· कत्था सफेद सुपारी· ये सब एक एक तोले ले और नीला थोथा· एक माशे· इन सब को महीन पीस कर उसी घृत में मिलावे और आंच पर रक्खे जव खूब चासनी हो जा तो ठंडा करके लगावे और जो इस्से आराम न हो तो वह मल्हम लगावे जिस्में वेर के पत्ते हैं और जो रह जावे तो तेजाव लगावे जिस्में गिरगट है॥

गुदा के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा गुदा में होता है उस्को ववासीर कहते हैं वो फोड़ा कई भेद का होता है एक भेद उस्का यह है कि घाव हो और उसे आराम न हो वह फिर पकेगा और फटेगा और इसी प्रकार से रहेगा और जो वहुत से घाव हों तो सव को अच्छा करदे और एक

क घावको रहने दे जिस्से मवाद निकलता रहे इस फोडेको हकीम और डाक्टर असाध्य कहते हैं और इसी से इस पर ये मल्हम लगाना सुना सिद्ध है॥

मल्हम

काले तिलोंका तेल छै मासे कच्चा मोम चार मासे सूअरकी चरवी दो तोले राल विलायती एक तोले इन सबकी मल्हम वनाले और मूत्र से धोकर लगावे॥ अथवा सांपका सिर नग १ छछूंदर नग १ सूअरकी विष्ठा सात तोले सूअर की चरवी दो तोले हुक्का नारियल पुराना २ काले तिलों का तेल एक सेर इन सब दवाई यों को तेल में जला कर तेल को छान कर लगावे जव इस ओर से मल और अपाना वायु निकलने लगे तो चिकित्सा न करे इस घाव में से पीव नहीं निकलती है किंतु पानी निकला करता है और जर्राह को उचित है कि कोई वात ऐसी निकाले कि चिकित्सा करनी छूट जावे

गर्दन के फोडे का यत्न

एक फोडा दोनों कंधों के वीच में होता है और वडे वडे ग्रंथों में उस्को खंजर वेग लिखा है और सुना भी है और सूरत उस्की यह है कि पहिलें सूजन के साथ सख्ती होती है जव वह फूटता है तो बुरा मांस हो जाता है उसकी दोनों ओरसे पुह एक जंतु के सदृश होता है और उस्को न्योला कहते हैं और ये रोग रोगी के कलेजको खाता है परंतु निश्चै किया गया तो मालूम हुआ कि ये

घात झूंठ है जब उस्को घोर करके देषा तो बुरा मांस मालूम हुआ परंतु इस फोड़े को अच्छा होता कहीं नहीं देषा है और किसी को चिकित्सा करता देषा कि बुरा मांस कट जावे तो कुछ आराम होना कठिन नहीं परंतु उस मांस को जहां ताईं बने वहां ताईं दवा से काटना चाहिये काटने वाली दवा ये है॥

दवा

सांखिया सफेद· नीला थोथा· नोसादर· फिटकड़ी भुनी· कच्चा सुहागा· गुलाबी सज्जी· हलदी जली हुई· इन सब को पीस कर लगावे॥

अथवा सहत तीन तोले· जंगाल दो तोले· सिरका तेज सात तोले· इन सब को मिला कर औटावे जब तार बंधने लगे तब उतारले और ठंडा करके लगावे॥

अथवा कास्टिक की बत्ती लगावे कास्टिक एक अंग्रेजी दवाई है और इस फोड़े को छुरे से काटना अच्छा नहीं क्यों कि नित्य घटता बढ़ता है इसीलिये नैस्तर से नहीं काटते हैं और सब जर्राह इस फोड़े को छुरे से ही काटते हैं इसी कारण वह फोड़ा खराब होजाता है और अच्छा नहीं होता है इसी से सब को सुनासिब है कि इस फोड़े को दवा के जोर से काटना चाहिये और उस के आस पास यह लेप लगाना चाहिये॥

लेप॥

त्रिवीरवताई· जहरमोहरा खताई· मूरिदकेवीज· गुलनार· गुलावके फूल· दव्वुल अखवैन। इन सवको वरावर ले हरीमकोयमें पीस करलगावे परंतु इस रोगवाले की फस्त अवश्य खोले और वमन भी करावे और ये रोग मुसलमान के होयतो वकरी के मांस का सोरवा और रोटी खिलावे और हिन्दु के होयतो हकीम अपनी मतके अनुसार पथ्य दे॥

कंधेके फोडेकायत्न

एक फोडा कंधे पर होताहै और येभीनासूरकास्थान है उसकोभी चीरडाले अथवा तिजाब लगावे और फोडइ ले इस फोडेका निसान नीचे लिषीतसवीरमें समझो॥ और वो तसवीर इस फोडे के इलाज के अंत में लिखी है और जो ये फोडा आप ही फूट जावे तो वह मल्हम लगावे जिस्में सुहागा और नीला थोथा है जववो घाव अच्छा होजाय और वतीजाने के माफिकस्थान रहि जावे तो चीर डाले वा तिजाव लगावे और जो चारों ओर से वरावर अच्छा हो जाय तो सुखाने के वास्ते यह मल्हम लगावे॥

मल्हम

पहिले सीसे कीगोलीका कुस्ता करे उसकी भस्म ६ माशे और सफेदा काशगरी ६ माशे· सिंदूर ६ माशे गलसफेद २ माशे गका घी ६ माशे· इनसवको पीसकर गरम करके मिलावे फिर पीला मोम ६ माशे मिलाकर रखछोडे और लगावे॥



बाह के फोडे का यत्न

एक फोडा बांह पर होता है इसका निशान आगे कौनसवी रमें समझो और चिकित्सा इसकी इस प्रकार से करो जैसी कंधे के फोडे की वर्णन की गई है और कंधे से घुटने तक सात फोडे होते हैं और एक फोडा कोहनी पर होता है उस्में से पानी निकलता है उस्पर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

काले तिलों का तेल पाव भर· सफेद मोम दो तोले नीला-थोथा दो माशे· सोनामाखी दो माशे· मस्तगी रूमी छै· माशे· बिरोजा हरा छै माशे· माजूफल दो तोले· फिरोजा सूखा एक तोला· नौसादर पांच माशे· मुर्दासंग पांच माशे· सेलखडी तीन माशे मूरालाल दो माशे· सुहागा चौकिया भुना दो माशे जंगाल एक तोले प्रथम तेल को गरम क

र फिरउसमें मोमकोपिघलावे फिरयेसबदवामहीन पीस करडालेजब मल्हमकेसदृशहोजावेतब ठंढा करकेलगावे और घुटनेसेनीचेसातफोडेहोतेहैं इनकेनिशान आगे कीतसवीरमेंसमझो॥



उंगलीके फोडेकायत्न

एक फोडा अंगुलीमेंहोताहैउसकोविसभरीकहतेहैं और बहुतसेमनुष्यइसकोविसारा कहतेहैं जोउसमेंबुरामांस होतो चीरडाले औरजोनचीरेतोतिजाबलगावेतब मांसक टजावेतबवो मल्हमलगावे जिसमेंशीशेकाकुस्ताहै।

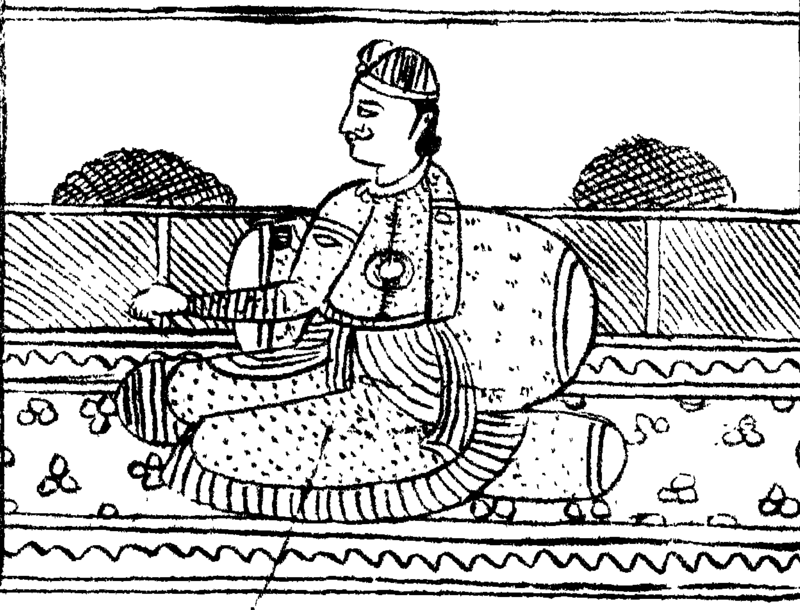
हथेलीके फोडेकायत्न

एक फोडाहथेलीमें होताहैउसकोभीचीरडालनाचाहिये और जोफूटनेकीराहदेषेंगतो अंगुलियांजातीरहेंगी-और जोअंगुलियां सीधीनहोतोभेडीकीमेंगनियां पानीमें

औटाकर वफारादेवे और भेडीके दूधका मर्दनकरे अथवा दो आतशी शरावमले और कंधेसे अंगुलीतक चौदह फोडे होतेहैं जिनकी चिकित्सा कठिनाईसे होती है और वहु तसे ऐसे फोडे होतेहैं वे शीघ्रही अच्छे होजाते हैं॥

पीठके फोडेका इलाज

और एक फोडा पीठमें होताहै उस्को अदीठ कहते हैं और उसके आस पास छोटी छोटी फुन्सियां होती है और वह फोडा पीठके वीचमें होताहै वह केकडेके सदृशा होताहै और लंबाव तथा चौडावमें वहुत वडा होता है और उस फोडेमें पकजानेके पीछे एक छिद्र होता है और उस्में पानी निकलता है अथवा पकी पीव निकलती है और छीछडा नहीं निकलता है उस फोडेका निसान नीचे लिषी तसवीरमें समझो इस फोडेकी चिकित्सा इस प्रकारसे करनी चाहिये कि उसकी चार फांक करके चीरडाले और उस्पर सांभर नोंन



नीम के पते · फिटकरी · और सहत बांधते रहें कि मला दि से भुद्द रहे परंतु ध्यान रक्खे कि इसकी सूजन बांईओर कोन आजावे और जो दैव योग से सूजन बांई तरफ को हो आवे तो दाहिने हाथ की वासलीक नाम नस की फस्त खोले और पंद्रह तोले रुधिर निकाले और जो इतना रुधिर न निकले तो चार दिन के पीछे बायें हाथ की भी बासलीक नस की फस्त खोले और फोडे पर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

चूक · चूना · सज्जी · नीला थोथा · साबुन · राई · सुहागा · आख का दूध ये सब दवा एक एक तोले गौ का घी बारह तोले प्रथम घृत को गरम करि के साबुन मिलावे जब खूब चाशनी होजाय तब ठंडा करि के लगावे और जो घाव भर आने के पीछे सूजन होआवे और सूजन के पीछे पेंच शहोजावे तो चिकित्सा करना छोडदे अथवा ये दवा पिलावे॥

दवा ·

खनमी के बीज · कनमी का रसा · छै छै माशे इनको रात्रि को पानी में भिगोदे और सवेरे ही छानकर फिर पहिले चार माशे नाजबूके बीज फका के ऊपर से उसे पिलादे और जो इन चारों फोडों में से जेमनी और का फोडा होवे तो भी इसी प्रकार से चिकित्सा करे जैसा कि अभी वर्णन किया है और जो फोडा बांई और होतो उसी के अनुसार चिकित्सा करनी चाहिये और ये तीन फोडे कुछ बहुत भयानक नहीं हैं जैसे चाहें तैसी चिकित्सा करें॥

पसलीके फोड़ेका यत्न

एक फोड़ा पसली पर होता है इसका निसान नीचे की नस वीरमें समझो क्योंकि येभी स्थान नासूर का है और बाईं ओरकी पसली का फोड़ा पेटमें उतर जाता है उसमें से आहार निकलता है और ये फोड़ा बड़ी मुसक्किल से अच्छा होता है वरनः अच्छा नहीं होता॥

कोषके फोड़ेका यत्न

एक फोड़ा कोष पर होता है उसकी चिकित्सा उसी प्रकार से करनी योग्य है जैसा कि ऊपर वर्णन करी गई है और इन दोनों फोड़ों का निसान इसी नस वीर में समझ लेना



नाभिके फोड़ेका य०

एक फोड़ा नाभि पर होता है इसका निशान भी आगे की नस वीरमें समझलेना और चिकित्सा इसकी यों करे

किपहिलेउनपतियोंकाबफारा देवेजोऊपर अंडकोषोंके
फोडेकीचिकित्सामेंकहीगई है और नीमके पते · सफेद
प्याजकेपते खानीनोन इनसबकोपीस कर गरमकरके
लगावे औरजो फोडाठीकठीक पकजावे तो चीरडाले औ
रजो आपही फूटजावे तो भी नस्तर देना अवश्य है क्योंकि
विनानस्तर लगाये इस का मवाद निकलना नहीं किंतु गु
दाके द्वारा होकर निकलने लगता है इस लिये नस्तर से चा
र खांप करिके ये मल्हम लगावे

मल्हम

कालेतिलोंका तेल आधसेर· सफेदमोम १ तोले·मुर
दासंग छैतोले· सफेद कत्था एकतोले कपूर छैमाशे
नीला थोथा चार रत्ती अरंडके पतोंका रस चार तोले
प्रथम तेल को गरम करे फिर मोम डालकर पिघलावे
फिर इन सब दवाओं को मिलाकर जलावे फिर सब को पी
स चासनी कर ठंडा करके लगावे और गादी पूरी पीव नि
कलै तो ये दवा पिलावै॥



दवा

पित पापड़े के पते· सफ़ेद चंदन· रक्त चंदन· गांजवां· मुलैठी· छिली हुई· खतमी के फूल· बनप्सा के फूल· ये सब छै छै माशे और इन सब को रात को पानी में भिगो दे फिर सबेरे ही मल छान कर उस्में गेंहू का सत· बंशलोचन· जहर मोहरा खताई· दम्मुल अखवेन· ये सब एक एक माशे लेकर· महीन पीस पानी में मिला कर पिलावे और फोड़े के आस पास ये लेप लगावे॥

लेप

पित पापड़े के पते· चिरायते के पते· पित पापड़े के बीज· ये सब एक तोले निर्विशी छै माशे रक्त चंदन एक तोले सफ़ेद चंदन एक तोले अफ़ीम एक तोले मिश्री एक तोले नीम की छाल एक तोले· बकायन की छाल एक तोले इन सब को पानी में पीस कर गरम कर के लगावे औ राजितने फोड़े पीठ की ओर होते हैं उन सब की चिकित्सा बहुत कठिन हैं उन सब पर लेप लगाना गुण करता है॥

चूतड़ के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा चूतड़ के ऊपर होता है वो दाई ओर हो वा बांई ओर हो उस्की चिकित्सा भी इन्ही मल्हमों से करनी चाहिये क्योंकि कुछ डर का स्थान नहीं है और जो इन मल्हमों से आराम न हो तो यह मल्हम लगावे॥

मल्हम

काले तिलों का तेल पंद्रह तोले विलायती साबुन तीन तो

तोले सफेदा कासगरी दो तोले सफेदा गुजराती दो तोले · प्रथम तेल को गरम कर उस्में साबुन को पिघलाकर चास नी करे जब मल्हम ठीक हो जावे तब ठंडा करके लगावे ॥

अथवा

सफेद राल दो तोले महीन पीस छानकर चार तोले तेल में मिलावै और नदी के जल से धोवे जब खूब सफेद हो जाय तब कत्था सफेद चार माशे · नीला थोथा दो माशे · रस कपूर तीन माशे · सब को पीस कर मिला कर लगाया करें

चूतड़ के नीचे के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा चूतड़ से नीचे उतर कर होता है लोग उस्को भी बवासीर कहते हैं परन्तु ये फोड़ा बवासीर के भेदों में से नहीं है लेकिन ये स्थान नासूर का है उस्की सूरत ये है कि पहिले गुठली सी होती है और अपने आप रिसने ल गती है उस्का चिकित्सा इस प्रकार से करें कि पहिले उ स्में चीरा देकर उस्की चार फांक करें क्यों कि उस्के भीत र एक छोटी छड़ा होता है सो विना चीरा देने के वह नहीं निकलता इस वास्ते इस्में चीरा देकर छोटी छड़े को नि काले फिर ये मल्हम लगावे ॥

मल्हम

पहिले काले तिलों का तेल पांच तोले गरम करे फिर उ स्में छे माशे मोम डाले और सोफ · गेरू · मुर्दासंग · नीला थोथा · ये सब एक एक तोले लेकर महीन पीस कर मिला वे और मंदी आंच से चासनी करे ठंडा करके लगावे ॥

जांघके फोड़ेकायत्न

एक फोड़ाजंघामें होताहै उस्को गम्भर कहते हैं इस्में भी एक बड़ी गुठली सी होजाती है और वो सात मास के पीछे प्रगट होती है और इस फोड़े में डर है इस फोड़े का निसान आगे लिषीतसवीर में समझ लेना और चिकित्सा उसकी यह है कि उस्को चीर डाले और सब मवाद निकाल देवे पीछे उस्के बुरे मांस को इतना काटे कि चार अंगुल गाढ़ा होजावे फिर उसपर नीम के पत्ते· सफेद बूरा· फिटकरी· इन सब को सात दिन तक बांधे फिर ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

राल सफेद दो तोले· नीला थोथा एक रत्ती· इन दोनों को महीन पीस कर छै तोले घृत में मिलावे फिर उस्में एक माशे साबुन डाले फिर उस्को नदी के जल से अथवा वर्षा के जल से तथा बरफ के पानी से खूब धो कर लगावे और एक फोड़ा जंघा के नीचे की ओर को होता है वो भी भी इन्हीं मल्हमों से अच्छा होता है॥

घोंटू के फोड़े का यत्न

एक फोड़ा घुटने के जोड़ पर होता है उस्की चिकित्सा बहुत नहीं कठिन है क्यों कि पहिले एक पोली फुनसी होती है जब वह फूट जाती है तो उसके चेपसे बहुत घाव हो जाता है अंत को सब में वढ़ी जाने लगती है फिर यह असाध्य होजाता है और जो मनुष्य उस्की चिकित्सा करे तो पहिले निजाब लगा कर घाव घटादे और उस्में एक-

सफेदसामांसहोताहैउस्कोनिकालडालेजबघावकडाहोजावेतौवहमल्हमलगावेजिस्मेंरस्कजोतिहैऔरजोउस्केलगानेसेआरामनहोतौयेमल्हमलगावे॥



कुंदरूगोंदएकतोलेपारा३माशाकालेतिलोंकातेलदोतोलेइनसबकोकढाईमेंडालकरखूबरगड़ेजबमल्हमकेसदृशहोजावेतबलगावे॥



पिंडली के फोडे का यत्न

एक फोडा पिंडली पर होता है इस्का सूरत ये है कि पहिले मो यह होता है इस का निसान नीचे लिषी तसवीर में समझ लेना इस्की चिकित्सा यह है कि तहलील करने वाला ले पलगावे तो तहलील हो जावे और वासलीक की फस्त षो ले॥

लेप

अमलतास दो तोले· बाबूने के फूल एक तोले· खतमी के फूल एक तोले· मूखीमकोय एक तोले नारवूना एक तोले गेरू एक तोले मूरिद के बीज छै माशे· अफीम दो माशे औरंजान कडवा छै माशे निर्वसी छै माशे इन स बको पानी में पीस कर गरम करके लगावे और अंड के पत्ते बांधे और जो घाव लाल हो जाय तो वह मल्हम लगावे कि जिस्में नान पाव का गूदा है और जो वह फूट जावे तो देषे कि घाव के नीचे सख्त तो है या नरम जो नरम हो तो नस्तर देवे और जो सख्त हो तो नरम करके नस्तर देवे - और वो मल्हम लगावे जिस्में वर्षा का पानी लिखा है और दूसरी सूरत उस फोडे की यह है कि पहिले एक छाला सा होता है और उस घाव से दो अंगुल नीचे मवाद होता है जब वो छाला फूट जावे और मवाद निकले या स्वार्न से नि कले तो नस्तर दे और ये मल्हम लगावे॥

मल्हम

पहिले काले तिलों का तेल पाव सेर लेकर गरम करे फि र सफेद सलगम दो तोले मिलाय गुज राती नग—

नीमके पत्तोंकी टिकिया दो तोले उसमें जलाकर फेंक दे औ रसिंदूर मिलाकर मंदी आंच पर ओटावे परन्तु सिंदूर पांच तोले डाले जब चासनी हो जाय तब ठंडा करिके लगावे ॥

पिंडली के दूसरे फोड़ेका यत्न

एक फोड़ा पिंडली से छै अंगुल नीचे होता है और वह बहुत काल में पकता है एक वर्ष वा दो वर्ष के पीछे फूटता है उस्मे से पानी निकलता है और कभी कभी रुधिर भी निकला करता है उस्पर वो मल्हम लगावे जिस्मे सफेदजो राहै अथवा यह मल्हम लगावे

मल्हम की विधि

लाल मैनफल· बबूर का गोंद· लौंग फूलदार· विलायती साबुन· भैंसा गूगर· इन सबको बराबर ले जल में महीन पीस कर एक कपड़े पर जमावे और मोमजामा बना रक्खे और समय पर फाया कतर कर लगावे। ये लेप बहुत ही उत्तम है और इस फोड़े को बांदा कहते हैं जब वो पक जावे तब उस्पर मल्हम लगावे जिस्मे साबन है अथवा ये मल्हम लगावे ॥

नुसखा

जंगाल· चौकिया सुहागा कच्चा· आवाहलदी· तीन २ माशे फिरोजा पांच तोले साबन छै माशे· इन सब को मिलाकर और पानी से धो कर समय पर लगाया करै ॥

गदे के फोड़े का यत्न·

एक फोड़ा पाव के गहे पर होता है जो वो शीघ्र अच्छा होजा यतो उत्तम है नहिं तो उसमें से हड्डियां निकला करती हैं और हमने अपनी आंखों से भी देखा है कि एसा फोड़ा वर्षों में अच्छा होता है और इस फोड़े की वही चिकित्सा करे जो अभी ऊपर वर्णन करी है॥

पाव के तलुओं के फोड़े काय॰

एक फोड़ा पांव के तलुओं में होता है इसकी भी यही चिकित्सा है जो अभी ऊपर कह आये हैं॥

पाव की अंगुली के फोड़े काय॰

एक फोड़ा पाव की अंगुलीयों पर होता है ध्यान करे कि वह उपदंश के कारण करके तो नहीं है जो उस कायका रागन होतो वही चिकित्सा करे जो हाथ की अंगुलियों के फोड़े की है और जो उपदंश के कारण करि के होतो उसकी यह सूरत होती है कि अंगुलियां पाव की गल कर गिर पड़ती हैं और चिकित्सा करने से घाव होजाता है पाव निस्फल होता है॥

अब जानना चाहिये कि शरीर में बहुत से फोड़े होते हैं उन सब की व्यवस्था वर्णन करूं तो ग्रंथ बहुत बढ़ जायगा इस लिये दो चार नुसखे मल्हम और तेल के लिखे देता हूं जो सब प्रकार के फोड़ों को गुण दायक हैं

नुसखा १

गुलाब की पतीयों को गुलाबजल में पीस गरम करके

गाढ़ागाढ़ा लेप करे और ऊपर से बंगला पान बांधे तो स
व प्रकार के फोड़े को तहलील करे और जो मवाद
तहलील होने के योग्य न होगा तो पका देगा

अथवा

बबूल का गोंद· कवेला· कुचला· एक एक तोले
इनको पानी में पीस कर लगावे और ऊपर से बंगला
पान गरम करिके बांधे॥

अथवा

रूई की गुठली· अलसी· बनारसी राई· ये दवा एक २
तोले इनको पानी में पीस कर लगावे और ऊपर से बंग
ला पान गरम करके बांधे॥

अथवा

पहिले घृत को गरम करके उसमें काली मिर्चों को पी
स कर डाले और कलोंजी चार माशे· और मिर्च भी
चार माशे ही ले सब को मिला कर पकावे जब दवा
जल जावे तब लोहे के घोटे से खूब घोटे जब म-
ल्हम के सदृश होजावे तब लगावे॥

अथवा

कड़वा तेल पांच तोले कवेला· काली मिर्च· मंहदी के
पत्ते हरे· नीम के पत्ते· सूखे आमले· ये सब छै छै माशे
नीला थोथा चार माशे· इन सब को तेल में जला कर
लोहे के दस्ते से खूब रगड़ कर लगावे॥

दाद का यत्न·

जो दाद रोग थोड़े दिनों का होय तो ये दवा लगाना चाहिये

दवा

सूखे आमले · सफेद कत्था · पवार के बीज इन तीनों को बराबर लेकर दही के तोड़ में पीस कर महदी के सदृश लगावे ॥

अथवा

पलास पापड़ा · नीला थोथा · सफेद कत्था इन सब को बराबर ले कागजी नीबू के रस में पीस कर दाद पै लेप करे और थोड़ी देर धूप में बैठे

अथवा

कपास के बीजों को कागजी नीबू के रस में पीस कर रक्खे पहिले दाद को कांडे से खुजा कर फिर इस ले प को लगावे ॥

अथवा

अफीम · पमाड़ के बीज · नौसादर · खैरसार इन सब को बराबर ले नीबू के रस में पीस दाद पर लेप करे तो दाद बहुत जल्दी अच्छा होगा

अथवा

माल · माजूफल · नीला थोथा · इन तीनों को बराबर लेके हुक्के के पानी में तथा कागजी नीबू के रस में खरल करके दाद पर लगाया करे तो शीघ्र गुण करे ॥

अथवा

राई २२॥ माशे · कूट छान कर सिरके में मिला कर लेप क रे तो दाद जाय॥ ये दवा उस वक्त करनी उचित है कि ज ब दाद खाल के नीचे पहुंच गया हो और जो खाल के नीचे न पहुंचा हो तो ये लेप करे॥

लेप

पीली गंधक छै माशे ·ले कर कूट पीस कर उसमें थोड़ा पारा कपड़े में छान कर गंधक की बराबर ले और गो-का घी और बकरे की चरबी तीन बार जल से धोई-हुई इन दोनो को साढ़े सोले सोले माशे ले इन सब को मिला कर खूब मथो कि पारा मर जावे फिर इसके दो भाग कर ले और इसका एक भाग धूप में या अग्नि के सामने बैठ कर मले फिर एक घड़ी पीछे गरम जल से-स्नान करे ये दवा खुजली को भी दूर करती है॥

और जो किसी मनुष्य के दाद बहुत दिन के हो गये हो तो उसको ये दवा करे॥

नुसखा

पवाड़ के बीज एक तोला · पानी में पीस कर और तीन मा शे पारा मिला कर खूब खरल करे जब मल्हम के सह श हो जावे तो दाद को खुजा के इस को लगावे॥

अथ खुजली का यत्न

जानना चाहिये कि खुजली रोग दो प्रकार का हो ता है एक सूखी · दूसरी तर अब हम पहिले तर खु जली का यत्न लिखते हैं॥

नुसखा

खाल कवेला एकतोले · चौकिया सुहागा भुना एकतोले फिटकरी एक तोला इन तीनों को महीन पीस कर दो तोले कड़वे तेल में मिलाकर शरीर में मर्दन करे इसी तरह तीन दिन सेवन करे फिर तीन दिन के पीछे लौनी - मिट्टी शरीर में मल कर स्नान कर डाले तो तरखुजली को आराम होय॥

अथवा

कवेला · सफेद कत्था · महदी · येतीनों दवा एक एक तोले भुना सुहागा तीन माशे · काली मिर्च एक माशे इन सबको महीन पीस छान कर गौ के धुले हुए घृत में मिला कर चार दिन तक मर्दन करै फिर लोनी माटी को शरीर पर मल कर स्नान करै तो खुजली जाय

और जो खुजली सूखी हो तो हम्माम में स्नान करना गुण करता है और जुल्लाब लेना फायदा करता है और करूत का लेप करना भी फायदा करता है॥

करूत के लेप की विधि

करूत को पीस कर दो घड़ी तक गरम जल में भिगो रक्खे फिर इसको खूब मले जब मल्हम के सदृश होजाय तब उसमें खहा दही वा सिरका १२ तोले और गंधक आमलासार ३॥ तोले कूट छान कर सब को २२॥ माशे तिल के तेल में मिलाकर तीन भाग करे और सवेरे ही एक भाग को शरीर पर मले फिर हम्माम में जाकर गे

हूं की भुसी और सिरका वदन पर मल के गरम जल से-
स्नान करडाले तौ खुजली मिटजाय ये लेप दोनों तर
ह की खुजली को गुण करता है॥

अथवा

पित के उत्पन्न करने वाली वस्तु पिस्ता मदिरा और
सहत न खाय- और नित्य हम्माम में स्नान करे और
जुल्लाव लेवे और मुंजिज के वाद नित्य रात को नीबू का
रस वा अंगूर का रस अथवा सिरका थोडे गुलावजल
और रोगन अथवा मीठे तेल में मिला कर गुन गुना कर
मालिश करे तौ सूखी खुजली जाय॥

और जो खुजली थोड़े दिन की होय तौ ये दवा लगा
वे

दवा

सिरसों चार तोले लेकर जल में महीन पीस गुन गुनी
करिके उबटना करै फिर गरम जल से स्नान करै तौ सू
खी खुजली जाय॥

अथ घावों का यत्न

अब हर प्रकार के घावों का यत्न लिखते हैं जानना चा
हिये कि मनुष्य के शरीर में घाव वहुत प्रकार से होते
हैं जो सबों का यथा क्रम से नाम लिखूं तौ ग्रंथ वहुत
वढ़ जायगा इस सबब से सूक्ष्म घावों का नाम लिष
ता हूं॥

घावों के नाम

अग्नि से जला १ तेल घृत आदि से जला २ चोटल

गने का ३ लाठी आदि की चोट का ४ पत्थर ईंट की चोट का ५ तलवार का ६ बंदूक की गोली का ७ तीर का ८ इत्यादि आठ प्रकार के घाव हैं और बहुत से हिन्दुस्तानी ग्रंथोंका यह मत है कि घाव और सूजन ६ प्रकार की हैं वायु का १ पित्त का २ कफ का ३ सन्निपात का ४ रुधिर के दुष्ट पने का ५ किसी तरह की लकड़ी आदि की चोट लगने का ॥ ६ ॥

वायु के घाव का लक्षण

वायु का घाव और सूजन विषम पके ॥ पित्त का तत्काल पके ॥ कफ का देर से पके ॥ रुधिर और चोट लगने का भी तत्काल पकता है ॥

और जो घाव शोथ पका नहीं होय उस्का लक्षण लिखते हैं

जिस व्रण में घाव और गरमी और सूजन थोड़ी होय और कड़ा होय और उस्का त्वचा के सदृश रंग होय और उस्में दर्द कम होय इतने लक्षण होंय उस व्रण को कच्चा जानिये और यह भी जानना चाहिये कि व्रण उस्को कहते हैं कि प्रथम शरीर के किसी मुकाम पर सूजन होय और फिर वह पके फिर फोड़े के सदृश हो जाय फिर फूट कर घाव हो जाय उस्को व्रण कहते हैं ॥

जिस मनुष्य की सूजन अग्नि की तरह जले और खार की तरह पके और चैंटी की तरह काटे और चब का होय और जो हाथ से दाबे तब दर्द अधिक हो मानों–

कोई सुईसे वेधताहै और उस्में दाह वहुत होय उस्का रंग व
दल जाय और सोने के समय शांति हो और उस्में विच्छू
के काटने कासा दर्द होय और सूजन गाढी होय और जित
ने उस्के पकने के यत्न करे तोभी पके नहीं और उस सूजन
में तृषा ज्वर अरुचि होय ये लक्षण जिस्में होंय तो जानि
ये कि यह सूजन पक गई है और जो सूजन पक जाती है-
तो उस्की पहिचान ये है कि उस्में पीडा होय नहीं ललाई थो
डी होय वहुत ऊंची नहोय और सूजन में तह पड जाय औ
र पीडा होय खुजाल वहुत चले सबरे उपद्रव जाते रहे पी
छें वह सूजन न जाय खाल फटने लगे और उस्मे अंगुली
लगाने से पीडा होय राद निकले इतने लक्षण होंय तो जा
नियें कि सूजन पक गई है इन कच्चे पके व्रणों को जराह
भली प्रकार से पहिंचान कर यत्न करें और जो जराह क
च्ची सूजन को तथा फोडे को चीरे और पके को जानन हो
उस जराह से यत्न नहीं कराना चाहिये ये तो व्रण की सू
जन के लक्षण कहे आव और मत से व्रण रोग लिख
ते हैं वहुत से हिन्दुस्तानी वैद्यों ने घाव ८ प्रकार के लि
खे हैं वायु · कफ · पित · इनके दोषों का · शस्त्रादिक के
लगने का · वायु पित · कफ का ३ रुधिर का ४ वायु पित
का ५ वायु कफ का ६ कफ पित का ७ सन्निपात का ८

घावों का यत्न

अव जो हिन्दुस्तानी ग्रंथों को देषता हूं तो अकल वडी
हैरान होती है क्यों कि जिस जिस किताव को देखाउ

सीउसी किताबमें हरकिस्मकी न्यारी न्यारी बात पाई जाती हैं इससबबसेमैंने हरेक ग्रंथ कारका मत नहीं लिया क्योंकि उनमें क्रम ठीकठीक नहीं लिखा इसबास्ते अपने और अपने उस्तादके आजमाये हुए नुकसे लिखताहूं कि जिन के लगाने से हजारों रोगियों को आराम किया है॥

अग्निसेजलेकायत्न

जो मनुष्य अग्नि से जलजाय तो उस्को उसीवक्त अग्नि से तपावे तो शीघ्र अच्छा होय॥

अथवा

अगर को आदिले गरम वस्तुओंका लेपकरे॥ अथवा औषधियोंके घृतको अथवा घृतको गरम करै फिर ठंडा करके लेप करे॥

अथवा

नवासीर· बडकीजड· रक्तचंदन· रसौत· गेरू· गिलोय· इनको महीन पीस घृतमें मिलाय लेप करे

अथवा

बुरेमांसको दूरकर पीछे साठीचांवल लेवे· इन्हे महीनपीस घृतमें मिलाय लेप करे॥ अथवा मोम· महुआ· लोध· राल· मजीठ· रक्तचंदन· मूर्वा इनको बराबर लेकर महीन पीस गौके घीमें पकावे और लगावे॥

अथवा

पटोलका पंचांग लेकर उसे पानीमें औटावे जब—

पानीजलकर चौथाहिस्सा रहिजावे तब कडुवे तेलमें मिलाकर पकावे जब पानी जलजाय और तेलमात्र रह जाय तब ठंडा करके लगावे॥

अथवा

पुरानाखानेका गीला चूना लेकर दहीके तोडमें मिला के लेप करे॥ और जो तेलसे जला हो तो उसके फफोले दूर होजायंगे॥ अथवा॥ जौको जलाकर इसकी राख को तिलोंके तेलमें मिलाकर लगावे॥ अथवा॥ भुने जीरेको महीन पीस कर उसकी बराबर मोम राल घृत मिलाय लेप करे॥

तेल आदिमे जलेका यत्न

तिलोंका तेल पाव भर खानेका चूना पुराना ४पैसे भर इसको हाथमें तीन घंटे तक मसले जब मल्हमके सदृश होजावे तब रूईके फायेसे जले हुए स्थानपर लगावे तो अच्छा होय॥

तलवार आदिके घावका यत्न

जिस मनुष्यके तलवारको आदिले शस्त्रोंकी अनेक प्रकारकी धार लगनेसे खाल फटजाय अथवा त्वचा की नाना प्रकारकी आकृति होजाय तो जर्राहको उचित है कि ऐसे रोगीको ऐसे मकानमें रक्खे जिस्में हवा न लगे फिर पाटके सूत से सिलवावे पीछे उन टांकोंके घाव के स्थानमें गेंहूकी मैदामें पानी और घृत मिलाय पकावे जब पानी जलजाय घृतमात्र रहिजाय तब इसकी –

लोई बनाकर सुहाता सुहाता सेक करै तो घाव तत्काल अच्छा होय॥

अथवा

कुटकी· मोम· हलदी· मुलेठी· कणगच की जड· और कणगच के पते· और कणगच के फूल· परोल· चमेली· नीमके पते· इन सबको बराबर लेके घृत में पकावे जब सब दवा जल जांय तब इस घृत का सुहाता सुहाता लेप करै॥ अथवा

शस्त्रके लगने से जिस मनुष्य का खून बहुत निकल गया हो और उस्के वायु की पीडा होय आवे तो उसके दूर करने के वास्ते उस रोगी को घी पिलाना चाहिये॥

और जिस मनुष्य का शस्त्र लगने से शरीर कट जाय उस्के घाव में गंगेरन की जड का रस भरदे तो घाव तत्काल भरजाय इस घाव वाले का शीतल यत्न करे

और जो घाव का रुधिर पेट में उतर जाय तो जुल्लाब देना चाहिये॥

बांस की छाल· अरंड का बक्कल· गोखरू· पाषाणभेद· इन सबको बराबर लेकर पानी में कादा करै फिर इस्में भुनी हींग और सेंधा नोन मिला कर पिलावे तो कोठे का रुधिर निकल बहे॥

अथवा

जव· कुलत्थ· सेंधानोन· रूखा अन्न· इनका खाना भी बहुत फायदा करता है॥

अथवा

चमेलीके पते· नीमके पते· पटोल· कुटकी· दारूहलदी· गोरीसर· मजीठ· हडकी छाल· मोम· नीला थोथा· शहत· करंजके बीज· येसव बराबर ले और सबको बराबर गौका घृत ले और अठगुना पानी ले सबको इकट्ठा कर मंदी आंचसे पकावे जब पानी जल जाय और घृत मात्र रहिजावे तब उतार ठंढा कर इसकी बती बना कर लगावै॥

अथवा

चमेली· नीम· पटोल· किरमाला इन चारोंके पते· मोम· महुआ· कूट· दारूहलदी· पीली हलदी· कुटकी· मजीठ· पद्माख· हरडकी छाल· लोध तज· कमलगट्टे· गोरीसर· नीला थोथा· किरमालाकी गिरी· ये सब दवा बराबर ले इनको पानी में औटावे फिर इनके पानी में मीठा तेल मिला कर मंदी आंचसे पकावे जब पानी जल जावे और खालिस तेल रह जावे तब इस तेल की बती बनाकर घाव पर लगावे तो घाव शीघ्र अच्छा होय॥

अथवा

चीता· लहसन· हींग· खरयोरवा· कलिहारीकी जड· सिंदूर· अतीस· कूट· इन औषधियों पानी में औटावे जब चौथाई पानी रहि जावे तब उसमें कडवा तेल मिला कर मंदी आंच से पकावे जब पानी जल जाय और तेल रह जाय तब इस तेल को रुई तथा कपडे की बती आदि

किसीतरहंसे घाव पर लगावे तो शीघ्र अच्छा होजाय

अथवा

गिलोय· पटोलकीजड़· त्रिफला· वायविडंग· इन सबको बराबर ले महीन पीस सबकी बराबर गूगल मिलाय एकजीव कर धर रखे फिर इसमें से १) तोले पानी के साथ नित्य खाय तो घाव निश्चै भर आवेगा॥

अब ये तो हमने शास्त्रादिकका मिला हुआ यत्न लिखा इसमें कुछ स्थान भेद नहीं लिखा चाहे सब शरीर में किसी अंग शस्त्र लगा हो तो इन्हीं दवा औ से यत्न करना चाहिये अब हम स्थान स्थान के घावों का यथा क्रम से यत्न लिखते हैं॥

जिस किसी मनुष्य के सिर में तलवार लगी हो और घाव गहरा होगया हो और हड्डी तक उतर गई हो और चोट से कई टुकड़ा होगये हों तो सब टुकड़ों को असल के अनुसार मिलावे और जो चूरा हो तो निकाल डाले और उस घाव पर गोमा का रस लगावे फिर घाव में टांके लगादे और इस दवाई से सेके॥

सेककी दवा

आमा हलदी· मेदालकड़ी· कालेतिल· सफेद बूरा· गेहूंकी मैदा· घी इन सबका हलुआ बना कर सेक और उसी को बांधे॥

और जो तलवार आड़ी पड़ी हो और सिरकी खोपड़ी जुदी होजावे तो इसकी चिकित्सा इस प्रकार से करे

कि प्रथम दोनों को मिलाकर बांधे और पूर्वोक्त रीत से सेक करके यह मल्हम लगावे॥

मल्हम की विधि

सफेदा कासगरी· मुर्दासंग· रसकपूर· अकरकरा गुजराती· माजू· ये सब दवा एक एक तोले सिंगरफ चार माशे· इन सब को पीसकर चार तोले घृत में मिलाकर नदी के जल से धोकर घाव पर लगावे और ध्यान रक्खे कि घाव में स्याही न आने पावे

और जो किसी के गले पर तलवार लगे और उस के लगने से घाव बहुत हो जावे तो जर्राह को उचित है कि पहिले रुधिर से घाव को शुद्ध करे फिर टांके लगावे और केवल आबा हलदी से अथवा हलुए से सेके और पहिले वह मल्हम लगावे जिस में चौ किया सुहागा लिखा है जब पीब गाढी और सफेद निकले और पीलापन लीये हो तो वह मल्हम लगावे जो अभी ऊपर इसी पत्र में वर्णन कर चुके है॥

और जो तलवार कांधे पर पडे और हाथ लटक जाय तो उसको मिलाकर टांके भर देवे और उस में भी यही मल्हम लगावे जो अभी ऊपर कहि आये है॥

और एक सांचा लकडी का बना कर कांधे पर बांधे तो आराम हो जायगा॥

और जो किसी मनुष्य के गले से लेकर कटि तक तलवार लगे और घाव चार अंगुल गहरा हो तो डरना न चा

हिये और उस रोगी की मन लगा कर चिकित्सा करै जो टुकडे होगये होंतो देखे कि रोगी में सांस है या नहीं-जो सांस होतो चिकित्सा करे और जो स्वास बल के साथ आता हो तो और घायल की बुद्धी और औसान ठीक हों तो समझना चाहिये कि ये रोगी की केवल धीरता है और कोई क्षण मात्र का महमान है और संसार के बीच कोई पल की हवा पानी है और उसको जीतू का घाव बोलते हैं परंतु यहां मेरी बुद्धी यह कहती है कि जो हृदे में गुर्दे में और कलेजे में घाव न आया हो तो निस्संदेह टांके लगा कर चिकित्सा करे जो परमेश्वर अनुग्रह करेगा तो घायल मृत्यु से बच जायगा और जो हृदे गुर्दे कलेजे में घाव होगा तो उस घायल की चिकित्सा न करे और जो इन में घाव न हो तो चिकित्सा करै और उक्त मल्हम को बना कर लगावे अथवा जैसा समय पर उचित जाने वैसा करे अथवा ये तेल लगावे॥

तेल की विधि

दारू हलदी आमा हलदी भड भूजे की छान का धूम ये तीनों दो दो तोले इन सब को जो कुट करके नदी के जल में अथवा वर्षा के जल में भिगोदे और सवेरे ही काले तिलों का तेल पाव सेर मिला कर मंद मंद आंच पर औटाय जब पानी जल जाय तेल मात्र रहिजाय तब छान कर धर राखे और उस्मे पुराना कता का कपडा भिगोकर घाव पर रक्खे और जो कतां का वस्त्र प्राप्त न हो सके

तो बिलायती सूत काम में लावे और खूब बांधे और मकोय का अर्क पिला वे वा शोथा का साग पका कर कभी कभी कभी खिलाया करै और यथोचित पथ्य करावे और घाव पर ध्यान रक्खे कि पीव पीव ही के सदृश हो और स्याही नहो और ऐसे घायल को ऐसे एकांत में रक्खे कि जहां किसूका शब्दभी न पहुंचे ॥

और जो किसी मनुष्य के हाथ पर तलवार लगी हो और दो घडी बीत गई हों तो वह घायल अच्छा न होगा और जो दो घडी से कम हुआ हो तो आराम हो सकता है और जो हड्डी बराबर काटि गई हो तो उसी समय चिकित्सा करै तो आराम होगा और जो कुछ भी विलंब हो जायगा तो आराम न होगा किस वास्ते कि जब तक कटा हुआ हाथ गरम है तब तक साध्य है और ठंढा होने पर असाध्य है और जो तलवार से अंगुलियां कटि जावे और गिर न पडें तो अच्छी हो सक्ती हैं और जो किसी के चूतड पर तलवार लगे तो उसकी चिकित्सा जर्राह की सम्मति पर है क्यों कि यह स्थान कुछ बहुत भयानक नहीं है और जो किसी के अंडकोशों पर ऐसी तलवार लगे कि अंडे तक कटि जावें तो जर्राह को उचित है कि भीतर दोनों टुकडे मिला कर ऊपर से शीघ्र ही टांके लगा दे और इस प्रकार से बांधे कि भीतर से अंडे का मिला रहे और उस पर वो रोगन लगावे जो अंग्रेजों के यहां लडाई पर लगाते हैं और जो समय पर वह प्राप्त न हो सके

के तो देवदारु का तेल वा छिपूदा का तेल लगावे और
और जो कूलह से पांव के नख तक घाव हो तो उसकी चि
कित्सा उसके अनुसार करनी चाहिये और जो सिर से
पांव तक कोई घाव बहुत कठिन हो तो उसकी वह चिकि
त्सा करे जो कमर वा हाथ के घावों को वर्णन की गई है
और इन स्थानों के सिवाय शरीर में किसी जगे पर त
लवार के लगने से घाव हो तो सब जगे कि चिकित्सा
इसी तरह इन्हीं औषधों से करनी चाहिये और तल
वार·सेल·फरसा·चक्र इतने शस्त्रों के घावों का इ
लाज इन्हीं दवाओं से होता है॥

अथ तीर के घाव का

यत्न

जो किसी मनुष्य के बदन में तीर लगा हो और घाव के
भीतर अटक रहा हो तो घाव को चारों ओर से दवा कर
निकाल ले वा घाव को चौड़ा करो कि हाथ से तीर निक
ल आवे और भीतर के तीर की यह परीक्षा है कि वो
घाव दूसरे तीसरे दिन रुधिर दिया करता है और ती
र जोड़ की जगह जाता है
और जो मांस में लगता है तो पार हो जाता है उसके
घाव पर दोनों ओर मल्हम लगावे और बीच में एक
गद्दी बांधे इस प्रकार की चिकित्सा में परमेश्वर अ प
ने अनुग्रह से आराम कर देता है॥

अथवा

किसी की छाती वा नाभि में तीर लगे और पार होजावे वा भीतर अटक रहे जो तीर लग कर अलग निकल जावे तो पूर्व रीति से चिकित्सा करे और जो भीतर अटक रहे तो ओजार से निकाल कर ये रोगन भरे॥

रोगन की विधि

भांगरे का रस· गोमा का रस· नीमके पतों का रस· छिवूल का रस ये चारों रस दो दो तोले गेरू· अफीम· एक एक तोले सब को पाव भर मीठे तेल में मिला कर चालीस दिवस तक धूप में रक्खे और समय पर काम में लावे और ये तेल सब प्रकार के घावों को फायदा करता है॥

अथवा किसी के पेट में तीर लगा हो तो बहुत बुद्धिमानी से चिकित्सा करे क्योंकि ये स्थान बहुत कोमल है जो इस स्थान में तीर लग कर निकल गया हो तो उत्तम है और जो रह गया हो तो कठिनता से निकलता है क्योंकि ये स्थान न तो घाव चीरने का है और न तिजाब लगाने का है घस जो वहां मकनातीस पत्थर को पहुंचावे तो उत्तम है क्यों कि लोहा व मकनातीस का अनुरक्त है और जो तीर निकल गया हो तो वह चिकित्सा करे जो ऊपर वर्णन करी गई है और घाव में वह तेल भरे जिस में भांगरे का रस लिखा है॥

अथवा

किसी की जंघा में तीर लगे तो वह स्थान भी तीर के भीत

रहजानेका है क्योंकि मांस और हड्डी यहांकी गंदीहै उचित है कि घावको चीरकर तीरको निकाले इसमें कुछ डर नहींहै परंतु इतना डर है कि जो घाव रहिजाय जो वहुत कालमें अच्छा होता है और जोडोंकी व्याख्या ऊपर वर्णन हो चुकीहै इस लिये घावको चौडा करके तीर निकाले तो हड्डीका हाल जाना जावे कि हड्डी में कुछ हानि पहुंची था नहीं जो हड्डी पर हानि पहुंची हो तो हड्डीकी किरचें निकालकर चिकित्सा करे॥

अथवा

किसीके घुटने में तीर लगे तो उसकी भी यही व्याख्या है जो जंघाके घावमें वर्णन की गईहै और मैंने तीरके घाव घुटने से पांवतक में देखेहैं यदि दैवयोग से तीर लगभी जाय तो उसी प्रकार से चिकित्सा करे जैसाकि ऊपर से वर्णन करते आयेहैं॥

घावकी परीक्षा

जिस घावमें तीर आदि किसी शस्त्रकी नोक रहिजाय उसकी पहिंचान यहहै कि घाव काला और सूजन संयुक्त हो फुनसियों को लियेहो और उस घावका मांस बुदबुद समान ऊंचाहोय और उसमें पीडा होय तो उस घावको शस्त्रसमेत जानिये॥

कोठेकी परीक्षा

जिस मनुष्यके कोष्ठमें तीर रह गयाहो उसकी पहिंचान यहहै कि शरीरकी सातों त्वचा और शरीरकी नसोंको

नांधकर पीछें उन नसों को चीरकर और कोष्ट के विषें रहा जो वह शस्त्र सो अफरा करे और घाव के मुख में अन्न और मलमूत्र को ले आवे तब जानियें कि इस के कोष्ट में शस्त्र रहा है॥

गोली के घाव का यत्न

जो किसी मनुष्य के सिर पर गोली लगती हुई चली गई हो और दूसरा यह कि गोली दूर से लगी हो ऐसी गोली शिर की त्वचा में रह जाती है इस कारण कर के सिर में सूजन आजाती है और मूर्ष लोग कहते हैं कि गोली सिर के भीतर से निकाल लावे परन्तु ठीक व्यवस्था तो यह है कि जो गोली पास से लगी हो तो दोनों ओर की हड्डी को तोड़कर निकल जाती है और जो कुछ दूर से लगी हो तो भेजे के भीतर रह जाती है और निकालने के समय रोगी के बल को देखना चाहिये कि गोली निकालने में वह मर न जायगा और जो उस का मर जाना संभव हो तो चिकित्सा न करे और जो देखे कि रोगी इस कष्ट को सह सका है और उसके भाई बंधु लोग प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा देते हैं तो निःसंदेह भेजे में से गोली को निकाले और सिर के घाव को कम सेकते हैं और चिकित्सा के समय पहिलें यह मल्हम लगावें जिससे जला हुआ मांस निकल जावे॥

मल्हम की विधि

जंगाल हरा· निसा लिस शहत· एक एक तोले सिरका

सिरका दो तोले इन सब को मिला कर कड़छी में पकावे जब वासनी होने पर आवे तब ठंडा कर के लगावे

अथवा

मुरगी के अंडे की सफेदी दो आतशी सराव चार तोले दोनों को मिला कर लगावे ॥

अथवा

जो गोली गले में लगी हो तो उस्की भी चिकित्सा इसी प्रकार से करै जैसा कि ऊपर वर्णन कर चुके हैं

अथवा

जो किसी की छाती में गोली लगी हो तो उस्की व्यवस्था यह है कि जिस ओर को रोगी फिरता है तो गोली भी उसी ओर को फिर जाती है यदि कोई बलवान होगा तो गोली निकल जायगी और निर्बल होगा तो रह जायगी इस पर खूब ध्यान रखना चाहिये क्योंकि उसका घाव टेढ़ा होता है और छाती की बराबर में दिल यानी हृदय उपस्थित है उस का ध्यान भी अवश्य रखना चाहिये और बाजी गोली कपड़े से लिपटी हुई होती है तो वह गोली निकल जाती है और कपड़ा रह जाता है और जिस ओर को गोली निकलती है उस ओर का घाव चौड़ा हो जाता है उचित है कि घाव को चीर कर वा पका कर पहिले कपड़े को निकाल लेवे और कपड़े रह जाने की यह पहिचान है कि घाव में से पतली और काली पीव निकला करती है पहिले घाव को शुद्ध करले क्योंकि जब घाव शुद्ध-

होजायगा और जला हुआ मांस निकल जाता है तो घाव शीघ्र अच्छा होजाता है और धीरज से उस की चिकित्सा करै घबराहट को काम में न लावे॥

अथवा

जो किसी की छाती से पेडू तक गोली लगी हो तो उसकी भी चिकित्सा इसी प्रकार से करनी योग्य है जैसी जैसी कि ऊपर वर्णन करी गई है

अथवा

किसी के अंडकोषों में वा जंघा से पिंडुली तक कहीं गोली लगी हो तो चिकित्सा के समय देषे कि गोली निकल गई वा नहीं निकल गई है जो निकल गई हो तो उत्तम है और जो रह गई हो तो गोली को निकाल कर घाव को देषे कि हड्डी तो नहीं टूटी यदि हड्डी टूट गई हो तो छोटे टुकडों को निकाल डाले और बडे टुकडे को वहीं जमा दे और उस्में विलायती रसोन भरदे और स्टिफिन एक अंग्रेजी दवा है उस्का फाया लगा देवे और खूब कस कर बांधे और तीन दिन के पीछे खोल कर देषे कि हड्डी जमी वा नहीं जो जम गई हो तो उत्तम है नहीं तो उसको भी निकाल डाले अथवा समय पर जैसी सम्मति हो वैसा करै और देषते रहें कि घाव में सफेदी और उसके आसपास स्याही तो नहीं है और घाव में से दुर्गंधि तो नहीं आती और पीव पानी सा तो नहीं निकलता है क्यों कि ये लक्षण बहुत बुरे होते हैं और गोली जो हर एक

घावमें वहदवाई लगावै जो सिरके घावमें वर्णनकी
नीहै अथवा उसदवाई को लगावै जिसमें अंडेकी सफे
दीहै उसदवाईमें रूईको भिगोकर घावपर रखना चाहि
ये और सवरे शरीरमें किसी मुकाम पर गोली लगी हो
इन सब अंगके घावोंका इलाज इन्हीं औषधियों से
होताहै॥

अथवा

किसीके विषकीवुझी तलवार तीर बरछी कटार
फरसा चक्र आदि शस्त्र लगे हों तो उसकी यह परी
क्षाहै कि घावतो ऊपर बढ़ता जाताहै और मांसगल
ताजाताहै और दुर्गंधि आतीहै और प्रति दिन घाव
कारंग बुराहोताजाता है और वहांका मांस तथा रु-
धिरस्याह पड़जाताहै वसउचितहै कि पहिले सब
स्याह मांस को काट डाले जो रुधिर जारी होजाय तो
रुधिर बंदकरनेवाली दवाई करे और दूसरे दिन गे
रू, नोन, फिटकरी, गुनगुनी करके वांधे और ये म
ल्हम लगावे॥

मल्हमकी विधि

पहिले गौका घी आध पावले कर गरम करे फिर उसमें
एक तोला मोम डालकर पिघलावे पीछे कवेला ए
क तोले, राल सफेद एक तोला, रतनज्योति एक
तोले इन तीनोंको भी पीसकर उसमें मिलादें फिर थोड़ा
सा औटावै फिर ठंढा करके एक फाया घावके अनु

सारथना कर उस्पर इस मल्हम को लगा कर घाव पर रक्खे औ
र जो कोई कहे कि ये जहरवाद है तो उत्तर देवे कि ये सत्य है प
रंतु इस्में से मैला मैला पानी निकलता है और लाली लिये-
हुए जिस्को कच्चीलोहू बोलते हैं और जहरवाद का घाव
शीघ्र बढता है और यह घाव देर में बढता है और जहरवाद
शीघ्र गलता है और यह देर में जहरवाद के घाव में मनुष्य
शीघ्र मरजाता है और इस्में देर में मरता है और जहरवाद
के रोगी को किसी समय कल नहीं पड़ती और ऐसे घाय
ल को जितनी पीड़ा होती है उस्में न्यूनाधिक नहीं हो सक्ती-
उचित है कि चिकित्सा बुद्धिमानी से करे और जो सूषा जा
नेके पीछे कोई किरच हड्डी की फिर दोष पड़े तो फिर नेजा
वलगावे कि घाव चौड़ा होजावे तब हड्डी को निकाल डाले

तिजाव की विधि

लहसन का रस · कागजी नीबू का रस · चार चार तोले
सुहागा चौकिया एक तोला इन दोनों को महीन पीस
कर पहिले दोनों अर्कों में मिला कर चार दिवस पर्यंत
धूप में रक्खे और एक बूंद घाव पर लगावे॥ फिर किसी
मल्हम का फाया रक्खे॥

अथ हाड टूटे का यत्न

जानना चाहिये कि हड्डी टूटने के बारह भेद हैं सो यथा-
क्रम लिखने से तो ग्रंथ बहुत बढ जाता है और कुछ मत
लब हाँसिल नहीं होता है इसवास्ते बहुत सा बखेडा
नहीं लिखा केवल जो जो मतलब की बात है सोई लि

खतेहैं ॥

हाडटूटेकीपहिचान

अंगसिथिलहोजाय और उसजगेस्पर्शसुहावे नहीं और वहां शरीर फड़के और शरीरमें पीड़ा और भूल होय तबजानिये कि इस मनुष्य का किसी प्रकारसे हाड टूटगया है ॥

हाडटूटेका कष्टसाध्य

जिस मनुष्यकी अग्निमंदहोजाय और कुपथ्य करा करै वायुका शरीर होय और उस्में ज्वर अतीसारादि भी होय ऐसे लक्षणों वाला रोगी कष्टसे बचे और जिसमनुष्यका मस्तक फट गयाहो कमर टूट गईहोय और सांधि खुलजाय और जांघ पिसजाय ललाट का चूर्णहोजाय हृदय·गुदा·कनपटी·माथा·फटि जाय जिस रोगी के ये लक्षण असाध्य है और हाड को अच्छे प्रकार बांधे पीछे कडा बांधे और वह बुरी तरह बंधजाय और उस्में चोट आजाय और मैथुन आदि करता रहै तौ उस रोगी का टूटा हाड भी असाध्य होजाताहै अब शरीर के स्थान स्थानके हाडोमें चोट लगी हो उनके लक्षण कंठ·तालू·कनपटी·कंधा·सिर·पेट·कपाल·नाक·आंख इनस्थानों में किसी तरह की चोट लगजावे तौ उस जगेके हाड नवजाय और पहुंचा पीठ·आदि के सबै हाड हैं सो टेढे होजाय कपाल को आदि लेजो गोल हाड है सो फटिजाय

और दांत वगैरा जो छोटे हाड हैं सो टूट जाय इन सब हा डों का यत्न लिखना हूं ओ किसी मनुष्य के चोट आदि किसी न रहसे हाड और संधि टूट जावे तो चतुर जराह को चाहिये कि उसी समय उस जगह चोट पर शीत ल पानी डाले पीछे उस्पर औषधियों का सेक करे ॥ अथवा पट्टी बांधे और उस जगह जो लेप करे सो सीत ल इलाज करे और बुद्धिमान जराह को चाहिये कि उस मुकाम पर जो पट्टी बांधे तो ढीली न बांधे और वहुत कडी भी न बांधे साधारण पट्टी बांधनी योग्य है क्यों कि जो पट्टी ढीली बंधेगी तो हाड जमेगा नहीं और वहुत कड़ी बांधने से शरीर की खाल में सूजन हो आवेगी और पीडा होगी और चमडी पक जायगी इस कारण पट्टी साधारण बांधनी अच्छी होती है व स जिस मनुष्य के चोट आदि हो उस के यह लेप लगा ना चाहिये ॥

लेप की विधि

मेदा लकडी· आवले· आंबा हलदी· पवार के बीज· सावन· पुरानी ईंट· ये सब बराबर लेके महीन पीस थोडा तिलों का तेल मिला कर आंच पर रख कर गर म गरम लेप करे ॥

अथवा

मुगास· गेरू· खतमी के बीज· उडद· राल्लुआ· ये सब द वा एक एक तोले और हलदी छै माशे· सोया छै

लोवानछैमाशे· इनसवकोपीसकरलेपकरै॥

अथवा

गेरूछैमाशे· झाऊकेपतानौमाशे· गुलावकेपता ६ माशे· वेरकपतानौमाशे· इनसवकोमहीन पीसकरलेपकरनेसेलाठीआदिकीचोट गिरपडनेकीचोट और पत्थर आदिसे कुचलजाने की चोटको आराम होसक्ताहै॥

अथवा

हलदी· हरीमकोयकेपते· गेरू· येतीनोंदवाएक एकतोले खिलोसरसोंदोतोले इनकोमहीन पीसकरलेपकरनेसे सवप्रकारकी सूजन को अत्यंत फायदाहोताहै॥

अथवा

गेरू· कालेतिल· आवाहलदी· हालोंकेवीज· ये सवबरावरलेके थोडा अलसी का तेल मिला के लेप करनेसे सवप्रकारकीचोट अच्छीहोतीहै

अथवा

मटरकोचून· चनाकोचून· छडीलो· अलसीकेवीज येसवदवानौनौमाशे लालवूराछैमाशे· कालीमिरचतीनमाशे· इनसवकोपीस करथोडे सिरके मे मिलाकर लेपकरै॥

अथवा

गेरू· एकतोले· सुपारीएकतोले· सफेदचंदनएक

तोले · रसौत छै माशे · मुर्दासंग छै माशे · एलुआ छै माशे इन सब को हरी मकोय के रस में पीस कर लगावे तो सब प्रकार की चोट जाय॥

अथवा

एलुआ तीन माशे · खतमी के बीज छै माशे · बनफ्शा के पत्ते छै माशे दोनो चंदन बारह माशे · भटवास छै माशे · नारखूना छै माशे · इन सब का चूरन करिके मुर्गी के अंडे की सफेदी में मिला के गुन गुना करके लेप लगावे॥

अथवा

खिले काले तिल · खिली सरसों · गेरू एक एक तोले सभालू के पत्ते डेढ तोले · मकोय के पत्ते डेढ तोले · इन सब को पानी में महीन पीस कर गरम गरम लेप करे तो सब प्रकार की चोट अच्छी होय॥

अथवा

बारह सींगे के सींग की भस्म तीन माशे · लोचान तीन माशे · भटवास का चून दो माशे · बाकला का चून दो माशे · नौसादर छै माशे · बबूल का गोंद छै माशे · कड़वे बादाम की मींगी एक तोला इन सब को पानी में पीस कर लगावे तो सब प्रकार की चोट जाय॥

अथवा

कडवे बादाम की मींगी · पुरानी हड्डी एक एक तोला सीप की भस्म · समुद्र फेन · पीली फिटकरी · छै छै माशे ·

इनसबको पानीमें पीसकरलगावेतोसब प्रकारकीचोट कोफायदाहोताहै॥

अथहड्डीटूटेकायत्न

इसहड्डीटूटीजानेकीचिकित्साइसरीतिसेकरेजैसा कि पट्टीवगैरापहिलेलिखआयेहैं सोकरेऔरचोटकी जगह गीलीप्याजलगावेतो टूटाहाड अच्छाहोय

अथवा

मजीठ महुआ इनदोनोंकोठंडेपानीमेंपीसटूटेहाड परलेपकरेतो अच्छाहोय॥

अथवा

बेर पीपलकीलाख गेहूं काहूकावृक्षका बकल इनसबकोमहीनपीस घृतमें मिलाय २॥ डेढतोले नित्यखायतोऔरऊपरसेदूधपीवेतो टूटा हुआ हाड अच्छाहोय॥

अथवा

लाख काहूकाबकल असगंध खरेटी गूगल ये सब बराबरले इनसबकोकूटपीसकरएकजीव कर २॥ डेढतोलेदूधकेसाथ नित्य खायतो टूटाहा ड अच्छाहोय॥

अथवा

गेहूंओंकोठीकरेमें धरकर अधजलेकरलेपीछे इ न्हे महीन पीस तीन तोले ले फर उस्में छैतोलेसहत- मिलाकरसात दिन तक नित्य चाटेतो टूटाहाड जुडे

अथवा

मेदालकड़ी · आमला · तिल · इनसबको बराबरलेठंडेपानीमें महीन पीसउसजगेलेपकरै और इस्में घृत भीमिलावैतो टूटाहाड अच्छा होय॥

अथवा

मनुष्यके मांसकी चोषी मिमाई अनुमानमाफिक लेओर शहत मिलाकेउसे चटावैतो टूटाहाड अच्छा हो।

अथवा

चोटवाले मनुष्यको मांसका सोरवा दूध · घृत · पुष्टाईकी औषधि देना अच्छाहै और चोटवाले मनुष्यको इतनी चीजोंसे परहेज कराना चाहिये॥

नोन · कड़वी · वस्तु · खार · खटाई · मैथुन · धूपमें बैठना · रूखे अन्न का खाना · इनचीजोंसे परहेज रक्खे॥

बालक और तरुणपुरुषके लगी चोट जलदी अच्छी होतीहै और वृद्ध मनुष्यकी औररोगी मनुष्यकी और क्षीण मनुष्यकी चोट जलदी अच्छी नहीं होती

अथवा

लाख १॥ तोले · लेकरमहीनपीसगौ के दूध के साथ पंद्रह दिन पियेतो टूटा हाड अच्छाहोय।

अथवा

पीली कौडियोंका चूना २ तथा ३ रत्ती · औटाय दूधमें पीयेतो टूटा हाड जुडे॥

अथवा

अथवा बेरकाबक्कल·त्रिफला·सोंठ·मिरच·पीपल·
इन सबको बराबर ले और इन सबकी बराबर गूगल
डाल सबको एकजीव कर १ एक तोले नित्य १५ दिन तक
दूधके साथ लो तो शरीर बज्र के समान होय और सरीर
की सब कसक जाय॥

अथवा

बेरका बक्कल·एक तोला·महीन पीस कर सहत मिलाय
एक महीने तक चाटे तो शरीर की सब प्रकार की चोट
टूटी हड्डी अच्छी होय·

अथवा

जो किसी मनुष्य के मुगदर आदि किसी तरह की चोट
लगी होय उसके वास्ते ये दवा बहुत फायदा करती है॥

दवा

मेदा लकड़ी·मेथी·सोंठ·आंवले·इन सबको महीन पीस गोमूत्र में मिलाय जहां चोट लगी होय तहां लेप करे तो चोट अच्छी होय और जो किसी मनुष्य को किसी पसुने मारा हो तथा किसी ऊंचे मुकाम से गिरा हो तथा भींत आदि के नीचे दबजाय और इस कारण करके दब गया होय और घायल होगया होय तौ उसके यह लेप लगावे॥

लेपकी विधि

पुराना खोपड़ा·आंबा हलदी·मेदा लकड़ी·काले तिल सफेद मोम ये सब दवा एक एक तोले ले और पीस कर

चोटपरलेपकरे ओरजोउस परघाव आगयाहो तोपहिले कहे हुए मल्हमोंमेंसे कोईसा काम में लावे

अथवा

प्याज एकतोले गेंहूंकी मेदा दोतोले प्रथम प्याज को छीलउसकी मींगी निकालकर तेलमें छौंकले फिर उसमें मेदा कोडालथोडा पानी मिलाकर लपरी बनावे और चोटको सेके फिर इसीको बांधैतो चोट अच्छी होय

ओरजाडेकेदिनोंमें शीतकालमें घीबासन में जमजाता है ओरउसके निकालनेसे हाथकेनखोंमें घीकी फांस लगजातीहै और हाथ पकजाता है तोउस की चिकित्सा यह है कि पहिले हाथको आग पर खूब सेके फिर ये दवा लगावे॥

दवा

अजवायन खुरासानी भैंसा गूगल विलायती साबुन सेंधानोन गुड ये सबबराबरले पानीमें महीन पीसे जब मल्हमके सदृश... देतब उस घाव परलगावे ओरजो इससे आराम नहोतो येमल्हम लगावे

नुसखा

साबुन गुड गेंहूकीमेदा एकएक तोले पानीमें पीस इसका फायाबनाकर लगावे और इस के ऊपर एक पान गरम करके बांधे ओरसेके जो घाव सब अच्छाहो ओर पानी निकलना बंद होताहोतो येतिजाब लगाकर घावको चौडाकरे॥

नुस्खा मान्ति जावका

गंधक दो तोले · नीला थोथा दो तोले · फिटकरी सफेद दो तोले · नौसादर दो तोले · इन सब को महीन पीस कर आध पाव दही में मिला कर एक हांडी में भर कर चोवा के सदृश तिजाव खेंचे · और एक बूंद घाव पर लगावे तो घाव गहरा होय पीछे इस पर वही मल्हम लगावे जो तिजाव के नुसखे से पहिले लिखा है

अब क्रम से तो सब घावों का इलाज लिख चुके परंतु अब दो चार नुस्खे मल्हम के यहां लिखता हूं ये मल्हम सब प्रकार के घावों को फायदा करती हैं

मल्हम १

राल एक पैसे भर · सफेद मोम दो पैसे भर · मुरदासंग एक पैसे भर · इन सब को महीन कर रक्खे प्रथम गौ का घृत छै पैसे भर लेकर गरम करै फिर उस्में मोम डाले जब मोम पिघल जाय तब सब दवाईयों को मिलावे फिर इस्को कांसी की थाली में डाल कर १०८ वार पानी मे धोवे पीछे इस्को घाव पर लगावे तो सब प्रकार का घाव अच्छा होय इस्को सफेद मल्हम कहते हैं॥

मल्हम २

सोधा पारा एक तोले · आंवलासार गंधक एक तोले मुरदासंग दो तोले · कवेला चार तोले · नीला थोथा चार माशे · गौ का घृत पाव भर · और नीम के पतों का रस अनुमान माफिक डाल कर इन सब को मिला·

करदो दिन तक खूब पीसे जब मल्हम के सदृश हो जाय तब
घाव पर लगावे तौ सब प्रकार के घाव अच्छा होंय

मल्हम ३

सफेद मोम · मस्तगी · गोंद · मेंदल · नीला थोथा · सुहागा
सज्जी · सिंदूर · कबेला · मुरदासंग · गूगल · कालीमिर्च
सोंठ · गेरू · इलायची · बेर · सफेदा · सिंगरफ · सोंधी गं
धक ये सब दवा बराबर ले और मोम को छोड़ कर सब
दवाओं को न्यारी न्यारी महीन पीस कर रक्खे प्रथम -
घृत को गरम कर उस्में मोम पिगलावे फिर सब औषधियों
को मिलाय खरल में गेर दो दिन तक खूब घोटे जब एक
जीव हो जाय तब धर रक्खे और घावों पर लगावे ये मल्ह
म चोट के घाव शस्त्रादिक के घाव फोड़े आदि के घाव
और सब प्रकार के घावों को फायदा करता है॥

मल्हम ४

नीला थोथा · मुरदासंग · सफेदा · खैरसार · सिंदूर -
सिंगरफ · मोम · के[illegible]ा घृत ये सब बराबर ले
फिर घृत को गरम कर नीचे उतार इस्में पहिले नीला
थोथा पीस कर डाले पीछे उसी समय उस्में मोम डाल
कर पिघलाय ले फिर इस्में सब औषधि महीन पी
स कर डाले इन सब को एक जीव कर कांसे की थाली
में डाले और उस्में ज्यादा पानी डाल कर एक दिन भर ह
थेली से रगड़े फिर घावों पर लगावे तौ सब प्रकार के
घाव अच्छे होंय॥

मल्हम ५

सिंगरफ तीन पैसे भर. सफेद मोम तीन पैसे भर. सज्जी एक पैसे भर. नीम के पत्तों की टिकिया तीन पैसे भर. मुरदा संग एक पैसे भर. प्रथम घृत को औटाय उस्में नीम की टिकिया पका कर उन टिकियों को जला कर फेंक दे फिर उस घृत में मोम को पिघलावे फिर सब औषधों को महीन पीस कर मिलावे जब मल्हम के सदृश हो जावे तब लगावे तो घाव मात्र अच्छे होंय॥

मल्हम ६

जिस मनुष्य के हाथ पावों में बिवाई फटी होय उस के वास्ते यह मल्हम बहुत अच्छी है

राल एक पैसे भर. कत्था एक पैसे भर. काली मिर्च एक पैसे भर. गौ का घृत दो पैसे भर. चमेली का तेल चार पैसे भर. इन सब औषधों को महीन पीस लोहे के पात्र में मल्हम बनाले पीछे इस को लगावे तो हाथ पावों की बिवाई अच्छी होय॥

मल्हम ७

नीम के पत्तों का रस एक सेर ले और गौ का घृत पाव भर ले प्रथम घृत को लोहे के बरतन में गरम करे और उस्में नीम के पत्तों का रस मिलावे जब ये दोनों खूब गरम हो जांय तब उस्में राल चार पैसे भर डाल कर पिघलावे जब वो पत्तों का रस जल जाय और गाढ़ा हो जाय - तब कत्था एक पैसे भर. नीला थोथा एक पैसे भर.

मुरदासंग एक पैसे भर· इन सबको महीन पीसके उस्में डाल एक जीव कर पीछे कपड़े में लगाय घावके ऊपर लगावे तो घाव निश्चै अच्छा होय॥

मल्हम ८

रांग की भस्म छै माशे· सफेद मोम एक तोले· गुलरोगन दो तोले· इन सबको पीसकर गुल रोगन में मल्हम बनावे और घाव पर लगावे तो बहुत जल्दी अच्छा करे

मल्हम ६

जिस घाव में से पानी निकला करे उसके वास्ते ये मल्हम बहुत अच्छी है॥

गूगल चार माशे· रसोन एक माशे· इन दोनों को पानी में खूब घोटे पीछे चार माशे पीला मोम मिलाके घोटके मल्हम बनाले और लगावे तो अच्छा होय।

मल्हम

उस्फ डागर गूगल पांच माशे· इन दोनों को चार तोले सिरसों के तेल में घोटके एक तोला पीला मोम मिलाके आंच पर धरे और राई· समुद्रफेन· जरावंद तवीजि· गंधक· आंवला सार· पांच पांच माशे चूरन करके मिलावे और जिस स्थान पर फोड़ाको तुर्त पकाया चाहै वहां पर इसी मल्हम में गुल खतमी और उस्के पत्ते दो दो तोले लेकर महीन पीसकर मिलावे और गुनगुना करके फोड़े पर लगावे तो फोड़े को बहुत जल्दी पकाकर फोड़ देगा॥

मल्हम ११

मीठा तेल और कूए का पानी पांच पांच तोले मिलाके कसकुट बासन में हाथ से खूब घोटे कि मही के तुल्य होजावे पीछे फिटकरी नीला थोथा लाल कत्था सफेद राल सवा सवा तोले महीन पीस कर उस्में मिलावे और हथेली से खूब रगडे जब मल्हम के सदृश होजावे तब चीनी के वासन में धर राखे और जब इस मल्हम को काम में लावे तब नोन की पोटली से घाव को सेका करे ये मल्हम बंदूक की गोली के घाव को और नासूर के घाव को और बुरे बुरे वादी आदि के घावों को अच्छा करती है।

मल्हम १२

आध पाव कडवे तेल में पांच तोले पीला मोम पिघलाके उस्में एक तोले विरोजा मिलाके पीछे दो तोले सफेद राल · फिटकिरी भुनी छै माशे · मस्तगी छै माशे इनको भी चूरन करके मिलावे और खूब घोटके मल्हम के सदृश बनाकर लगावे तो सब घाव अच्छे होय

अंड कोषों के छिटक जाने का यत्न॥

जानना चाहिये कि फनक रोग अंड कोषों के बढ़ जाने को कहते हैं और ये रोग अंड कोषों में तीन प्रकार से होता है एक तो यह कि किसी कारण करिके चोट लगजाती है इस कारण से भीतर अंडा बढ जाता है क्योंकि किसी में बहुत मेल पनीर बफार काम में आते हैं और

और इस रोग के वास्ते ये दवाई बहुत अच्छी है॥

दवा

हरीसोफ़· सूखी मकोय· खुरासानी अजवायन· बा
बूने के फूल· मूरिद के बीज· गेरू· ये सब दवा एक एक
तोले इन सब को पानी में पीसकर राखे और इस के
पहिले अंड कोषों को मोये के साग का बफारा देकर
ये लेप जो बना रक्खा है लगावे ऊपर से वही साग बांधे
जिस्का बफारा दिया गया है पानी न लगने दे॥

और एक कारण इस रोग के होने का यह है कि प
हले किसी की प्रकृति में तरी और सरदी की विशेषता
होती है इस कारण करिके हर एक जोड में बादी उत्पन्न
होजाती है और पेट के सब अवयवों को बादी अंड को
षों में भर पूर कर भीतर से अंडे को बढा देती है तो अज्ञा
नी लोग उस्की चिकित्सा पूछने फिरते हैं और किसी
जर्राह से नहीं पूछते कि ये वह फस्त या जुल्लाब बतला
वे वा कोई लेप तथा बफारा बतावे॥ और बहुत सम्
स्त्री लोग उस को तमाखू का पत्ता तथा टेसू के फूल बत
ला देते हैं उन दवाओं के करने से रोग और भी बढ जाता है
उचित है कि हकीम हो या जर्राह हो रोगी की प्रक
ती के माफिक इलाज करे और पहिले फस्त खुल
वावे अथवा जुलाब देवे पीछे उस्पर ये लेप करे॥

लेप की विधि

नाखूना· सूखी मकोय· कछुए के अंडे की जरदी -

चार २नग हीमोफ़ मूसेकीमेंगनी एकतोले इनसबको पानीमें पीस कर गरम करिके लगावे और जो जराह की सम्मति होतौ पहले बफारा देवे और बफारे की येदवा है॥

नुसखा

सोयेकेवीज सोयेकी पती चमेलीकी पती इमली की पती हरीमकोय पितपापड़ा येसबदवादोदो तोले इन सबको पानीमें औटाकर भफारा देवे और इसी का फोक बांधे जो कुछ आराम दीखे तो यही क रते रहें और जो इससे आराम न होतो यह बफारा देवे॥

नुसखा

संभालूके पते सूखे महुए दोदोतोले इनदोनो वस्तुओं कोजल में औटाकर भफारा देवे॥ और ऊपर से इसी का फोक बांधे॥

और तीसरा कारण इस रोग का यह है कि बहुत से मनुष्य जल पान करिके दौड़ते हैं और यह नहीं जा नते कि इस्में क्या हानि होगी यह काम बहुत ही बु रा है और इसके सिवाय एक बात यह है कि किसी की प्रकृतीमें रतूवत अर्थात तरी अधिक होती है और ज्वर की विशेषतामें वाज मनुष्य पानी रुककर पीते हैं और कोई २ बहुत जल पीते हैं इस बहुत जल पी नेसे दो वा तीन रोग उत्पन्न होते हैं एक तो यह कि नले बढ़ जाते हैं और दूसरा यह कि अंडकोषोंमें पानी उतर

आता है तीसरा यह कि तिल्ली फूल जाती है ऐसा करने से कभी कभी अंडकोष बढ जाते हैं और इसकी चिकित्सा हकीमोंने बहुत पुस्तकोंमें लिखी है और हमारे मित्र डाक्टर साहबने इसकी चिकित्सा इस प्रकारसे लिखी है कि पहिले इसमें नस्तर लगावे और उसका सब पानी निकालकर घावमें कोई ऐसी वस्तु लगावै कि घाव बहता रहै और सात आठ दिनके पीछे अच्छे होनेका मल्हम लगावे और यह दवाई खिलावे क्यों कि भीतरसे पानीका विकार दूर होवे तो घाव सूखकर जलदी अच्छा होजाता है और फिर कभी रोग उभरने नहीं पाता और वह खानेकी दवा येहै॥

नुसखा

कुदरूगोंद· वंशलोचन लीला· जहरमुहराखताई· केशर· रीठा· मुलेठी· यसब दवा एक एक तोले ले अलसी छै माशे· खतमीके बीज छै माशे· इनसब को पीसकर चार माशे सबेरे खिलावे और ऊपरसे एक तोले सहत और चार तोले पानी मिलाकर नित्य पिये और यह रोग इस कारण करिके भी होता है- कि किसी मनुष्यके सोजाक होता है और यह इन्द्री में पिचकारी लगवाता है तो अंडकोषोंमें पानी उतर आता है तो वह पानी अंडकोषोंमें भीतर निजावके समान मांसको काटता है जब वो मनुष्य सीधा सोता है तो पानी पेटकी ओर ठहरता है तो इस कारण करिके

भीतरके मांस के कटिजाने करिके आंतें उतर आती हैं फिर ये रोग असाध्य होजाता है॥

और ये रोग इस कारण करके भी होता है कि कोई मनुष्य भोजन करिके और जल पीकर चल फेर वा किसीसे कुश्ती लड़े अथवा दीवल पर चढ़े और कूद पड़े इन के सिवाय और भी कितने ही कारण है कि जिन से आंतें उतर आती हैं पहले पेडू पर एक गुठली सी होती है फिर मनुष्य के चलने फिरने से कुछ दिनों के पीछे वह आंत अंड कोषों में रहती है जब वह मनुष्य सोता है तो वही आंत पेड में चली जाती है और उठते समय लोटते समय तथा बैठते समय उसका शब्द होता है उस रोग की चिकित्सा यह है कि एक लंगोटा वा अंगेजी कपड़ा बांधा करैं अथवा वे उपाय करैं जो पानी के कारण के अंड कोषों के प्रकर्ण में वर्णन कर आये हैं कुछ आश्चर्य की बात नहीं हैं परमेश्वर की कृपा हो तो आराम होजावे॥

अथ सफेद दाग का यत्न

जिस मनुष्य के शरीर में फोड़ा तथा शस्त्रादिक के घाव हुए हों और वे मल्हम आदि के लगाने से अच्छे होगये हों फिर उन घावों के निशान सफेद होगये हों तो ये दवा लगाना चाहिये॥

दवा

मैनशिल मजीठ लाख दोनों हलदी ये सब दवा बराबर

घरलेमहीनपीसघृतऔरसहतमिलायदागकेऊपरलेप करेतोघावकादागमिटकरशरीरकीत्वचाकेशदृश होजावेगा॥

सीपऔरभाईंका

यत्न

जोकिसीमनुष्यकेमुखपैतथाछातीपरयाशरीरपरकिसीजगहपरसफेदीलियेदागहोतोबहुतसेमनुष्यउसकोबंदरफकहतेहैंइसकायत्नयेहै॥

दवा

सफेदसनाय· ककरोंदाकीजड· मूलीकेबीज· चौकियासुहागा· इनसबकोपीसकरजलमेंलेपकरेतो सरीरकेदागअच्छेहोंय॥

अथवा

मूलीकेबीजोंकोपानीमेंपीसकरलगावेऔरधूपमेंबैठेइसीप्रकारसातदिनकरे

विदितहोकिइसपुस्तकमेंमैंनेफोडाफुनसीशस्त्रादिकेघावआदिअनेकरोगोंकेयत्नयथाक्रमसेलिखेपरंतुऔषधवनानेकीविधिऔरहड्डीजोडनेकीविधिऔरतलवारकेउसघावकीजोचारअंगुलगहराहोऔरउसघावकीजोसवेरेहुआऔरसामकोअच्छाहोगयाऔरगोलीकेलगनेकीवहविधिकिजिस्मेंघावचीरानजावेऔरगोलीनिकलआवेयेइलाजमैंनेइसवास्तेनहींलिखेकिबिनाउस्तादसेसीखे

नहीं आने क्योंकि ये काम बहुत कठिन है उस मेरे न लिख
ने का कारण ये है कि इस पुस्तक में हरेक प्रकार के फो
डों का इलाज लिखा है इस वास्ते मुझ को यकीन है
कि इस पुस्तक को हरेक गृहस्ती गरीब तथा अमीर घ
र में जरूर रक्खेंगे क्योंकि इसमें बहुत फायदा होगा
और जो कदापि इसमें वे रोग जो हमने कह चुके हैं उने
लिख देते और कोई मनुष्य उन इलाजों को लिखा देख
विना समझे इलाज करता और उस रोगी को नुकसान
पहुंचाता तो पाप का भागी मुझ को भी होना पडता क्यों
कि ये नेत्रादिक के स्थान बडे नाजुक होते हैं और इस
के सिवाय यह भी बात प्रत्यक्ष है कि इस शरीर में नेत्रों
हीं सुख के दाता हैं

फस्त का प्रकरण

अब फस्त का वर्णन किया जाता है मनुष्यों को उचित है
कि जिस दिन निराहार हो उस दिन फस्त खुलवावे अ
ब फस्त खोलने की तारीखों के गुण औगुण लिखते हैं
दूसरी तारीख की फस्त खुलवाने से मुख का पीलापन
दूर होता है॥ २

तीसरी तारीख को फस्त खुलवाने से मुख पर पीला
पन छा जाता है॥ ३

चौथी तारीख में शरीर के दाग धब्बे दूर होते हैं॥ ४
पांचमी तारीख में मनुष्य प्रसन्न रहता है ५
छठी तारीख में मुख की ज्योति तेज होती है॥ ६

सातमी को शरीर मोटा होता है ७
आठमी को निर्बलता उत्पन्न होती है ८
नवी को शरीर में खुजली होती है ९
दशमी में बल होता है १०
ग्यारवी में कंपन वायु दूर होती है ११
बारवीं तारीष में फस्त खोलना निषेध है १२
तेरमी में पीड़ा उत्पन्न होती है १३
चौदमी में नींद नष्ट हो जाती है १४
पंद्रमी को बीमारी नहीं होती १५
सोलमी को बाल सफेद नहीं होते १६
सतरमी को मन अप्रसन्न नहीं होता १७
अठारमी को हृदय बलवान नहीं होता १८
उन्नीसमी को मस्तक प्रबल होता है १९
बीसमी को सब प्रकार के रोग दूर होते हैं २०
इक्कीसमी को प्रसन्नता प्राप्ति होती है २१
बाईसवी को कंठ पीडा और दंत पीड़ा दूर होती है २२
तेईसमी को निर्बलता अधिक होती है २३
चौवीसमी को शोकत नहीं होता है ॥ २४
पच्चीसमी को खफकान रोग दूर होता है २५
छव्वीसमी को गुरदे की तथा पसली की पीड़ा दूर होती है
सत्ताईसमी को ववासीर आती है २७
अट्ठाइशवी को सब प्रकार की पीडा नष्ट होती है २८
उनतीसमी को रक्त भजाना २९

तीसवीं को मनको भ्रम और बेकली होती है ३०

या प्रकार तीसों तारीख में फस्त खुलवाने का शुभाशुभ फल कह्या ये तारीख मुसल्मानी जाननी ॥

अथ वार फलानि

शनिवार को फस्त खुलवाना जनून आदि रोगों को दूर करता है ॥

रविवार को सब प्रकार के रोगों को दूर करता है

सोमवार को रुधिर विकार को शांति करता है

मंगलवार को शरीर की खुजली को शांति करता है

बुधवार को निषेध कहा है

बृहस्पतिवार को खफकान रोग को पैदा करता है और शरीर में बादी बढाता है

शुक्रवार को जनून रोग को पैदा करता है

फस्तों के नाम

जिन नसों की फस्त खोली जाती है उन प्रसिद्ध नसों के नाम लिखते हैं ॥

कीफाल १ बासलीक २ अकहल ३ हबलुलजरा ४ असीलम ५ साफन ६ अर्कोन्निसा ७ ये सात नस हैं

प्रकट हो कि जो लोग प्रतिवर्ष फस्त खुलवाते वा जुल्लाब लेते हैं उनको अभ्यास वैसा ही पड जाता है औ रये अभ्यास अच्छा नहीं और फस्त का न खुलवाना उत्तम है क्योंकि वर्ष की असल ऋतु तीन है और रुधिर भी तीन प्रकार पर होता है और जो फस्त खुलाने की अवश्यक

ता होतो शीतकाल में मध्यान्ह के समय खुलवावे कि उ
स ऋतु में रुधिर उसी समय चक्कर में होता है फिर ठहर
जाता है और कोई कोई हकीम यों भी कहते हैं कि रुधि
र जम जाता है सो बात झूठ है क्योंकि जो मनुष्य के शरी
र में रुधिर जम जावे तो मनुष्य जीवे नहीं किन्तु अति रंग
भी होता है और रुधिर निकलने में ये परीक्षा नहीं हो
ती कि यह रुधिर अच्छा है या बुरा और उस समय में फ
स्त खुलवाने से मनुष्य दुर्बल हो जाता है क्योंकि बुरे
रुधिर के साथ अच्छा रुधिर भी निकलता है और भी
षम काल में रुधिर पृथक् २ होना होता है इस ऋतु
में संझा के समय फस्त खुलवाना उचित है और सवे
रे खुलवाने में रुधिर षम होजाता है किन्तु खुश्की भी
अधिक होती है और बाज मनुष्यों के फस्त का अभ्या
स पड़ जाता है और फिर वे फस्त न खुलवावें तो उनको
एक न एक रोग सताना रहता है और वर्षा काल में रु
धिर मा हूल होता है उस ऋतु में फस्त खुलवाना योग्य
नहीं और जो हकीम की सम्मति हो वैसा करे और जिन दि
नों में रुधिर कम होता है तब खुश्की के कारण करिके
कई रोग होजाते हैं और पीडा भी हरेक प्रकार की हो
ती है और जब फस्त लगवाने की बहुत ही अवश्यक
ता होती है उस वक्त दिन तारीख ऋतु और समय का कु
छ विचार नहीं किया जाता ॥

इति दूसरा भाग जर्राही प्रकार संपूर्णम्

इश्तिहार

प्रकट हो कि इस पुस्तक जर्राही प्रकार को तीन हिस्सों में
पंडित रंगीलाल ने अपनी बुद्धी बल से बनाया और इस
के छापने का अधिकार मुझ श्यामलाल मुहतमि
म श्याम काशी प्रेस को दिया परंतु अब इस जर्रा
ही प्रकार तीनों हिस्सों का हक्क मुसन्नफी मुझ
श्यामलाल ने लाला हरिप्रशाद महतमि
म छापेखाने काशीसमान सहर मथुरा के
को दिया इस्से विना आज्ञा लाला ह
रिप्रशाद के कोई साहब छापने व
छपवाने का प्रबंधन करै ॥+॥
अब लाला हरिप्रशाद ने अप
नी खुशी से एक बार छाप
ने की इजाजत मुज श्या
मलाल को दी है फ
कत सम्वत + ॥
१९४५
विक्रमी
सन
१८८९
ईसवी

सूचीपत्र

इसपुस्तक केसिवाय और भीजोपुस्तकें हमारे पुस्तकालयमेंविक्रीके वास्ते मौजूद हैं उनके नाम और कीमत नीचे लिखीहै जिनमहाशयोंको लेनेकी इच्छाहो उनको सहरमथुरा नयाबाजार लाला श्यामलाल की दुकानसे मगालें॥

नामपुस्तक	की	डा·	नामपुस्तक	की·	डा·
जर्राहीप्रकारप्रथम			तीसराखंड	॥)	)
भाग	॥	॥	चौथाखंड	१)	)
तीसराभाग	)	॥	योगचिंतामणिभाषा		
तिब्बएहसानीहिंदी	॥	॥	टीकासहित	॥)	)
अनोपानचिंताम			हंसराजनिदानभाषा		
नीसटीक	)	)	टीका	॥)	)
स्त्रीचिकित्साप्रथ			माधवनिदानभाषा		
मभाग·	)	॥	टीका	२)	)
करावादीनरोसानी			मीजानतिब्बहिन्दी	॥)	)
हिंदी	॥)	)	शारंगधरभाषा	॥)	)
रिसालेआतशक	॥	॥	वैद्यकसारभाषा	)	॥
नाडीप्रकाश	॥	॥	वैद्यकसारयूनानी·	)	॥
अजीर्णमंजरी	॥	॥	वैद्यरत्नयूनानी	)	॥
रसराजसुंदरप्रथ			दिह्नगनभाषा·	)	॥
मखंड	॥)	)	वैद्यजीवनभाषाटी·	)	)
द्वितीयखंड	५)	)	रामविनोदभाषा·	॥	)

किस्साहीररांझा	-)	-॥	रागमाला	=)	-॥
किस्सागोपीचंद	-)	-॥	राधाफाग	-॥	-॥
दीनवचनका	-)	-॥	फागचमन	-॥	-॥
लावनीमनोहरबाग			वसंतवहार	-॥	-॥
प्रथमभाग	-)॥	-॥	जुगलफाग	-॥	-॥
दूसराभाग	=)	-॥	नगमेंदिलकश	/)	-)
किस्साजाहरपीर	=)	-॥	भजनमुक्तावली	/)॥	-)
सिंहासनवत्तीसी	/)	-)	पावसप्रमोद	=)	-॥
वैतालपचीसी	=)	-॥	वीणारसमंजरी	/)	-॥
शुकवहत्तरी	=)	-॥	मनोजमंजरीतीनों		
किस्साछबीलीभटि			हिस्से	१/)	=)
यारी	-)॥	-॥	भजनरामायण	-)॥	-)।
प्रहलादसांगीत	-)॥	-॥	बूढेमुंहमुहांसे	=)	-॥
किस्साढोलामारू	१/)	/)	कलिकौतुकनाटक	=)	-॥
सांगसौदागर	-)।	-॥	जैनारसिंहकीनाटक	=)	-॥
विनयपत्रिकातुलसी			महाअंधेरनगरीनाटक	/)॥	-॥
दासकी	/)	-)	हिंदीउर्दूकीलडाई	=)	-॥
विनैपत्रिकासूरदास			लावनीगुलजार		
जीकृत	=)	-॥	शगुनतुरीचारोंभा		
षटऋतुप्रकाश	-)॥	-॥	ग	॥/)	=)
रागमनोहर	-)॥	-॥	बुढियावखान	-)	-॥
हरिवंशचौरासी	-)॥	-॥	मनहरसागर	-)	-॥
मजमूआराग	=)	-॥	ज्ञानभाग	-)॥	-॥

विज्ञापन

प्रकटहो कि आजकेजमानेमेंहमदेखतेहैं तो हरएक मनुष्य को अनेक प्रकारकेरोगोंसे ग्रसित देखा क्योंकि किसी को कुष्ठ रादिक और किसीको फोडे फुन्सी और घावादिक रोगोंसे पीडित देखा और जो सौ १०० मनुष्योंमेंसे दस मनुष्य विना रोगवाले हुआ तो उन की कुछ गिनती नहीं है सो मैं जानताहूं कि उन मनुष्योंके भी कोई न कोई रोग जरूर होता है क्योंकि रोग बहुत प्रकारके हैं और इन्हीं रोगों की शांति करने को बडे २ मुनीश्वर और ऋषीश्वरों नें अनेक ग्रंथ वैद्यक के रचना कि ये उन्हीं ग्रंथों की सहायता लेकर वैद्य लोग अनेक रोगियों के प्राण बचाते हैं परंतु जिस हिन्दुस्तानी वैद्य को देषा उसको ज्वरादिक रोगों का इलाज करता देषा परंतु आजकल के जो प्रचंड रोग आतशक सोजाक फोडा फुन्सी घाव आदि का इलाज करते न देषा क्या जानिये ये रोग उन लोगों की समझ में क्यों नहीं आते हैं और इसके उपरांत यह भी बात है कि ये रोग सुश्रुत आदि बडे २ ग्रंथों में लिखे है सो उनको कोई देषता नहीं इसीलिये मुझ रंगीलाल नें संस्कृत वो उर्दू की बहुत सी पुस्तकों की सहायता लेकर ये जर्राही प्रकार नाम ग्रंथ रचा जो महाशय मेरी मूढता को क्षमा कर इस ग्रंथ को देखेंगे वे इस समय में अवश्य फायदा उठावेंगे यह ग्रंथ सर्व सुखदाई है ॥

इति

ग्राहोप्रकाश

तीसरा भाग



श्यामकाशी यंत्र में लाला
श्यामलाल के प्रबंध से छपा

जर्राही प्रकाश

तीसरा भाग



श्याम काशी यंत्र में लाला श्यामलाल
के प्रबंध से छपा॥
मथुरा नया बाजार में॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥

अथजर्राहीप्रकार तीसरा भाग लिख्यते

जानना चाहिये कि नेत्रोंमें सात परदे और तीन रतूबत होती है और एक असवा है इसी असवाको मनुष्य पुतली और तिल कहते हैं ये एक के सदृश बीचमें से खाली है और इसीमेंसे सबको दिखाई देता है और बीचोंबीचमें आकर रतूबत जलादियातक पहुंची है इस रतूबत जलादियामें सब दिखाई देता है और असवेमें निकलकर दृष्टीकी इन्द्रीतक पहुंचती है वह इनको पहिंचान सकती है और इसी रतूबत और असवेके बचावके लिये और सब परदे और रतूबतें आस पास हैं॥

नेत्रकेसातों परदोंके नाम

मुलतहिमा १ करनिया २ इनबीया ३ अनकबूतिया ४ शबशबकिया ५ मसामियं ६ सलबीया ७

तीनों रतूबतोंके नाम

बेजिया १ जलादिया २ जजाजिया ३

अब जिस तरहसे नेत्रोंमें ये सात परदे और तीन रतूबत लगी हैं उनका बयान विस्तारसे कियाजाता है नेत्रका परदा जो बाहरकी ओर हवासे मिला हुआ है अर्थात् नेत्रोंमें जो सफेदी दिखलाई देती है वह मुलतहिमा नाम पहिला परदा है और नेत्रोंमें जो गोल स्याही की चिन्ह दिखाई देता है अर्थात् जिसको पुतली कहते हैं वह करनियां नाम दूसरा-

परदा है और ये दोनों परदे आपस में मिले हुए हैं और इन के पीछे क ओ तीसरा परदा है उस का नाम इनबीया है यह परदा रंगदार है और करनिया नाम जो परदा है ऊपर कह आये हैं उस में जो रंग है सो इसी का है इस परदे के बीच में एक छिद्र है रोशनी के और रतिबों के निकलने के लिये और नेत्रों में पानी उतरने की जगह भी यही है॥

इस परदे के पीछे रतूबत बैजिया है इस का रंग अंडे की सफेदी के समान है इस रतूबत के पीछे परदा अनकबूतिया पाच मां मकड़ी के जाले के समान है॥

इस के पीछे रतूबत जलादिया है और इस के पीछे रतूबत अजाजिया है जो पिघली हुई काच के सदृश है॥

और इस के पीछे परदा शवकीया है जो जाल के अनुसार है और इन दोनों रतूबतों को घेरे हुए हैं॥

और इस के पीछे परदा मसीमिया है॥

और इस के पीछे परदा शलबीया है जो नेत्रों के ढेले से लगा हुआ है ये सात परदे और तीन रतूबतों से नेत्रों का समस्त बनाव बना है सो इन परदों को एक के पीछे एक क्रम से जानना चाहिये और हर परदों और हर रतूबतों में अलग अलग रोग होते हैं उन का वर्णन आगे करूंगा॥

अथ रमद अर्थात् आंख दूखने की चिकित्सा

मुलतहिमा जो पहिला परदा है उस पर जो सूजन आ जाती है उस को रमद कहते हैं और ये रोग पांच प्रकार का होता है वायका १ पित का २ कफ का ३ रुधिर का ४ रीह का ५

जो ये रोग रुधिर से हो तो उसके लक्षण ये हैं कि नेत्र लाल और भारी हो जायगे और दर्द होगा आंखों की चढ़ अर्थात् गीद इनसे बहुत निकलेगी॥

और जो बलग़म अर्थात् कफ़ से हो तो रंग इसका सफ़ेद होगा आंखे फूल जांयगी और कीचढ़ आंसू इनसे बहुत निकलेंगे॥

और जो ये रोग सौदा अर्थात् वात से हो तो सूजन बहुत होगी परंतु कीचढ़ नहीं निकलेगी और पलक नहीं चिपकेंगे और नेत्र बोझल होंगे और सिर में दर्द भी होगा॥

और जो ये रोग रीह के कारण से होगा तो न कीचढ़ निकलेगी और न बोझल होंगी॥

उपाय इस रोग का यह है कि मवाद के अनुसार उसे साफ़ करे और फ़स्त और जुल्लाब से पहिले कोई औषधि नेत्रों में न डाले परंतु जब यह रोग हलका हो तो दो तीन दिन पीछे बिना फ़स्त और जुल्लाब के दवा डालनी फायदा करती है॥

और दूसरे हकीमों का मत है कि इस रोग में शेररू नस को फस्त खोले कि सब प्रकार के रमद को माफ़क आती है और जोंक लगाना भी गुण करता है इस रोग में मांस और मिष्टान्न खट्टा खारा न खाय रमद रोग की आदि में नेत्रों को शीतल जल लगाना नहीं चाहिये और हरदी में कपड़ा रंग करके अथवा नीला कपड़ा नेत्रों के सन मुख लटकाना बहुत फ़ायदा करता है॥

अब इस रमद रोग के वास्ते अनेक प्रकार के अंजन व गोली

वोलेप आदि लिखता हूं॥

इलाज

जो ये रोग गरमी से हो तो अमीतकोल्ड की कीमा के दूध में घोलकर नेत्रों के ऊपर और भीतर लगाना अति लाभ दायक है और जो नेत्रों में पीड़ा ज्यादा हो तो थोड़ी सी अफ़ीम भी इसमें मिलानी अच्छी है॥

गोली

हकीम जालीनूस ने लिखा है कि आंख दूखने के वास्ते यह गोली बहुत फ़ायदा करती है फिटकरी भुनी हुई ३॥ तोले हलदी ७ माशे अफ़ीम ४ माशे इन सब को पक्के कागज़ी नीबू के रस में मिला कर लोहे की कढाई में मंदी आंच से पकावे जब गाढ़ा हो जाय तब गोलियां बनाले फिर इस गोली को पानी में रगड़ कर नेत्रों के ऊपर पतला लेप करे और नेत्रों के किनारों पर आंजे -

सफ़ेदा का फाया

धोया हुआ सफ़ेदा १॥ तोले निशास्ता कतीरा बबूल का गोंद अफ़ीम ये चारों दवा दो दो माशे ले इन सब को महीन पीस कर इसका फाया बना कर नेत्रों पर बांधे॥

अथवा

लोध· गेहूं की मैदा· घी ये सब चौदह २ माशे ले सबों का मोया बना कर चार गोली बनावे और एक ठीकरा आंच पर रख कर वामें एक गोली रख दे जब थोड़ी गरम हो जाय तब ठंडी कर नेत्रों पर बांधे इसी प्रकार चारों गोलियां बांधे तो बहुत जलदी फ़ायदा होय॥

लेप

हरड़की छाल · सेंधानोन · गेरू रसौत ये सब बराबर ले बर्ने जलमें पीस नेत्रों के ऊपर लेप करे तो सर्व नेत्रों के रोग जाय

अथवा

लोहे के पात्र में नीबू का रस डाले पीछे उस रस को कुछेक गा-ढा करे पीछे नेत्रों के ऊपर लगावे तो सर्व नेत्र पीड़ा जाय॥

अथवा

अफीम १माशे फूली फिटकरी १माशे लोध१माशे इनसब को नीम के रसमें पीस लोहे की कढ़ाई में थोड़ासा गरम करिके पीछे नेत्रों पर लेप करे तो नेत्रों का दुखना अच्छा होय॥

अथवा

मुलेठी गेरू सेंधानोन · दारुहलदी · रसौत ये सब बराबर ले इन्हें जलमें महीन पीस नेत्रों पर लेप करे तो नेत्र पीड़ा जाय॥

पोटली

पठानीलोध १मा · फूली फिटकरी १मा · रसौत १मा · मुले ठी १मा · इन सब को महीन पीस ग्वार पाठे के रसमें अथ वा पोस्त के डोडे के पानी में वा जलमें १माशे की पोटली करिके पीछे नेत्रों पर बारबार फेरे तो नेत्र पीड़ा जाय

अथवा नेत्रों में हवा लगने से शूल चले उसका यत्न

पठानीलोध को सेककर महीन पीस कपड़े में छानकर घ नमें भूने पीछे उसे गरम पानी से सेक करे तो नेत्रन का शूल बंद होय॥

अथवा

ग्वारपाठेकागूदा२मा॰ अफीम२रत्तीभर पीसकर ग्वारपाठेके गूदेमें मिलाकर पोटलीबांधकर पानीमें भिजोकर नेत्रोंपर फेरे और एक बूंद नेत्रके भीतर टपकावे तो नेत्र पीडा जाय॥

अथवा

लोध१मा॰ भुनी फिटकरी१मा॰ अफीम४रत्ती इमलीकी पती४मा॰ इनसब को पीसकर पोटली बनाकर बारबार नेत्रों पर फेरे॥

अथवा

इमलीकीपती॰ सिरसकीपती॰ हलदी॰ फिटकरी ये सबदवा पोनेदो माशे महीन पीसकर पोटली बनाकर पानी में भिगो कर बार बार नेत्रों पर फेरे और थोडासा पानी इसका नेत्रों के भीतर जाने दे तो नेत्र पीडा जाय॥

अथवा

पोस्तकाडोडा१नग अफीम२रत्ती लौंग२नग भुनीवेलगिरी४मा शे चनेकी बराबर हलदी थोडीसी इमलीकी पती इनसबकी पोटली बांधकर पानीमें भिगोकर नेत्रोंपर फेरे॥

अथवा

कपूर तीनभाग॰ पठानीलोध१भाग पीसकर पोटली बांधे और दो घडी पानीमें भिगोकर नेत्रोंपर फेरे और टपकावे॥

अथवा

लोध॰ फिटकरी॰ मुरदासंग॰ हलदी सफेदजीरा॰ येसबचार२मा शे अफीमचनाबराबर कालीमिर्चनग४ नीलाथोथा उडदप्रमा

णइन सबकाकूट छानकर पोटलीबांधकर नेत्रों में फेरे॥

अथवा

बड़ीहड़ईका वक्कल·बहेडे के वक्कल·आमला·रसोत·गेरू·इ मलीकीपती·अफीम·भुनी फिटकरी·सफ़ेद ज़ीरा ये सब ब राबरलेकपड़े में पोटली बांधकर गुलाबजल में अथवा पानीमें भिंजोकर नेत्रों पर बारबार फेरेतो नेत्रपीड़ा जाय॥

अथवा

सफ़ेदज़ीरा·लोधपिसाहुआ·भुनी फिटकरी पिसी हुई इनस बको बराबरले थोड़ेस्वार पाठेकेगूदे में मिलाकर पोटली बांधकर पानी में भिगोकर नेत्रों पर फेरे॥

अथवा

अफ़ीम एकमाशे·फिटकरी भुनी दोमा·इमलीकीपती १ मा इनसबको महीन पीसकर पोटली बांधकर नेत्रों में टपकाना भी बहुतगुण करता है॥

अथवा

फिटकरी एकमाशे·अलसीदोमाशे इन दोनों की पोटली बांधकर बारबार नेत्रों पर फेरे॥

अथवा

ईशबगोलाकालुआबनेत्रों परलगानेसे गरमीकीपीड़ाजाय॥

जिस दिन मनुष्यकेनेत्रमें पीड़ा होयउसी दिन धतूरेके पतों कारस गुनगुना कानमें टपकावे परन्तु जो दाहिनी आंखमें पीड़ा होयतो बायें कानमें रस डाले और बाई आंखमें दर्दहोतो बायें कानमें रसटपकाना फायदा करता है॥

औरजो बच्चोंकी आंख दूखनी आवेतो नीमकी पतीयोंकारस ऊपरलिखेरीतके अनुसार कान मेंटपकावें॥

औरजो दोनों नेत्रों में पीड़ा होतो दोनों कानों मेंटपकावे॥

अथवा

निरास्वार पाठेका गूदापीस कर सोते समय कानमेंटपकावे॥

ये दवा गरमी कीनेत्र पीडाकोशान्ति करती है चांदनी कीपती मल कर उसका रस निचोड़ करनेत्रों में टपकावे॥

अथवा हलदीपानी में पीस कर उसी प्रकार कानमेंटपकावे तो नेत्रपीड़ाजाय॥

दवा जो गरमी कीनेत्र पीडाकोफायदाकरे वोहदानकालुआ च और धनिये के पतों कारस लड़कीकीमाके दूधमें मिलाकर छानकर नेत्रोंमेंटपकावे॥

अथवा नीबूकारस लोहे के खरल में लोहे के डस्ता से घोटे ज वउस का रंग काला होजाय तबनेत्रों के आसपास पतला - पतला लेपकरै॥

अथवा लोध आमले गाय के घीमें भून करठंडे पानी में पीस प तला पतलालेपकरै परंतुनेत्रों के भीतर न जाने पावे॥

अथवा बड़ीहर्डका वक्कल गेरू रसोत छोटी हरड़ घिस कर लेपकरै

अथवा सूखी इमली के चीयां निकालकर पानीमें भिजोकरम सल छानकर तीनरती अफीम पांचरती फिटकरी इन दोनो को उ सी इमलीके पानीमें डालकर लोहेके बासन में पकावे जब रस गाढ़ा होजाय तब सीपमें धरकर पतलालेपकरै और जो किसीस मयमें इमली न मिले तो उसके पतोंका रसलेकर पतलालेप करै

अथवा सोंठ ३॥ माशे बबूर का गोंद ३॥ माशे इन दोनों को कूटछा
नकर पानी में पीस कर लेप करै॥

अथवा अमचूर लोहे के तवे पर लोहे के दस्ते से थोड़ा थोड़ा पानी
के संग खूब पीस कर पतला लेप करै और नेत्र में टपकावे॥

अथवा बड़ के दूध को नेत्रों में आंजे॥

अथवा नीम के पत्ता और सोंठ बराबर लेके अलग अलग पीस क
र छान कर चने प्रमाण गोलियां बांधे पीडा के समें पानी में लगावे

दवा· जो नेत्रों की सुरखी और बगल गंध को गुण करै काली मिर्च
१॥ नग थोड़ा सी चूल्हे की माटी लाल जली हुई बांस के चांगे अथ
वा चीनी के प्याले में खूब पीसे जब काली हो जाय तब नेत्रों में आंजे

अथवा अड़ूसे के पत्ते पीस कर टिकिया बना कर तीन दिन नेत्रों
पर बांधे॥

अथवा कपास की पत्ती दही में पीस के नेत्रों पर लगावे॥

अथवा

अनार की पत्तियों को पीस कर उसकी टिकिया बनाकर सो
ने के समय नेत्रों पर बांधे॥

अथवा

गोभी को पीस कर उसकी टिकिया बनाकर नेत्रों पर बांधे॥

और जो इस रोग में नेत्र छाती और पेट में जलन होतो ये दवा
करे मकोय· आमले· मुलैठी· नागरमोथा· खस· चीलो फर
के बीज ये सब साढे तीन २ माशे मिश्री दो तोले दश माशे इन
सब को कूट छान कर सात माशे नित खाय तो जलन मिटे॥

दवा· जो कफ को नेत्र पीडा को फायदा करै सहजने के पत्तों का

थोडासारस सहतमेंमिलाकर नेत्रों परलगावे तीनदिनमें आराम होय॥

दवा· जो बच्चों की नेत्र पीडाको गुण करै चाकसू रुहु७ माशे- लाईं १॥ माशे मिश्री १॥ माशे इन तीनोंको महीन पीस छानकर छिडके और लाई न मिले तो ममीरा डालनेना उचित है॥

दवा· थोडीमेथीका लुआब थोडे से कतीरा के संग टपकाना विशेष पीडा को आराम करता है॥

दवा· कटेरीके पत्ता पीसकर नेत्रों पर बांधे और पत्तों का रस नेत्रों में निचोडे तो भी गुण करता है॥

अथवा कच्चे आमको पीस कर नेत्रों पर बांधे॥

अथवा छिली हुई मुलेठी को कूटके थोडे पानी में पीस कर उसमें रुई भिगो कर नेत्रों पर रक्खे तो नेत्रों की सुर्खी जाय

अथवा लोध १॥ तोले· बडी हडका बकल ७ मा· इन दोनों को अनार के पत्तों के रस में पीस कर इसमें रुई भिजो कर नेत्रों पर रक्खे इसी प्रकार तीन रात्रि पर्यंत करने से सब प्रकार की नेत्र पीडा को फायदा करै॥

अथवा

ये दवा नेत्रों की गरमी और खुजली को मिटावै और रमद के रोग को दूर करै त्रिफला का बकल औ कुट करके राति को पानी में भिजोवे फिर प्रात काल उस पानी से नेत्रों को धोवै जो यह औषध एकादिन करै तो एक वर्ष पर्यंत पीडा न होय भी परंतु इतना ध्यान रखना चाहिये कि आंख दूषते नहीं होय॥

अथवा

जो मनुष्य वीस मुंडी निगल जाय तो एक वर्ष तक ये रोग न हो गा और जो मनुष्य चालीस मुंडी निगले उसको दो वर्ष न होगा और बहुत से हकीम यह कहते हैं कि जो बुद्धी को दिन सूर्य्य उ दय के समय एक अनार की कली जो फूली हो उसे पेड़ पर से मुंह से तोड कर निगल जाय तो एक वर्ष पर्य्यंत आंख न दूखे औ र जो दो कली निगले तो दो वर्ष तक न होगी॥

रतोंधका यत्न

जिस मनुष्य के रतोंद का रोग हो वो ये दवा करे काली मिर्च - कचेला · पीपल · इन सबको बराबर ले महीन पीस नेत्रों में आंजे

अथवा

छोटी हर्ड · सोंठ · काली मिर्च इन सबको बराबर ले कर पीस छान कर गोली बना कर पानी में घिस कर नेत्रों में आंजे॥

अथवा

ये दवा हकीम बू अली सीना की आजमाई हुई है सो लिखते है बकरी के कलेजे का कवाब बनावे उस का जो पानी टपके उस को नेत्रों में लगावे तो भारी भी रतोंध जाय॥

अथवा

प्या जका रस नेत्रों में आंजे॥

सिर्स के पत्तों का रस नेत्रों में लगावै॥

अथवा

समुद्र फल की गुठली बकरी के मूत्र में घिस कर लगावे · अथवा सेंधा नोन की सलाई नेत्रों में फेरे॥

अथवा दही के तोड मे थूक मिलाकर नेत्रों में आंजे॥
अथवा अदरक को पीसकर उसका रस निकालकर नेत्रों में टपकावे॥
अथवा सोंठ को पानी में घिसकर नेत्रों में आंजे॥
अथवा काली मिर्च थूक में घिसकर लगावे॥
अथवा रोहू मछली का पित्ता नेत्र में लगावे॥
अथवा कमोदी के फूलों का रस नेत्रों में लगावे॥
अथवा सहजने की नरम नरम डालियों का मात माशे सहत में मिलाकर नेत्रों में टपकावे॥
अथवा सिरस के बीज चार तोले आठ माशे पीसकर चून में मिलाकर रोटी पकावे इसी तरह तीन दिन रोटी पका कर खाय॥
अथवा हर्ड और लाल मिर्च शहत में घिसकर आंजे॥
अथवा काली मिर्च रोहू मछली के पित्ते में भिजोकर सुखाले जब सब पित्तों को मिर्चें सोख लें तब उन मिर्चों को घिसकर नेत्रों में लगावे॥
अथवा गधे का रुधिर तुर्त का निकला हुआ नेत्रों में लगावे
अथवा मनुष्य के कान का मैल और बडी हर्ड का वक्कल बराबर पीसकर गोली बनावे पानी से घिसकर नेत्र में लगावे॥
अथवा सरकंडे को गांठ पर से तोडकर उसका खोखला जलावे जब चार अंगुल जलने रहे उसके दो टुकड़े करे वह लाल लाल तर जो उसमें इकट्ठी हो गई हो उसको नेत्रों में लगावे वह धातेजी के कारण करके पीडा और जलन पैदा करेगी परंतु दोष को आंसुओं के संग बहा कर रोग को शांति करती है॥

अथवा

हुक्केकेनैचेकीकीट अर्थात् नैचेकेभीतर जोकालीकीचड़ निकलतीहैउसकोनेत्रोंमेंआंजे॥

फसलुजहर अर्थात् दिनौंधीकीचिकित्सामें

दिनोंधीउसरोगकानामहैकिमनुष्यकोदिनमेंतोकुछदीखेनहीं औररात्रिमेंदीखे इसरोगकाउपाययहहैकिलड़कीकीमाकादूधसिरपरमलेऔरनाकमेंभीटपकावेऔरठंडेपानीमेंगोतालगाकरनेत्रोंकोखोले॥

अथवा उन्नावकाशरबतपीवे उन्नावकेशरबतबनानेकी यहरीतिहै किउन्नाव एकहिस्सेचार हिस्सेपानीमेंभिगोकेऔटावेजबचौथाईजलजावेतबछानले फिरउसमेंदुगनीचूराडालकरचासनीबनाले॥

अथवा उड़दकीदालखायाकरे कि इसकेखानेसे रुधिर गाढ़ा होजाता है॥

पलकोंकेरोगोंका बयान

इसरोगमेंनेत्रोंकेपलकमोटेहोजातेहैं औरउनमेंखुजली औरखुष्कीभीहोतीहै और पलकोंकेबालगिरजातेहैं इसकीचिकित्सायहहै किसरेरूनसकीफस्तखोले और मस्तककोपिछाड़ीपछनेलगानाउसकेपीछेऔषधिकाममेंलाना॥

दवा जो आककेदूधमें रुईभिगोकर सुखाले औरदीयेमें

मीठा तेल भर कर उस रुई की वती बना कर उस तेल में दीपक जोर कर काजल पाडे फिर उस काजल को नेत्रों में लगावे और वाजी कितावों में तेल के बदले घी लिखा है॥

अथवा धतूरे और भांगरे की पतियों का रस ले कर उस में रुई भिजो कर छाया में सुखा कर उस की वती बना कर मीठे तेल में जला कर काजल पाडे फिर इसे पानी से नेत्रों में लगावे॥

अथवा पुराने ढोल की खाल को कोयलों की आंच पर जला कर पीसे फिर पाले की रुई में रख कर वती बनावे और सरसों के तेल में जला कर काजल पाडे और नेत्रों में लगावे॥

अथवा आक की जड जला कर उस की राख पानी में मिला कर नेत्रों के आस पस पतला २ लेप करे तो नेत्रों का खुजली और खुश्की और पलकों के फूलने को दूर करे है वाजी पुस्तकों में लिखा है कि नीम के पतों का रस नेत्रों में लगावे तो भी यही गुण करते हैं॥

दवा॰ जो परवालों और बाफनी गल जाने को और नेत्रों से आंसू बहने को और आखों की खुजली और सुरखी को गुण करे है अव्वल दो तोले चार माशे लोहे के वासन में कोयलों की आंच पर पिघला कर थोडा २ उस पर बथुए के साग का रस टपकावे कि पीलो वा सफेद भस्म हो जावे उसे महीन पीस कर नेत्रों में आंजे॥

अथवा ये दवा पलकों को गिर पडने को और बाफनी गल जाने को गुण करे चकचूंदर की बीठ आधी कच्ची आधी पकी दोनों को पीस कर सहत में मिला कर पतला २ लेप करे॥

अथवा

सफेदाविसखपराकीजड छाया में सुखाकर पानी में घिसकर नेत्र में लगावे॥

अथवा

माखी का सिर जुदा करके सुखाकर पानी में पीसकर पतला लेप करै॥

अथवा

सीप जलाकर उसे पीसकर नेत्रों में लगावै॥

अथवा कटेरी के फलको पानी में औटाकर वफारा दे॥

अथवा कबूतरकी बीठको सहत में मिलाकर पलकपर ले पलगावै॥

अथवा सांपकी कांचली जलाकर तिलके तेल में मिलाकर पलक पर पतला लेप करै॥

जिस मनुष्य की वाफनी गल जाय और पलक गिर पडें और किनारे लाल पड जांय उस मनुष्य के ये दवा लगाना उचित है॥

बबूलकी पती एकसेर लेकर पांच सेर पानी में औटावे जब चौथाई पानी रह जाय तब छानकर दोनों वक्त नित्य पलकों पर पतला लेप करै थोडे दिनों में बिलकुल आराम हो जायगा॥

अथवा गधे की लीद को सुखाकर उसका पाताल यंत्र की राह से तेल खेंच ले और उस तेल को पलकों पर मसले—

अथवा कद्दू अर्थात् घीया को जलाकर उसकी राख सुर्मे की तरह नेत्रों में लगावै॥

अथवा पुराना कपड़ा लथा रूई तीन बेर हल्दी में रंग कर सुखा कर फिर इसी प्रकार बेनोले के पूद में तीन बार भिजो कर सुखाले फिर इसकी बत्ती बना कर सरसों के तेल में काजल पाड़ कर उस काजल को नेत्रों में लगावे॥

अथवा

खपरिया· लीलाथोथा· कपूर। मिश्री इन सब को बराबर ले कूट छान कर पानी में खरल करके गोलियां बनावे फिर जब काम परे तब एक गोली पानी में घिस कर नेत्रों में लगावे

अथवा

कुदरू गोंद को काजल के समान पीस कर नेत्रों में लगाने से नेत्रों की जोति को बढ़ावे और नेत्र के घाव और जमे हुए रुधिर को और आंसू बहने को और याफनी गल जाने को और नेत्रों की सफेदी और खुजली को गुण करे और धुंध को भी दूर करता है और जो कुदरू गोंद का काजल बना कर लगावें तौ भी यही गुण करता है इसके काजल बनाने की विधि यह है कि कुदरू गोंद को दीये में धर के जलावै और वाके ऊपर एक सरैया औंधी धरदे कि उसमें काजल पड़ जाय तब उसको नेत्रों में आंजे ये दवा पलकों के झड़ जाने को भी फायदा करती है॥

अथवा कुहारे की गुठली २ माशे बालछड़ ७ माशे इन दोनों को पानी में महीन पीस नेत्रों में लगावै तो पलकों का झड़ना बंद होय॥

मोतिया बिंद की चिकित्सा॥

जिस मनुष्य के नेत्रों के आगे मच्छर तथा मक्खी के सदृश उड़ते हुए मालूम पड़ें दिन प्रतिदिन विशेषता होती जाय तो जानिये कि इस मनुष्य के मोतिया बिंद होगा और इस से पीछे पुतली बदल जाय और नेत्रों की जोति जाती रहे॥

और बहुत से हकीम इस प्रकार बयान करते हैं कि यह नजला है कि थोड़ा थोड़ा या एकही बार नेत्रों में उतरता है और अवन्नियानाम जो परदा है उसके छिद्र में ठहर रहता है जो यह गाढ़ा होतो दृष्टि बिलकुल जाती रहती है और जो पतला होगा तो धुंधला दिखाई देगा इसको हकीम लोग पुनरिशरकाक कहते हैं जो नजला पूरा छागया हो पालो नेत्रों में कुछ भी दिखाई न देगा और पुतली बदली हुई दिखाई देगी परंतु मोतिया बिंद से पहिले खयालात का रोग अवस्य होगा॥

खयालात का वर्णन

खयालात उस रोग को कहते हैं कि नेत्रों के आगे भुनगे से उड़ते मालूम होते हैं ये रोग तीन प्रकार का है एकतो मोतिया बिंद के होने से पहिले होता है दूसरा पेट के बिगड़ने से तीसरा दृष्टि के तीव्र होने से॥

मोतिया बिंद के होने से पहिले जो होता है उसकी पहिंचान यह है कि भुनगे से हरदम दिखाई देंगे और प्रतिदिन बढ़ते जायगे और वह थोड़ा एक नेत्र में होंगे उपाय इसका मोतिया बिंद के इलाज में लिखेंगे॥

औरजोयेरोगपेटकेबिगड़नेसेहोंतोपेटकेखालीहोने
औरभरेहोनेपरअधिकादिखाईदेंऔरजोनेत्रोंकेपर्दों
औररतूबतोंकेबिगड़नेसेहोंतोनेत्रमेंनहोंक्योंकिउसमेंप
हिलेकोईरोगहुआहोगाउपायइनदोनोंरोगोंकायहहैकि
भेजेऔरपेटकोमवादसेसाफकरेऔरइसकेपीछेनेत्रके
पर्देपररतूबतोंकामवादकारणकेअनुसारनिकालेऔर
जोदृष्टिकेतीव्रहोनेसेहोंतोउसकाचिन्हयहहैकिदृष्टिठी
कहोगीऔरभेजेकीइन्द्रीसबतीव्रहोंगीयहकोईरोगन
हींहैवदनसेजोधुआंऔरहवामेंछोटीछोटीवस्तुउड़ती
हुईदिखलाईदेतीहैं

मोतियाबिंदकायत्न

हकीमोंकोचाहियेकिइसरोगमेंप्रथमकनपटीपरगुल
लगावेंजिससेयोरगजलजायऔरगुललगानेकेपीछे
तीनदिनतकउसपरहरामगज़मलेंफिररोटीकोतिली
केतेलमेंभिगाकरउसपररक्खेंऔरगुललगानेसेजितना
पानीबहेउतनाहीअच्छाहैऔरभारीवस्तुकेखानेसेऔर
मैथुनकरनेसेबचेंऔरपानीउतरआनेकेपीछेजबएक
बरसव्यतीतहोजायतबदेखेकिआंखमलनेसेपानीफै
लकरफटजाताहैयानहींजोफटजायतोफस्तखोलेऔ
रजुलाबदेपीछेदस्तकारीकरे॥

दस्तकारीउसकोकहतेहैंकिजोसलाईआदिकोआंखोंमें
फेरकरजालानिकालेऔरनेत्रोंमेंचीराआदिकालगानाद
स्तकारीकहातेहैंसोयहदस्तकारीकाइल्मऔरइसकीतर-

पीस कर लगावे॥

अथवा कोआका पिना आधे सहद में मिलाकर खूब रगड़े फिर नेत्रों में लगावे॥

अथवा

निर्मली·हींग·फिटकरी·सफेदा·खपरिया·नीलाथोथा चौदह २ माशे इन सबको महीन पीस कर दहीमें घोटे कि आठ सेर दही उसमें समाय जाय पीछे उसकी गोली बनावे और समय के ऊपर गोली को स्त्री के दूध में घिस कर लगावे॥

और जब जाने कि इस मनुष्य के मोतियाबिंद होने वाला है तब पहिले ही से यह दवा करे तो मोतियाबिंद को नहीं होने देता हई की मींगी को निर्मल पानी में पीस तीस पहर घोटे और गोलियां बना कर नित्य प्रति नेत्रों में आंजा करै॥

अथवा

दो नग कागजी नीबू का रस लेकर चार तोले गऊ के मक्खन में खूब मसल मसल के माखन में थोड़ा पानी डाल कर दो दिन राति धर दे फिर मक्खन को पानी से धोकर वाही प्रकार दो नीबू के रस में घोट कर पानी डाल कर के चीनी तथा सीसी में रक्खे और रवस २ के दो दानों की बराबर नेत्रों में लगाया करे तो मोतियाबिंद जाय॥ ऊपर लिखी रीति से माखन को पच्चीस दिन करे॥

अथवाकालेसांपकेमांसकाघृतऔर शंखकीनाभिनि
र्मली इन्हें महीन पीसनेत्रोंमें अंजन करेतो मोतिया विं
दकारोगजाय॥

अथवामुर्गीकेअंडेकाछिलका मैनशिल· कांच· शंख
कीनाभि· चंदन· सेंधानोन· येसवबराबरले इने महीन
पीस अंजन करेतो मोतिया विंद फूला आदि सब
रोगजांय॥

अथवा कालीमिर्च २मासे· पीपलदोमासे· समुद्रफेन
दोमाशे· सेंधानोनदोमाशे· सुरमा ३६माशे· इन्हें मही
न पीस चित्रा नक्षत्र के दिन इस कासेवन अर्थात्
अंजन करेतो फूला खाज· काचसे आदिले सब
नेत्र रोगजांय॥

अथवा खापरेको महीन पीस उस को जलमें डबोय
दे पीछे उसका पानी लेताजाय उसे जुदा राखे बारबा
रकापानीले और नीचे रहाजो खापरे का चूर्ण उसेले
नहिं और उस खापरे के पानी को जुदे पात्र में सुखा
यदे जवउसकी पापड़ी होजाय पीछेउस पापडी में
त्रिफलेकेरसकी तीन पुटदे पीछे इस पापड़ी का
दशमाभाग· कपूरमिलावे फिर इसको महीन पीस
नेत्रोंमें अंजन करेतो नेत्रोंके समस्त प्रकार के रोग
जाय॥

अथवा सुरमेको अग्निमें गरम कर त्रिफले केरस में
सातबार बुझावे पीछे स्त्री के दूधमें इसी प्रकार सा

नवार वुझावे पीछे गौके मूत्र में सात वार वुझावे इसी प्रकार सुरमे को तपाय तपाय स्त्री के दूध में पांच वार वुझावै फिर इस को महीन पीस कर नेत्रों में अंजन करे तो सर्व रोग जांय॥

अथवा सीसे को अग्नि गलाय गलाय त्रिफले के रस में १०० वार वुझावे पीछें इसी तरह जल भांगरे के रस में ५० वार वुझावे पीछे इसी तरह सोंठि के रस में ५० वार वुझावे पीछें इसी तरह घृत में ५० वार वुझावे पीछें गोमूत्र में २५ वार वुझावे फिर सहत में २५ वार वुझावे फिर बकरी के दूध में २५ वार वुझावे फिर इस सीसे की सलाई वनावै फिर इस सलाई को जो मनुष्य नेत्रों में फेरे तो नेत्रों के सव रोग जाय॥

अव थोडा सा वयान इस मोतिया विंद का और भी करते हैं नेत्र के तिल के ऊपर दही या मठे के समान वूंद आजाय और वह वूंद नेत्र के तिल को ढकले फिर उस मनुष्य को कुछ भी दीखे नहीं और उन नेत्रों में पीडा दिक कुछ भी नहीं होय तव उस नेत्र का सलाई आदि से जल को उतारे परंतु जो मोतिया विंद का जाला कच्चा होय तो शलाई से न उतारे जब जाला पक जाय तव शलाई नेत्रों में गेरनी उचित है और हकीम को तथा सतिये को चाहिये कि इतने मनुष्यों का जाला न उतारे सो लिखते हैं पीनस के रोग वाले का और जिस के कान और नेत्रों मे मूल चलता होय और श्रावण को

लिके और वैद्य इन तीन महीनों में जाला उतारिये नहीं और
साधारण काल होय तब जुलाब दें शरीर को शुद्ध करे भो
जन करे अच्छे निर्मल स्थान में रोगी को बैठावे जहां पव
न इत्यादि नहीं होय मध्यान्ह के पहिले नेत्र के रोग को दूर
करने वाले प्रवीण वैद्य तथा हकीम के निकट नेत्र का
जाला शलाई से लिवावे वैद्य है सो रोगी को पालथी
मार कर बैठावे और रोगी के पीछे चतुर मनुष्य को बैठा
वे वह मनुष्य दोनों हाथों से रोगी को पकड़े और हल
ने नहीं दे इस तरह उस को बैठावे पीछे उस रोगी के नेत्र
में हकीम सलाई डाले चतुरता से अत्यन्त उसको आंखसे
शलाई को फेरे सलाई से नेत्र के आन भाग में जाले को फो
ड़ सब नेत्र के जाले को दूर कर उस जाले में से नेत्र के तिल के
ऊपर को वह विकार की बूंद ढल पड़े तब उस रोगी को स
ब वस्तु ठीक ठीक दिखाई दें शलाई के फेरने से पहिले
नेत्र को मुख की भाप से फूंक दें प्रस्वेद युक्त करलें और
हकीम अपने अंगूठे से उस रोगी के नेत्र को मसल कर -
कोमल करले पीछे शलाई से जाले फोले और हकीम
को भी चाहिये कि जाला उतारती वक्त अपने हाथ को
हलने न दे इस विधि से नेत्र का जाला उतार पीछे रोगी
को अच्छी बातों से प्रसन्न कर सुलाय दे पीछे उस रोगी की
आंख के ऊपर घृत का फोहा बांधे और उस रोगी को स
धा सुलावे ऐसे स्थान में जहां पवन चकाचौंध आवे नहीं
और रोगी का माथा आदि शरीर हिलने न दे और रोगी को

छींकखांसी डकार थूकना बहुत पानी दांतन करना स्नान करना खेद आदि इतने कर्म न करने दे और उस रोगी को अधोमुख सोने नहीं दे अत्यन्त हलका भोजन करावै॥

और घृतादिक गरिष्ठ वस्तु न खाने दे इस विधि से ७ दिन करै पीछे थोडा सा घृत डाल पतला हलका अन्न का हरीरा खवावे इसी तरह २ मंडल तक रक्खे कुछ कुपथ्य नहीं करने दे पवन तेज और महीन वस्तु आदि को देखनहीं और जिससे नेत्रों में सीतलता होइ ऐसी दूब आदि वस्तु देखने दे तो मोतिया बिंद आदि ले नेत्र के सब रोग जाय पीछे इसको सीतल चस्मा लगावे तो यह रोग फिर कभी नहीं होय॥

यमैंने थोडा सा सलाई का प्रकार लिखा है

अथ नेत्र और पलकों की खुजली का यत्न

जब मनुष्य की आंखों में या पलकों में खुजली अत्यंत चलै तो उस मनुष्य के रोग के आदि में शरू नस की फस्त खोले बाद उसके खुजली दूर करने वाली औषधि करनी चाहिये॥

माजूफल·जवाहर्ड· इन दोनों को पीस कर नेत्र पर लेप करै तो खुजली जाय॥

अथवा मनुष्य के मस्तक के बाल जलाकर महीन पीस कर नेत्रों में लगावे॥

अथवा अंडे का छिलका जलाकर महीन पीस लगावे॥

नीमकातेल

बहुधा करिके नेत्रों के खाज आदि रोगों को गुण करता है नीम के पत्तों को माटी के बरतन में धरकर कपरोटी कर इतनी देर आंच पर रक्खे कि जलकर भस्म हो जाय फिर उस भस्म को नींबू के अर्क में खरल करके नेत्रों में लगावे तो खुजली रोगजाय॥

अथवा सीसे का मैल नेत्रों में लगावे और सीसे का मैल उस कलाम से प्रयोजन है कि सीसे के टूक को जूती की तथा बांस की चोंगली पर गडने से दृष्टि में आवे उस कलोंस को अंगुली में ले कर नेत्रों में लगावे॥

नेत्रोंकीजोत घटजानेकी चिकित्सा

पूर्वरूप इस के विशेष हैं बहुधा नेत्रों की जोति वृद्धावस्था में घटजाती है मस्तक के क्षीण और निर्बल पड जाने के कारण करिके इसमें आराम नहीं होता परंतु चिकित्सा करना उचित है क्यों कि बढ न जाय इसकी चिकित्सा मस्तक की सफाई और बल प्राप्ति करना है॥

और जो कारण इस का रुधिर की अधिकता से होतो फस्त खोलनी चाहिये और तूतिये को कच्चे और खट्टे अंगूर के रस में भिजो कर आंख में लगावे॥

और जो बलगम के कारण से हो तो उसके पकाने के पीछे बलगम का जुलाब दें और बासली कून नेत्रों में लगावे॥

बासलीकूनबनानेकीविधि

चांदी का मैल २॥ मासे समंदर फेन २॥ मासे शफेदा कलई नमक सुरको कालीमिर्च नौसादर पीपल प्रत्येक ॥ मासे जला हुआतांबा ३॥ मासे लोंग छडीला अर्थात् छारछवी ला प्रत्येक १॥ मासे कपूर नौरती तेजपात जुन्दविदस्तर बालछड सुरमा प्रत्येक ३॥ मासे इन सब को पीस कर सुरमा बनाले॥

और इसका कोई और कारण होतो उपाय उसका करे अथवा कच्ची पक्की सलगम खाना नेत्रों की जोति बढाती है॥

और बालों में कंघी करना इससे के नेत्र की जोति बढजा नको गुण करता है नित्य कांघी को दिन में पांच चार द फे मस्तक में फेरना नेत्रों की गरमी को हरती है॥

और शेख रईश अपनी किताब में यह वर्णन करता का है कि निर्मल जलमें फेरना और उस्मे नेत्रों का खोले रहना भी गुण करता है और थोडी सी उलटी करना औ र पांव दबाना और मसलवाना भी कम जोत को गुण करता है और विशेष रुदन करना और गले के पिछा री पछने लगाना और अत्यन्त भूखा रहना और अति मैथुन करना और सया मसर और जोजो अजीर्ण कर ने वाली वस्तु हैं यहसब औगुण करती है॥

अथवा गुल मुंडी का शरबत पीवे तो नेत्रों की जोति घटजाने को और मस्तक की नरी को गुण करता है और ऊपर को गरमी नहीं चढने देता है॥

गुलमुंडी का शरबत की विधि:

मुंडी के फूल पाव भर ॥ तीन पाव बूरा सफेद गुलमुंडी को राति को डेढ़ सेर पानी में राति को भिजो कर प्रात काल उसे औटावै जब तीसरा भाग रहे तब छान कर बूरा मिला कर चाशनी करे फिर इसमें से चार तोले नित्य पीवे और मुंडी का अर्क भी नेत्रों को बल प्राप्ति करे है॥

अथवा

सात माशे सौंफ को कूट छान कर उसमें सात माशे सफेद बूरा मिला कर नित्य राति को खाकर सो रहे इसी प्रकार नित्य खाकर सो रहे और सौंफ का अतर सौंफ के अर्क में से निकाल कर नेत्रों में लगावे तो नेत्र की कम जोति को गुण करता है॥

चमेली की गोली

चमेली के फूलों की डंडी तोड़ कर बराबर की मिश्री मिला कर खरल करके नेत्र में लगावे नेत्र की कम-जोति को गुण करती है॥

अथवा

खपरिया छै माशे टूक टूक करिके दो तीन नीबू के रस में भिजोवे और माटी के बासन में धर कर कपरोटी करि के आरने कंडों में धर कर आंच लगादे फिर निकाल कर सीतल कर महीन पीस कर नेत्रों में लगावै तो कम जोती जाय॥

अथवा रीठा की गुठली की मींगी नीबू के रस में घोटे

और गोली बनाले और नित्य प्रातःकाल थूक में घिस कें नेत्रों में आंजे॥

अथवा जवाहर्ड और मिश्री दोनों को बराबर ले कर पीस कर गोली बनावे फिर इस गोली को घिस कर नेत्रों में आंजे तो नेत्रों की जोति को और लाली को गुण करे

सलाई

सीसे को आंच में गला कर त्रिफला के पानी में बुझावे फिर मेह के पानी में बुझावे फिर सहत में बुझाकर सलाई बनाकर नित्य प्रातःकाल नेत्रों में फेरे तो नेत्रों के सब प्रकार के नेत्र रोग जाय और नेत्रों की जोति को बढावे यह दवा बहुधा करि के नेत्रों के रोग मात्र को गुण करती है और जो इसे हमेशा करता रहे तो अत्यंत चैन रहे जिस समय सोते से उठे उस समय अपने थूक को नेत्रों में आंजे तो उस मनुष्य के नेत्रों में कभी रोग नहीं होय॥

अथवा हींगोटा की मींगी पानी में पीस कर नेत्रों में लगावे तो जोति बढे॥

अथवा निर्मली पानी में घिस कर नेत्रों में लगावे तो जोति बढे॥

अथवा सिर्स के पतों के रस में गजी भिगो कर सुखावे याही प्रकार तीन चार करि के फिर उस कपडे की बती बनाकर चमेली के तेल में काजल पाड राखे इस काजल को नेत्रों में लगाया करे तो जोति बढे॥

अथवा प्याज के रस में शहद मिला कर नेत्रों में लगावे तो नेत्रों की जोति घट जाने को और नजले आदि नेत्र रोगों को गुण करै॥

सुरमा॥ जो नेत्रों की जोति की कमी को गुण करै मिरच २६ नग और पीपल ६० नग और चमेली की कली ५० नग तिल के फूल ८० नग इन सब को महीन पीस खरल करके सुरमा बनाकर लगावे॥

अथवा काली मिरच १ माशे बडी हरड का बक्कल-दो माशे हलदी छिली हुई तीन माशे इन सब को गुलाब जल में तथा पानी में घोट कर सुरमा बनाकर-आखों में लगावे तो जोति बढे॥

अथवा अखरोट दो नग हड की गुठ्ली तीन नग इन दोनों को जला कर पीसे और चार नग काली मिर्च मिला कर खरल करि के सुरमा बना कर नेत्रों में लगावे तो नेत्रों की जोति को बढावे॥

काजल· जो नेत्रों की जोति को बलवान करै नीम के फूलों को छाया में सुखा कर उन की बराबर कलमी-सोरा लेकर सुरमा सा करि के आखों में लगावे तो फूली और नेत्रों की सुर्खी को भी गुण करै

अथवा धुनी हुई रुई आक के दूध में भिगो कर छाया में सुखावे फिर इस की बाती बना कर सरसों के तेल में जलाकर धीरज ताई से काजल पाडकर नीम के सोटे से जिसमें तांबे का पैसा जडा हो फूल कांसी के बरतन में

गुलाब जल के साथ घोटे फिर सलाई से नेत्रों में लगावे तो नेत्रों की जोति बढ़े॥

मांडा-फूली-नाखूना-जाला इनका यत्न॥

जानना चाहिये कि जाला और फूली ये दोनो एक पर दा हैं जो नेत्रों में मवाद भर जाने से उत्पन्न होते हैं और नाखूना नेत्र के पड़े कोए की तर्फ उत्पन्न होता है और जाला सफेदी है जो नेत्र की स्याही पर उत्पन्न होती है और बाजे हकीमों ने इस तरह से बयान किया है कि करनिया नाम जो परदा है उसपर कोई वस्तु उत्पन्न हुई होगी और यह नेत्र के तिल पर होकर फिर नेत्र की सबरी स्याही पर फैल जाता है इस का उपाय यह है कि समंदर फेन को पानी में घिस कर आंख में लगावे तो थोड़े दिनों के बाद अच्छा हो जायगा और जो म वाद पुष्ट होतो भेजे को मवाद से साफ करे और उस जा ले को नाहर की तरह जीभ से चाटना अति गुण दा यक होता है॥

और बाजे हकीम कहते हैं कि इस रोग में शरुरू नस की तथा ललाट देश की नस की फस्त खोले पी छें नेत्रों की जोति बढ़ाने वाली दवा लगावे॥

गोली- जो नेत्र की पीड़ा और नाखूना और बहुत आंसुओं का बहना इतने रोगों को गुण करती है अरहर के पत्तों का रस २४ माशे ले कपड़े में छान नीम के घोटे से जिसपैसे

गदा हो उस से घोटे और उस्में दस कागजी नीबू का रस मि
लाले फिर उसे खूब खरल करे फिर जब गाढा हो जाय
तब उस की गोली बनाके नेत्रों में लगावे॥

गोली

ये गोली मांडा और फूली तथा जाले को गुण करै सिरस
के बीजों की मींगी खिरनी के बीजों की मींगी इन दो
नों को सिरस के पत्तों के रस में मिला कर खरल करै फि
र इस की गोली बनाकर स्त्री के दूध में घिस कर लगावे॥

गोली

जो फूली और जाले को गुण करै जवाहर्ड़ पलासपापड़ा
संधानोन लालचंदन इनसब को कूट छान कर गोली
बनाकर पानी में घिस कर नेत्रों में लगावे॥

गोली

जो फूली और बाफ निगलजाने और मोतिया बिंद को
गुण करै॥ समंदर फल की मींगी रीठा की मींगी खिर
नी के बीजों की मींगी और काली हर्ड की गुठली की
मींगी इन सब को बराबर ले पीस छान नीबू के रस में
घोट गोली बना नेत्रों में लगावै॥

गोली

लालचंदन एक तोले भुनी फिटकरी इन दोनों को बरा
बर ले पीस छान ग्वार के पाठे में खरल कर गोली बनावे
और समय पर उस गोली को पानी में घिस कर नेत्रों में
लगावै॥

गोली

जो नाखूने और सफेदी नजले के पानी उतरने आदि को गुण करे॥ साबन पांच तोले दश माशे नीला थोथा ७॥ माशे राल ७॥ माशे साबन के छुरी से टूक टूक करिके लोहे के बासन में रख कर आंच पर गलावे उसके पीछे नीला थोथा पीस कर मिलावे फिर राल को महीन पीस कर साबन में मिलावे और उस बासन को आंच पैही रहने दे फिर उसको लोहे के दस्ते से घोटे जब काला होजाय तब उतार ले फिर उसमें से एक खसखस के दाने की बराबर सीपी में साड़ कर नेत्र में लगावे फिर इसी प्रकार इसको तीन दिन बीच में देकर नेत्रों में लगावे

अथवा

हलदी·दालचीनी·आंबा हलदी·येसब चौदह२ माशे ले नीम के पत्ते पौने दो तोले कूट छान कर छः महीने के बछड़े के मूत में दो पहर साड़ कर गोली बनाले और छाया में सुखाले फिर गुलाबजल में घिस कर लगावे॥

दवा

हलदी लंबी चौड़ी एक गांठ ले उसमें छेद कर के गेहूं की दो कच्ची रोटियों में बीच में उस गांठ को रख कर तवे के ऊपर आंच पर पकावे जब रोटी जल जाय तब हलदी को बाहर निकाल ले फिर इस हलदी को फिटकरी के संग घिस कर नेत्रों में लगावे

गोली॥ बारहसींगे के सींग को प्रथम पानी में पीसे फिर नीबू

केरसमेंरखकरपीसकरकालीमिर्चकेप्रमाणगोलीयनावे फिरघिसकरनेत्रोंमेंलगावे॥

सुरमा

जोजालेकोदूरकरेऔरमोतियाबिंदकोखोवे मिश्रीदोभा· संधानोनएकभागउनदोनोंकोमिलाकरपीसेऔरसुरमासमानकरकेनेत्रोंमेंलगावे

अथवा

कबूतरतथामुरगीकीबीठकोनींबूकेरसमेंखरलकरिकेतांबेकेबासनमेंरखवेफिरनेत्रोंपरलगावै॥

अथवा

अबाबीलकीबीठशाहदमेंमिलाकरनेत्रोंमेंलगावेइसदवाकोतिब्बफरीदीवालेनेउत्तमलिखीहैइससेजालाजातो

अथवा

बारहसींगेकासींगदूधमेंपीसकरनेत्रोंमेंलगाना॥

अथवा सेंधेनोनकीसलाईबनाकरदिनमेंकोईबारनेत्रोंमेंफेरेतोजालाजाय॥

अथवा चिड़िया की बीट पीस कर नेत्रों में लगावे तो नाखूना दूर होय॥

अथवा कटेरीकीजड़कोनींबूकेरसमेंघिस करनेत्रोंमें लगावैतोधुंधजाय॥

अथवा अरहरकीजड़कोघिसकरनेत्रोंमेंलगावे

अथवा बड़कादूधनेत्रोंमेंआंजे

अथवा बैंगनकीजड़पानीमेंघिसनेत्रोंमेंलगावेजालाजाय॥

अथवा कड़वी तोरई के बीजों की मींगी मीठे तेल में घिसकर लगावे तो फूली जाय॥

अथवा समुद्र फेन पीसकर लगावे और बाजे समुद्र फेन को तेल में लगाना लिखते हैं॥

अथवा पुत्रवती स्त्री के दूध में मिश्री पीसकर लगावे तो बच्चों की फूली जाय॥

अथवा सोंठ·फिटकरी·सेंधानोन·इन तीनों को बराबर ले कूट छानकर नित्य प्रति नेत्रों में लगावे तो फूली जाय और जाला मिटे।

अथवा गधी के खुर को आग में जलाकर महीन पीसकर लगावे तो जाला जाय॥

अथवा चमेली के फूलों की गोली जो जोति घट जाने के इलाज में लिख आये हैं वह जाले को भी दूर करती है।

अथवा लाल प्याज का रस नेत्रों में लगावे तो नाखूना दूर होय॥

अथवा तेजपात महीन पीस नेत्रों में लगावे तो नेत्रों का जाला जाय॥

अथवा अत्यंत कलमी सोरा महीन पीसकर उसमें थोड़ी सी हलदी मिलावे कि जिससे रंगत आजावे फिर उसको नेत्रों में लगावे तो नेत्रों की जोति बढ़े और नाखूना और जाले आदि बहुत रोगों को गुण करै॥

अथवा बिसखपरे की जड़ और सफेदा ये दोनों पीसकर लगावे तो नाखूना जाय॥

अथवा रेंडी एकनग मिश्री ३॥ मासे चाकसू शुद्ध दश मासे इनसबको महीन पीसकर आखोंमें भरे तो फूली जाय

अथवा

जंगाल · बबूरका गोंद · सफेदा काशकारी इनसबको बराबर ले महीन पीसकर पानीमें लंबी गोली बनाकर पानीमें घोलकर लगावे तो फूली जाय॥

अथवा

आमले दो तोले चार माशे जो कुटकरिके दो घंटे पानीमें औटावे और फिर छानकर नित्य तीन बेर नेत्रोंमें टपकावे तो जाला दूर होय॥

सुर्मा

जो फूली · जाले · नाखूने · आदिको गुणकरे हीराचूरी १४ माशे महीन पीसकर नींबूके रसमें खूब घोट सुखाय नेत्रों में लगाया करे॥

अथवा

नौसादर · फिटकरी · इनदोनोंको पीसमहीनकर नेत्रों में लगावे तो जाला · फूली · रतोंधी जाय॥

अथवा प्याज आधसेर ले उसे कूटकर उसका रस निकाल उसमें कपड़ा भिगोवे फिर सुखावे और धूल मिट्टी का बचाव रक्खे फिर उसकी बत्ती बनाकर पावसेर मीठे तेलमें जलाकर उसका काजल पाड रक्खे फिर इसको नेत्रोंमें लगावे तो जाला जाय॥

दवा ये मिश्रनीवैद्योंकी बनाई हुई जो इसपंद्रह दिन काम

मेंलावेतो फूलीदूरहोवे जायफलकावकल नीमकीछाल गिलोय कडवाचिरायता· लालचंदन पित्तपापडा रवस गु लमुंडी ये सवदवाएकएकतोलाले फिरइनको पानीमें औटाकरछानले फिरइसमें चौदहमाशे निर्मल शहद मिलाकरपीवे॥

अथवा लालचंदन हाउवेर· नीमकीछाल· आमाहलदी· त्रिफला· अडूसाये सवदोतोलेचारचारमाशे कुटकी ३॥तोले अमलतासका गूदा चार तोले आठमाशे कडवाचिरायता पौनदोतोला सोंठि १४ माशे गीलोय १४माशे नागरमोथा चौदहमाशे सवको कूटकार नित्य दोतोले चारमाशेलेकर तीनपाव पानीमें औटावे जव आधपाव रहजाय तव छानकर दोतोलेचार माशे निर्मल शहद मिलाकरपीवे इसीप्रकार चौदहदिनसेवनकरेतो फूलीजाय

मुंडीपाक

येपाक नेत्रके रोगोंको अतिगुणदायक है त्रिफलाकावकल १तोले जवाहड १तोले कावली हडका वकल १तोले पितपापडा १तोले मुलेठी १तोले औरसवकीवरावर गुलमुंडीले और हड आदिको घीमें भूनले फिर सवको कूटपीसतिगुने कंदकी चासनीकरउसमें सवदवा मिलाकर पाकवनाले फिर इसमें से दो तोले नित्य खाय और और अत्यंतगुणकारता है॥

अथवा सोंठि· हडकीछाल· कुलत्थ· खापरा· फिटकडी· माजूफल· ये सवऔषधिवरावरले और भीमसेनी

कपूर कस्तूरी अफीम मोती ये एक ओषधि की तोल से आधी लेवे पीछे इनसब को खरल में महीन पीस नीबू के रसमें पांच दिन खरल करे पीछे इसकी गोली बना कर गोली को पानी में घिस अंजन करे तो तिमिर जाय और इस गोली को स्त्री के दूध में घिस अंजन करे तो फूला पटल जाय और सहत में घिस अंजन करे तो नेत्र से जल गिरना बंद होय और गोमूत्र में घिस अंजन करे तो रतोंधी जाय और केले के रस में घिस अंजन करे तो नेत्र के मांस की वृद्धी जाय॥

अथवा

नीला थोथा ४ टंक फूली फिटकरी ४ टंक भिगोयी पीपल के बीज ४ टंक मिश्री ४ माशे इनसब को महीन पीस का जल समान कर नेत्रों में अंजन करे तो फूला ढलका जाय

अथवा

शंख की नाभि बहेडे की मींगी हड की छाल मैनसिल पीपल मिरच कूठ वच ये सब ओषधि बराबर ले महीन पीस बकरी के दूध में खरल कर गोली बनावे फिर इस गोली को घिस अंजन करे तो तिमिर नेत्र की मांस वृद्धी पटल कांच रतोंधी फूला इतना रोग जाय॥

अथवा हलदी नीम के पत्ते पीपल मिरच बायविडंग नागर मोथा हड की छाल ये सब बराबर ले इने महीन पीस बकरी के मूत्र में तीन दिन खरल करे फिर इसकी गोली बना छाया में सुखा गोमूत्र में घिस अंजन करे तो तिमिर को दूर करे और पानी में घिस अंजन करे तो कांच को दूर करे और सहत में घिस

अंजन करैतोपटलजाय औरस्त्रीकेदूधमेंघिसकर अंजन करैतोफूलाजाय॥

अथवा हर्डकीछाल१भाग वहेडेकीछालदोभाग आमले ४भाग सितावरदोटंकेभर सुलेठीदोटंकेभर तजदोटंक सें धानोन ४टंक इनसवकीवरावरमिश्रीलेफिरइनसवको एकत्रकरिमहीनपीसदोटंकसहतऔर घृतकेसाथ ४९ दिनखायतोतिमिरपटलकाचरतोंधीफूलानेत्रोंसेजल वहनासवलवाय आदिरोगजाय॥

अथवा त्रिफलाकारस एकसेर जलभांगरेकारस एकसेर अडूसेकारसएकसेर सितावरकारसएकसेर वकरीका दूधएकसेर गिलोयकारस एकसेर आमलेकारस एक सेर कमलगट्टा• सुलेठी• त्रिफला• पीपल• मुनक्कादाख• मिश्री• कटेली इनसवकारसआधसेरले इनसवमेंदोसे रगौका घृतडालकरमधुरीआंचसेपकावेजवसवरेरस जलजायऔरघृतमात्रआयरहैतवइसघृतको किसीअ च्छेवासनमेंधररावेफिरइसघृतमेंसेदोटंकेभरनित्य खायतोनेत्रका तिमिर• काच• फूला• सवल वायु आदि सवरोग नेत्रोंकेजाय यह नुसखा तिव्व अकवरीवाले ने वहुतसहीकरकेलिखाहै और लिखताहै किमैंनेइस दवाकोकईदफेअजमायाहै॥

अथ वच्चोंकेनेत्रदूखनेआमें उनकायत्न

इनकानिदानतौवहीहैजोपहिलेहमरम्दरोगकाकहआयेहैं

जब बच्चों की आंख दूखने आवें तो तीन दिन तक कुछ दवा न लगावें बाद उसके ये दवा करे॥

दवा

फिटकरी को पानी में पीस उसमें रुई भिजो कर फाया बनावे और उस फाये को करछी या वेली में घी गरम करके उसमें पकावे जब उस फाये का चटकना बंद हो जाय तब ठंढा करके रक्खे और पोतनी माटी को पानी में भिगो कर उसकी टिकिया बनावे प्रथम उस टिकिया को फाये से चार घड़ी पहले बना कर किसी पानी भरे माटी के बरतन के चिपका दे जब उसमें तरी पहुंच जावे तब उतार ले प्रथम उस फिटकरी के फाये को नेत्र पर रक्खे बाद उसके उस माटी की टिकिया को फाये पर रख ऊपर से कपड़े की पट्टी बांधे इसी प्रकार तीन चार दिन करने से बच्चों का रमद रोग जाय

अथवा

गेरू को पानी में घिसे और उसमें थोड़ी फिटकड़ी भी डार ले फिर इस गेरू में रुई को भिगो कर फाये बनावे और उन फायों को ऊपर लिखी रीति के अनुसार नेत्रों पर रखे और ऊपर से वही टिकिया माटी की धरै जो ऊपर की दवा में वर्णन कर आये हैं फिर कपड़े की पट्टी बांध दे इसी तरह तीन चार दिन करे तो नेत्र अच्छे होंय॥

अथवा

दूध की मलाई को रुई के फाये पर रख नेत्रों पर बांधे और ऊपर से वही माटी की टिकिया बांधे तो नेत्र अच्छे होंय॥

दवा

रसोत में थोडी फिट करी डाल पानी में घिस नेत्रोंके ऊपर पतला लेप करे तो फायदा करे॥

दवा

बबूल की कोमल पतियां लाकर उन्हे महीन पीस कर उस की टिकिया बनाकर माटी के बासन के जो पानी से भरा हो उस्के चिपका दे बाद दो घंटे के उस टिकिया को दूषती आंख पर बांधे तो सब प्रकार का रम्द जाय॥

जानना चाहिये कि हमने जो फायों के ऊपर माटी की टिकिया बांधना लिखा है उसका कारण यह है कि जब बच्चों की आंख दुखने आती हैं तो आंखे फूलजाती हैं तो इन टिकियों के बांधने से आंखे फूलने नहीं पाती॥

और जब बच्चों की आंख चिपक जाय तो उस्का उपाय यह है कि सवेरे के समय हथेली पर थोडा सा तेल और पानी रख कर दूसरी हथेली से खूब रगडे जब वह गाढा हो जाय तब उसे नेत्रों के मले फिर नेत्रोंको कपडे से पोंछ दे परंतु पानी से न धोवे क्योंकि दूषती आंख में पानी लगाना हानि करता है॥

दवा

ये दवा बालक और जवान सबको फायदा करती है और शाह हजरी का अजमाया हुआ नुसखा है रसोत और बडी हर्ड इन दोनों औषधियों को पानी में घिस कर नेत्रों पर लेप करें तो बात पित कफ इन तीनों प्रकार के दोषों

की आंख दूषनी को फायदा करै॥

दवा

हड़की छाल सेंधानोन गेरू रसोत ये सब बराबर ले फिर इन्हे जलसे महीन पीस नेत्रों के ऊपर लेप करे ये दवा बालक और जवान सबको मुफीद है॥

अथवा

नीवू के रस को लोहे के पात्रमें डाले पीछे उस को लोहे के घोटे से घोट कर गाढा कर नेत्रों पर लेप करै तो सब प्रकार के नेत्र दूषते अच्छे होयं॥

और ये लेप कई दफे अजमाया है और बालअवस्था-से लेकर सब अवस्था वालों को फायदा करता है॥

लेप

अफीम एक माशे फूली फिटकरी एक माशे लोध एक माशे इन तीनों को नीवू के रस में पीस लोहे के पात्र में थोड़ा गरम करे पीछे इस का नेत्रों के ऊपर लेप करे तो-नेत्रों का सब प्रकार से दूषना बंद होय॥

अथवा

पठानी लोध एक माशे फूली फिटकरी एक माशे रसोत एक माशे मुलेठी एक माशे इन्हे महीन पीस ग्वारपाठे के रसमें अथवा पोस्त के पानी में एक माशेभर की पोटली करै फेर इस पोटली को नेत्र पर वार वार फेरे।

अथवा

और जो दूषते हुए नेत्रों में वायु भरजाय और नेत्रों में शूल

चले तो उसके वास्तें ये दवा लगावे पठानी लोध को महीन पीस कपड़े में छान कर घृत में भूने पीछें उस का गरम पानी से सैंक करे तो नेत्र का शूल मिटे॥

अथवा

खाने का सूखा चूना महीन पीस कर घृत में मिला कर दोनों कन पटियों पर लेप करे तो शूल बंद होय॥

अथवा

जिस मनुष्य का सौदा अर्थात् बादी से नेत्र दूषने आया हो उस को यह दवा है नीम के पतों का रस पानी डाल काढे फिर उस्में लोध को पीस गरम करे पीछें उस का-आंखो पर लेप करे तो नेत्र अच्छे होय॥

दवा

जो रक्त पित और वायु से आंख दूषे तो ये दवा करे कि स्त्री के दूध की आठ बूंद नेत्र में नित्य प्रति डाले तो गरमी सरदी सब प्रकार की नेत्र पीड़ा जाय॥

अथवा

जो वायु से नेत्र मैं शूल चले और दवा करने से आराम न होय तो उसके ललाट की नस की रुधिर कढावे अथवा भौं के ऊपर दाग देतो शूल बंद होय॥

अथवा

सहंजने के पतों की पींडी नेत्रों के ऊपर बांधे तो कफसे उत्पन्न नेत्र शूल बंद होय॥

अथवा

नीमकी हरी हरी पतियों की पींडी बनाकर नेत्रों पर बांधे तो कफजनित शूलबंद होय॥

और जो गरमी से नेत्र में शूल चले तो ये दवा करे आमलों को पानी में पीस उसकी पींडी अर्थात् टिकिया बनाकर नेत्रों पर बांधे तो गरमी का शूल जाय॥

अथवा

त्रिफला लोध इन्हें कांजी के पानी में पीस पीछे घृत में तले फिर इस की पींडी बनाकर नेत्रों पर बांधे तो गरमी का शूल मिटे॥

और जो कदापि नेत्रों में रूले चले और सूजन होय और खुजली भी चले तो उस के वास्ते ये दवा करनी योग्य है॥

सोंठ नीम के पते इनमें थोड़ा सेंधा नोन मिलाय महीन पीस इसकी पींडी नेत्रों के बांधे तो नेत्रों के रूले खुजली सूजन आदि रोग जाय॥

निरोग नेत्रोंकी पहिं

चान

नेत्रोंमें कुछ भी पीड़ा न रहे और कुछ भी खाज और सूजन नहीं होय और आंसू आदि आवे नहीं नेत्रों का वर्ण अच्छा होय और सब महीन वस्तु भी यथार्थ दीखने लगें तो उस मनुष्य के नेत्रन का रोग गया जानिये यह परीक्षा है और जब तक नेत्रों में रोग रहे तब तक इतनी वस्तु नहीं करिये सो लिखते हैं नेत्र रोग वाला सुरमा

और काजल आदिका लगाना घृत और कसेली वस्तु और खटाई आदि कुपथ्य का त्यागन करे और स्त्री संग न करे

और वाजे वाजे हकीम कहते हैं कि नेत्र रोग वाला मनुष्य पान और गरिष्ठ करने वाली वस्तु भी न खाय औ र स्नान भी न करे इतनी वातों का मनुष्य का जरूर त्याग करना योग्य है॥

ढलके का इलाज

जो यह रोग गरमी से हो तो सुरमा लगावे और सरदी से हो तो वासली कून लगावे और जो आखों की कमजोरी से हो तो जली हुई पीली हर्ड और सेंधा नमक और माजूफल वरावर कूटछान कर आंख में लगावे॥

और जो थोडी थोडी देर में आंसू वहकार थम रहा करें तो उस्को हिंदी में मतना कहते हैं उपाय उस्का यह है कि पहिले मवाद को निकाले और उस्के पीछे आंसू वहाने वाली दवा लगावे जैसें वासली कून और सियाफह अहमर लगाना उत्तम है

वासली कूनवनाने की विधि

चांदी का मैल २२॥ माशे समंदर फेन २२॥ माशे सफेदा कलई जोद नमक तुरकी काली मिर्च नोसादर पीपल ये सव दया साढे चार चार माशे जला हुआ तांवा ३॥ माशे लोंग १॥ माशे वडीला १॥ माशे कपूर ६ रत्ती तेजपात ३॥ माशे जुंद विदस्तर ३॥ माशे वालछल ३॥ माशे इन सवको महीन पीस सुरमा वनाले और लगावे॥

स्याफहग्रहमरकीविधि

धुलाहुआसादना २१ माशे ववूलकागोंद १७॥ माशे जला हुआतांवा ७ माशे जंगालजलाहुआ ७ माशे अफीम १॥ माशे एलुआ १॥ माशे केशर १॥ दांग सुरमकी १॥ दांग इन सवकोपीस कर लंवी गोली वनाले और वक्तजरूर तपे पानीमेंघिसकरनेत्रोंमेंलगावै॥

गोली

येगोलीनेत्रकीखुजली और दलकेकोगुणकरे वडीहर्डकीगुठलीकीमींगीदोभाग वहेडेकीमींगी तीनभाग आमलेकीगुठलीकीमींगीतीनभाग इनतीनोंकोमहीनपीसकररखे और समयपरपानीमेंघिसकरनेत्रोंमेंलगावैतोनेत्रोंसेपानीवहनावंदहोय॥

गोली

सिरसकेवीज· कालीमिर्च· वनफ्शा इनसवकोवरावर लेअलगअलगकूटपीसकरसहदमेंमिलाकरगोलीवनावेऔरघिसकरनेत्रोंमेंलगायाकरैतोनेत्रोंसेपानीवहनावंदहोय॥

गोली

जवाहर्ड· माजूफल· वालछड़· वडीहर्डका वकल· इन सवकोवरावरलेकर पानीमेंपीसकरगोलीवनाकर नेत्रमेंलगावैतोदलकावंदहोय॥

रिगड़ा

येरिगड़ाकोयेकीसुर्खीऔरदलकाऔरनेत्रोंकीलाली

और खुजली को गुण करे समुद्रफेन सफेदकत्था भुनी फिटकरी छोटी हर्डका वक्कल रसोत अफीम नीला थोथा सब बराबर लेकर निर्मल जल में घोट कर गाडा बनाले॥

सुरमा

जो ढलके को बहुत जल्दी फायदा करै बडी हर्डकी गुठली की भस्म दश माशे माजूफल सेंधा नोन ये पांच पांच माशे इन सबको महीन पीसकर सुरमा बनाले फिर नेत्रों में आंजे तो ढलका बंद होय॥

और बाजे हकीमों ने बडी हर्ड की भस्म की जगह छोटी हर्ड की भस्म लिखी है॥

सुरमा

कालानोन काली मिर्च ये दोनों एक एक भाग पीपल दो भाग समुद्रफेन आधा भाग सुरमा सबसे तिगुना लेकर महीन पीस कर नेत्रों में लगावे तो ढलका बंद होय॥

दवा

घोडे का ऊपर का दांत पानी में पीसकर नेत्र में लगावे तो ढलका बंद होय॥

दवा

ये दवा ढलके को विशेष गुण करती है धुनी हुई रुई की तीन बत्ती बनाकर दो तोले धतूरे के रस में दो बार भिगोके सुखावे और फिर आक के दूध में भिगोकर छाया में सुखा कर रेंडी के तेल में चिराग भर कर उसी उन्हीं बत्तियों को भिंगोकर जलावे और काजल पाड कर उस में थोडी भुनी फिट

करी मिलाकर थोड़ा नीला थोथा मिलावे और नित्य प्रति नेत्रों में लगाया करे॥

अथवा

कुदरू गोंद को गुलाब जल में मिला कर उस्में नेत्रों को धोवे और गुलाबजल न मिले तो पानी हीले लेवे तोभी ढलके को फायदा करता है॥

अथवा

आबनूस की लकड़ी को घिस कर नेत्रों में लगावे तो ढलका बंद होय॥

अथवा

बड़ी हड़ का बकल और चाकसू दोनों बराबर ले पीस कर नेत्रों में लगावे॥

अथवा

बबूल के पतों का काढा कर रस काढे पीछे रस को और गाढा करे फिर इस्में सहत मिलाय अंजन करे तो नेत्र से पानी बहना बंद होय॥

अथवा

निर्मली के फलको पानी में घिस अंजन करे तो नेत्र का पानी बहना बंद होय॥

अथवा

निर्मली के फलको सहत में घिस थोड़ा कपूर मिलाय अंजन करे तो नेत्र निर्मल होय॥

॥२॥

फूजे का इलाज

जो ये रोग जन्म से ही होय तो इस का इलाज नहीं है और जो किसी रोग के कारण से होय तो इस को वर सुलएन कहते हैं इस के उपाय कारण के अनुसार करें॥

जो यह रोग तरी की अधिकतासे होय तो देह को-और आखों में जो मवाद है उसे साफ़ करे और जो खुस्की से हो तो तरी पहुंचावे॥

और जो यह रोग खुस्की से हो तो उस्से दिखाई नहीं देता इस्में और मोतिया बिंद में इतना ही अंतर है कि मोतिया बिंद में पहिले भुनगे से उड़ते दिखाई-देते हैं और इस्में यह बात नहीं होती आंख दुबली हो जायगी और दस्त कारी से लाभ न होगा यह रोग जो बच्चों की आंख में हो जाय तो जवान होने पर जाता रहेगा॥

और एक डाक्टर ने अपनी किताब में लिखा है कि जो बालक जन्म लेते समय ही कंजी आखों वाला हो तो मनुष्य को चाहिये कि उस लड़के को उसी वक्त से काली स्त्री का दूध पिलावे॥

अथवा

शेख रईस ने अपनी किताब में लिखा है कि इन्द्रायन के ताजा फलों में सलाई डुबो कर नेत्रों में फेरे और इसी प्रकार गाजर का छिलका महीन पीस कर लगाना अति गुण करता है॥

और इस रोग का इलाज हिंदुस्तानी पुस्तकों में

तो कहींलिखा नहींहै परंतु यूनानी ग्रंथोमें लिखा है सो हमने भी अपनी इसकिताबमें लिखदियाहै परंतु हम कोतो इसमें विश्वास नहींहैं॥

नासूरका इलाज

ये रोग नाक के कोए की तर्फ होता है जबउसे उंगुली से दबे तो उसमें से राध और लोहू निकलताहै उसका उपाय हम इस किताब के दूसरे भाग में भी लिख चुके हैं और कुछ यहां भी लिखते हैं

प्रथम इस रोगमें फस्त वो जुलाब देना उत्तम है उस के पीछे स्याफह गर्ब घावपर लगावे परंतु दवा लगाने से पहिले घावको रुईसे पोंछिले॥

और घावको साफकरडाले और औषधि के प्रभाव के लिये मुर्दार मांस को काट डाले और जो इससे आराम न होतो दाग दें और मरहम अस्फेदाज लगावें॥

स्याफेगर्बकीविधि

गुलअर्मनी ∙ कुंदर ∙ इंजरूत ∙ दम्मुलअखवैन ∙ गुलनार ∙ सुरमा ∙ फिटकरी ∙ ये सब दवा एक एक तोलेले और जंगाल तीन माशे ले इन सब को महीन पीस कर खड बनाले और वक्तपर घाव में टपकावे और ये स्याफे की विधि किसी किताब में तो लंबी गोली बना कर रखना और वक्त जरूरत के पानी में घिस कर काम में लावें और बाजी किताबों में रिगड़ा को स्याफा लिखा हैं॥

मरहम अफेदाज की विधि

रोगनगुल चार तोले मोम एक तोले ले प्रथम मोम को रोग न गुल में पिगला ले फिर इसमें इतना सफेदा मिलावे कि वह रोगन और मोम दोनो को उठाले फिर इसमें अंडे की सफेदी मिलावे और कभी थोड़ा सा कपूर भी मिला लेते हैं और इस की मरहम बनाकर काम में लावे

और दूसरी रीति यह है कि फकत सफेदा और सफेद मोम और रोगन गुल इन तीनो को ही मिलाक र मरहम बनाले॥

और बहुत से हकीम ये भी लिखते हैं कि ये नासू र बंद होकर फूल जाता है तो उस वक्त कनोंचे के बीज स्त्री के दूध में या गधी के दूध में पकाके थोड़ी सी के सर मिला कर लगावे इस से फूट कर फिर बहेगा-

अथवा

सेलखड़ी को रेंडी के तेल में घिसे जब वह गाढा होजा य तब उसमें रुई की बत्ती भिजो कर नासूर में रखना फायदा करता है।

अथवा

रींथे की कीचड़ को कपड़े में लगा कर नासूर पर रक्खें

अथवा

बथुए के साग के पत्ते नवासब का फूल इन दोनों को लेकर घीमें घोट कर नासूर पर लगावे॥

अथवा

हुक्के के नैचे मेंसे जो कीचड़ निकलती है वह और अफीम दोनों बराबर लेकर पीस कर बती बना नासूर पर रक्खें

अथवा

समुद्र सोरव नरम पीस कर पानी में मिला कर वती वना कर नासूर पर रक्खें ॥

अथवा

नीम के पते और पैमंदी बेर के पते पीस कर कपडे में लगाकर नासूर पर रखना फायदा करता है

अथवा

सफेद कत्था एलुआ इन दोनों को पीस कर नासूर पर लगाना अत्यंत गुण करता है॥

अथवा

कुत्ते की जीभ काट कर जलावे और उस की राखको मनुष्य के थूक में सान कर लगावे॥

अथवा

मिलोय हल्दी· इन दोनों को कूट कर मीठे तेल में औटावे फिर छान कर नासूर पर लगावे ॥

अथवा

सहद को औटावे जब गाढा होजावे तब थोडा समुद्र फेन मिलाकर उस्में रुई की बती भिगो कर नासूर पर रक्खे ॥

अथवा

मसूर को वीनले और अनार का छिलका इन दोनों-को बराबर ले पीस छान कर लगावे॥

अथवा

अमोंत गेरू जवाइई पोस्त के डोडे इन सब को पीस कर नासूर पर लेप करने से शीघ्र फायदा होय॥

अथवा

असल हीरा हींग को सिरके में घोट कर नासूर पर गुनगुना लेप करै तो नासूर जाय॥

अथवा

पुरानी कच्ची भींत का कोयला गरम पानी में पीस कर नासूर पर लगाना अति गुण करता है॥

परवाल का यत्न

जो वाल पलक के उलटे हो कर आंख में जा लगें और चुभा करें उसे यूनानी हकीम शरमुनकलिव कहते हैं और जो वाल पलक के सिवाय अपनी जगह के भितर की तरफ निकलें और उन के चुभने से आंख खटका करें उसको शरज़ायद कहते हैं॥

उपाय उसका यह है कि पहिलें मवाद को साफ करे फिर वह वाल जो नये आये हैं उनको चीमटी से उखाडे और उस ठौर पर नौसादर रगड दें तो फिर कभी परवाल न होंगे॥

अथवा

चेंदी के अंडे और इंजीर का दूध और उस कलीली का रुधिर जो कुत्ते या ऊंट के वदन में होती है या हरे मेंडक का रुधिर या हुदहुद जानवर का पित्ता उस जगे पर मलै तो परवाल जाय॥

अथवा

ये कोई वस्तु न मिले तो केवल चेंटी के अंडे ही मलना काफी है

अथवा

समंदर फेन को ईशव गोल के लुआब में पीस कर लगाना बाल उत्पन्न होने की जगह को भस्म कर देता है

अथवा

बालों को उखाड़ कर उस जगह खटमल का रुधिर लगावे॥

अथवा

बालों को उखाड़ कर नौसादर को बकरी के पित्ते में मिला कर पतला लेप करै॥

फकी

ये दवा नेत्रों के बहुत से रोगों को गुण करै है मुंडी की जड़ छाया में सुखा कर उसकी बराबर बूरा मिला कर सात मा शे नित्य पंद्रह दिन तक खाय॥

तुरफा का यत्न

तुरफा उस रोग को कहते हैं कि मुल्तहिमा जो पहिला परदा है उस्पर रुधिर की फुटकी सी पड़ जाती है उपाय-उस्का यह है कि कबूतर या बतक का पंखा पर उखाड़ कर उस्के रुधिर की बूंद अकेली या गिले अरमनी के संग नेत्र में टपकावे॥ अथवा

कुन्दर को जला कर उस्की धूनी आंखों को दे तो ये रोग जाय॥ और जो उस्का कारण अति पुष्ट हो तो पहिले फस्त करै औ र फछने लगावे और जुल्लाब दे॥

सबलकायत्न

सबल रोग उसका नाम है कि जिस रोग में आंखों की रगें लाल और मोटी हो जाती हैं और खुजली होती है जो इसमें आंसू भी निकलें और पलकों में पानी भरा रहे तो उसको सबल रतब कहेंगे और जो ऐसा न हो तो सबल याबिस कहेंगे उपाय इसका यह है कि शेररूनस की फस्द खोले पीछे माथे की रग और कोए की रग की फस्द खोले और जो यह रोग थोड़ा हो तो स्याफे दीनार आंख में लगावे और जो रोग भारी हो तो स्याफे अहमर और बासलीकून लगावे और सबल याबिस में सुरमा और औषधों के लगाने से पहिले और पीछे गरम स्थान में बैठकर स्नान करना अवश्य है जबरमद और सबल दोनों मिले हुए हों तो दोनों के चिन्ह पाये जायगे ऐसे रोग में न गर्म औषधि न ठंडी औषधि देना चाहिये परन्तु मवाद को निकाले और अंडे की सफेदी आंख पर मले तो इन दोनों प्रकार के मिले रोग को फायदा करै और स्याफे अहमर की बनाने की विधि पहिले कहि आये हैं॥

स्याफे दीनार की वि०

जर्द चोबा धोया हुआ सादना एलुआ स्याफे मामीरा बराबर लेके सबको पीसकर गड़ा बनाले॥

और बासलीकून बनाने की विधि पत्रा २७ में पहिले लिख आये हैं॥

और स्याफे अहमर की विधि सफे ७५ में पहिले लिख आये हैं॥

मुल्तहिमाकीसूजनका
यत्न

मुल्तहिमाजोनेत्रकापहिलापरदाहैवहफूलजावेतोउस्का उपाययहहै किजोयहसूजनरीहकेकारणसेहोयतो चिन्ह उस्कायहहै किअचानकउत्पन्नहोगा और पहिले आंखके कोनेमेंमक्खीयामच्छरकेकाटनेकीसीजलनहोगी और जोबलगमअर्थातकफसेहोतोहोलेहोलेउत्पन्नहोगा औ रपीडा बहुत नहोगी और अंगुलीके दबानेसेचिन्हरहिजा यगा और जो मवाद बहुत और पतला होगा तो वह चिन्ह देरतकनहोगा उपाय उस्का यह है कि जैसा मवाद होवे साही जुलाबदें और ठंडी रमद रोग की औषधें काममेंला वे और जो ये रोग रीहसे होतो तीन दिन तक उपाय न करें क्यों कि विना औषधि किये ही आप से आप आराम होजाता है ये इसरोग का निदान कहा॥

मुल्तहिमाकीखुजलीका
यत्न

इस रोग में बहुधा पलकें लाल और घायलहोजाती है उ पाय उस्का यहहै कि नमकीन औरच्चरपरा भोजनन खा य और फस्त खोले तथाजुलाब दें और जस्त को नर कुल पर रगडकर नेत्रों में लगावे और गर्म पानी से मुख धावे॥

दोकनुलमुल्तहिमाकायत्न

जिसमनुष्यकीआंखमेंकोयेकीओर बडे और लाल और कालेदाने पडजाते हैं उस्को दोकतुल कहते हैं और जो का

ले दाने पड़जाते हैं उस्को टीकतुलकहते हैं
उपाय उस्का यह है किजो मवाद अधिक होतो उसे साफ
करे नहीं तो गुलाब में कपड़ा भिगो कर आंख पर रखना
अच्छा है और अइससे अधिक उपाय की आवश्यकता
ना इस रोगके वास्ते और कोई नहीं है॥

नेत्रों में जलन होने का य॰

जोये रोग मवाद के कारण से होतो उस मवाद को निकाले औ
रजो कोई मवाद नहीं होयतो दालिया को कच्चे आर रखे हैं अं
गूर के रस में भिगो कर सलाई से आंख में लगावे॥

अथवा

हरी कासनी के पत्ते कूट कर उस के रस को तेल में मिला
कर लगावे और जो इस्में थोड़ा कपूर भी मिला लेय तो
अति लाभ दायक है॥

अथ आंख में किसी वस्तु के पड़जाने से आंख क डके उसका यत्न॥

जिस मनुष्य की आंख में कोई वस्तु गिर पड़े तो उस मनु
ष्य को चाहिये कि आंख को मले नहीं क्योंकि जो कोई
कड़ी वस्तु होतो आंख में मलने से चुभ जायतो बड़ी हा
नि करती है॥

उपाय उस्का यह है कि आंख को गरम पानी से धोवे और
स्त्री का दूध नेत्र में डाले॥
और जो वह वस्तु दिखाई देती होतो उसे रुई के फाये से-

यानमें कपड़े से उठाले॥

अथवा जो वस्तु भीतर चिपटी हुई होय तो और वह छूट न सकै तो निशास्ते को पीस कर आंख में भरदे और थोड़ी देर तक बैठ रहैं इस्से वह वस्तु निशास्ते में लिपट जायगी फिर उसे अलग रुई से उठाले॥

और जो कोई भुनगा या मच्छर आदि आंख में गिरा होय तो मुलतानी माटी या गेरू पीस कर आंख में डाले॥

और थोड़ी देर तक आंख को बांध दे वह उस्में लिपट आवेगा फिर उस्को रुई से उठाले॥

अथवा

जब मनुष्य की आंख में भुनगा या मच्छर आपड़े उस सम य मनुष्य को चाहिये कि दस बीस कदम उलटा चले तो तो भुनगा या मच्छर निकल जायगा॥

अथवा

और जो शीशे का चूरा आदि आंखों में जापड़े उस समय व ह्न्विमटी जो परवाल आदि उखाड़ने के वास्ते बनवाई जा ती है। उससे निकालें या जिस प्रकार से बने निकाल डाले और निकालने के पीछे स्त्री का दूध और अंडे की सफेदी मिलाकर आंख में डाले इससे पंद कने में आंख नहीं चि पटेगी॥

आंख में किसी प्रकार की चोट लगजाय उसका यत्न॥

जो चोट के लगने से आंख पै लाली या सूजन हो तो उपाय उस

का यह है कि फस्त खोले और मुलैयन नुकूअफचा का पिलावे

इस के पीछे अंडे की सफेदी रोगनगुल में मिला के आंख पर लगाये और जो पीडा जाने के पीछे चोट का चिन्ह अथवा मिलाहट रहिजाय तो धनियां पोदीना और काला पत्थर जो काली मिरचों में निकलता है और हरताल इन को पीस कर लेप करै इस्से नीला हट जाती रहेगी॥

अथवा

तलवार या पत्थर की चोट मुल्तहिमा नाम नेत्र के परदे पर लगी होय तो उस्का उपाय यह है कि फस्त खोले और कई वार जुल्लाव दे और अंडे की जरदी आंखों पर लेप करे इसके पीछे वह उपाय करे जो आंख के घाव का उपाय आगे लिखा जायगा॥

आंख के घाव का यत्न

ये घाव नेत्र के सब परदों में होता है परंतु जो घाव केवल मुल्तहिमा पर लगा हो और सब परदे बचे हो तो उसे सालिम कहते हैं इस्मे पीडा कम होती है॥

मुल्तहिमा करनियां अवनियां इन तीनों परदों को घाव को तो आंखों से देष सकते हैं परंतु और परदों के घाव में केवल पीडा ही अधिक मालूम होती है और जब तक पीच न हो पडती और कोई चिन्ह घाव का नहीं मालूम होता उपाय उस्का यह है कि सरूल्तम की फस्त तुरत खोले और रोसी-

औषधें देते रहें जिनसे कब्ज न होवे और जो पीड़ा होय तो स्त्री का दूध टपकावे और जो वह घाव जल्दी न पके तो धोई हुई मेथी का लुआब टपकावे अर्थात् मेथी के बीजों को दो पहर तक पानी में भिगो रक्खे फिर निकाल कर चौगुने पानी से पकावे जब वह पानी आधा रह जाय उस को हिलाकर निकाल ले इसी को धोई मेथी का लुआब कहते हैं

अथवा

जब घाव पककर बहने लगे तब दूध और सहत मिलाकर आंख में डालें इस से घाव साफ हो जायगा इस के पीछे स्याफ़ कुन्दर काम में लावें॥

स्याफ़ कुंदर की विधि

कुन्दर ३५ माशे उश्क २१॥ माशे इजरूत २१॥ माशे फ़शार ७ माशे इन सब को महीन पीस कर मेथी के लुआब में पीस कर रगड़ा बनाकर आंख में लगावे और जो घाव और फुन्सियों को पकाना होय तो इस को लगा कर पट्टी बांधना अति योग्य है॥

अथवा

जो असर घाव भर जाने पर भी रह जाय तो जो उपाय भी तना के दानों के घाव दूर करने को है वही काम में लावे

अथ कमना का वर्णन

यह कई रोगों का नाम है तात्पर्य यह कि जब पलक रोग से भारी हो जाय और फूल जाय और सोये के जागने के पीछे ऐसा मालूम होवे कि आंखों में धूल पड़ गई है॥ १॥

दूसरा रोग यह है कि करनिया नाम परदे के पीछे पीव इकट्ठा होजाय॥

तीसरे मुल्त हिमा परलाली हो इससे कम दिखाई दे और सब वस्तु धूंधली मालूम हो॥

और वह जो केवल पलक का रोग है उसका उपाय पलकों के रोगों में अगाडी लिखेंगे॥

और करनियां के रोग का यत्न कहते हैं कि मेथी और अलसी का लुआब आंख में डालकर मवाद को पकावे और कईवार गरम पानी से स्नान करे इसके पीछे साफ करने के लिये रूपा मक्खी पीस कर आंख में लगावे और जो इससे लाभ न हो तो दस्त कारी करे और नहीं तो इसे छोडे नहीं ऐसा न हो कि कोई और रोग उठ खडा हो॥

और जो मुल्त हिमा को रोग है उसका वही उपाय करे जो वादी के स्मद रोग का लिख आये हैं॥

और अकेले मेथी और बाबूना और अकेले लौकमुल्क को औटा के आंख को टारें॥

आंख में धमक होने का
यत्न

यह वह रोग है कि बाज़े मनुष्य की आंख में अंदर धमक सी मालूम होती है और नकुआ से छिदते हैं और ऐसा मालूम होता है कि कोई दबोचता है और कभी पीडा जाती रहती है और कभी फिर होआती है जैसे आधासीसी और इसका कोई चिन्ह नहीं होता है॥

उपाय इसका यह है कि इतरी फल कमनीजी खावे तो धमक बंद होय॥

इतरी फल कमनीजी की विधि

वडीहर्डका वकल कावली हर्ड· कालीहर्ड· धनियां ये सव दवा एक एक तोलेले कूटछानकर घीमें मकरोय कर तिगुने सहद की चासनी में मिलाकर माजून अर्थात् पाक वनाले और दो तोले नित्य खाय॥

अथवा

इस रोगमें इतरी फल मुलैयन का खाना भी गुण करता है

इतरी फल मुलैयन की विधि:

कावली हर्डका वकल· वडी हर्ड का वकल· आमले का वकल· वहेडे का वकल कालीहर्ड· ये सब दवा तीन-तीन तोले गुलाव के फूल मनाप· निसोत छिली हुई-ये सब दवा चौदह चौदह माशे सोंठ पौने दो माशे इन सवको कूटछानकर बदाम रोगन में मकरो कर तिगुने शहद या कंदकी चासनी में मिलाकर माजून वनावे और मात्रा प्रकृति के अनुसार खवावे॥

पासोया

खारीनोन दो तोले चार माशे· गेंहू की भुसी दो मुठी बेर की पती· खतमी की पती· मकोय के पते· ये सब आध आध पाव खतमी के बीज चार तोले आठ माशे इनसवको पा

नीमें औटावै जब आधा पानी रहै तब गुनगुना पाशोया करें और जो ये सम्पूर्ण औषधि न मिलें तो जितनी मिल सकें उतनी ही उतम हैं और जो ये दवा कोई भी न मिलें तो गरम पानी और गेहूं की भुसी और खारा नमक इन तीनों ही से-पासोया करें॥

पासोया करने की विधि

लिखी हुई दवाइयों को पानी में औटा कर उस पानी को घंटे की तर्फ से पावों पर गेरे और दूसरा आदमी दोनों हाथों से उस पानी को पांव की पिंडली की तर्फ से ते इसी को हकीम लोग पासोया कहते हैं इस के करने से मगज की गरमी दूर होती है॥

अथवा

पांव को दवाना मलना और तलुओं को मलना अत्यंत गुण करने वाला है॥

अथवा एक तगार में पानी भर कर अपने आगे रक्खे और अपने शरीर पर चारों ओर से दोहर ओढ कर एक मिट्टी का डेला गरम करके उसमें पटके और मस्तक को भुका कर उसके धुआ का बफारा ले॥

अथवा

काकजंगा के टूक टूक करिके पानी में औटा कर बफारा ले पीछे दो भाग चंदन और एक भाग गेंदी पीस कर पतला पतला लेप करे

अथवा

...ले चने दो तोले आठ माशे महीन पीस कर तीन-

तोले आठ माशे बादाम रोगन में भूने और निशास्ता दो तोले आठ माशे सफेद पोस्त के दाने दो तोले आठ माशे इन सब में चौदह तोले कंद मिला कर गाय के दूध में हरीरा बना कर दो तोले आठ माशे घी का भंगार देकर गुनगुना गुनगुना पान करै॥

अथवा

धनियां साढे तीन माशे काहू साढे ३॥ माशे इन दोनो को पानी में पीस छान कर थोडासा मीठा मिला कर और तोले भर ईशबगोल उसमें बुरक कर पान करैं

अथवा

सीप को सिरके में घिस कर कानों की लौ पर नित्य लगावे

अथवा

कद्दू · काहू · हरा धनियां · कासनी · ताजा मकोय की पत्ति सब को अथवा एक एक दो दो जैसें जानों निचोड छान कर थोडी थोडी बूंद कान में टपकावे

अथवा

काली मिर्च पीपल लोंग इन सब को अथवा दो एक जैसा गुना सिब जानें सोंफ के अर्क में पीस नाक में डाले॥

अथवा

काली मिर्च १ नग और उसी की बराबर माखी की विष्ठा इन दोनों को लडकी की मा के दूध में पीस कान में टपकावे और थोडा नेत्रों में भी लगावे॥

और इन औषधें के सिवाय जो इलाज आधासीसी के हैं

यही इसका है॥

अथ करनियांके उभर आने

का यत्न

जिस मनुष्य का करनियां नाम परदा उभर आवे उसकी पहिचान यह है कि कड़ी होती है और सलाई से नहीं दबती और आंसू नहीं बहते और उसमें पीड़ा नहीं होती और फुनसी जो करनियां में हो जाती हैं वह नर्म होती है और दवाये से दब जाती है और उनमें पीड़ा भी होती है उपाय इसका यह है कि मवाद गाढ़ा हो तो उसे साफ करे और जरूर अफसर को सलाई से आंख में लगावे और गर्म पानी से मोंह धोया करे और उसकी भांफ आंख को दे॥

जरूर अस्फर के बनाने की

विधि

इज़रूत सात माशे गल्कुआ सात माशे रसोत सात माशे केशर ३ माशे मुर ३॥ माशे पीस छान कर आंख में लगावे

करनियां की फुनसियों का

यत्न

जानना चाहिये कि करनियां के चार परदे हैं कभी तो सब में फुन्सी होती है और कभी एक में परन्तु फुन्सी पड़ने की जगह सफेद दिखाई देती है और किसी में नहीं उपाय इसका यह है कि प्रथम फस्त और जुलाब दे और पहिले ऐसी ठंडी औषधे लगावें जो मवाद को इधर गिरने से रोके और पीछे स्याफे अहमर लीन लगावे फिर स्याफे अवियज-

कुंदरीलगानाचाहिये॥

स्याफेअह्मरलीनकीविधि

धुलाहुआसादना ३४मा· जलाहुआतांवा ४मा· ववूलका गोंद ७माशे कतीरा ७मा· ५ मुरमक्की ७मा· वुसुद १८मा· तेजपात १४मा· दम्मुलअखवैन ३॥माशे केशर ३॥माशे इनसवकोमहीन पीसकररिगड़ावनाकरलगावे॥

स्याफेअवियजकुंदरीकीविधि

कतीरा १०॥मा· ववूलकागोंद १०॥मा· निशास्ता ३॥मा· कुंदर ८जौ इनसवको पीसछानकेईशवगोलकेलुआव मेंरिगड़ावनाले॥

मोरासिरचकायत्न

मोरसिरचउसरोगको कहतेहैं किमनुष्यकी आंखकाक रनियानामजोपरदाहै वह फटजाय औरउसकेनीचेसे अ वनियांनामजोपरदाहैसोऊपरकोऊभरआवेतौप्रथम उस्काउस्से पहिलेंकरेजवाकिकिनारेकरानियांकेमोटे नपड़जांय औरऐसाउपायकरेजो अधिकउभरनेको रोके अर्थात्ज्यादाउभरनेनदे औरअवनियांकोभीतरकीत फेंदवावे॥

इसरोगकेरोकनेवालीदवायेहैं

धोयाहुआसादना औरचांदीकीडली मियां जलीहुई सीपी पीसकरआंखों में लगावे॥

अथवा

धोयेहुए सादनेकासुरमा आंखमेंभरे औरऊपर मेंगदी

कपड़ेकीरखकर पट्टीसेबांधदे॥

अथवा

सीसेकाटुकड़ाआंखकीवराबरखकेयासीसेकाचुरा दाछोटीसीथोलीमेंभरकरआंखपररखदेऔरकपडे कीपट्टीसेकसदे॥

अथवा

पिसाहुआसुरमाछोटीसीकपडेकीथैलीमेंभरकेआंख परधरकरकपडेकीपट्टीसेकसदे इनऔषधोंकेकरने सेभीतरकापरदावाहरकोआनेसेरुकारहेगा॥

औरजवांकिनारेकरनियांकेमोटेहोजांयगेतो फिर किसीप्रकारसेअच्छानहोगा इसीसे इसरोगकाउपा यजलदीकरनाचाहिये॥

औरइसरोगवालेमनुष्यकोहमनेभीअपनीआंखोंसे देखाहै किइसरोगकेवढजानेपरआंखविगड़जातीहै॥

भेंगाहोनेकायत्न

भेंगाउसरोगकानामहैकिमनुष्यकोएकवस्तुकीदोदि खाईदेतीहैं जोयहरोगजन्मसेहीहोयतोइसकाइला जनहीहै परंतुवच्चोंके मृगीकेरोगसेऔरएककरवट सुलानेसेयाभयानकशब्दसुनकरअचानकचौंकप डनसेभीयेरोगहोजाताहै उपायउसकायहहैकि कोईला लयाचमकदारवस्तुआंखकेकिनारेरखदे जिधरकी आंखकोफिराना चाहतेहैंजववच्चाउसेहरदमदेखे गा इससेआंखउसकीसीधीहोजायगी॥

औरजोयेरोगजवानीमेंउत्पन्नहोयतोकारण इसकानज न्नुजइमतलाईयाविसहोगा पहिंचानतसन्नुजयावि मकी यहहै कि इससे पहिलेगर्मरोग हुए होंगे उपाय उस्का यहहै॥

कि आंखकोतरी पहुंचावे और लड़की कीमाका दूध सिर परदारे और पहिंचान इमातिलाई की यहहै किपह लें इस रोग वालेको मृगी आई होंगी और तसन्नुज इमति लाईके चिन्ह पाये जायगे उपाय उस्का मवादको साफ करना और निकालना है॥

औरजोये रोग आंख के ढीलेहोजानेसेहोयतोइ सके चिन्ह और उपाय यही हैं जो इस्तरखामें लिखेगये

औरजो रोहके कारणसे कोई परदायारतूवतजा नीरही होयतो आंख फड़केगीउस्काउपाय यहहै कि भेजे सेवलगमको निकाले और हब्ब अयारज खिलावे येद वा अतारों के वनीवनाई मिलतीहै और बदहजमी को दूरकरतीहै॥

इतितिसा और इंतसार रोगकायत्न

असबके चौड़े होनेकोया अनबीया के छेदके बढ़जाने को इतातिसा कहते हैं और आंख में रोशनी फैलजाने को इन्तसार कहते हैं॥

जानना चाहिये कि इतातिसा रोगके साथ इन्तसार का रोग अवश्य होना है परंतु ऐसा होसक्ता है इतातिसा

अवनियाके साथ इन्तमारनहो और कभी कभी इतनिसा असवा और इतनिसा अवनिया दोनो साथ होते हैं इतनिसा असवे का अच्छा होना बहुत कठिन है परंतु इतनिसाय अनवीया का उपाय कारण के अनुसार हो सक्ता है इसवास्ते इसके कारण जानके उपाय करे जैसे किसी प्रकार की चोट लगजाने से होय तो फस्त शरेरूनसकी षोले और पिंडिलीयों पर पछने लगावे॥

और जो किसी मवाद की अधिकता या रतूवत वेजियाकी अधिकता से हो जैसा कि बच्चों को हुआ करता है या अनवीया की सूजन से हो तो फस्त और हुकना करे

और जो अनवीया की खुश्की से होय तो चिन्ह और उपाय इस्के यह है कि ह्लीया की कच्चे और खट्टे अंगूर के रसमें भिगो कर आंखमें लगावे और जो यह बलगम के कारण से होतो उस्के पकाने के पीछे बलगम का जुलाब दे और बासली फून आंखमें लगावे॥

और हरेक प्रकार के जुलाबों की विधि इस कीताब के अंतमें लिखेंगे॥

अवनियाके छेद के सकडा होजाने का यत्न

ये रोग जन्म सेही होय तो अच्छा है इस्से दृष्टी नीज होती है और जो किसी रोग से होतो दृष्टि कम होजाती है पहिले इसको देखे कि कारण इसका अनवीया की तरी है या खुश्की या रतूवत वेजियाकी कमी खुश्की और तरी

के चिन्ह सहज में मालूम होजायगे॥ और रतूबत बैजिया की कमी का चिन्ह यह है कि आंख छोटी होजायगी और वस्तु भली भांति दिषाई न देगी और के मूस अनबीया के कड़े होजाने को और बिगड़ जाने से भी यह रोग होजाता है उसका उपाय यह है कि पुतली न दिखाई दे जब कि अनबीया की खुश्की या रतूबत बैजिया की कमी के कारण से यह रोग होय तो चाहिये कि आंख को तरी पहुंचावे और जब रतूबत अनबीया की अधिकता से होतो उस तरी को दूर करे और के मूस के बिगड़ जाने में मवाद को साफ करे और तरी भी पहुंचावे ये मवाद को साफ करने वाली और तरी पहुंचाने वाली दवा इस किताब के अंत में लिखी जायगी॥

बसारत का यत्न

यह रोग वह है कि अंधेरी जगह में बहुत बैठने से दृष्टि धुंधली होजाती है और सब चीज धुंधली मालूम होती हैं या रतूबत बैजिया काली पड़जाती है इससे यह रोग उत्पन्न होता है॥

अथवा ऐसे रोग में आंख में बासलीकून जो सफे २७ में वर्णन कर आये हैं उसे नित्य लगावे॥

और हलकी हलकी दवा लगावें और हलका ही भोजन खाने को दे॥

और जो अचानक अंधेरे के बाहर निकलने के कारण से यह रोग उत्पन्न हो तो नीला अस्मानी रंग का

कपड़ा आंखों पर डाले रहे या आस्मानी रंगकी एनक लग
ना बहुत फायदा करती है॥
और हलका भोजन का भोजन करे और भूखा रहना और
मैथुन करना इस रोगमें बुरा है और इस रोग वाला मनु
ष्य रात्रिमें कुछ न खाय॥

चुन्धा होनेका यत्न

इसरोगमें दिनमें कम दिखाई देता है यह रोगजो जन्म
से हो यतो इस्का उपाय कोई नहीं है परंतु तोभी मनुष्यको
चाहिये कि नेत्रके परदें को और पलकों को काला क
रने का उपाय करें वो इस प्रकार से है कि बनपसे औ
र बादाम के तेलके काजल बना कर नेत्रों में लगाया क
रे इस्से दृष्टि पुष्ट हो जायगी॥

दृष्टि के थक जानेका यत्न

यह रोग सफेद और चमकीली वस्तु के देखने से जैसे
सूर्य और बरफादिकके ऊपर दृष्टि जमाने से उत्पन्न हो
जाता है उपाय इसका यह है कि काला कपड़ा लेकर आं
खों पर लटकावे और जहां तक हो सके वहां तक पहर
ने और बिछाने के कपडे भी काले ही रक्खे

अथवा

दूध में कपड़ा भिगोकर आखों पर रक्खे या स्त्री के स्तनों
की धार नेत्रों में लगाना॥
अथवा कड़वे बादाम को पीस कें या कुचल कें
आखों पर बांधे॥

अथ चकाचौंधी का विषय

इस रोग में धूप और रोशनी की तरफ देखना बुरा लगता है उपाय इसका यह है कि जो ये रोग गरमी से हो तो ठंडी दवा करिके आंखों को तरी पहुंचावे

अथवा

इलायची का इतर दोनो कनपटियों पर तथा पलकों पर लगाने से नेत्रों में से गरमी का पानी निकल जायगा इस दवा का तीन दिन सेवन करे और इस दवा को हमने केई दफे अजमाई है इसके लगाने से नेत्रों में तरी पहुंचती है

अथवा

जो रमद आदि के कारण से होय तो वह दवा करे जो रमद के वास्ते लिख आये हैं॥

आंख के मिजाज पहिचानने की विधि

जानना चाहिये कि आंखों का मिजाज गर्म और तर है और जो इसके विपरीत हो तो जानलो कि कोई रोग होगा

ऊपर से छूने में आंख गर्म मालूम हो और डोरे रंगीन हों और आंख जल्दी जल्दी फड़के तो आंख में गरमी का चिन्ह जानिये॥

और जो इससे विपरीत चिन्ह पाये जाय उन्हे शरदी के जानो और जो आंख में पीड़ आंसू बहुत निकले और फूली हुई मालूम हो तो ये चिन्ह तरी के हैं आंख खुश्की के चिन्ह इससे विपरीत पाये जायगे॥

कान्नी पुतलीकी आंख वसब मकानकी आंखों से गर्मी कु-
गर्म और तर होती है इसी लिये ऐसी आंख में जाति या वि
द और गर्मी के रोग बहुधा होते हैं परंतु बहुत से हकीम ब
ह कहते हैं कि वाजी आंख से मो तिया विंद जादा होता है॥
इसजगे तक तीनों बीके परदों के रोगों का वर्णन कि
या अब आगें पलकों के रोगों का वर्णन करते हैं॥

पलकों के रोगों के विष यमें॥

अथ केमना का यत्न और चिन्ह

अथ केमना उस रोग को कहते हैं कि मनुष्य जब सोय कें
जागै तो आंख में खटक होजेसे रेत के पड़जाने में होती है
और थोडी देर के पीछे यह खटक जाती रहती है ऐसे रोग
वाले मनुष्य के वास्ते पहिलें जुलाब दें और पीछें स्याफ
अह्मर लीन और स्याफ अह्मर लगावे इन दोनों स्या
फों के बनाने की विधि पहिलें लिख आये हैं और इस रो
ग में गरम जल से स्नान कराना अति लाभ दायक है

पपोटे के ढीले होजाने का यत्न

पहिलें मवाद को निकाले पीछे एलुआ अकाकिया
मुरमकी इन तीनों को पीस कर पलक और माथे पर
लगावे॥
और जो इससे लाभ न हो तो पलक काटनी पड़ेगी इस प
लक के काटने की रीति दस्तकार जानते हैं और इस रोग

वालेमनुष्यकीनाककीमांकोफस्तखोलना अच्छाहै॥

पलकोंकेचिपटजानेका

यत्न

येरोगरमदकेपीछेंयापलककाटनेकेपीछेंयासवलया नासूरमें होताहै उपाय इसकायहहै किसलाईसेदोनों पलकोंकोछुड़ावे औरफिरजीरा औरनमकचबाकरपा नीउसका आंखमेंडाले॥

औररूईकोरोगनगुलमेंभिगोकरपलकोंकेबीचमेंर खे औरअंडेकीजरदीमेंरोगनगुलमिलाकरआंखके ऊपरलगावेतौयहरोगनिश्चयहीजाताहै॥

पलकोंकेछोटहोनेका

यत्न

इसरोगमेंऊपरकीपलकसुकडजातीहै औरनीचेकीप लकबाहरपलटहीआतीहै औरदोनोंपलकेंवराबरबं दनहींहोती इसरोगकाकारणपपोटकेढीलेहोजानेके कारणोंसेविपरीतहै औरअधिकमांसजोपपोटेमेंहो जाताहैउसेकाटकरनिकालनेसेभीयहरोगउत्पन्नहो ताहैजोयेरोगकिसीमवादसेहोतौपहिलेउसमवाद कोनिकालेफिरकारणकेअनुसारउपायकरे औरजो दस्तकारीहोसकैतौउसेभीकरे॥

शिरनाककायत्न

इसरोगमेंपलकपरनसमांसउत्पन्नहोजानेसेपलक मोटीहोजातीहै औरआंखोंमेंपानीभरारहताहै उपाय

इस्कायहहै किपहिलेंमवादकोनिकाले और फिर आंसूव
हानेवाली औषधें आंखमेंडाले और जो इससेभीलाभन
होतो दस्तकारीकरनाउचितहै॥

पलकोंकेफड़जानेका यत्न

जोयेरोगबुराभोजनखानेसे आपितोंकेतथावादीकेअ
धिकहोनेसेहोयतोउसमवादकोनिकाले और जो पल
ककीकमजोरीसेहोयतोजैसाकरनीनमऔरगर्म
नपकेपीछेहोताहैतोउसजगहकोपुष्टकरनाऔरतरी
पहुंचानाचाहिये॥
औरबासलीकूनजोपहिलेलिखआयेहैंउसको और
सुरमारोशनाईआंखमेंलगावें॥

सुरमारोशनाईकीविधि

सुहागजलाहुआ २॥मा॰ शादना २॥मा॰ गोलमिर्च २॥
माशे पीपल २॥मा॰ केशर २॥मा॰ बकायन २॥मा॰ जंगा
र ३॥मा॰ सलुआ ३॥मा॰ नमकअर्मनी ३॥माशे इकसी
मियां ७माशे इनसबऔषधोंकोमहीनपीसकपड़ामें
छानकरघोटकरसुरमा बनाले और समय परकाम
में लावे॥
औरजो यहरोगबलगमकेजोरसेहोतोबलगमकोनि
काले और पुष्टकरनेवालीदवा काममेंलावे॥

पलकोंकेसफेदहोजाने कायत्न॥

उपाय उसका यह है कि पहिले चलपन को दूर करै फिर जंग
लीलाले के पते जैत के तेल में मिला कर मलै और सुरमा
रोशनाई सलाई से आंख में लगावै॥

पलक में खुजली और फुन सियां हो पड़ उसका यत्न॥

जैसा सबाद हो उस के अनुसार उपाय करना चाहिये औ
र बरूदबनपसीजी आंख में सुरमे की तरह लगावै

बरूदबनपसजी की विधि

बनपसे के फूल· धनियां बबूल का गोंद कतीरा ये स
ब दवा साढे तीन तीन माशे निशास्ता ९०॥ माशे इन
सब को कूट पीस कर इसमें सिरके की सात पुट दे और
छाया में सुखाले फिर इसका सुरमा बना कर काम-
में लावे॥

बरदा का यत्न

बरदा एक सबाद गाढा और सफेद ओले की सदृश प
पोटे के ऊपर उत्पन्न हो जाता है उपाय उसका यह है कि
रोगन मोम और दारखली पून मिला कर लगाने से नर्म
हो कर बैठ जायगा और नहीं तो नस्तर से काटना योग्य है

पलक मोटे और कड़े होजाने का यत्न

जब मनुष्य की पलक मोटी और कड़ी हो जाती है तो आं
ख बंद करना और खोलना कठिन हो जाता है और यह

रोग मौदा के मवाद से होता है इस लिये उपाय इसका यह है कि पहिले मौदा को पकावे और मवाद को निकाले और उस जगह को नर्म करे और मकोय तुख्म मुल्क वाबूना बनपसा खतमी के पते इन को पानी में ओटा के आंख को बफारा दे॥

और जो विना किसी मवाद के इस रोग में सूजन होय उस्को पवूस तुल ऐन कहते हैं॥

पलकों के मोटे और लाल होजाने का विषय

इस रोग में पलकके किनारे वहुधा मोटे होजाते हैं और लाल भी होते हैं उपाय इसका यह है कि पहिले मेवों का नुकूह पीवे और समाक को गुलाब में भिगो कर पानी उसका टपकावे और फिटकरी· कुलफा· और कासनी के पतों को रोगन गुल में मिला कर लेप करना लाभदायक है॥

और जब ये रोग पुराना होजाय तो पहिले फस्द और जुलाब दें फिर स्याफ अहमर लीन आंख में लगावें इसके बनाने की विधि पहिले लिख आये हैं॥

पलकों में जूआं पड़जांय उसका यत्न॥

ये रोग वलगम से होता है पहिलें वलगम का मवाद निकाले फिर पलक में से जूआं बीने और जो जूआं छोटे होंय और बीनने में न आवें तो फिटकरी और नमक को पानी में

श्रौटा के पलक को धोवे॥

श्रौर सलाई को थोड़ी देर पानी में रखकर हाते से हाथ से पों छले फिर उस सलाई को श्रांख में फेरे तो आंख के जंतू मर जांय॥

गुहांजनी का यत्न

यह एक सूजन का नाम है श्रौर सूजन जो कि बराबर पलक पर होती है जो अवश्यकता मवाद निकालने की होय तो मवाद को निकाले नहीं तो रसौत श्रौर एलुवा मिले श्ररमनी हरी काशनी के पानी में पीस कर आंख पर लगावे श्रौर इस्से आराम न हो तो उसको नाखून से कुरेद डाले या कैंची से काट डाले श्रौर थोड़ी देर तक उसका रुधिर बहने दे जलदी बंद न करे क्योंकि जलदी बंद करने में रुका हुआ बुरा रुधिर नुकसान लाता है श्रौर जलदी आराम नहीं होता बाद उसके जरूर असफर उस पर लगावे॥

श्रजफान का यत्न

यह वो रोग है कि आंख के नीचे के पलक में सहनूत के सदृश एक वस्तु उत्पन्न हो जाती है उपाय उसका यह है कि फस्ल श्रौर जुलाब के पीछे दस्तकारी करे श्रौर जीरा श्रौर नमक दोनों को दांतों से चबाकर उस के ऊपर लगावे - श्रौर इस रोग का उपाय इस किताब के दूसरे भाग में लिखा है॥

जफन का यत्न

जफन उस रोग को कहते हैं कि बाजे मनुष्य के पलक प

स्थर के सदृश कड़े हो जाते हैं कारण अर्थात् उत्पत्ती इ सकी सौदा के गाढ़े मवाद के जम जाने से है इस में वरदे से अधिक पलक मोटी हो जाती है उपाय इस का यह है कि पहिले मवाद को निकाले और रोगन मोम को पिगला के लगावे और कभी यह रोग फोड़े की तुल्य हो जाता है तो फिर इसका इलाज कठिन से होता है॥

पलक में घाव पड़ जाने का यत्न

ये रोग वह है कि पलक के भीतर या बाहर घाव हो जाते हैं तो बहुत दुष दाई होते हैं इस रोग का पल निब्ब अकबरी वाले ने इस प्रकार लिखा है कि इसका इलाज घाव के उत्पन्न होने से ही पर करना चाहिये क्योंकि जो ये घाव प ड़ जाता है तो समस्त पलकों को घेर लेता है उपाय उस का यह है कि मसूर अनार और पिस्ते के छिलके इन तीनों को बराबर ले महीन पीस सिरके में पका कर लेप करे और जब पुरंड जमने लगे तब अंडे की जरदी को केशर से मिला कर घाव के मुकाम पर लगावे॥

पपोटे के फूल जाने का यत्न

पपोटा उस स्थान को कहते हैं जो पलकों के भीतर की तर्फ गुलाबी ठौर दिखाई देती है यह रोग जिगर की और मेदे की कमजोरी के कारण से होय तो इन को पहिले पुष्ट करे॥ और जो बलगम के अधिक होने से होय तो इतरी फल खि लावे और फस्त की फाल करे और चंदन को हरे धनिये के

पानीमें पीस कर लेप करे॥

इतिजरोंहीप्रकारतीसराभाग सम्पूर्णम्॥

दोषोंकी प्रबलताका वर्णन

अब हम उन बातोंको लिखते हैं कि जिसके देखनसे दोषोंकी प्रबलता मालूम होजाय कि इस मनुष्यके कौनसा दोष प्रबल है सो नीचे लिखेके अनुसार जानो॥

रुधिरकी प्रबलताका वर्णन

जिस मनुष्यका मुख मीठा रहे और चहरा नेत्र मूत्र सुर्खी लियेहो और मस्तक शरीर भारीरहे और शरीरमें फुन्सियां निकलें और नाक तथा दांतोंसे रुधिर निकले ये लक्षण रुधिरकी प्रबलताकेहैं॥

पित्तकेलक्षण

जिस मनुष्यके नेत्र मुख और जीभ और मूत्र इनका रंग पीला पड़िजाय और मुहमें कड़वा पन और नाकमें खुश्की और खरास्वरा हट पायाजाय और निद्रा कम आवे और जलन विशेषहोतो पित्तका कोप जानो॥

कफकेलक्षण

जिस मनुष्यके चहरा जीभ और नेत्र और मूत्रका रंग सफेद हो शरीर और त्वचा ढीली पड़िजाय और मुख नाक ठंडी रहे और नाकसे पानी टपकाकरे और [illegible] रहे और

निद्रा विशेष आवे और मुख फीका रहे तो कफ की प्रबलता जानो ।।

वात के लक्षण

जिस मनुष्य का रंग रूप काला पड़ जाय और मूत्र में स्याही आ जाय और जलन उत्पन्न हो और बदन रूखा और दुबला हो जाय और मुख खट्टा रहै और बदन के जोड़ भारी रहैं और थक जांय और क्षुधा मंद पड़ जाय मूत्र गाढ़ा हो जाय तो वात की प्रबलता जानो ।।

पित के निकालने वाली दवा

पीली हड़ · इमली · तुरंजबीन · बनपसे के फूल · इफ सन्तीन सकमूनीया भुनी हुई · इश्क पेचां · आलूबुखारे · स्यातरे के पते एलुआ · गुलाब के फूल · शीरखिस्त · इनमें से सब दवा या थोड़ी दवाइयां मिलाकर जुलाब दें ।।

कफ के निकालने वाली दवा

बकायन के फल का छिलका · कंतयून · माहीजहजीज · गाराकून · हब्बुलनील · तुर्बुद · हुर्मल · कड विसफायज · कलौंजी · सुफाई ·

वाय के निकालने वाली दवा

काबली हड़ · काली हड़ · सनायमकी · बालंगू · अर्थात् बादरंजबोया · इफतीमून · उस्तखुद्दूस · लाजवर्द धुला हुआ

हजरअरमनी · आमले ·

दृष्टिकीहानिकरनेवाली वस्तु

खारीभोजनकरना · गरमपानीसिरपरडालना · सूरज कीतर्फदेखना · वैरीअर्थातशत्रुकोदेखाकरना · मसूर · कुलफा · चूका · करम्व · काहू · खिरखिरा · गन्दना · अधिकमैथुनकरना · धूपमेंअधिकरहना · अग्निकेपासअधिकबैठना लालमिर्चोंकाअधिकखाना · चमकदारवस्तुकोदेखना · इतनीवस्तु नेत्रोंकोहानि कारकजाननी॥

दृष्टिकोपुष्टीकरनेवाली वस्तु

आमला · पीलीहर्ड · बादाम · सोंफ · मुंडी · पकाप्याज शहद · सीपीकीभस्म · रेसम · सुरमा · सोने चांदीका मैल गोलमिर्च · काली मिर्च · मुश्क · केशर · और मोती पीसकर सोनकी सलाई से लगाना · चंद्रमा की तर्फ देखना · काली मिरचको कच्ची खांड और घी मिलाकर ओसमें जमाकर खाना हरियाली को देखना · सिरका · ये दवा दृष्टि करनेवाली हैं

उन औषधोंकावर्णनजोमवाद्कोआंखपरगिरनेसेरोके

तरबूजकेछिलके · कुन्दर · कानूलइकलदकीक · आवनूस · यजरूलबनज · केशरस्त्रीके दूधमें मिली हुई ०

बनफ्सा· लबलाब· छालिया· तिरियाकफारूक· बुज
रूल· मकोय· बिही· मसूर· बादरूज· सफेद सन्दल·
बकायन· फिस्तक· जरवर्द· अकाकिया· जौ· सिमाक
अमरूद· वुसुद· तानिया· रसोत· कुलरान·

मेदेकी पुष्टि करनेवाली दवा

ठंडी

आमला· अनारदाना· सिमाक· बहेडा· हडकासुरब्बा·
हर्ड· बिही· बंशलोचन· गुलाबके फूल·

गरम

सरकंडेकीजड· तुरंजके छिलके· बिल्लीलोटन· जायफ
ल· दारचीनी· नरकचूर· मोथा· तज· तेजपात· लोंग·
इलायची· कुन्दुर· करोया· रूमीमस्तगी· मश्कतराम
शी· नाना· ऊदगर्की·

जिगरके पुष्ट करनेवाली दवा

ठंडी

काशनी· जरिश्क· अनार· और उनके पानी लुआब·
इशबगोल· शर्बतसंदल· सिकंजबीन·

गरम

छडीला· बुजफाकलाब· जायफल· हम्मामा· हब्बबि
लसान· दारचीनी· माकिस· लोंग· तज· कुसुम· रूमी
मस्तगी· नारदीन· सौंफ· करफसकेबीज· गुलकंद· अस
ली· असाना सिया· दवाउल करकम॥

इति

जर्राहीप्रकारतीसरेभागकासूचीपत्र

भावप्रकाश का गुटका



पंडित रुद्रदेव सहायके प्रबन्धसे मतबः ज्ञानसागर शहर मेरठ में छपा

भूमिका

प्रकट होकि यह पुस्तक मैंने बड़े परिश्रम से चक्रदत्त शाङ्गधर तिमिर भास्कर लोलिंबराज त्रिशती वैद्य जीवन वैद्यरहस्य और विशेष करके भाव प्रकाश इन सब का आशय एक बड़े ग्रंथ से लेकर मरलछंद भाषा अर्थात दोहा चौपई कुंडलिया कवित्त और छंदों में इस प्रयोजन से बनाई है कि ये छंद प्रसिद्ध हैं और केवल भाषा जानने वाले भी इनको खूब समझ सके हैं यद्यपि इसकी कविता बहुत सरल है परंतु पिंगल के मतानुसार द्विगण विचार वक्र आकार के लिखा है अशुभगण या दग्ध अक्षर [illegible] में कहीं न हो जाय इसलिये बनाने वाले और पढ़ने वालों को शुभदायक है॥ इसमें वैद्य और उसकी स्त्री की अति मनोहर प्रश्नोत्तरी है॥

P. Soojan Singh
Head Master

श्रीगणेशायनमः

वैद्यक गुटका

हकीम और हकीम की स्त्री के प्रश्न उत्तर दोहा

गुरु गणपन वागीश्वरी वादी मूकन हार ॥
करहु कृपा आधीन पर रचै ग्रंथ सुविचार ॥

वाक्य ग्रंथकार दोहा

पूर्वसमय इक विप्रवर वैद्यक राज बषान ॥
ताकी पत्नी अति चतुर सुमुखि रूप गुणखान ॥

कुंडलियां

सुमुखि रूप गुनखान रैन सब जानन हारी ॥
पतिव्रता के धर्म सकल वह वरतै नारी ॥
भांति भांति के रोगी जन जो द्वारे आवैं ॥
सनकी नाड़ी देख वैद्य पुन जतन बतावैं ॥
देख देख यह चरित वैद्य से बोली प्यारी ॥
सुमुखी रूप गुनखान रैन सब जानन हारी ॥

प्रार्थना स्त्री की वैद्य प्रति

दोहा

वैद्यकविद्यामेंनिपुणसबविधिचतुरसुजान
ऐसाग्रंथजुभाषये बचें सहस्रों प्रान ॥

कुंडलियां

बचेंहजारोंजान तुम्हारायशसबगावें॥देखदेरवत
वपुस्तक नीके जतनकरावें॥रहे जगतमें नाम काम
होपूरनसारे॥करोमनोरथमम उरके सब पीतमप्यारे
कारयह जीवनसुफल जक्तमें सुरपुरपावें॥बचें
हजारों जान तुम्हारायशसबगावें॥

वाक्यग्रंथकारका दोहा

नारीकासुनकरबचनबोलेवैद्यसप्रेम ॥
बातकहीपरमार्थकी धन्य तुम्हारानेम॥

कुंडलियां॥ सुफलतुम्हारानेम धर्म कीबातविचा
री॥ चतुरसुघरगंभीरमनोहर सबविधप्यारी॥ पूं
छत जावोप्रश्न उत्तरमें देता जाऊं॥सबरोगोंके
भेद जतनलक्षण समझाऊं॥ नारायेकुछगुप्तप
होरैविरदहमारी॥सुफलतुम्हारानेमधर्म
कीबातबिचारी॥

॥ प्रश्न स्त्रीकादोहा ॥

नाड़ीके लक्षण जिते कहे सकल समझाय
जैसे जिसके भेद है सो सब देह बनाय ॥

कुंडलियां ॥ सो सब देह हि बनाव चलें जिस विधये नारी ॥ कहोभेद कफ पित्त वातकी गति विस्तारी ॥ तुम हो चतुर प्रवीन दीन रक्षक हितकारी ॥ हम नारी का ज्ञान महामति मंद हमारी ॥ बड़े धर्मकी बात जक्त में सुख दिन चारी ॥ सो सब देह बनाय चलें जिस विधये नारी ॥

अथ पित्त कफ वायकी नाड़ीकी परीक्षा

उत्तर वैद्यका दोहा

मूल अंगुष्ठ वाम कर धरे आंगुरी तीन ॥
प्रथम पित्त कफ दूसरी तीजी वाय प्रवीन ॥

कुंडलियां ॥ तीजी वाय प्रवीन कहूं सबकी गति न्यारी जो वैद्यकमें लिखा सुनो मम प्रान न प्यारी ॥ मेंडक काक कुलंग चाल पित्तकी पहिचानो ॥ पांडुक मोर मराल नाड़ि का कफ की जानो ॥ सांप जोंक ज्यों चलै मंद गति वाय विचारी ॥ तीजी वाय प्रवीन कहूं सबकी गति न्यारी ॥ ॥ अर्थ शुरु ॥

बांये हाथके अंगूठेके नीचे तीन उंगली धरे पहली

पित्त की दूसरी कफ और तीसरी वायकी जानिये ॥ मेंडक काग और कुलंग की भांति जो चलि सो पित्त की नाड़ी जानो ॥ पारसना मोर और हंसकी नाई कफ की चलती है ॥ सांप और जोंक की चाल वायकी है ॥ अथ मन्दी पान और ज्वरके कोपमें नाड़ी की परीक्षा ॥

दोहा

थंभ थंभ कर नाड़ी चलै महामंद गति जान
टेढ़ी सो जो स्वहै सुन्न पानी सो जान ॥

कुंडलियां

सुनपानी सो जान दूत जमके दिखलावै ॥ जिसकी यह गति होय वैद्य फिर कौन जिलावै ॥ वेग वती अति चलै कोपमें ज्वरके नारी ॥ निज निज घर आवहै रहै फिर क्या बीमारी ॥

अथ कामातुर भूष और भरे पेट वाले की नाड़ी की चाल की परीक्षा ॥ ॥ दोहा ॥

कामातुर अरु क्षुधित की वेगवती हर साय
मंदाग्नि औ क्षीण की धीमीसी हो जाय

कुंडलियां ॥ धीमीसी हो जाय उदरमें आंव बतावै अतिभारी जो चलै पेट सो भरके आवै ॥ नाड़ी भेद

अनेक कहां लों बरने कोई ॥ जो होवै अप्रवीन बुद्धि सो जाने सोई ॥ ॥ इति नाड़ी परीक्षा ॥

॥ अथ मुख्य रोगों का वर्णन ॥ ताको स्त्री का वैद्य प्रति

॥ दोहा ॥

अहो कंत मति मंद हम हैं नारी की जात

कहो भेद सम आय के मुख्य रोग की बात

कुंडलियां ॥ सकल रुजन के भेद जिते वैद्यों ने गाये सभी कृपा कर कहो तुम्हें जो शास्त्र बताये ॥ वचन प्रेम रस भरे रहे मुख से उच्चारो ॥ तुम हो चतुर सुजान धर्म के मग पग धारो ॥

उत्तर वैद्य का दोहा

सकल रुजन के भेद दो सुन मम प्रान अधार

एक मानसिक दूसरे कायक रोग अपार ॥

कुंडलियां ॥ यही रोग उर धार भिन्न कर बरनों सोई ॥ सोच फिकर में है चित्त अंग दुबला होई ॥ नासै चैन स्वाय रैन दिन जी घबरावै ॥ ऐसा रोगी होय मानसिक बाधक हावै ॥

॥ अथ कायक रोग के लक्षण दोहा

कबहुक मिथ्या हार ते उपजत अंग में पीर

कायक नाड़ी वर्णानिये कहै वैद्य धर धीर

कुंडलिया ॥ कहै वैद्य धर धीर कुपथ्य भोजन जो पावै
वढ़ै पित्त या वाय घटै बल रोग विसावै ॥ अनुचित मारे
भोग रोग तिस को लग जावै ॥ मात पिता का कर्म पुत्र
को आन सतावै ॥ ॥ अर्थ ॥
मुख्य रोग दो प्रकार के हैं मानसिक और कायक इ
नके १४ भेद हैं सो आगे बर्णन किये हैं फिक्र और
बेचैनी के दिल पर रहने से नींद कम आवे अन्न न
भावे अंग दुबला होने से वैद्य मानसिक रोग कहते हैं
और ॥ कुपथ्य भोजन करने से पित्त या बाय बढ़ जाती
है मिथ्या विहार यानी कुमार्ग में रत करने से और
माता पिता के कर्मो से जो बीमारी होती है सो कायक
कहाती हैं ॥ ॥ अथ १४ प्रकार के रोगों के नाम ॥

॥ चौपाई ॥

प्रथम हि सहज रोग सुन जानो ॥ दूजा गर्भज रोग ब
खानो ॥ तीजा जात रोग है प्यारी ॥ चौथी पीड़ जु है
बीमारी ॥ पञ्चम काल रोग कबि गने ॥ छठी प्रभावक
व्याधा भने ॥ सप्तम रोग स्वभावज भाषे ॥ अष्टम कर्म
दोष बुध दाखे ॥ ॥ दोहा ॥

आगंतुक रुज है नवीं कायक दशमा जान ॥
अंतर पीड़ा ग्यारवीं देशज वा दश मान ॥

चौपाई ॥ कर्मज पीड़ा तेरह जान ॥ दोशज चौदह भनै सुजान ॥ इन सबके लक्षण सुन आगे ॥ जिस २ बिध बीमारी जागे ॥ ॥ अथ सहज रोग का वर्णन ॥

॥ कड़ा ॥

मात पिता के बीर्ज दोष से उपजे पीरा ॥ ताको सहज सुजान कहै सुत चातुर धीरा ॥ ववासीर और कुष्ट आन शक आदिक रोगा ॥ मात पिता को होय पुत्र को निश्चय होगा ॥ ॥ अथ गर्भ रोग और जात रोग का वर्णन

॥ दोहा ॥

वौने पिंगले है गले गर्भ रोग के रूप ॥
इनको औषधी क्या करै चातुर सुभीष अनूप

कुंडलियां

चातुर सुभषित अनूप जानके लक्षण माषै ॥ मिथ्याहार विहार गर्भ में माता रापै ॥ पूंगे बहरे होय बाल तिन के सुत प्यारी ॥ यही जात के रोग कहावै जब मैमारी ॥ ॥ अथ पीड़ वर्णन ॥ दोहा ॥

शस्त्रों की जो चोट से उपजे पीड़ा अंग ॥

अथवा ऊंचेसे गिरे करै देह कोभंग ॥

॥ अथ काल रोग दोहा ॥

शीत समय सरदी लगे उदमकालमें धूप ॥

वर्षामे जलमेंरहे काल रोग के रूप ॥

अथ प्रभावज रोग की उत्पत्ति दोहा ॥

मात पिता के श्रापसे अंगपीड़ हो जाय ॥

सोइ प्रभावज रोग है कहै वैद्य सन भाय ॥

अथ स्वभाव रोग की उत्पत्ति दोहा ॥

प्यास भूष ने ऊपजे तथा अबलता जान ॥

स्वाभाविक सो रोग है परमानंद सुजान ॥

अथ कर्म दोष रोग की उत्पत्ति दोहा ॥

पाप वाय कफ पित्त से पीड़ा अंग जो होय ॥

परमानंद सुजान कह कर्मदोष है सोय ॥

अथ आगंतुक ॥ कायक ॥ कर्मज ॥ अंतर ॥
देशज ॥ दोषज ॥ रोगों का वर्णन

॥ रोड़ा छंद ॥

काम क्रोध मद लोभ मोह पुन भूतादिक जे रोगा ॥ आ
गंतुक ये व्याधि क हावे दूर करे सब भोगा ॥ ज्वर आ
दिक जो पीड़ा सिगरी सो कायक पहिचानो ॥

तिन दिनी गानी अरु सीडी अनर रोग हि जानो ॥ काले श्री लालरंग के जितने लोग लुगाई ॥ देराज रोग कहावै मिगरे तिनकी औषधी नांही ॥ गौ ब्राह्मण हत्या से उपजे कर्मज रोग कहावे ॥ वायपित्त कफ की जो पीड़ा दोषज वैद्य बतावे ॥
इति चतुरदश रोगों का वर्णन ॥ अथ ज्वर के भेद लिख्यंते

॥ वाक्य स्त्री का पुरुष से

॥ दोहा ॥

वरणन चौदह रोग का पृथक कहा समझाय ॥
प्रथम भेद ज्वर के कहो संसय सब मिट जाय

॥ कुंडलियां ॥

संसय सब मिट जाय हटै मम चिन्ता सारी ॥ तुम हो चतुर सुजान कंत हम हैं बलि हारी ॥ जितने तप के भेद कहो सब न्यारे न्यारे ॥ जिस जिस विध से जांय बतावो प्रीतम प्यारे ॥ ॥ उत्तर वैद्य का दोहा ॥

तप हैं आठ प्रकार के सुनो प्रिया सुख धाम
भिन्न भिन्न करके कहूं तिन आठों के नाम

॥ कुंडलियां ॥

तिन आठों के नाम जतन सब भेद जताऊं ॥ इढ मन हो

करसुनो औषधीसहित बनाऊं ॥ पहला ज्वर है वायपि
त ज्वर दूजा जानो ॥ तीजा कफ ज्वर कहा वायपित
चौथा मानो ॥ पंचम कफ और वाय मिले इक ठौर
पियारी ॥ षष्टम कफपित्त मिलै सुनोतुम वात हमारी

॥ दोहा ॥

सप्तम ज्वर सनपात है आगंतुक ज्वर आठ
इनसबके लक्षण कहूं जुदे जुदे लखपाठ

॥ अथ ज्वरमात्रके सामान्य लक्षण ॥

॥ दोहा ॥

[illegible] नाम् पावे दाहो जाप ॥
स्वेद न हो अंग डायन न लक्षण दिये बताय

॥ अथ ज्वरमात्र का सामान्य जतन ॥

॥ दोहा ॥

पीनेंदि औटाय के दांह सुला वैनाहि
भोजन हलका स्वेनपट मैल कुचैलो नांहि

॥ कुंडलिया ॥

मैल कुचेले नाहि सोंठ है मासा लीजे ॥ धनियां प
चगुन नासु क्वाथ कर इनका पीजे ॥ तीन दिवस के
वाद दवा यह दीजे प्यारी ॥ निश्चे लागे भूख मिटै

ननपीड़ासारी॥ ॥अर्थ॥
सोंठ २ मासे धनियां १० मासे इनका काढ़ा करपिलावैतो
ज्वर जाय औरभूषलगै॥ ॥वाक्य स्त्रीकापुरुषसे॥

॥दोहा॥

कहे आठ ज्वर आपने दियेसकलसमझाय
आठोंके लक्षण जतन दीजेमोहि बनाय॥

कुंडलिया॥दीजि सबैं बनायमोहि जगके सुखकारि॥
करैंनाम विख्यात नाथ सब नर और नारी॥जोहो सुरूप
प्रीतरीत वैद्यककीभाषो॥यह संसार असार सारइस में
कछुराखो॥

अथ वाय ज्वरके लक्षण जतन लिख्यते ॥

वाय॥ ज्वरवालेको॥ ह्रद्रोगवालेको॥ अनि जठ
राग्नि वालेको॥ गर्भणी स्त्रीको॥ कमताकत वाले
को॥बालकको॥ बूढ़ेको॥इतने बीमारोंको लंघन
नहीं कराना चाहिये हलका पथ्य देना है॥

॥अथ इलाजलिख्यते॥

॥दोहा॥

दोनालाव कट हलियां नागरमोथा जान॥
सोंठ गिलाय चिरायता तेज्वर वाला आन॥

कुंडलिया ॥ छै छै मासे तोल बराबर सबले आवो ॥ कर इनके दो भाग क्वाथ कर एक पिलावो ॥ दिवस पांच तक देय सकल ये औषध प्यारी ॥ नाजानूं कहां जाय वात ज्वरकी बीमारी ॥ ॥ अर्थ ॥

दोनो कटेली नागरमोथा सोंठ गिलोय चिरायता नेत्रवाला येसब दवा छह छह मासे डाल जो कूटकर दो भाग करके एक हिस्से का काढ़ा कर सुबह को पिलावे दूसरे का शामको दे इसी प्रकार ५ दिन पिलावे तो वायज्वर जाय और जतन दूसरी औषधी ॥

॥ कुंडा ॥

सोंठ धमासा छाल नीबकी पोहकर मूला ॥ जड़ अरंडकी पट कच्चूर आडूसा तूला ॥ भाग बराबर ले पटका भर औषधि सारी ॥ दीजो कर के क्वाथ वात ज्वर दे नथारी ॥ ॥ अर्थ ॥

सोंठ नीमकी छाल पट कच्चूर धमासा अडूसा अरंडकी जड़ पोहकर मूल ये सब औषधि छ दाम छ दाम भर ले काढ़ा कर पिलावे तो वात ज्वर दूर होय तीसरा जतन सतावरी गिलोय छ दाम छ दाम भर ले काढ़ा कर छ दामभर पुराना गुड़ डाल ५ दिन तक पीवे

तो वात ज्वर जाय चौथा जतन ॥ ॥ रोड़ा छंद ॥

दाख मुनका पीत पापड़ा पीपल सौंफ न वीली ॥ भाग बराबर सब पैसा भर लीजे रंग रंगीली ॥ सैव कूट कर ध्यर चूल्हे पर इनका काथ पिलावै ॥ वात ज्वर वाले के हिय का कमल सुजान खिलावै ॥ ॥ अर्थ ॥

मुनका दाख पीतपापड़ा पीपल सौंफ तीन तीन मासे ले काढ़ा कर पिलावे तो वात ज्वर नास ॥

॥ प्रश्न स्त्री का दोहा ॥

वात ज्वर भलि भांति से दीना आप बखान

अब पित्त ज्वर के जतन भाषो कंत सुजान

अथ पित्त ज्वर के लक्षण उत्तर वैद्य का

॥ दोहा ॥

नेत्रों में गरमी रहै देह न चैन गरमाय ॥

प्यास लगै अति नींद नहि मुख कड़वा होजाय

कड़ा ॥ मुख कड़वा होजाय नैन से नींद नसावै ॥ जिह्वा सूखी जाय पसीने देह न आवै ॥ मिष्ठा पतना दस्त मूत्र पीला दरसावै ॥ पीली अंखियें रहें चैन तिसको नहि पावै ॥ ॥ अथ पित्त ज्वर के जतन ॥

॥ रोड़ा छन्द ॥

नवल धमासा नागर मोथा पीत पापड़ा वाल॥ पुनत्रि
रायना नेत्रवाला नवल नीम की छाल॥ ले छदाम भर
हरेक औषध कूट काथ कर प्यावै॥ पित्तज्वर की जित
नी बाधा सब कौ बेग नसावै॥ ॥अर्थ॥
धमासा नागर मोथा पीत पापड़ा त्रिरायना नेत्र
वाला नीम की छाल हरेक दवा छदाम २ भर ले
काथ कर प्यावै तो पित्तज्वर जाय॥

॥दूसरा जतन दोहा॥

चंदन षस सम तोल कै टंक टंक भर लाव
नीके पके फालसे शरबत स्वच्छ बनाव

कुंडलिया॥ शरबत स्वच्छ बनाव चार पैसे भर लीजै
षस चंदन ले पीस टका भर मिसरी दीजै॥ सब एकत्र
मिलाय छान कर पीवै प्यारी॥ पित्तज्वर की बिथा नाश
होनि श्रवयसारी॥ ॥अर्थ॥
चंदन टंक १॥ षस टंक १॥ इनको महीन पीस
४ पैसे भर फालसे के रस में २ पैसे भर मिसरी और चंद
न डाल पीवै तो पित्तज्वर जाय यह औषधि निरघंटी
और पित्तसागर में भी लिखी है॥

॥तीसरा जतन दोहा॥

पील धान की लायके पानी लेय मिलाय ॥
तामें मिसरी डालपी पित्तज्वर हट जाय ॥
अर्थ ॥ पीलों का शरबत कर मिसरी डाल पीवे तो पित्त ज्वर जाय और चौथा जतन ॥ चौपाई ॥
किरमाला की मीगीं लावो ॥ कुटकी नागर मोथ मिलावो ॥
पीतपापड़ा हड़ की छाल ॥ सब सम औषध लेहु संभाल ॥
हरेक लो छ दाम भर प्यारी ॥ कूट करो काढा सुखकारी ॥
पित्त ज्वर निस दाह मिटावे ॥ मूर्छा रोग रहन नहिं पावे
प्रलापभूरा कौन विचारे ॥ सुन यह औषध वेग सिधारे
॥ अर्थ ॥ किरमाला की गिरी ॥ नागर मोथा ॥
कुटकी ॥ पित्तपापड़ा ॥ बड़ी हैड़ की छाल ॥ ये सब दवा छ दाम २ भर कूट काढ़ा कर पिलावे तो पित्त ज्वर ॥ निस ॥ दाहं मूर्छा ॥ भौरा ॥ प्रलाप ये सब रोग दूर हो यह वैद्यविनोद का आशय है ॥
पांचवा जतन ॥ सिर्फ शर्बत अनार से भी पित्त ज्वर की दाह दूर होती है ॥ ॥ छटा जतन ॥
॥ दोहा ॥
गजगमनी कटि केहरी सोलह वर्ष जु आय
ता नारी के भोग ते दाह तुरत मिट जाय ॥

क.डा ॥ दाह तुरत मिट जाय सुने पिक की रञ्ज बानी॥ कोमें बालक बैन सुने जो हित से प्रानी॥ धार सुगंधित हार मनोहर करै सिंगारा॥ चंदन घिसा कपूर छुटे चहुं ओर फुहारा॥ सेंधा नमक मिलाय फालसे का रस पीवे॥ पित्त ज्वर मिट जाय सुखी हो नर सो जीवे॥ ॥ अर्थ॥ महा सुंदरी स्त्री जिस की हाथी कैसी चाल झूमती हुई चीते के सी कमर सोलह बर्स की उमर ऐसी स्त्री से भोग करे तो पित्त दाह हरै बातोंने मैना के पढाने से उनका शब्द सुनने से और साफ वस्त्र पहर ओढ़ बालक से बातें करने से सुगंधित फूलों के हार पहरने से कपूर सहित घिसा चंदन लगाने से सुंदर स्त्रीयों के साथ बात करने से मनोहर शृंगार करने से फुहारे छुटने देषने से फालसे के रस मे सेंधा नमक मिलाके पीने से इन सब यत्नों से पित्त ज्वर की दाह निसंदर होती है॥ ॥ और जतन॥

॥ दोहा॥

दाष मुनक्का लाय रस मिसरी लेय मिलाय
पान जु करै सुजान यह पित्त ज्वर मिट जाय

॥ और जतन दोहा॥

मूंगदालपक वायकर पानीलिय छनाय
तामें मिसरी डालपी पित्त दाह मिट जाय
॥ और जतन दोहा ॥
नागर मोथाले अभग पीत पापड़ा आन
पुनचिरायता येसकल पांचटंक परमान
काढ़ा कर दिन तीनलौ पीवे दोनोयाम
पित्त ज्वर की पीड़ का फेर नहीं क्या काम
अर्थ ॥ नागर मोथा ॥ पीत पापड़ा ॥ चिरायता ॥
ये तीनो छह २ माशेले काढ़ा कर पिलावे तो पित्त
ज्वर दूर होय येसब जतन निमर भास्कर का आ
शय है ॥ ॥ और जतन दोहा ॥
नीम बकल पदमाखपुन धनियां चंदनलाल
नवलगिलोयमंगायके दो दो मासे डाल
कुंडलियां ॥ दो दो माशे डाल काथ नीका बनवावे
पित्त ज्वर की दाह एक छन मांह नसावे ॥
अर्थ ॥ नीमकी छाल ॥ पदमाख ॥ धनियें ॥
ये तीनो दो दो माशेले काढ़ा करे पित्त ज्वर जाय
॥ और जतन दोहा ॥
पित्त ज्वर के कोपमें दाह वडुन जो होय

पीपल पहुकर मूल काकड़ा सीगी आनोन कबकायफल ज लकूट कपड़े में छाने ॥ चटनी शहत मिलाय करे ऊ हमासे नटि ॥ कफ ज्वर की जड़ जाय श्वास खासी सब काटै ॥ अर्थ ॥ पीपल ॥ पोहकरमूल ॥ काकड़ा सींगी ॥ कायफल ॥ इन सबको बारीक पीस कपड़ छनकर ३ मासे शहद के साथ चाटे स्वास षांसी कफ ज्वर दूर होय ये वैद्यविनोद का आशय है ॥ कफ वाले को सेर का तीन पा पानी औटन २ रह जाय तब दे दिन में सोने नदे बारह दिनके बाद पथ्य के लिये मूंग या मोट का कुलथका पानी दे और पथ्य के साथ बिजोरे की केसर में सेंधा नमक मिलाय करदे अदरक दे ॥

अथ पाचन की औषधि ॥ कड़ा ॥

दोनो जीरे लोंग लायची धजन नेनी ॥ सोंठ पीपला मूल मिरच चित्रक पिक बेनी ॥ अजवायन अजमोद बराबर सब ले आवै ॥ पीपल सींग मिलाय सबका चूरन बनवावै गरमनीर के साथ तीन मासे ले प्यारी ॥ अब लगे अन्न प बी कफः ज्वर व्रक्ष कुठारी ॥ ॥ अर्थ ॥

दोनो जीरे ॥ लोंग ॥ इलायची ॥ सोंठ ॥ मिरच स्याह ॥ पीपल ॥ धना सींग ॥ अजमोद ॥ अजवायन

पीपलामूल ॥ चीता ॥ येदवा सब बराबर ले बारीकपीष चूरण करे गरम पानीके साथ तीन माशे दे कफ ज्वरदूर होय भूख लगै अन्न पचे ॥ और जतन ॥

॥ दोहा ॥

पहुकरमूल कटेहली सोंठ गिलोय सुजान
नवल अड़ूसा डालके लीजे भाग समान

कड़ा ॥ लीजे सकल बराबर छह छह मांशे डाले ॥ जौकूट करके काथ आंचपै खूब उबाले ॥ दिवस सात पर्यंत दवाये दीजे प्यारी ॥ ना जानूं कहां जाय कफ ज्वरकी बीमारी ॥ ॥ अर्थ ॥

सोंठ ॥ गिलोय ॥ पोहकरमूल ॥ कटेली ॥ अडूसा ॥ ये चारों छह २ माशे कूटकाढा कर ७ दिन दे तो कफ ज्वर जाय ॥ ॥ और जतन ॥

॥ चौपाई ॥

पीपल नवल कटेली लीजे ॥ और काकड़ासींगी दीजे ॥
नवल गिलोय अडूसा प्यारी ॥ टंक टंक ले औषध सारी ॥
दस दिन काथ जतन से पीवै ॥ कफ ज्वर जाय सुखी हो जीवै

अर्थ ॥ पीपल ॥ कटेली ॥ काकड़ासींगी ॥ अडूसा ॥ गिलोय ॥ ये दवा चार २ माशे ले काढा कर १० दिन पीवै

तो कफ ज्वर जाय॥ ॥ और जतन ॥

केवल अडूसा के काढे सेभी १० दिन पीवे तो कफ ज्वर जाय॥

इति कफ ज्वर लक्षण जतन संपूर्णम् ॥ + ॥

अथ वात पित्त ज्वर के लक्षण जतन लिख्यते॥

॥ वाक्यस्त्री का दोहा ॥

करुणानिधि मम प्राणपति सर्व शास्त्र की खान ॥

वायपित्त ज्वर जतन सब कहिये कंथ सुजान ॥

॥ कड़ा ॥

कहो नाथ अब वातपित्त के लक्षण सारे॥ कीनी कृपा अपार हमारे प्रानपियारे॥ लाखों रोगी फिरे जगत में भये अनंदा सौसौ देयं असीस कहें सब पूरण चंदा॥

अथ वातपित्त ज्वर के लक्षण जतन लिख्यते ॥

उत्तर वैद्य का॥ सोरठा ॥

नैन नींद बिसराय रोम खड़े अरु अरुचि हो॥ पीड़ा होय जंभाय कंठ जीभ सूके रहै॥ ॥ कड़ा ॥

देह सकल भरड़ाय अंधेरी आंखों आगे॥ बार बार बकवाद उठे निसदिन सो जागे॥ ऐसे लक्षण लखै वातपित रोग बतावे॥ आगे इसके जतन विचार सुजान जतावे॥ ॥ अथ वायपित्त ज्वर के जतन ॥

॥ दोहा ॥

नवल गिलोय अरंड जड़ पीपल चन्दन लाल
भाडंगी पदमाष खस नागर मोथ्या डाल ॥

कड़ा ॥ नागर मोथा डाल सुजान परेटी लावै ॥ लेले मासे पांच कूट कर काथ करावै ॥ बारह दिन जो देय वायपित्त ज्वर की पीरा ॥ निश्चै होवै दूर सुनो नृप चातुर धीरा ॥

॥ अर्थ ॥ गिलोय ॥ अरंडकी जड़ ॥ पीपल ॥ लालचंदन ॥ भाडंगी ॥ पदमाष ॥ खस ॥ नागरमोथ्या ॥ ये सब दवा पांच २ माशे ले जौकूट कर ३ माशे का काढ़ा कर बारह दिन तक दे तो वात पित्त ज्वर जाय ॥

॥ और जतन ॥

॥ रोड़ा छंद ॥

नागरमोथा पीनपापड़ा सोंठ गिलोय नवीनी ॥ लेचिरायता तोल बराबर सबकी रंग रंगीली ॥ मासे तीन पकावै काढ़ा बारह दिन जो प्यावै ॥ वातपित्त ज्वर दूर होय फिर बैरी फेर न आवै ॥ ॥ अर्थ ॥

नागरमोथ्या ॥ पीनपापड़ा ॥ सोंठ ॥ गिलोय ॥ चिरायता ॥ ये सब दवा बराबर ले कूट कै रक्खै ३ माशे का काढ़ा कर १२ दिन तक दे तो वातपित्त ज्वर

॥ अर्थ ॥ नागरमोथा ॥ सोंठ ॥ चिरायता ॥ गिलेय ॥ ये चारों दो दो माशे औटकाढ़ा कर पिलावे तीन रोज तक बाद इसके दूसरा दे जो लिखता हूं ॥

॥ अथ दूसरा क्वाथ ॥

कड़ा ॥ नागर मोथा देव दारु भाडंगी लावै ॥ धणों काय फल पित्तपापड़ा सोंठ मिलावै ॥ हड़ छाल कणागच की जड़ सब करो बराबर ॥ जौ कुट करके करो क्वाथ लेवे कदोयभर ॥ वातकफ ज्वर खांसी सूजन स्वास नसावै ॥ जो दस दिन लो देय रोग ढूंढा नहिं पावै ॥

॥ अर्थ ॥ नागर मोथा ॥ देवदारु ॥ भाडंगी ॥ धनियां ॥ कायफल ॥ पित्तपापड़ा ॥ सोंठ ॥ हड़की छाल ॥ कणागचकी जड़ ॥ ये सब दवा बराबर ले कूट रक्खे ८ माशे लेके काढ़ाकर १० दिन पिलावे तो ऊपर लिखे रोग जाय ॥ ॥ और जतन ॥

॥ रोड़ा छंद ॥

नागरमोथा पीतपापड़ा सोंठ गिलोय धमासा ॥ लाय बराबर क्वाथ पकावै और द्वादस मासा ॥ वातकफः ज्वर वमन शोष को निश्चै देय नसाई ॥ जैसे सूरज उदय होत ही तारागण छिप जाई ॥ ॥ और जतन ॥

काढा ॥ शालपरणि अरु प्रष्टपरणि अरनी अरलबेली॥ दोउ कटेली बेलगिरि मुन नार नवेली ॥ गोक्षुर अरलू पाठ कुभेर बराबर लावै॥ जौकुट करके धरै काथ दशमूल कहावै तामें पीपल डाल काथ दस दिन जो प्यावै॥ वात कफ: ज्वर जाय सही यह वैद्य बनावै॥

॥ अर्थ ॥

शालपर्णी १॥ पिष्टपर्णी २ ॥ अरनी ३॥ दोनों कटेली ४॥ बेलगिरी ६ ॥ गोषरू ७॥ अरलू ८ ॥ पाढ ९ ॥ कुंभेर १०॥ यह दश मूल काथ है इसमें पीपल डाल के पिलावे तो वातकफ: ज्वर जाय जो वात कफ ज्वर मे मुह और तालवा सूख जाय और जीभपर षुरकी बहुत होतो बिजौरे की केसर में सेंधानमक और स्याह मिरच मिलाय जीभ पर मलेतो षुरकी जाय चिरायता गिलोय देवदारु कायफल तीन तीन माशे ले काढा कर पिलावे तो वायकफ: ज्वर जाय॥ ये जतन तिमर भास्कर का आशय हैं ॥ इति वात कफ: ज्वर चिकित्सा संपूर्णम् ॥

॥ अथ कफ: पित्तज्वर के लक्षणालिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

लिये कफारा जीभ मुख नंद्रा अरुचि जान
बार बार शरीर में दाह शीत हो आन ॥

कड़ा ॥ निसदिन पीड़ा दारुण तीन की होवे जाको ॥ अंग कंपा रहै शरीर हिया दुख भोगे ताको ॥ मुखमीठासा रहै कभी कड़वा हो जावे ॥ जीभ लाल अरु स्वेत नेत्र मेडक रंग लावे ॥ थिथिलताई स्वेत मूत्र तिसका तुम जानो ॥ नाड़ी की गति हंस काक मेडक पहिचानो ॥

ये लक्षण तिमिर भास्कर को आशय है ॥ कुंडिह वेदैं ॥

॥ अथ कफ पित्त ज्वर का जतन लिख्यते ॥

इस बीमारी वाले को अष्टावशेष जल पिलावै ॥ अथ औषध चौपाई ॥ नेत्रवाला सोंठ नवीली ॥ चंदन लाल गिलोय रसीली ॥ दारुहलद नीकी ले आवो ॥ छठा कायफल कूट मिलावो ॥ तीन तीन माशे भर प्यारी ॥ दस दिन काढ़ा देय पकारी ॥ ॥ अर्थ ॥

नेत्रवाला ॥ सोंठ ॥ लालचंदन ॥ गिलोय ॥ दारुहलद ॥ कायफल ॥ हरेक तीन २ माशे ले काढ़ा कर १० दिन पिलावे तो कफ पित्त ज्वर जाय ॥

॥ और जतन ॥ दोहा ॥

नम्रपद माष मंगाय पुन हरिननीब की छाल

धनिया और गिलोय ले नीका चंदन लाल

कड़ा ॥ नीका चदन लाल बराबर सब ले आवे ॥ कूटप

कवे काथ छान कर दस दिन प्यावे ॥ कफ पित निश्चे जाय
दश निस वमन समीना ॥ जोंपावण को मार एम श्रायेले शीघ्र
॥ अर्थ ॥ पद्माप ॥ नीवकी छाल ॥ धनियां ॥ गि
लोय ॥ इसकाढे को दस दिन पिलावे ॥

॥ और जतन दोहा ॥

नागर मोथा पीप्पली सोंठ नीमकी छाल ॥
नीकी कुटकी इंद्र जव शशि मुखि चालमराल

कडा ॥ शशिमुखि चाल मराल स्वेत चंदन लो प्यारी ॥ हरि
गिलोय पटोल सुनो मुख चंद उजारी ॥ औषधि सब ये कूट
छान कर चूर्ण करावें ॥ फंकी माशे चार जलाष्ट व शेश पिला
वे ॥ ज्वर षांसी अरु स्वांस हिया दुखना जो होवे ॥ नेरी
होसो नवल दुःख ये निश्चे षोवे ॥ ॥ अर्थ ॥
नागरमोथा ॥ पीपल ॥ सोंठ ॥ नीमकी छाल ॥ कुट
की ॥ इंद्रजौ ॥ सपेद चंदन ॥ गिलोय ॥ पटोल
ये सब औषधि बराबर ले कूट कपड़ छन कर अष्टाव
शेष जल के साथ ४ माशे की फंकी करावे तो ऊपर लिखे रोग
नाश ॥ ॥ और जतन ॥

॥ दोहा ॥

दार हलद पुन नीवका छाल गिलोय मंगाय

पीपल और चिरायता लेकचूर सम भाय ॥

काड़ा ॥ लेकचूर सम भाय कटेली दोनो लावै ॥ सुघरपटोल मंगाय अडूसा और मिलावै ॥ लेले मासे तीन पकावे काढ़ा नीका ॥ जो ये दस दिन देय मिटे ज्वर पित कफ ही का ॥

॥ अर्थ ॥

दारहलदी ॥ नीम की छाल ॥ गिलोय ॥ पीपल ॥ चिरायता ॥ कचूर ॥ दोनो कटेली ॥ पटोल ॥ अडूसा ॥ येसब दवा बराबर लाय कूट रक्खे ३ मासे का काढ़ा १० दिन तक देनो पित्त कफ दूर होय ॥

॥ और जतन चौपाई ॥

नागरमोथा पीपल सोंठी ॥ किरमाला की गिरी अनोठी ॥
धनियां कुटकी दाष सुहागन ॥ मूल पीपला ले सम भागन ॥

॥ दोहा ॥

ग्यारह दिन यह दीजिये काढ़ा सो बेदर्द ॥
शूल मूर्छा अरुचि ज्वर मिटे तृषा भ्रम छर्द ॥

॥ अर्थ ॥ नागरमोथा ॥ पीपल ॥ सोंठ ॥ किरमाला की गिरी ॥ धनियां ॥ कुटकी ॥ दाष ॥ पीपलामूल ॥ ये सब बराबर ले कूट काढ़ा कर ११ दिन देनो शूल मूर्छा भ्रम अरुचि छर्द सहित पित्त कफ ज्वर दूर होय

इतिपित्तकफ ज्वरके लक्षण जतनसंपूर्णम

अथसन्निपातकीउत्पत्तिलक्षणजतनलिख्यते॥

॥ प्रश्नकीका सोरठा ॥

पंडितचतुरगंभीर ॥ सर्वशिरोमणिवैद्यवर
कहोसकलमतिधीर ॥ सन्निपातलक्षणजतन
कुंडा ॥ कहोसकलमतिधीररोगयहकैसेजाहै॥ सन्निपातमेंदवासुनोबिरलाहीवचाहै॥ वर्णोरोगमें जतनबिंद्रसकैनरनारी॥ जगसुखकारीबानकंनयह कहोविचारी॥ अथसन्निपात ज्वरकीउत्पत्तिकेलक्षणालिख्यते॥ ॥उत्तरबैद्यकादोहा ॥

कीनाप्रश्नसुहावना परहितकारीवान ॥
सन्निपातलक्षणजतनसकलसुनोतजकाम

कुंडा॥ सकलसुनोतजकामएकमनहोकरप्यारी॥ सन्निपातकेभेदकहूंमेंसबविस्तारी॥ उपजैजिसविधरोगसोइतुमसुनोसुहागन॥ जिनजतनोसेजायकहूंसबहोबड़भागन॥ ॥ दोहा ॥

अतिहिगरम अतिचीकना अतितीषा जोखाय
अतितीषा पहा अतीसीन्नपात उपजाय ॥

कुंडा ॥ सन्निपात उपजाय मासक त्रा जो पावै ॥ रोगवती स्त्रि नार संग निरंतर गवावै ॥ क्रोधवती सिर में भेद कछु दूनारा रवै ॥ परमानंद सुजान सनातन वैद्यक भावै ॥

अथ सन्निपात के लक्षण लिख्यते दोहा

छिन छिन में गरमी उठे छिन छिन शीत दबाय
हंसी खेड़े का मन निज पलट स्वभाव जु जाय

कुंडा ॥ पलट स्वभाव जु जाय देह में दुडकल होवै ॥ आंखों में जल बहै देह की सुधबुध खोवै ॥ नैन लाल कछु श्याम शब्द नहिं देय सुनाई ॥ उठे स्वास अरु कास कंठ में कफ घघराई ॥ जिव्हा काली पड़े देह सब दिन रूखे ॥ रैन आवै नींद मिला कफ लोहू थूके ॥ दोहा ॥

अकस्मात रोवै हंसे नाचे गावै गीत ॥
पुन रोवै अरु सिर धुने छिन गरमी छिन शीत

कुंडलिया ॥ छिन गरमी छिन शीत होठ मुख पक रजावै ॥ नाड़ी की गति मंद सिथल सूक्षम फरकावै ॥ काला पीला लाल मूत्र की रंगत जानो ॥ ये सब लक्षण होंय त्रिसन पात बषानो ॥

॥ अथ सन्निपात ज्वर के लक्षण समाप्तम् ॥

॥ अथ सन्निपात को जतन लिख्यते ॥

दो॰ पानी सोंठ मिलायके अध औटाकर लेय
दिनका औटा दिवसमें निशिका निशको देय

दोहा ॥ बिना पवनके मंदमें रषे नाकी सेज ॥ सात दिवस पर्यंत सब बस्तुनका परहेज ॥ शिव जीके पूजन सहित को पुन्य और दान ॥ सात दिवसके बाद फिर काढा कहे सुजान ॥ ॥ अथ काढा दोहा ॥

वच छड़ चव्य दोउ कटकी पीपल पुहकर मूल
सोंठ इंद्र जव कायफल भाडंगी सम तूल ॥

काडा ॥ भाडंगी सम तूल पीपला मूल नवीली ॥ मिरच स्याह अजमोद काकडासींगी जीली ॥ पाठल रायसना चिरायता लीजो प्यारी ॥ भाग बराबर कूट मिलाकर धरे सवारी ॥ टंक प्रात अरु टंक शामका काढा दीजै ॥ सन्निपात शीतांग अफारा सूल हर लीजै ॥ अर्थ ॥ वच छड़ चव्य दोनों कटेली पीपल पुहकर मूल सोंठ इंद्रजव कायफल भाडंगी पीपला मूल स्याह मिरच अजमोद काकड़ सींगी पाठल रास्ना चिरायता ये सब द्रव्य बराबर ले कूट कर धरे ४ मासे का काढा कर सुबह को दे इतना ही शामको पिलावे तो शीतांग अफारा सूल कफ व

कवाद सब दूर होय॥ ॥ और जनन दोहा ॥

निर्गुंडी जलभांगरा देवदार कुलनार
अगी पीपल रास्ना सोंठ जवासा डार

कढ़ा॥ सोंठ जवासा डार आक जड़ चित्रक प्यारी॥ चव्य पीपलामूल सहँजना बच सुखकारी॥ नवल अ तीस विरायता ये औषधि ले लीजे॥ टंक २ परमाण काथ दोनो खन दीजे॥ सन्निपात ज्वर धनुर्वात कफ खांसी जावे॥ वंद जाकज्ञा रदुले स्वास सीना गा नसावे॥

॥अर्थ॥ निर्गुंडी जलभांगरा देवदार अरणी पीपल रास्ना सोंठ जवासा आककीजड़ चीता चव्य पीपलामूल सहँजना वच अतीस चिरायता ये सब दवा बराबर ले चार २ मासे का काढ़ा सुबह और इतना ही शामको देनो ऊपर लिखे रोग दूर हों यह लोलिंबराजका आशय है॥ जो सन्निपातमे जीभ सिथल होजाय तो जीभपर बिजोरेकी केस रमें मेथी सेंधानमक स्याह मिरच मिलायके मलेतो जीभकी जड़ता जाय॥ अथ सन्निपातको इलाज उन्मत्तरस॥ ॥ चौपाई ॥

मकुवा मिरच बराबर लावे॥ पीपल सेंधा नमक मिलावे॥

जलमेंपीसनाकमेंडारे॥ ज्ञान होय अज्ञान सिधारे॥ जोसन्निपातमें ज्ञानजातारहाहोतो इस कुलास से ज्ञान होवे॥ अथ सन्निपातको और कुलास॥

चौपाई॥ पांच टंक गंधक समपारा॥ षरलकरे दोनोइकबारा॥ दोनोंकीसम त्रिकुटा लीजे॥ कूट छान चूरण करदीजे॥ लायधतूरारसकढ़वावै॥ तीनतीनपुट देताजावै॥ एक दिवस पुन षरल जुकीजे॥ लेकुलास रोगीको दीजे॥ सन्निपात को छिनमें नासै॥ वैद्यक देखसुजानप्रकासै॥ ॥ अर्थ ॥

आधी छटांक गंधक इतनाहीपारा दोनोंकेबराबर यानि एक छटांक त्रिकुटा यानिसोंठीमरचस्याह और पीपल तीनोंको पहलेबारीक पीसबादषरलमें पारे गंधककी कजली कर उन तीनोंका चूर्णमिलाय धतूरेकेरसकी ३ पुट दे ८ पहर खरल करे सूंघनेसे सन्निपातजाय॥ ॥ अथसन्निपातको अंजन ॥

जमालगोटेकीगिरी माशे १० पीपलामूल माशे ५ स्याहमिरच माशा १ तीनोंको जंमीरीके अरकमें ७ दिन षरलकरे आंखमें डालेसन्निपातजाय॥

॥ अथ भैरवांजन ॥

पारा गंधक स्याह मिरच पीपल येसब बराबर ले और ज
मालगोटा इनसे चौथाई पहले पारा गंधक पीसखरल
में कजली करे बाद बाकी तीनों को पीसकर मिलावे जंभी
री के रसमें ८ दिन खरल करे आंखों में आंजते ही सन्नि
पात जाय ये वैद्यरहस्य का आसय है ॥

॥ और अंजन दोहा ॥

॥ सिरस बीज लहसन मिरच सेंधानमक मिलाव
॥ पीपल सिल बच सब दवा तोल बराबर लाव

कड़ा ॥ तोल बराबर लाव पीस गोमूत्र मिलावे ॥ खरल
करे दिन एक निसि फिर छांह सुकावै ॥ अंजन करके धरै
नेत्र में जिसके डारै ॥ स्वांस कास शीतांग सीद्दन सुनपात
सिधारै ॥ अथ महासन्निपात का जतन लिख्यते ॥

॥ दोहा ॥

पारा सींगी मोहरा काली मिरच मंगाव ॥
नीला थोथा डार पुन नौसादर ले आव ॥

कड़ा ॥ ये औषध सब डार बराबर चूरन कीजे ॥ कोमल
लहसन और धतूरे का रस लीजे ॥ चूरन में रस डार गो
टि कर मस्तक बांधै ॥ एक पहर में चढ़े ताप नव शिव आ
राधै ॥ जो चेतन्य नहोय और तपभी ना आवै ॥

तो फिर रोगी मरे नहीं कोइ वैद्य बचावै ॥ अर्थ ॥ पारा सींगीमोहरा कालीमिरच नीलाथोथा नोसादर ये सब बराबर ले पीस धतूरा और ल्हसन के अरक में गोटी बनायके माथे पर बांधे जो एक पहर में तप चढ़े तो रोगी बचे वरना असाध्य है ॥

॥ औरजतन दोहा ॥

ल्हसन राइ पीसये मूल सहं जनाडार
गोऊ मूत्र मिलायके गोटी लेय सवांर

कड़ा ॥ गोटी लेय सवांर औरोगी करवावे ॥ मस्तक ऊपर धरे पहर दो तप चढ़ आवे ॥ जो रोगी ना तपे मूर्च्छा में रह जावे ॥ तो फिर वह जन मरे नहीं कोइ बैद्य बचावे ॥ यह वैद्य विनोद का आशय है ॥ सन्निपात को वाज़ वैद्योंने ५२ प्रकार का लिषा है उस्के लक्षण जतन इस पुस्तक में नहीं लिखे क्योंकि सुश्रुत वागभट आदिने सन्निपात एकही प्रकार का लिखा है ॥

अथ आगंतुक ज्वर के लक्षण जतन
॥ लिख्यते ॥

॥ वाक्य स्त्री का दोहा ॥

॥ सात ज्वरों के भेद तो ष्रब कहे समझाय ॥

अब आगंतुकके जतनक हो कंत चित लाय कहा ॥ कहो कंत चित लाय हमारे प्रानपियारे। जो २ इसके भेद कृपा करभाषी सारे ॥ जिन जतनोंसे जाय होय सब रोगी नीके ॥ कहो दया कर सकल मिटैं सब संसय जीके ॥

अथ आगंतुक ज्वरांतर प्रेतादिक के ज्वर के ॥ लक्षण लिख्यते ॥

दो० छिन रोवै हंसै और होय चित भंग
रहे देह उदवेगमें थरथर कांपै अंग ॥

कुंडलियां ॥ थर २ कांपै अंग प्रेत बाधा तुम जानों ॥ मंत्र जंत्र अरु तंत्र जतन तिसके पहिचानों ॥ शिवका पूजन करे वेदमाता जपवावे ॥ फिर प्रेतादिक बाधक हीं ढूंढी नहिं पावे ॥

अथ भूत ज्वरका कुल्लास या अंजन लिख्यते ॥ सोरठा ॥

नीका हींग मंगाय ल्हसन जलमें घोलिये
अंजन नैन लगाय वाकि चित ले सूंघिये

॥ अथ प्रेतादिक ज्वर कौ तंत्र भाषा ॥

रवीवारको स्नान कर सहदेई की जड़ लावे तुलसीप

व॰ स्याहमिरच नीवें चीजों को ताबीजमें रखगलेमें बांधे तोप्रेत ज्वर जाय और रोगी आनंद होय ॥

अथ चोट लगनिसे हुवा जो ज्वर तिसके जतन लिख्यते

॥ दोहा ॥

शस्त्रों कीजो चोटसे भरै अंगमेवाय ॥
सोइ बिगाड़ै खूनको फिर सूजन हो जाय ॥

कुंडलियां ॥ अंग सूजन जब होय देहमें ज्वर चढ आवै लंघन ताको मनै दूध अरु मिसरी प्यावै ॥ मधुर चीकना खाय चोटपै हलदी लावै ॥ पट्टी बंधन सेंक जतन्न से सूवकरावै ॥ ॥ अथ भूत उतारनेको मंत्र ॥ ओंनमो ॐ ह्रीं नमो भूतनायक समस्तभूतन भूतानि साधय २ हूं २ इसमंत्रको मोरके परवसे झाड़ादीजे तो भूतादिक निकले ॥ ॥ दोहा ॥

नारीपूंछे वैद्यसे सुनियो वैद्यकराज ॥
विषमज्वरलक्षण जतन मोहबतावो आज

॥ दोहा ॥

नारीके सुनकर वचन बोले वैद्य सुजान ॥
विषमज्वरके भेद बहु तिनमें चार प्रधान ॥

प्रथम जो रोज आवै तिसे संतत कहते हैं, दूसरा

जो एक दिन छोड़कर आवै सो एकांतरा है तीसरा जो दो दिन छोड़के आवे सो तिजारी कहाता है चौथा चातुर्थिक जिसे चौथिया बोलते हैं विषमज्वरवाले को मूंगका या मोठकी दाल का पानी पथ्य देना चाहिये

॥ अथ काढ़ा चौपाई ॥

नवल गिलोय नीम की छाल ॥ हैड़ पटोल इंद्रजव डाल ॥ कूठा जवासा सुंदर लाव ॥ सबै बराबर भाग मिलाव ॥ टंक प्रात अरु टंक हि शाम ॥ कर काढ़ा जो प्यावे वाम ॥ सात दिवस बिन नागा प्यावे ॥ संतत ज्वरकी मूल न पावे ॥ ॥ अथ शीत ज्वरवाले को चंदन शुद्धा दिक काथ चौपाई ॥ नागर मोथा चंदन सोंठी ॥ भारंगी पदमाख अनोठी ॥ पोहकर मूल नीम की छाल ॥ पीतपापड़ा धनिया डाल ॥ दोऊ कटेली इंद्र जौ ॥ पत्र पटोल अडूसा लो ॥ कुटकी और त्रिफला ल्याव ॥ नीकी दौरन गिलोय मंगाव भाग बराबर सब ले आवे ॥ जौकुट करके काथ बनावे ॥ दो दो टंक दोऊ रवन प्यावे ॥ दस दिन अवधि वैद्य दतावै शीत ज्वर फिर रंगे से जावे ॥ जैसे घन दल पवन न सावे ॥ अथ विषमज्वर के लिये षोडशांग चूर्ण ॥ चौपाई ॥ फूल प्रियंगु नायमाण पुननावा मोथा धनिसो ॥

सोंठनीमकीछालकटेली कुटकीलेय अमीनया॥पीप
ल पीतपापड़ा प्यासिलेयपटोल अलवेली॥ स्वच्छकचू
र काकड़ासींगी हैड़ गिलोय नवेली॥ तोलवरावरसबये
औषधि कूट कपड़छन कीजि॥ आठदिवसलों फंकी
बसकी सवाटंकभरलीजि॥ शीतलजलकेसाथ फंकावि
दोनोरवन औषधारी॥ विषमज्वरकी जड़को अंगतेनिक
लेयउधारी॥ ॥ अर्थ ॥

फूलप्रयंगू वायपाणा नागरमोथा धानेयां सोंठ
नीमकीछाल कुटकी पीपल पित्तपापड़ा पटोल
कचूर काकड़ासींगी हैड़ गिलोय दोनोकटेली
येसबबराबर लेकूटकपड़छनकरचूरणा५माशेनाजे
पानीकेसाथ ८ दिन खाय तो विषमज्वरजाय॥

॥ औरजतन ॥ दोहा॥

सोंठचिरायतापिप्पली कटकीहैड़नवीन ॥
वायविड़ंग निसोतपुन छालनीमकी चीन्ह

चौबोला॥ छालनीमपुन चीन्ह मंगावोनागरमोथाप्यारी
भागबराबर कूटपीसकैर चूरनधरैसुधारी॥ टंक२भरसात
दिवसलौं गरमनीरसैंलीजे॥ भूपकहैं पितुबैनधरे अ
ब विषमज्वरमबदीजै॥ ॥ अर्थ ॥

सोंठ चिरायता नीमकीछाल पीपल कुटकी हैड़का बक्कल वायविड़ंग निसोत नागरमोथा येसब बराबर ले चूर्ण करै चार२ मासे गरम पानीसे ७ दिनतक फांके तो विषम ज्वर जाय भूष लगै चित्तको चैन मालूम हो ॥

पुरानेबुखारको मालती बसंत लिख्यते दोहा

वरक कनक इक भागले दूने मोती डार ॥

तीन भागले हींगलू स्या मिर्चीके चार ॥

रोड़ा छंद ॥ स्यामिर्चोंके चार बराबर सबके षोपा डारि नीबूरसमें षरलकरै जबतक चिकनई सिधारि ॥ रत्तीसे छैरत्तीतक अनुमान सुजान बतावै ॥ पीपल शहत मिला जो चाटै जीर्णबुखार नसावै ॥ मूत्र कृच्छ्र संग्रहणी षासी स्वास प्रदर जो होवै ॥ गरमीका दुख धातुविकारी सबको येरस षोवै ॥ ॥ अर्थ ॥

सोनेके वरक मासा १ मोती मासे २ हींगलू मासे ३ स्याह मिरच मासे ४ सबके बराबर षोपा डाल षरलमें रख नीबूके अरकमें षड़ल किये जांय जब चिकनाई जाती रहै तब एक रत्तीसे दो रत्तीतक पीपल शहद मिलाय के चाटै तो पुराना बुषार षांसी स्वास प्रदर

संग्रहणीमूत्रकृच्छ्र धातुकेविकार औरगरमीकेसबरोग दूरहैंय॥ ॥अथसुदर्शनचूर्णलिख्यते॥ दोहा ॥

त्रिकुटा त्रिफलाइंद्रजव चंदन वायविडंग
पीनपापड़ा फटकरी चीना और लवंग ॥

कुंडलियां॥ चीना और लवंग वंसलोचन अरु ईंगी॥ त्रायमाण षसमोथा अजवायनभाडंगी॥ तज कचूर पदमाष अड़ूसा नेत्रबाला॥ चव्यसहंजनाबीजमुलेठी नीमकि छाला॥ कवलगटेकीगिरी मूर्वा पुहकरमूला॥ देवदारुवच दारुहलद पत्रजमी तूला॥ धनियां औ अतीस कटेली दोनौं प्यारी॥ नवलपीपलामूल षारहटी चंद्रउजारी॥ कुटकी औरपटोल दवासव कूट बनावो ॥सबसे आधाशील गिलो चूर्णबनावो॥ दोहा ॥

शीतल जलसंग टंकभर फांके प्रातस्काल
नाम सुदर्शन चूर्ण यह विषमःज्वरकोकाल

अर्थ॥ सोंठ मिरच पीपल हैड़ वहेड़ा आंवला इंद्रजौ चंदन वायविडंग पीनपापड़ा फटकी चीना लौंग वंसलोचन त्रायमाण षस मोथा अजवायन भाडंगी तज कचूर पदमाष अड़ूसा नेत्रवाला चव्य सहंजनेकेवीज नीमकी छाल

मुलेठी कंवल गट्टे की गिरी एला पोहकरमूल देव
दार बच दारुहलद पद्माख धनियां अजमोद क
टेली दोनो पीपलामूल घमासा कुटकी पटोल
ये सब औषधि कूट कपड़ छनकर ४ मासे ताजे जल से
फांके तो विषम ज्वर जाय इस चूर्ण का मैंने खुद खूब त
जरबा किया है थोड़े दिनों में ज्वर को निकाल दिया
औरों को भी दिया सबने तारीफ की यह चूर्ण सब ज्वरों
की फायदे मंद है जैसे सुदर्शनचक्र सब दुष्टों को मार
जक्त की रक्षा करता है ऐसे ही ये चूर्ण सब ज्वरों का नाश
कर देह की रक्षा करता है ॥

अथ मल ज्वर के लक्षण जतन लिख्यते

॥ दोहा ॥

वमन दाह भ्रम मूरछा मुखसूषा अरु सूल
पल पल में हिचकी चलै लीजे पीपल मूल

कुंडलियां ॥ लीजे पीपल मूल हेड़ कुटकी अरु मोथा
किरमाला की गिरी बराबर सब अवशोधा ॥ टंक टंक
भर डाल क्वाथ कर देय पिलाई ॥ मलज्वर की स
ब व्यथा फेर ढूंढी नहिं पाई ॥ अथ
पीपलामूल हेड़ कुटकी नागरमोथा किरमाला

कोगिरी येसव वरावर ले कूट ४ माशे का काढ़ाकर पिलावे तो मल ज्वर दूर होय ॥

अथ गर्भवती स्त्री के रोग के लक्षण जतन

॥ प्रश्न स्त्री का दोहा ॥

गर्भवती जो नारहै ताहि सतावे ताप ॥
तिस्के ज्वर को जतन क्या मोहि बतावो आप

कुंडलियां ॥ मोहि बतावो आप औषधी क्यादि दीजै ॥ जिन जतनों से बाल बचे अरु व्याधा छीजै ॥ तुमहो चतुर प्रवीन दीन्ह के पालन हार ॥ गर्भवती का रोग जाय किस विधसे प्यारे ॥

॥ उत्तर वैद्यका दोहा ॥

गौरीसर पष दाष अरु मड़वा चंदन लाल
नेत्रवाल मिसरी धणो और मुलेठी डाल

कुंडलियां ॥ तोल सबन को लेय बराबर खूब उबाले ॥ जब का ढापक जाय पीसकर मिसरी डाले ॥ गर्भवती को देय सात दिन तक यह प्यारी ॥ ताजानूं कहो जाय गर्भ ज्वर की बीमारी ॥

॥ अर्थ ॥

गौरीसर षष दाष मड़वा लाल चंदन धनियां नेत्रबाला मिसरी मुलेठी सबको बराबर ले पीस काढ़ा करै फिर मिसरी डाल गर्भणी को पिलावे

तो ज्वर जाय॥

अथ प्रसूतिका को दशमूलका काढा॥ दोहा॥

अरलु बेलो की गिरी अरणी पाठ कुंभेर॥
गोक्षुर पीपल कंटकी शालपरणि पुनगेर॥

॥अर्थ॥ अरलु बेलगिरी अरणी पाठ कुंभेर गोखरू पीपल दोनों कटेली शाल परणी ये सब बराबर ले कूट काढा कर पिलावे तो प्रसूतका रोग जाय प्रसूतिका ज्वर वाली के अंग फूटनी होय शरीर भारि रहै और गरम रहै शरीर कांपे प्यास बहुत लगै सूजन हो और अतिसार ये लक्षण देख प्रसूतिका ज्वर जाने॥ ॥अथ प्रसूतिका को और जतन॥ अजमोद वंसलोचन खैरसार विजयसार सौंफ धनियां मोचरस ये सब कूट चूर्ण कर २ तोले का काढ़ा कर १० दिन दे तो प्रसूतिका को ज्वर जाय॥

॥अथ बालकों के इलाज लिख्यते॥

॥प्रश्न स्त्री का दोहा॥

बालक के जो रोग हैं ज्वर आदिक बहु भांत
तिनहु के लक्षण जतन सब दिसु नावो नाथ

कुंडलियाँ॥ सबहि सुनावो नाथ बाल ज्वर पीड़ा भारी॥

नापीवेनाखायतिन्हेंफिरक्योंवीमारी।।मिथ्याहारविसरनहीकुकवालकजानै।।तिनकोकैसेरोगदयाकरआपबखानै।। ॥ उत्तरवैद्यकादोहा ॥

यामानायाधायजो गरिष्टभोजनखाय

भांतिभांतिकेरोगतबबालककोहोजाय

कुंडलियां।।बालककोजोहोंयरोगनवयहविधकीजे जिसकापीवेदूधतिसेपथहलकादीजे।।वक्कलहैड़ मुलेठीनागरमोथ्यालावे।।डालपटोलवराबरचारों रकुटवावे।।लेमाशाभरएक क्वाथदिनसातपिलावे बालककोज्वरजायसुजानवखानसुनावे ॥

॥अर्थ॥ हैड़कावक्कल मुलेठी नागरमोथा पटोल इनचारोंकाकाढ़ाकरमाशा१पकायबालककोपीपीसेदेतोज्वरजायवरसदिनतकके बालककेो ६माशेकाढ़ादे सालभरसेज्यादेअवस्थाकाहोतो तोलाभरइसीअंदाजसेज्यादेदेनाजाय ॥

॥ औरजतन ॥

हैड़ अरु पील मुलेठी मडुवा चारोंकोवारीकपिसावशहदसंयुक्तचटावेमाखभरतोबालककाज्वरजाय।। अथबालककोअतिसारसहितज्वरहोय

॥ तिसका इलाज दोहा ॥

नेत्रवाला इंद्र जव धायफूल अतिसार ॥
बेलगिरी धनियां नवल सब सम करिके डार ॥
दो माशे का क्वाथ कर प्रातसमै निज देय ॥
बालक को अतिसार ज्वर निश्चै ये हरलेय ॥

अथ बालक को कृमि ज्वर को लक्षण जतन

दो॰ बर्णो विवर्णो शरीर का शूल पेट में होय ॥
वमन करे दुःखे हिया दूध न पीवे कोय ॥

कुंडलियां ॥ दूध न पीवे कोय उदर मे कीड़े जानो ॥ वायविडंग पलास सहंजने की जड़ आनो ॥ नागरमोथा नीव छाल को कूट सवांरो ॥ नवल पटोल मंगाय देवदारू भी डारो ॥ सब एकत्री मिलाय कूट दो मासे डारै क्वाथ सात दिन देय उदर कृमि नाश सिधारै ॥

॥ अर्थ ॥ बालक का वर्णो विवर्णो होजाय यानि और से और रूप होजाय पेट में दर्द होय हिया दुःखे वा ऋ इ वमन करै भ्रम होय भोजन मे रुच न ही होय अतिसार होय तो ये औषध दीजे पलास पापड़ा नीम की छाल सहंजने की जड़ नागर मोथा देवदार वायविडंग ये सब कूट दो दो मासे का काढ़ा कर दोनों वख

त १ दिन देतो क्रमि ज्वर जाय ॥ + ॥ + ॥ + ॥ ॥

॥ अथ ज्वरकाकुटंबलिख्यते ॥

ये उपद्रव ज्वरके साथमें हो जाते हैं पहले ज्वर होय बाद उसके इन उपद्रवोंमेंसे हो जाते हैं सो ज्वर का कुटुंव है ॥ ॥ कवित्त ॥

कोटी पत्नी प्यास भूष नायकी है बड़ी नारी स्वांस कास पुत्र दोऊ ताके बलवान हैं ॥ हिचकी भवन दोउ पुत्रियां सुघर वाकी जाको लगे जावि ताके हरन आसान है ॥ अतीसार भाई और अरुचि बह नराक दोनो ये सहाय देत अन्नजामें प्रान हैं ॥ ससुर अफारा जानो बंद कोष्ट भानजा है मूर्छा है वांदी ताने भनत सुजान है ॥ ॥ अर्थ ॥ ज्वरके भूष और प्यास दो स्त्री है ॥ षांसी और स्वांस दोनो पुत्र है ॥ हिचकी और वमन दो पुत्री है ॥ और इसका दूसरा भाई अतिसार है ॥ अरुचि ज्वर की बहन है ॥ अफारा ज्वरका सुसरा है ॥ और बंध कोष्ट भानजा है ॥ जब ज्वर और अतीसार दोनो भाई इकठे होंय बहुत उपद्रव करते हैं ॥

॥ तिनका जतन लिख्यते दोहा ॥

नवल अतीस मंगाइये और कुड़ाकी छाल
सोंठ गिलोय चिरायता नागर मोथा बाल

कुंडलियां ॥ नागरमोथा बाल बराबर सबै मिलावै ॥ माशे चार पकाय काथ दिन सात पिलावै ॥ दोनों वखत येकाथ देय बिन नागा धारी ॥ होय प्रसन्न सुजान नाश अतिसार विसारी ॥ ॥ अर्थ ॥

अतीस कुड़ेकी छाल सोंठ गिलोय चिरायता नागर मोथा ये सब बराबर लाय ४ माशे का काढ़ा कर ७ दिन पिलावै तो अतिसार जाय ॥

॥ और ज्वर तथा कुंडलिया ॥

नागरमोथा सोंठ इंद्रजव चित्रक प्यारी ॥ चव्य पीपलामूल कुड़ाकी छाल विचारी ॥ छोटी पीपल बेल गिरी सम औषधि सारी ॥ टंक २ का काथ दीजिये कन्त दुलारी ॥ स्वांस कांस अरु प्यास शुष्क मुख हिचकी जावै ॥ ज्वरपल्लीपितु सहित फेर ढूंढा नहिं पावै ॥

॥ अर्थ ॥ नागरमोथा सोंठ इंद्रजव चीता चव्य पीपल पीपलामूल कुड़ेकी छाल बेल गिरी येसब बराबर ले ४ माशे का काढ़ा कर दोनों वक्त दे ७ दिन तक तो खांसी स्वांस तिस मुखकी शुष्की हिचकी अफा

दूर होय॥ अथ ज्वरमें अत्यंत प्यासका जतन

॥ रोड़ा छंद ॥

नागरमोथा पीतपापड़ा धनियां कूट छनावे
टंक २ का काढ़ा करके तीन दिवस लों प्यावे
प्यास दाह अतिसार सहित ज्वर ठंढा कर दिखलावे
परमानंद सुजान काथ यह लष २ ग्रंथ बनावे

॥ और जतन रोला छंद ॥

कमलगटा अरु बड़का अंकुर पील धान ये तीनो॥ लो
लवण वर पीस शहद में गोली बांधन वीनो॥ जोयह गोली
मुखमें राखे प्यास दूर होजावे॥ परमानंद सुजान गोलि
का लष २ ग्रंथ बनावे॥

अथ ज्वरमें खांसी का जतन लिख्यते

॥ चौपाई ॥

पीपल भाडंगी अमलवेली॥ सोंठ पीपलामूल कटेली
नयेबहेड़े और अडूसा॥ सब सम कूट कीजिये भूसा
षैरसार कुलीजन डारे॥ टंक एक भर काथ उतारे॥
तीन दिवस लों जो यह पीवे॥ षांसीज पुरवी होजीवे

॥ अर्थ॥ पीपल भाडंगी सोंठ पीपलामूल
कटेली बहेड़े का बकल अडूसा षैरसार कुलीजन

येसबबराबरलेकूटकाथ ४ माशेका कर ३ दिनपिलावै तौ ज्वरकी षांसीजाय ॥

॥ अथज्वरमेंस्वासकाजतनलि० ॥

दोहाछंद

पीपलमिरचसोंठभाडंगीपोहकरमूललहलीजे ॥
कठीकाकड़ासींगीसग्रममोथासबसमकीजे ॥
टंक २ भरकाढ़ाकरके सात दिवसलौं प्यावै ॥
ज्वरमैं स्वास सुजानवषाने तुरत दूर होजावै ॥

॥ अर्थ ॥ पीपल मिरच सोठ भाडंगी पोहकर मूल काकड़ासींगी मोथा येसब बराबर ले ४ माशेका काढ़ाकरके ७ दिन तक दे तो ज्वर को स्वासदूर होय ॥ अथज्वरमेंहिचकीकाजतन

॥ सोरठा ॥

सेंधानमकमंगाय पीस इलासकराइये
छिनमें हिचकी जाय सूंघे दोएक बारजो

अथज्वरमेंवमनकाजतन ॥ सोरठा

लेके टंक गिलोय कूट काथ करलीजिये
तामें शहद मिलाय वमन होय तो दीजिये

॥ औरजतन चौपाई ॥

प्रथमहि छोटी पीपल लावे॥धानषील समभाग मिलावे
पीस शहदमें डाल चटावे ॥ ज्वरकी छर्दि दूरहो जावे
॥अर्थ॥ पीपल धानकीषील दोनोकोपीसशह
दके साथ चटावे तो छर्द्द दूरहोय ॥

अथ ज्वरमें मूर्छाका जतन ॥ चौपाई ॥

किरमालाकी मींग सुवाल॥पीतपापड़ा रूड़की छाल
चौथा दाष सबै सम कीजे ॥टंक२ काढ़ा कर दीजे
ज्वरकी मूर्छा निश्चय जावे॥वैद्यक देरवसुजानबतावे
॥अर्थ॥ किरमालाकीगिरी पित्तपापड़ा रूड़
काबक्कल दाष येसबबराबर डाल ४ मासेका
काढ़ा करके पिलावे तो मूर्छा जाय ॥

अथ ज्वरमें बंधकोष्ट और अफारेका जतन
॥दोहा॥

साबनकी बाती करे धरे गुदाके मांहि ॥
बंधकोष्ट ज्वर नारि पितु छिनमें दोनो जाहि

अथ ज्वरमें मुखशोष और जीवशेठनलगेति
सका जतन लिख्यते॥ सोरठा ॥
मिश्री और अनार ॥ दोनो जलमें घोलके ॥
करकुल्ले दोचार ॥ मुखकी षुरकी दूर हों॥

अथ ज्वरमे नींद न आवे तिसका जतन

आल्बुषारा १ सेकी भांग ३ १ दोनोको पीस शहद मे मिलाय चटावे तो नींद आवे संग्रहणी जावेभूख लगा वे या अरंडीका तेल और अलसीका तेल इन दोनो को कांसीकी प्यालीमे हथेलीसे घिस अंजन करे तो नींद आवे॥ इति आठों ज्वरके लक्षण जतन संपूर्णम्

अथ अतिसार रोगकी उत्पत्ति लक्षण जतन लिख्यते॥ ॥ प्रश्नस्त्रीका दोहा ॥

तपका आता जो कहा और एक अतिसार
ताके अब वर्णन करो लक्षण जतन प्रकार

कुंडलियां॥ लक्षण जतन प्रकार कहो अतिसार पिया रे॥ इसके रोगी फिरें जगतो दूषित विचारे॥ जो २ भोजन करें उदरमें पचना नाहीं॥ पीरपगोंमे होत रगोंमें रमनहि जाहीं॥

अथ अतिसारकी उत्पत्ति लिख्यते

॥ उत्तर वैद्यका दोहा॥

गरिष्ट भोजन जो करे ठंडी वस्तु जु खाहि
भोजन पै भोजन करे अतीसार कहनाहि

कुंडलियां॥ अतीसार कहनाहि होय पुवन्नि पक खाये

यारो कै मलमूत्र रोके वा भोजन पाये ॥ या जो रूषा भूषे
पथा पतला कर पीवे ॥ बढै उदर जल धातु सुखी होके से
जीवे ॥ अग्निमंद होजाय पवन संग विष्टा आवे ॥
मल उतरे अत्यंत रोग अतिसार कहावे ॥

अर्थ

गरिष्ट भोजन के करने से सीतल वस्तु विशेष खाने से भो
जन के बाद तुरतही भोजन करने से विष आदिके खा
ने से मल के रोकने से चिकनाई ज्यादे खाने से रूषा खाने
से भोजन पतला करके पीने से उदर में जल धातु बढ़
ताहै और जठराग्नि को मंद करताहै बाय के साथ वि
ष्टा आजाताहै और मल बहुत उतरताहै उसे अतिसार
कहतेहैं सो अतिसार छह प्रकार काहै ॥

दोहा

प्रथम बाय पुनि पित्त का तीजा कफ का जान
सन्निपात का सोच का षष्टम आम सुजान

बाय अतिसार १ पित्तातिसार २ कफ अतिसार ३
सन्निपात अतिसार ४ सोच अतिसार ५ आम
अतिसार ६ ॥

अथप्रथम अतिसारकापूर्वरूपलिख्यते॥

॥ दोहा॥

गुदानाभिहियउदरमें पीड़ाहोयसुजान॥
मलरहैफूटनीरुजअतिसारपहिचान॥

कुंडलिया॥ अथेपवनरुकजावपेटमेंहोय अफारा॥ बंधकोष्ठसंगरहैपीड़कोदेनसहारा॥ अन्ननिनकनपचेपेटभारीबनजावै॥ परमानंदसुजानृतिसेअतिसाररवनावै॥ ॥ अथवायके अतिसारकेलक्षण॥

॥ दोहा॥

मलउतरेरुकरुकजिसेशब्दझागअरुश्याम
सेयलनाई दस्तमेंपेड़पिरावेवाय१॥

अथवायके अतिसारकाजतन

कुंडलिया॥ नागरमोथासोंठइंद्रजवलीजेप्यारी॥ बेथाउारअतीसबराबरऔषधसारी॥ नाशैचारकूटकरकाढ़ाछानपिलावै॥ नाशदिवसनौंदेयवायअतिसारनसावै॥ ॥ अर्थ॥

नागरमोथा सोंठ इंद्रजौ अतीस येसब ४ मासेबराबरलेकाढ़ाकरके ३ दिनपिलावेतोवायकाअतिसारजाय॥

अथ पित्त के अतिसार के लक्षण जतन लि॰

कुंडलिया॥ लाल हरद्यो पीत रंग मल में दर्सावे॥
पुनषनल मूर्छा प्यास पसीना पल पल आवै॥ य स मूर्छा
प्यास गुदा पाक पक जावे॥ परमानंद सुजान पित्त अति
सार बतावै॥ ॥ अथ पित्त के अतिसार के जतन॥
कुंडलिया॥ नेत्रबाला बेलगिरि अरु नागरमोथा॥ चौ
थाउ र अतीस सबै सम लै अवलोथा॥ दो दो टंक पकाय
काथ दिन आठ जो प्यावै॥ परमानंद सुजान पित्त अ
तिसार नसावै॥ ॥ अर्थ॥
नेत्रबाला बेलगिरी नागरमोथा अतीस ये बरा
बर लै २ मासे का काढा कर ८ दिन दे तौ पित्त अति
सार जाय॥ ॥ अथ पित्त अतिसार को औ जतन॥
कुंडलिया॥ सुभग अतीस मंगाय सोंठ दूं दूं जव डारै॥
धायउ फूल रसौन समसि सप परल पधारै॥ पीसकपड छन कै
चूर्ण दो टंक बनावै॥ नीका सहद मिलाय सम दिन
खान दीपावै॥ ॥ अर्थ॥
अतीस सोंठ दूदू जव धायके फूल रसौन
ये सब बराबर ले चूर्ण कर २ मासे सहद के साथ और
खाय तो पित्त अतिसार जाय॥

और पित्त अतिसार को रक्त अतिसार भी कहते हैं जो बहुत गरम चीजें षाई जावें तो इनके साथ रुधिर आता है ॥ ॥अथ रक्त अतिसार को जतन ॥

॥ दोहा ॥

॥ छाल कुड़ा की लाइये अरु अनार की छाल
एक टका भर ले दोऊ, काढ़ा कीजे बाल
सोरठा तामे डारि लाय पांच टंक पुन शहत हू
रक्त अतिसार नसाय सात दिवस लों लीजिये

अर्थ ॥ कुड़ा की छाल अनार की छाल दोनों टकाभर ले काढ़ा कर ५ टंक शहत डाल ७ दिन पीवे तो रक्त अतिसार जाय॥ रक्त अतिसार को और जतन

सोरठा ॥ नवल कुड़ा की छाल छिलका लेय अनार के मोथा चंदन लाल पाठ धाय के फूल हू नेत्रबाल अतीस सब औषधि समकर धरो डार षरल में पीस टंक तीन को क्वाथ कर शहत टंक दो डार क्वाथ सात दिन पीजिये जाय रक्त अतिसार मूल दारु को साथ ले॥ अर्थ

कुड़ा की छाल अनार का छिलका मोथा लाल चंदन पाठ धाव के फूल अतीस नेत्रबाला येसब दवा बराबर ले कूट कर

१ मासेकाकाढ़ाकर ७ माशे शहद मिलाय ७ दिन देतोरक्त अतीसार दाह सूल सहितजाय ॥

रक्तातिसार की और जतन चौपाई

चंदन माशे चार जु लावे॥ ताते दूनो शहद मिलावे ॥ दस मासे भर मिसरी डारै॥ चादन हो अतीसार सिधारै आठ दिवस तक कीजिये यह औषधि सम भीन॥ परमा नंद सुजान फिर अतिसार ले जीत॥ अन्य ॥

सफेद चंदन माशे ४ शहद माशे ८ मिसरी माशे १० इन तीनो को बारीक पीस ८ दिन चाटे तोरक्त अतीसार दूर होय॥ और जतन दोहा

अजा दूध संग पीजिये मिसरी माषन मीन
रोगरक्त अतिसार को निश्चै लेवे जीत

अथ गुदापक गइ होय तिसका जतन

॥ दोहा ॥

अजा दूध संग पीजिये मिसरी शहद मिलाय
गुदापकी के रोगको निश्चै देय नसाय

अथ आमातिसार को लक्षण जतन लिख्यते दोहा

मल चिकना गाढ़ा गिरै स्वेत रंग दरसाय ॥
दुर्गंधायुत सरद हो जतर न उदर पिराय

कुंडलिया॥ उतरत्नउदरापिणयदेहभारीहोजावे॥
भोजनमेंरुचनादिकवोफिरक्यावरुखावे॥जिसको
होयहोगन्यारलंघनृकरवाव्यो॥नवीनस्कोपथ
मूंगदालकानीरपिलाव्यो॥

अथश्लेष्मातिसारवालेकोकाढा॥सोरठा॥

सोंठकुडाकीछाल॥कुटकीचव्यअतीसपुनि॥
वेलगिरीतजजाल॥कूटआठवाउरिये॥
लेदोटंकपकाय॥इनसबकेसमभागकरि॥
श्लेष्मातिसारनसाय॥सातदिवसलोंदीजिये॥
॥अर्थ॥ सोंठ कुडाकीछाल कुटकी चव्य
अतीसवेलगिरी तज कूट येसबअोषधवरा
बरले कूटकाढाचमाशेकाकरै ७दिन पिलावेतो
श्लेष्मातिसारजाय॥ ॥औरजतन॥

॥चौपाई॥

पीपलीमिरचस्याहसुनप्यारी॥सोंठअतीसनिमककाली॥
हींगभूनकरतिसमेंडारे॥सबसमानलेचूर्णसंवारे॥

॥दोहा॥

सातदिवसपरियंतलोंप्रतिदिनमाशेचार
जोइसकोफांकैसुघरहोश्लेष्मअतिसार॥

अर्थ ॥ पीपल स्याहमिरच सोंठ अतीस कालानमक धनाहींग येसब बराबर ले चूर्ण करै ७ दिन तक चारमासे रोज फांके तो अजीर्ण अतिसार जाय॥ ॥ अथ सन्निपात के अतिसार को लक्षण ॥

॥ चौपाई ॥

तीनोंमेंसे लक्षण जाके ॥ मोह होय पुन चित भ्रम वाके प्यास अधिक शूलसूल है ॥ भांति २ का रूप जु कहै ॥ मल सूकर का मांस जु जानै ॥ सन्निपात अतिसार बखानै जो वह रोग बालक कै वृद्ध के और स्त्री के होय तो असाध्य जानिये ॥

अथ सन्निपात के अतिसार को जतन

॥ दोहा ॥

पीपल चीता इंद्रजव पाथा पाट सुवाल ॥
बेलगिरी अरु चव्य पुन सोंठ कुड़ा की छाल

कुंडलिया ॥ सोंठ कुड़ा की छाल पीपलामूल विशाल सब सम का दोटंक पकावे क्वाथ सुहाल ॥ दस दिन लौं यह क्वाथ बिना घी जो पीवै ॥ सन्निपात अतिसार जाय वह रोगी जीवै ॥ ॥ अर्थ ॥

पीपल चीता इंद्रजव पाथा पाट बेलगिरी

चव्य सोंठ कुड़ाकी छाल पीपला मूल त्रिायना येसब औषधि बराबर ले कूट ८ माशे का काढ़ाकर १० दिन दे तो सन्निपात का अतिसार जाय ॥

और जतन चौपाई

मोथा जंगी हरड़ नवीली ॥ सोंठ पीससब रंग रंगीली ॥ तोलपुराणागुड़ समलीजे ॥ टंक दोयभर गोली कीजे सोता दिवस जो गोलीषावै ॥ तोत्रिदोष अतिसारसमावे अर्थ ॥ मोथा जंगी हड़ सोंठ ये तीनो बराबर पीस पुराणे गुड़ में मिलाय ८ माशे की गोली बांधे ७ दिन तक एक गोली खाय तो त्रिदोष अतिसार जाय ॥

अथ शोक के अतिसार के लक्षण

सोरठा ॥

उपजनदिखजोसोच पत्नीधनसुतनाशते
करेअग्निकोपोच और बिगाड़े रक्त को

कड़ा ॥ और बिगाड़े रक्त उदर में तेज जु जावै ॥ मलसंग मिलकर रक्त गुदा के द्वारा आवै ॥ ऐसे लक्षण देष शोक अतिसार बतावे ॥ अथ आम अनिल गे भयातिसार कहावै ॥

॥ अथ आमातिसारलक्षण ॥

॥ दोहा ॥

उदर अजीरण अन्नका पुन गरिष्ठ जो षाय ॥
वायपित्तकफ केसहित अन्न कोष्टमें जाय
धातुसमूहविगारके मलको करै विकार ॥
दुरगंधीतिसमें उठे गिरैगुदाके द्वार ॥
एंगसेतपुन चीकना आमसहित मल जाय
डूबे आम जु वारिमे मल जलमें तैराय ॥
लक्षण आमातिसारके कहे सकल समझाय
अब चिततदे सुनलीजिये जतन कहूंसन माय

अथ आमातिसार को जतन

कुंडलिया ॥ नागर मोथा बेलगिरि धनियापुन लीजे ॥ नेत्रवाला सोंठ बराबर सबको कीजे ॥ जौकुट्य करके टंक दोयभर क्वाथ पकावे ॥ सात दिवस जोदेय आम अतिसार नसावे ॥ अर्थ ॥
नागर मोथा बेलगिरी धनिया नेत्रवाला सोंठ ये सब बराबर ले जौकुट करके २ मासे का काढा करके सात दिवस तक देतो आमातिसार जाय तथा रोगको देषके १० दिन या १५ दिन तक देतो अतिसार जाय ॥ यह धान्य पञ्चक है ॥

अथ आमातिसारका और जतन

चौपाई ॥ जंगी हरड़ अतीस नवीली ॥ मोथा सोंठ सुरंग रंगीली ॥ इन्द्र दारु बराबर लीजे ॥ कूट छंक दो का काढा कीजे सात दिवस जो काथ जु प्यावै ॥ आमातिसार दूर होजावै

और जतन चौपाई

सैंधा नमक अतीस सुहागना ॥ जंगी हरड़ हींग बहु भागन ॥ सौंचर नौन मंगाव पियारी ॥ सब को समकर कूट बहु नारि ॥ माशे आठ चूर्ण नित खावै ॥ गरम नीर इक परसि प्यावै ॥ आमातिसार व्याधि यह नासै ॥ परमानंद सुजान प्रकासै

अर्थ ॥ जंगी हरड़ अतीस मोथा सोंठ दारहल्द ये सब बराबर ले जौकुट करके ४ माशे का काढा करे ७ दिन तक पिलावे तो आमातिसार जाय और जतन सैंधा नमक अतीस जंगी हरड़ भुना हींग सौंचर नौन ये सब बराबर ले कूट छानकर ८ माशे जल गरम जल के साथ दे तो आमातिसार जाय ॥

अथ पक्कातिसार को जतन

॥ दोहा ॥

बेल गिरी मोथा नवल और धाय के फूल
इंदर जव पुन आंब की गुठली सब सम तूल

पीसकपड़छनटंक दो भैंस छाछसे षाय
परमानंद सुजानतुन पक्कातिसारनसाय।

अथ बेलगिरी नागरमोथा धायकेफूल इंद्रजव
आंबकी गुठली येसब बराबर ले पीसकपड़छन करे ८
माशे भैंसकी छाछसे लेनो पक्कातिसार जाय ॥

अथ पक्केजातिसारको जतन लिख्यते चौपाई

इंद्रजव अरु नागर मोथा। मांठीकी जड़ औ अवरोथ
पाठ अरु नीम अरु बायबिडंगा। कालीमिरच कूट सबसंग
जौकुटकर दो टंक पकावै। काथ सात दिन लौं यह प्यावै
तो जतिसार रहन न पावै। परमानंद सुजान बतावै

अर्थ इंद्रजव नागरमोथा मांठीकी जड़ पाठ
अरु नीम बायविडंग कालीमिरच येसब औषधि कूट
८ माशेका काढ़ा कर ७ दिन देतो पक्केजातिसार जाय

अथ अतिसारमें छर्दि होय तिसका जतन दोहा
बेलगिरी औ आंबकी गुठली ले दो टंक
कूट काथ कर लीजियै औरि राह तानि एक
काढ़ा। औरि राहन निरांक टंक दो मिसरी डारे ॥
नासम बैल मिलाय काथ दिन सात जु धारे ॥ छूटे
छर्दि अतिसार रोग यह फेरन आवे ॥

परमानंदसुजानग्रंथअनखयलबनावै॥ अर्थ ॥
वेलकीगिरी और आंबकी गुठली इन दोनोंकाकु
काढा ८ माशेका करे ८ माशे शहद और ८ माशे मिस
री मिलायकर सातदिन पीवैतो छर्दि अतिसार जाय

और जतन

मूंग चावलकी खील दोनोंको औटाय शहद मिसरी
मिलाय पीवैतो छर्दि अतिसार जाय॥

अथ वातपित्तकफरुधिरके अतिसारके लक्षणजतनलि

॥ दोहा ॥

मलउतरतपीड़ावहुतसोवातिकअतिसार
जामेंदाह उठै घनी पित्तऽतिसार विचार
कफमलसंगउतरेजिसेसोकफहीकोजान
रुधिरसहितजोमलगिरेलोंहूपीर बखान

अथ चारों अतिसारको जतन दोहा

वेलगिरि कालीमिरच तीजोलोधमिलाव
इनतीनोंकोपीसकै दोपैसेभर खाव ॥
शहद टंकभर डारकै चाटै औषधजोय
अतीसारमोड़ेसहितनासजुरोग सवदोय
अर्थ॥ वेलगिरीकालीमिरचलोध येतीनोबराबर

पीसके टंपैसेभरमें ४ माशे शहद मिलाय चाटे तो
अतिसार मरोडे निवाही जाय तथा धायके फूल पीस
कर दही के साथ षायतो मरोडे निवाहोजाय अथवा कै
थ का रस टंक ५ शहद के साथ पीसे ७ दिन पीवे तो मरोडा
निवाहोजाय ये सब लक्षण और जतन भावप्रकाश
का आशय है॥

अथ आमातिसार को और जतन ॥

हड की छाल बघिक पीस कर ८ माशे शहद में मि
लाय कर षाय तो आमातिसार जाय ॥ अथवा ब
राल टंक २ मिसी टंक १० मिलाय १० दिन षाय
तो पुराना अतिसार भी जातारहै ॥ अथवा बेल
गिरी माशे ८ बकरी के दूध के साथ ७ दिन पीवे
तो रक्तातिसार जाय यह वैद्यविनोद का आशय है

॥ अथ और जतन कहा ॥

पीपल सेंधानोन हींग भुनवाकर और जीरा अज
वाद सोंठ सब समकर चूर्ण दही में कर टंक
दो तिसको पीजे भूष करे अतिसार आम और शूल
दूर कीजे अथवा पीपल सेंधा नमक भुनी हींग जीरा
अजमोद सोंठ ये सब बराबर ले पीस १० माशे भर

लेद स्त्री के मट्ठे में डालकर पीवै तो सूल लगे होव अब्दै
होय अतिसार आमसूल वा होय यह मूंद का
आयाय है ॥ ॥ और जतन ॥
सोंठ बारीक पीस जल में सोना बना वे गोला के अरंड
के पत्तों में लपेट ऊपर से सूत लपेट कर कपड़ौटी कर
मंद २ आंच में पकावै जब ठंडा होय कपड़ौटी सूत
पत्तों से सोंठ निकाल कर माशे ८ शहत के साथ ७ दिन
खावे तो अतिसार जाय ॥ और जतन
अफीम माशा १ हींगलू मा० २ लौंग मासे ४ मोचरस
मासे ३ मिसरी इन सब को बारीक पीस रत्ती एक के व
नक साठी चावल के पानी में वा छाछ में दे तो भयंकर
अतिसार भी जाय ॥ और जतन दोहा
नागर मोथा मोचरस जोथ अफीम जु आव
बेलगिरी अरु इंद्र जव धाय फूल मंगवाव
चौपाई ॥ सोधा पारा गंधक ल्यावै ॥ सब ये औषध
सम कर लावै ॥ गंधक पारा कजली कीजै ॥ पुन
सब औषधि पीस जु लीजै ॥ दोहा
पुन कजली में डार के रती तीन सु खाय ॥
ऊपर छाछ जो पीजिये अतिसार मिट जाय

जो यह औषधी भइ सदित्तकरि दिन प्रतिखाय सुजान
संग्रहणी ऐसी हतदिन दिन घटती जाय

अर्थ ॥ नागरमोथा मोचरस लोध अफीम बेल कीगिरी इंद्रजव धायके फूल सोधापारा सोधी गंधक येसब औषधि बराबर ले प्रथम पारे गंधककी कज्जली कर फिर और सब औषधि बारीक पीसकर मिलावै १ रत्ती छाछ के साथ १० दिन खाय तो अतिसार और संग्रहणी जाय यह गंधार रसहै अथवा जायफल छुहारे अफीम ये तीनो बराबर ले पीस कर पान के रसमें रत्ती १ प्रमाणकी गोली बांधे १ गोली छाछ के साथ ७ दिन खाय तो भयंकर अतिसार भी जाय ॥ अतिसार वाले को परहेज

दो० नया अन्न अरु चीकनो भारि वस्तु न खाय
धूप स्वेद मैथुन गरमभोजन करै न न्हाय

॥ इति अतिसार चिकित्सा ॥

अथ संग्रहणी रोग की उत्पत्ति लक्षण जतन लि०

॥ प्रश्न स्त्री का दोहा ॥

लक्षण जतन अतिसार के लिखे सकल उरधार
संग्रहणी के भेद अब कहो सहित विस्तार ॥

कड़ा ॥ मुख कर के बचा मेव संग्रहणी भाषे ॥ पथ्य जतन अरु भेद सुनत कछु मन रापे ॥ बढ़ै जगत में कीर्ति तुम्हारा पुन सब पावें ॥ मिटें उदर के रोग भोग नव मनको भावें ॥ उत्तर वैद्य का दोहा ॥

तुम हो चतुर प्रवीन अति सुंदरि ज्ञान अधार
संग्रहणी के रोग का सुन लीजे बिस्तार ॥

कड़ा ॥ सुन लीजे बिस्तार कहूं सब लछण प्यारी ॥ या कारज के हेत धन्य यह बुद्धि तुम्हारी ॥ संग्रहणी का रोग भया नक नग में भारी ॥ कोर अंग को भंग संग लावे बीमारी ॥ अथ संग्रहणी की उत्पत्ति छंद

प्रथम ही अतिसार ना को कर इलाज सुखावई
पुन कुपथ्य कौ सुपेगी मंद अग्नि होवई
है पुरुष के उदर में छठवी कला इक जानियो
सोइ संग्रहणी कहावै अन्न का अस्थानयो
काउ पक्का अन्न कच्चे को ग्रहण कर लेत है
पक्क को पुन गुदा द्वारा आन बाहर देत है
तिसी का वैद्य संग्रहणी कहै इस रोग को
अग्न को दुर्बल करे नासे सकल सुष भोग को
अथ संग्रहणी मात्र के लक्षण

रोड़ाछंद ॥ कचाअन्न गुदासेनिकलै संग्रहणीपहचानो
कफपित्तवातअरुसन्निपातयेचारभौतिकाजानो ॥ मलपत
लाहोगिरे गुदासे कचडुककेड़ाआवै ॥ गिलोवाकोअ
तिपीड़ासंग्रहणीकहलावै ॥

अथवायुकीसंग्रहणीकीउत्पत्तिसहितलक्षणजाननलि

दो० मिथ्याविहारपुनवायुकवस्तुजुखाय
अतिवलसेमैथुनकरैकुपितवायहोजाय

कुंडलिया ॥ कुपितवायतवहोयकंठमुखसूखनलागै ॥ अ
प्याम अतिलगैविगड़जठराग्नीजाणै ॥ पेड़ूजंघापेटपी
कांधोंमे होवै ॥ दिनदिनदुवलाहोयस्वादजिह्वासेखो
वै ॥ कानदोउगुंजायरुचीभोजनमेंताकी ॥ जबतकअन्नन
मिलै तृप्तिनहि होवैवाकी ॥ घुटनेफूटनलगेदस्तदम
दममें आवै ॥ गोलेकाआकार उदरमें कभू
कनावै ॥ मीठाप्यारालगै और मधुमन मानै ॥
ऐसेलक्षणदेख वायसंग्रहणीजानै ॥

॥ अथसंग्रहणीकाइलाज ॥

॥ चौपाई ॥

नागरमोथासोंठपिपारी ॥ नवल अतीस
गिलोयसवारी ॥

चारौं कूट बराबर कीजे ॥ टंक दोय भर काढा कीजे ॥ पंद्रह दिवस काथ पन दीजै॥ आम बाय संग्रहणी छीजे अर्थ ॥ नागरमोथा सोंठ अतीस गिलोय ये चारौं औषधि बराबर ले जौकुट कर ८ माशे का काढा कर १५ दिन देनो आमसहित संग्रहणी बायु की जाय और भूख बढ़े ॥ बानसंग्रहणी का औरजतन ॥

॥दोहा॥

चीता पीपलसोंठ अरु चव्यपीपलामूल ॥
पंचों का चूरण करो ले प्यारी सम तूल ॥

कड़ा ॥ ले प्यारी सम तूल टंक दो चूरण कीजै॥ तामें छाछ मिलाय दिवस दस लौं पट पीजे ॥ सेवन कीजे छाछ जहांतक होवे प्यारी ॥ संग्रहणी मिटजाय औषधी तीब्र हमारी ॥ ॥ अर्थ ॥

चीता पीपल सोंठ चव्य पीपलामूल ये सब बराबर ले चूरण करे माशे आठ छाछ में डाल पीवे और छाछ का बहुत करके सेवन करे तो बायसंग्रहणी जाय अवश्य करके ॥ ॥ और जतन दोहा ॥

सोधी गंधक टंक दो पारा टंक प्रमाण ॥
दोनों की कजली करी परमानंद सुजान ॥

चौपाई ॥ मासे दसभर सोंठ जु आनै ॥ मासे दस पीपल पुन जानै ॥ काली मिरच टंक दो डार ॥ सेकी भांग जु पैसा चार ॥ पांचों नोन खरल में लावे ॥ दस मासे सब तोल मिलावे ॥ पंच टंक अजमोद पियारी ॥ तासम जीरा कैन दुलारी ॥ पांच टंक पुन हींग जु लावे ॥ इन तीनो को सेक मंगावे ॥ पांच ही टंक सुहागा लीजे ॥ सबको पीस चूर्ण कर दीजे ॥ लै पारे गंधक की कजली ॥ तामें डार वस्तु ये सगली ॥

॥ दोहा ॥

खरल करे दो दिन इसे खूब चूर्ण हो जाय
पुन दो मासे खाय इस संग संग्रहणी में पाय
दूर होय मंदाग्नि सब बावासीर नसाय ॥
संग्रहणी पुन बात की कमी सहित मिट जाय

अर्थ ॥ सोधी गंधक टंक २ पारा टंक १ इन दोनो की कजली करि बाद इसके इसमें ये दवा मिलावे सोंठ मासे १० पीपल मासे १० स्याह मिरच मासे ८ भुनी भांग पैसा ४ भर पांचों नोन मासे १० भुनी अजमोद मासे २० भुना जीरा मासे २० भुना हींग मासे २० सुहागा मासे २० इन सबको पीस कजली में डार २ दिन खरल करे इस

मेमें ४ मासेसे ८ मासेतक गऊकी छाछमें डालकर पीवै तो वायसंग्रहणीमें प्राप्ति अग्निको प्रबल करे और कृमियोंका रोग दूर होय॥ अथपित्तकीसंग्रहणीकी उत्पत्ति और लक्षण लि०

दो० मिरचखटाई अति घनी गरम वस्तु जो खाय
तिगउपित्तनतबजानहै देत अग्नि बुझाय
कच्चामल उतरेतिससे पतला पीला जान
हियेकंठमें दाहहो अरुचि तरिस सुजान
प्यासलगे अतिशय घनी खट्टी उठें डकार
पित्तसंग्रहणी जानिये ताके सकल विकार

अथपित्तकी संग्रहणीको जतन

दोहा

इन्दरजव नज धायके फूल रसौत अनीस
इन पांचौंको लायके तोल बराबर पीस॥
टंक दोय गौ का छुवा चावल जल लेलाय
पंद्रह दिनसेवन करै संग्रहणी मिटजाय

अर्थ॥ इंद्रजव नज धायके फूल रसौत अनीस ये सब बराबर पीस गौकी छाछ या शहद या चावलोंके पानीमें २ माशे डालकर पीवै तो पित्तकी संग्रहणी जाय

पित्तसंग्रहणीको और जतन

दोहा

पत्रज नागर इलायची पीपल वाय विडंग

चंदन सैंधव जायफल काली मिरच लवंग

कड़ा ॥ काली मिरच लवंग सोंठ जीरा प्रिय प्यारी ॥

लोचन वंसक पूर भीम सेनी सुखकारी ॥ ये सब स

म कर तोल बराबर मिसरी लीजो कूट कपड़ छान करै

चार मासे नित दीजे ॥ बारह दिन लों गौ का छ से

दीजे प्यारी ॥ ना जानूं कहां जाय पित्त संग्रहणी भारी ॥

अर्थ

पत्रज नगर इलायची पीपल वाय विडंग सफेद

चंदन जायफल काली मिरच लौंग सोंठ जीरा

वंसलोचन भीम सेनी कपूर। ये सब बराबर ले

इन सबसे दोगुनी मिसरी मिलाय। महीन पी

स चूर्ण करै या सब औषधिन के बराबर मिसरी

डालतो इसी के तुल्य धुली हुई भांग पीस के मि

लावे ये चूर्ण ४ मासे से ६ मासे तक गौ की छाछ

से १२ दिन तक खाय तो पित्त की संग्रहणी जड़ी

नरहै ॥

इति पित्त संग्रहणी चिकित्सा ॥

अथ कफकी संग्रहणी की उत्पत्ती लक्षणलिख्यते

॥ दोहा ॥

अनिचिकनाभारीअतिठंडीवस्तुजुषाय
भोजनपाके दूखहो दूना अनपचजाय

कड़ा॥ दोनो अन पच जायहियादुखना वन लावे॥ अरु चीपीनष ऊर्ध्द पेट भारीवन लावे॥ मीठी चलैउका रवहै खांसी अतिभारी॥ श्वामसहित होदस्त लगैनहि नारीप्यारी ॥निरबलरहै शरीर पुष्ट सादेन दिखाई॥ संग्रहणी कफ़ जानदेष वैद्यक वनलाई ॥

॥ अथकफ़कीसंग्रहणीकेजतन ॥

चौपाई ॥ चीनापीपल मिरचंकारी॥ हरडकी छाल सोंठ पिय पियारी॥संचर नौन मिलाय जुदीजे॥ सबसम तोल चूर्णकर लीजे॥माशे आठ छाछसंग फांके ॥ कफ़ संग्रहणी फेरन झांके॥पंद्रह दिन यह चूर्णषावे॥ लष लषग्रंथसुजानवतावे॥ अर्थ ॥

चीना पीपल स्याह मिरच हेडकी छाल सोंठ संचरनौन येसब बराबरले चूर्ण कर माशे८ छाछ केसाथ १५ दिन पीबे तो कफ़ संग्रह णी जाय ॥

॥ अथ सन्निपातकी संग्रहणीके लक्षण

दोहा

मिले वात कफ पित्तके लक्षण जामें जान ॥
सन्निपात संग्रहणीका ताहि वखान सुजान

॥ अथ सन्निपातकी संग्रहणीके जतन

दोहा

नागर मोथा इंद्र जव और कुडाकी छाल
बेलगिरी अरु मोचरस पष्टनने त्तर वाल
सबै बराबर तोलके चूरण लेय पिसाय
अजा दूध संग टंक दो पच्चिसदिन लोंखाय
सन्निपात संग्रहणि का करै चूर्णयह नाश
ज्यों तारा गण छिपे जब दिनकर होयप्रकाश

अर्थ ॥ नागर मोथा इंद्र जव कुडाकी छाल बेलगिरी मोचरस नेत्रबाला ये सब औषधी बराबर ले कूट चूर्ण करै ८ मासे चूर्ण बकरीके दूधके साथ २५ दिन तक खाय तो सन्निपातकी संग्रहणी ऐसे जाय जैसे सूर्य के उदय होतेही तारागण छिप जाते है ॥

अथ प्रमेह रोग के नाम लक्षण उत्प
त्ति और जतन लिख्यते

प्रश्नकीका दोहा ॥

लक्षण जतन प्रमेह के मोसे कहो विचार
यह दुख व्यापत जगत में करत सबन को ख्वार

कुं० ॥ करत सबन को ख्वार रोग यह है दुखदाई ॥
देखत ही खनदेह काष्ट सम घुन लग जाई ॥ कहीं
दर्द नहिं होय देह निर्बल हो जावे घटे आयु बल
बुद्धि हजीयें रोग उपावै ॥

उत्तर वैद्यका दोहा

प्यारी नें सांची कही है यह अद्भुत रोग
लाखों नो जानें नहीं किये जांय सब भोग

कुं० ॥ किये जांय सब भोग रोग अति बढ़ता जावे ॥ व्याध
उठे अनेक वात पित कफ अति आवे ॥ बीस भेद जो कहे
कहूं सुन तुरूस प्यारी ॥ तिनके लक्षण जतन औषधी सुन
सब न्यारी ॥ अथ बीसों प्रमेह के नाम ॥

उदक बृष्टी सिकता कहा सांद्र सुरा अरु शीत
पिष्ट शुक्र पुन लाल शन ये दश कफ के मीत

कुं० ॥ क्षार हरिद्रा नील काक पुन रक्त बखानो ॥ छठाम
जिष्ट प्रमेह पित्त के ये छै जानो ॥ बसा क्षुद्र अरु म
धु अरु बसा सनावै ॥ चार असाध्य प्रमेह वायु के सु

अर्थ

उदकप्रमेह १ इक्षुप्रमेह २ सिकताप्रमेह ३ सान्द्रप्रमेह ४ सुराप्रमेह ५ शीतप्रमेह ६ पिष्टप्रमेह ७ शुक्रप्रमेह ८ लालप्रमेह ९ शनैःप्रमेह १० येदसों प्रमेह कफकेहैं क्षारप्र० १ हरिद्रा प्र० २ नीलप्रमेह ३ कालप्र० ४ रक्तप्र० ५ मंजिष्ठप्र० ६ येछहपित्तकेहैं ॥ वसाप्रमेह १ क्षौद्रप्रमेह २ नीलप्र० ३ और वसाप्रमेह ४ ॥ येचारों वायुके प्रमेह असाध्यहैं ये बीसों प्रमेह वाग्भट्ट सुश्रुत और भावप्रकाशके मतसेहैं और अत्रेयजीने छ और वर्णन करेहैं सोयेहैं तक्रप्रमेह १ पूयप्र० २ पीडिकाप्र० ३ शर्कराप्र० ४ धूलप्र० ५ आनिमूत्रप्र० ६ अथ कफके दशप्रमेहोंके लक्षण क्रमपूर्वक लिख्यते ॥ १ अथ उदकप्रमेहके लक्षण दोहा ॥

मूतनिर्मलबहुतसा स्वेतगंधबिन जान
चिकनाईहो मूत्रमें उदकप्रमेह बषान

२ अथ सान्द्रप्रमेहको लक्षण ॥

दोहा बासीपानी जिमभरा बर्तनमें गढ थाय ॥
ऐसा मूतै पुरषजो सान्द्र प्रमेह कहाय ॥

३ अथ सुराप्रमेहको लक्षण लिख्यते ॥

दोहा दारूकीसीबासहो नीचेका गढथाय ॥
ऊपरानिर्मलमूत्रहो सुराप्रमेह कहाय ॥

४ अथ पिष्टप्रमेहको लक्षण लि० ॥

दोहा चावलका सामाडहो रोमखडेहोजाय ॥
लघुशंकामें पीड़हो पिष्ट प्रमेहकहाय ॥

५ अथ शुक्र प्रमेह को लक्षण दोहा ॥

वीर्य सरीखा मूत्र हो तथा वीर्ययुत होय

शुक्र प्रमेह सुजान यह कहै वैद्य सब कोय

६ अथ सिकता प्रमेह को लक्षण दोहा

वालुकण सम मूत्र में अथवा कफ युत होय

सिकता प्रमेह सुजान ये वैद्य बतावे सोय ॥

७ अथ शीत प्रमेह को लक्षण ॥ दोहा ॥

मूते बारंबार जो अति ही शीतल जान

परमानंद सुजान सो शीत प्रमेह बखान

८-१० अथ शनै और लाला और इक्षु प्रमेह के लक्षन

चौपाई ॥ शनै शनै जो मूते कोई शनै प्रमेह कहावे सोई

लाल सरीखा मूत्र जो होय लाल प्रमेह कहै सब कोय

इक्षुरस सा मूत्र जु आवे सोई इक्षु प्रमेह कहावे ॥ इति

कफ के प्रमेहों के लक्षण समाप्तम् ॥

अथ पित्त के छह प्रमेहों के लक्षण लिख्यते

१ तिन में प्रथम क्षार प्रमेह के लक्षण लिखते हैं ॥

चौपाई ॥ खारी गंध मूत्र में आवे क्षार सरीखा मूत्र लखावे

सोई क्षार प्रमेह कहावे पुस्तक देख सुजान बतावे

२ अथ नील प्रमेह के लक्षण लिख्यते

चौपाई ॥ नीला रंग मूत्र में आवे सोई नील प्रमेह कहावे

३ अथ काल प्रमेह को लक्षण लि०

चौपाई ॥ काला रंग मूत्र का होई काल प्रमेह कहै सब कोई

४ अथ हरिद्रा प्रमेह को लक्षण लि०

चौपाई पीला रंग मूत्र दरसावे तामें कड़वी गंध जु आवे
गिरे दाहिनी ओर जु जाके मेह हरिद्रा निश्चे ताके ॥
५ अथ मंजिष्ठ प्रमेह के लक्षण
दो॰ रंग मजीठी मूत का अरु आवे दुर्गंध
सो मंजिष्ठ प्रमेह तुम जानो परमानंद
६ अथ रक्त प्रमेह के लक्षण लि॰
दो॰ लोहू सा जो मूत्र हो बहुत बुरी हो बास
खारी हो अरु गर्म हो रक्त प्रमेह प्रकास
इति पित्त के प्रमेहों के ६ लक्षण समाप्तम् ॥
अथ वायु के चारों प्रमेहों के लक्षण लिख्यते
चौपाई ताजा मांस रंग जो होई वसा प्रमेह कहै सब
कोई ॥ मज्जा मूत्र साथ जो आवे अरु मज्जा सा रंग द
साव ॥ शंका बार बार पुन जावे सोई मज्जा मेह कहावे
सहत सरीखा मीठा होई अथवा लखक खाय लसोई
जिसको लघु शंका इम आवे ताको क्षुद्र प्रमेह बतावे
दो॰ बहुत दिनों का मेह हो करे जतन कछु नाहि कर
ता है कुपथ्य सब मधु प्रमेह कहाय ॥ यह मधु
प्रमेह असाध्य है ॥ अथ कफ के प्रमेह का
उपद्रव लिख्यते दोहा
अन्न पचे नाहिं पेट में भोजन में रुचि नाहि
पीनस खांसी और दिहो नीद सतावे नाहि
इति कफ के प्रमेह के उपद्रव ॥ अथ वायु के प्रमेह
के उपद्रव लिख्यते ॥ दोहा ॥

दोहा आवे नीद न नयनमें रहै हियेमें पीर ॥
उदावर्तरोगपाइये कांपे सकलशरीर ॥ कुं०
कांपे सकल शरीर पेटमें रोग बतावे ॥ खांसी सूजन होय सकलरस मन को भावे ॥ वायु मेह के कहे उपद्रव सबये प्यारी ॥ करजतन जो वेग जायनि श्चैवमारी ॥ अथप्रमेहको असाध्यलक्षणलि०

जिस मनुष्य के कफ के उपद्रव होंय और तभी वायु के भी हो जावें सो असाध्य है ॥

अथ आत्रेयजी के मत के ६ प्रमेहों के नाम लक्षण लिख्यते ॥ पूपप्रमेह १ तक्र प्रमेह २ पिंडिकाप्र० ३ शर्करा प्रमेह ४ घृतप्रमेह ५ अतिमूत्रप्रमेह ६ ॥

चौपाई ॥ पीव सरीखा मूत्र जो आवे ताको पूपप्रमेह बतावे छाछसमान मूत्र जो जाने ताको तक्र प्रमेह बषाने बीज फटक लंघी संग वैहै ताको मेह पिंडिका कैहै। खांड सरीखा मूत्र मिठावे मेह शर्करा नाहि बतावे। घीवसरीखावर्ण जो होई घिरत प्रमेह कहै सब कोई। रातदिवसबहुमूत्रजो आवे। सर्व अंग निर्बल होजावे। सो अतिमूत्र प्रमेह कहावे। परमानंद सुजान बतावे ॥

अथ प्रमेहरोग के जतन लिख्यते

प्रथम प्रमेहवाले को येनाज खाने को देना चाहिये

दो० चावल गेहूं जो चणा साठी मोठ कलत्थ
मूंग हरड दादाल ये होय पुराने पथ्य ॥

दोहा॥ तेल दही घी दूध गुड़ खाके हिरन को मास
दारू खटी वस्तु सब करे प्रमेह प्रकास ॥
अथ कफ के दसौं प्रमेह वालों को काथ जुदा जुदा
दोहा- नागरमोथा कायफल लोध हरड़ की छाल
तोल बराबर लेय सब जौकुट कीजे वाल
पांच टंक का क्वाथ कर शहत मेल कर देय
परमानंद सुजान यह कफ प्रमेह हर लेय
और जतन ॥ छंद ॥
लोध प्रस कहु वा बकल अरु लाल चंदन डारिये
सब बराबर तोल प्यारी पांच टंक उवारिये ॥
क्वाथ जब पक जाय ता में शहत डार जु पीजिये
पित्त का परमेह परमानंद दिन दिन छीजिये॥
दोहा॰ साल कदम धव वृक्ष की बकली चंदन लाल
चारों जौकुट कीजिये दीजे क्वाथ उबाल ॥
ठंडा करके दीजिये प्यारी क्वाथ बनाय॥
परमानंद सुजान ये उदक प्रमेह नसाय॥
अथ खार प्रमेह को जतन दो॰
मृगनैयनी कटि केहरी सुंदर ता की खानि
ऐसी नारी संग में खार मेह की हानि ॥
अर्थ॥ सुंदर स्त्री से भोग करे तो खार प्रमेह जाय ये
अमृतसागर के १९८ सफे में है॥
अथ रक्त प्रमेह को जतन ॥ चौपाई ॥
दाष मुलैठी चंदन लाल पीवे बासी जल में डाल

निम्बरत्त प्रमेहनसावे वैद्यक देख सुजान बनावे

अथ तक्र प्रमेह और पीडिका को जतन

दोहा- चंदनखस अरु आंवला लोधनींबकेपत्र
कहवा बक्कल रालके कारो सबै एकत्र॥
काढा करकेपीजिये नामगुड़ ले डाल ॥
तक्रमेह अरुपीडिका दोनो नासे हाल॥

अथ शुक्र प्रमेह को जतन दोहा ॥
दाख्योनीमजीव पुन सालबकललेआव
दूब मूर्वा दाभकी कासकी जड़ लाव॥
इनसबको काढा करे छानेदेय पिलाय॥
शुक्रमेह अरु रुधिरहू दोनोकी जड़जाय॥

अथ घृतप्रमेहको जतन॥

दोहा- नवलबहेड़ा आवला और हैड़ की छाल
किरमालाकी मीगजड़ पत्र सहजना डाल

कढ़ा- पत्ते नींबअरु बकल खैरके ले काढीजे। दाख शुनक्का और मूर्वा सब सम कीजे। काढा करके देय मेह घृतका मिट जावे। परमानंद सुजान वैद्य यह जतन बनावे॥ अथ इक्षु प्रमेह का जतन ॥

पीतपापड़ा कुट की कूट इनका काढा कर मिसरी मिलाय पीवे तो इक्षुप्रमेह जाय॥ या अरंड कीजड़ धमासो अरलू छाला कीजड़ इनका काढा देतो इक्षु प्रमेह जाय॥ अथ पित्तके प्रमेह का जतन ॥

दोहा इन्द्र जव धवकी बकल मूलकमलकी डाल

कहवा वकल आवला पुन इमली की छाल
इन सबका काढा करि मिसरी लेय मिलाय
जो यह पीवे नियम कर पित्तप्रमेह नसाय॥

अथ कफके प्रमेह का जतन॥ दोहा॥

विजयसार कहवा वकल लोधकदम की छाल
वायविड़ंग अरु कायफल दे कफमेह निकाल

अर्थ विजयसार। कहवाकी वकल लोध कदंवका वकल वायविड़ंग कायफल इनका काढा देतो कफ प्रमेह जाय॥ अथ सम्पूर्ण प्रमेहोंका जतन और यह मूत्रस्थान को भी साफ करै है-

कलहारी हैड़ की छाल हलदी कहवा का वकल ये बारीक पीस सबकी बराबर मिसरी मिलाय टंक ५ शहत के साथ चाटै तो सर्व प्रकार का प्रमेह जाय॥

अथ मधुप्रमेह को जतन दोहा

वड़ किरमाला आमला अरु पीपल चार॥
इन पाचौं की मूल का वकल लेय उतार॥
चारोली के वृक्ष की वकल छवीबाल॥
नवल मुलेठी लीजिये और नीम की छाल
पटोल वरणाकी वकल सेठा सींगी सोंठ॥
दारचूणी काली मिरच चीता नवल अनोठ

कड़- चीता नवल अनोठ इंद्रजव पत्रज प्यारी॥ कमल चकी जड़ वालानिरफला चंद्र उजारी॥ नजड़ आपची सुधा मिलावा सब सम कीजे॥ पीस सहत के साथ आठ

माशेनित्तलीजे ॥ मधुप्रमेहकीमूलदेहसेदेयनसा
ई ॥ परमानंदसुजानयुक्तिमेरेमनभाई ॥ अथ ॥
वड़कीजड़कावकल खिरमालाकीजड़कावकल अरलू
कीजड़कावकल आंवलेकीजड़कावकल पीपलकीज
ड़कावकल चारोलीकेवृक्षकावकल मुलेठी नीमकी
छाल परोलवणीकावकल दन्ती सेठा सींगीचि
त्रक कसागचकीजड़ इंद्रजव त्रिफला सुधाभिला
वा सोठ कालीमिरच तजपत्रज इलायची येसव
वरावर ले वारीक पीस कपड़छनकर आठमाशे श
हतमें मिलाय रोजचाटेतो मधुप्रमेहजाय याइन्ही
सव औषधोंका काढा कर पीवेतो मधुप्रमेहजाय
या इन सबकातेल तथा घृत निकासले औरमर्दन
करेतो मधुप्रमेहजाय ॥ इतिन्यग्रोधाद्यचूर्णम् ॥
औरजतन ॥ सोधीसोनामाखी पाखाणभेद
सेंधा शिलाजीत चंदन कपूर पीपल वंसलोचन
येसववरावरले पीस कपड़छनकर माशे १०
भर ३। तोलेशहतमें मिलाके गौकेदूधकेसाथ
रोजपीवेतो मधुप्रमेह और मूत्रा
वध दूरहोय ये आत्रेयके
लिखेहुवे इलाजहैं

अथ सर्व प्रमेहों का चंद्रप्रभा गुटिका लिख्यते

छन्द

वचकचूर अतीस हलदी दारुहलदी वचलड़ा
देवदारु चिरायता वच मूलपीपल तिरफला
नगर मोथा खार ओका नागपीपल सुन्दरी
नोन संचर नोन सांभर नोन सेंधा गुन भरी
धनिक चीता चव्य सबौ तोल सब सम लीजिये
तोल चारएक टंक भर पुनि पीस चूर्ण कीजिये
सार माशे बीस मिसरी आठ माशे डारिये
शिला जीत सुधा हुवा भर टका चार पधारिये
तादि सम गूगल सुधा सब जुदी पीस कनाइये
पुनि सबै एकत्र करके चूर्ण नीक बनाइये
टकाभर पारा सुधी गंधक टका भर लावरी
टकाभर अभ्रक पिसा सब चूर्ण माहिं मिलावरी
चार माशे चूर्ण ये घृत शहत संगनित खावई
बवा सीर प्रमेह सब अरु कास शूल नसावई
वीर्य के सब दोष चक्षु दन्त रोग निवारई
पांडु रोग अपार मूत्रा घात छिन में टारई
उदर के सब रोग फीलापूत्र कच्छ बचा नये
कोढ़ भी जाता रहे जो खाय नित्य सुजान ये

अर्थ ॥ वचकचूर अतीस हलदी दारुहलदी देवदारु चिरायता पीपलामूल त्रिफला नागरमोथा जवाखार गजपीपल संचरनोन सेंधानोन सांभर धनियां चीता

सज्जीये सब चार २ माशे ले तामेसरे २ मिसरी मासे ८
सुधा शिलाजीत टके ४ भर सुधा गुगल टके ४ भर
इन सब को जुदा २ पीसकर मिलावे पारा टका १ भर
सोधी गंधक टका १ भर अभ्रक टका १ भर इनकी
कजली कर ऊपर लिखी औषधों के चूर्ण में मिलावे
इस में से माशे ४ शहत और घृत मिलाय के नित्य खा-
य तो सब प्रकार का प्रमेह जाय और बवासीर क्षई
बीर्य के दोष नेत्र रोग खासी पांड रोग शूल उदर रोग
फोड़ा मूत्र कृच्छ्र मूत्रा घात और कोढ इन सब रो-
गो को दूर करे ॥ ॥ इति चन्द्र प्रभा गुटिका ॥ ॥

॥ अथ मधु प्रमेह को और जतन चौपाई

टका चार भर त्रिफला प्यारी ॥ ता सम जीरा चंद्र उजारी
ताही के सम धनिया वाल ॥ टके दोय भर चीनी दाल
गज केसर पैसे भर चार ॥ लौंग बराबर इसके डार
तथा लायची छोटी जान ॥ तुष्मरियां के बीज समान
कौंच बीज पुनि चार टका भर ॥ सब को पीस कपड़छन लेकर
घृत मिसरी में सबे सनावे ॥ ताके मोदक नीके बनावे
दोहा ॥ टका एक भर तोल के प्रात समे जो खाय
परमानंद सुजान कह सब प्रमेह नसाय

अर्थ ॥ त्रिफला टके ४ भर जीरा टके ४ भर धनिया टके ४
भर दालचीनी टके २ भर लौंग टके २ भर नागकेसर
टके २ भर तुष्मरिया के बीज टके २ भर कौंच के बीज
टके ४ भर छोटी इलायची टके २ भर इन सब को

बारीक पीस मिसरी घृत मिलाय टका १ भर के लड्डू बना रक्खे नित्य प्रात समय १ लड्डू खाय तो प्रमेह मात्र दूर होय ॥ + ॥ इति प्रमेह हरिण चूर्णम् ॥ * ॥ + ॥ ९ ॥

अथ मधु प्रमेह को और जतन ॥ चौपाई ॥

सोधी गंधक सोधा पारा । कहवा की जड़ मिसरी चारा ।
इन चारन को खइल मधारे । सालर की जड़ को रस डारे ।
पुट दे तीन युक्ति से साधे । मासे भर की गोली बांधे ।
गोली एक रोज जो खावे । मधु प्रमेह को मूल नसावे ।
अथवा लोध टंक इक लेई । पीस शहत संग इसको देई ।
तथा खरेटी क्वाथ बनावै । लोध पीस इसके संग ध्यावै ।

॥ और जतन ॥ सत गिलोय त्रिफला सार ये तीनों माशे ५ शहद के साथ ले तो प्रमेह जाय ॥ अथवा ॥ मिसरी सिंघाड़ा खेल चीनी ये बराबर ले महीन पीस माशे १० भर जल के साथ ले तो पुराना प्रमेह भी जाय ॥ अथवा ॥ बंगेश्वर रत्ती १ शहद के साथ चाटे ऊपर से गूलर पैसे २ भर सेंधे नमक और शहद से खाय तो असाध्य प्रमेह भी जाय ॥ या केवल गूलर पक्के सेंधे निमक से रोज खाय तो असाध्य प्रमेह भी जाय ॥ इति ॥

अथ बंगेश्वर की बिधि लिख्यते - कवित्त ॥

तोले बीस रांग गाल तामे अर्ध पारा डाल गलने में डाल पुनि कूपका बनायले ॥ लेके पुनि कैंची ताको कोटे २ टूक कर रोगन के बीच जार शंकर मनायले ॥ स्वांग शीत हुये पीके राख सब दूर कर ताकी सब खील बड़ी

युक्ति से चुनायले ॥ तोल में जो पूरा होय जानो काम सिद्ध भयो काचे टूक रहैं तिने फिर भी भुनायले ॥ इति ॥

अथ सुपारी पाक लिख्यते ॥ अरिल्ल ॥

नवल सुपारी आठ टका भर आनिये ॥ तिनको कूट महीन बसन में छानिये ॥ गो घृत तीन छटांक तिसी में सानिये ॥ तीन सेर गो दूध में डार सुजान ये ॥ खिलवो मावा होय तबहि उतारिये ॥ सर सर टंक जु तोल दवा ये डारिये ॥ नागर मोथा चन्दन सोंठ लवंग लो ॥ पीपल धनियां काली मिर्चें संग लो ॥ तज पत्रज चारोल सिंघाड़े लीजिये ॥ केसर नाग आंवला सुकोय ल बीजये ॥ जीरा स्याह सफेद लायची जाय फल ॥ पीस कपड़ छन करो दवा ये सब ॥ नवल मिसरी बीस छटांक तिसी में दीजिये ॥ दो तोले परमाण गोलिका कीजिये ॥ एक सबेरे सांज एक पुन खाइये ॥ बवासीर मंदाग्नि प्रमेह नसाइये ॥ शुक्र दोष अरु प्रदर जीर्ण ज्वर नाशैहैं ॥ अंग होय सब पुष्ट सुपरमानंद कहै ॥

अर्थ ॥ दक्षिणी सुपारी टके भर पीस कर कपड़छन कर गौके घीमें साने फिर तीन सेर गौके दूधमें मिला के मावा खिलवां करे उसमें सेरसवा १ मिसरी और आगे लिखी दवा और मिलावे नागकेसर टंक ५ नागरमोथा टंक ५ चन्दन टंक ५ सोंठ टंक ५ स्याहमिरच टंक ५ पीपल टंक ५ इलायची टंक ५ लौंग टंक ५

आंवला टंक ५ कोयल बीज टंक ५ तज टंक ५ पत्रज
टंक ५ चारोल टंक ५ धनियां टंक ५ जायफल टंक ५ दोनों
जीरे टंक १० सिंघाड़ा टंक ५ बंसलोचन टंक ५ येसब औ
षधी मिलाके दो तोले प्रमाण गोली बांधे १ प्रात समय
और १ स्याम को खाय तो प्रमेह मंदाग्नि जीर्णज्वर अ
श्लित शुक्र के सब दोष और बवासीर प्रदर येसब रोग दूर
होंय और देह पुष्ट होय ॥ ॥ इति सुपारीपाक समाप्तम् ॥

अथ गोखरू पाक लिख्यते दोहा॥

गोक्षुर आधा सेर ले कूट महीन बनाव
एक सेर गो घिरत में ताको खूब सनाव

॥कुंडलिया॥ ताको खूब सनाव दूध गो का पुनि डारे॥
पांच सेर हो दूध आंच पर धरकर जारे॥ जब मावा पक
जाय भूनकर खूब खिलावे॥ अब जो औषधि लिखूं
पीसकर तिन्हें मिलावे॥ १॥ छन्द ॥ १ ॥

बेल गिरि कूट मिरच काली दाल चीनी जायफल
ताल मखाना अंबची अहिफेन डळ दोलो नवल
भीम सेनि कपूर पत्रज माशे दस दस लीजिये
इन सबन सेतोल आधी भंग शामिल कीजिये
बारसेर समाय मिसरी चाशनी कर सुन्दरी
डाल मावा सहित औषधि बांध गोली गुन भरी
पांचटंक प्रमाण औषधि नित्यप्रति ले खाइये
दूर होंय प्रमेह बीसो बीजदोष नसाइये ॥

अर्थ॥ आधसेर गोखरू महीन पीसके सेर १ गो घृत में

सानि इसे ५ सेर गौ के दूध में मिलाकर खिलवा मावा करै इस मावे में ये दवा पीस कर और मिलावे ॥ बेलगिरि टंक २॥ मिरच स्याह टंक २॥ दालचीनी टंक २॥ अफीम टंक २॥ जायफल टंक २॥ तालमखाना टंक २॥ हलदी टंक २॥ भीमसेनी कपूर टंक २॥ पत्रज टंक २॥ इलायची टंक २॥ कूट टंक २॥ समुद्रसोख टंक २॥ इन सबकी तोल से आधी भंग ४ सेर मिसरी की चाशनी कर इन दवाओं सहित मावा मिलाकर ५ टंक प्रमाण गोली बनावे १ गोली रोज खाय तो प्रमेह जाय और बीर्ज स्तम्भ होय ॥ इति गोखरू पाक समाप्तम् ॥ १ ॥ ८ ॥

अथ पंचानन गुटिका-चौपाई ॥

गंधक सोधी नागर मोथा । सोधा पारा लो अरोथा १
सींगी मोहरा त्रिफला चीता । काली मिर्च सोंठ मेरे मीता
गंधक पारा कजली कीजे । तामें मेल औषधी लीजे १
भंगरे के रस की पुट देई १ । डाल खरल में पीस जु लेई
गोली टंक प्रमाण बनावै । प्रात समय नित उठ कर खावै
यह अष्टादश कुष्ट नसावै । औषधि वैद्य रहस्य बतावै

अर्थ ॥ सोधी गंधक सोधा पारा नागरमोथा सींगी मोहरा त्रिफला चीता मिरच स्याह सोंठ ये सब बराबर ले पहिले पारे गंधक की कजली करे फिर ये दवा पीसकर मिलावे भांगरे के रस की पुट देकर खडल करे माशे ५ प्रमाण गोली बांधे १ गोली रोज प्रात समय खाय तो १८ प्रकार का कुष्ट जाय ॥ ये जतन वैद्यरहस्य में लिखा है ॥

अथ प्रमेह घृत का जतन लिख्य० चौपाई

चीता पाठ कुड़ा की छाल । कुटकी हींग भून कर डाल
कूट गिलोय सबै सम आन । सब सम पीस बसन में छान
ढाई टकभी रसंग खाय १ । घृतपरमेह सुजान नसाय

अर्थ॥ चीता पाठ कुडा की छाल कुटकी भुना हींग कूट गिलोय ये सब बराबर ले बारीक पीस १० मासे की फंकी जल से करे तो घृत प्रमेह जाय ॥ इति ॥

अथ मेघनाद रस लि० चौपाई॥

सोधी गंधक मिर्चें काली । त्रिफला सोना माखी आली
हलदी कैथसार अरु सूंठी । गिरीबेल की लेय अनूठी
पारा गन्धक कजली कीजे । तामें ये औषधि सम दीजे
भंगरा रस की पुट इक्कीस । डाल खरल में पुनि सब पीस
टंक एक रोजीना खाय १ । सब परमेह दूर हो जाय

इति मेघनाद रस समा०

अथ प्रमेह कुठार रस लिख्यते ॥ भाषार्थ ॥ १ ॥

इलायची भीमसेनी कपूर जायफल भाड़ंगी गोखरू सालर का बक्कल मोचरस पारा अभ्रक बंग सार ये सब बराबर ले खरल में बारीक पीस १ रत्ती रोज शहद से खाय तो प्रमेह मात्र जाय॥

इति प्रमेह कुठार रस समाप्त

इति श्री पण्डित सुजान सिंह कृते वैद्यक गुटकायां ॥ प्रमेहप्रकर्णो समाप्तम्

अथ वायु प्रकर्ण लि०

अब बात रोग के लक्षण और यतन लिखते हैं ॥

प्रश्न स्त्री का दोहा

कहो कंथ समझाय के जो मुझ पर है प्रीत ॥
बात रोग के रूप सब लक्षण जतन समीत

कुण्डलिया॥ लक्षण जतन समीत बात की घात बतावो ॥
भिन्न भिन्न कर नाम सबन के दोष जतावो॥ तुम हो वैद्य
प्रबीन दीन रक्षक हित कारी ॥ कौन कौन सी बसु बढ़ावे
यह बीमारी ॥ १ ॥ उत्तर वैद्य का दोहा ॥ १ ॥

कड़वी तीखी वस्तु पुनि शीतल भोजन खाय
अति मैथुन औरु खेद से बात रोग हो जाय ॥

कड़ा॥ पवन रोग उपजाय मूत्र मल को जो रोके॥ होय
वीर्य्य अतिक्षीण पवन आवै अरु ओके॥ बर्षाऋतु में
राज्य करे है वाय बिचारी ॥ पहर रात से उठ करे अंग पर
असवारी॥ अंग अंग में होय १ थवा एक अंग सतावै ॥
हैं चौरासी रोग वाय के शास्त्र बतावै ॥

अथ वायु के ८० रोगों के नाम॥ दोहा॥

प्रथम शिरोग्रह दूसरा अल्पु केशि है नाम
तीजे जंबाड़ी घनी पुनि जाड़ी गुदबाम॥
पंचम जीभ हिले नहीं खष्टम रुक २ बात ॥
सप्तम बोलत सहज में पुनि गूंगा हो जात
खोट बोल कहै नवम दसवें करै कुबाद ॥
एका दश में जीभ का जाता रहै सवाद ॥

[illegible] जानिये तेरह कान गुंगाय
चौदह [illegible] स्पर्श को सकल त्वचा से जाय
पंद्रह आर्दित रोग है सोलै मुड़े न कन्ध
सत्रह सूखै सब भुजा पुनि कर मुड़ना बन्द
उन्निस चर्वित रोग है विश्वाची है बीस ॥
इक्किस बहुत डकार है आफारो बाईस ॥
तेइस है प्रत्यापरुज अष्टीला चौबीस
प्रत्यष्टीला रोग पुनि तूनी है छह बीस
सप्त बिंश प्रति तूनिका अपिंबिषम अठबीस
उनतिस है आटोप रुज दुखपस वाड़ा तीस
शूल पेट इकतीसवां बहुत मूत्र बत्तीस
रुके मूत्र तेंतीस में मल गाढ़ा चौंतीस
पैंतिस मल उतरै नहीं गृध्रू रोग छह तीस
कलाप खंजन रोग पुनि खोड़ापन अठतीस
उन्तालिस पगलापना कोष्टुशीर्ष का गोड़
इकतालिस खल्ली कहा बातकंठ का जोड़
पग सूजन ४३ पग वो कौ ४५ पुनि अक्षेपक खान ४६
बाताक्षेपक रोग पुनि ४७ पित्ताक्षेपक जान ४८
दंडपतानक ४९ घातक्षय ५० पुनि अंतारायाम ५१
बावनवां तुम जानलो है इक चाल्यो बाम
धनुर्वात ५३ कुब्जिक ५४ कहा अतत्रय अपतान ५६
सतावनवां रोग तू पक्षाघातक जान
छन्द ॥ आक्षलाभिक ५८ कम्प ५९ लोद ६० लंभ ६१ व्यथा [illegible]

अति घणो ॥ ६२ ॥ स्फुरन ६३ लूखो ६४ श्यामपन ६५ अति क्षीणपण ६६ शीतलपणो ६७ ॥ रोमांच ६८ अंगमद ६९ अंगविभ्रम ७० नसांकोसंकोचहै ७१ ॥ अंग शोषण ७२ डरपणो ७३ अरु मोहपण अति पोचहै ७४ ॥ उन्माद ७५ निद्रानाश ७६ स्वेद बिनाश ७७ बलकी हानिहै ७८ ॥ बीर्जनाश ७९ अरुनाशतिपरज ८० गर्भ कीनिरआस है ८१ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ दोहा ॥ १ ॥ १ ॥

बिनापरिश्रमश्रम जुहो ८२ पुनिहो श्रमकानाश ८४
इन सब के लक्षणजतन आगेकरू प्रकाश ॥

अथ बातव्याधिके सामान्यजतन जिनसे बाय नहो दोहा ॥

चिकना मीठा नोनका गरम जु भोजन खाय
नित्यतेल मर्दन करै बायू ब्याधि नसाय ॥

अथ आदिसे तरतीब वार चौरासी बायु में से प्रथम शिरोग्रह वायु के लक्षण जतनलिख्यते दोहा

बायु रुधिर संगबायके करै रगों में पीर ॥
है यह रोग असाध्यसुन कहै वैद्य मतिधीर

कडा ॥ कहै वैद्य मतिधीर मूलदश काढालावै ॥ और बिजौरालाय काढ़रस क्वाथ मिलावै ॥ क्वाथ अरक अरु तेल मिलाकर खूब पकावै ॥ अरकक्वाथ जलजाय तेल को छान रखावै ॥ जहां जहां हो पीर रगों में मरदन कीजे ॥ जो हो देवसहाय शिरोग्रह पल २ छीजे ॥ और जतन ॥ दोहा ॥ पीपल सींगी मोहरा मिरच स्याह अरु कूट ॥

अरंड धतूरा सहजना तीनों की जड़ सोंठ ॥

कड़ ॥ तीनों की जड़ सोंठ भाग सम सबके आवै ॥ पहले क्काथ पकाय छान फिर तेल मिलावै ॥ पुनि चूल्हे पर राख आँच तर मधुरी दीजे तेल मात्र जब रहै छान कर मर्दन कीजै ॥ १ ॥

अर्थ ॥ पहला नुसखा जाहिर है ॥ दूसरा ॥ पीपल सींगीमोहरा मिरचस्याह कूट अरंडकी जड़ धतूरे की जड़ सोंठ येसब बराबर ले कूट काढ़ा कर तेल में डाल कड़ाही चूल्हे पर रख मीठी आंच से पकावे जब काढ़ा जल जाय केवल तेल रहे छानकर रगों में मले तो शिरोग्रह रोग नाय ॥

अथ दूसरी अल्पकेशी बायु का जतन लि॰

दोहा ॥ देसी गोक्षुर पीस लो तिलके फूल मिलाय
सहद घिरत में सानके दीजे शीस मिलाय

अर्थ ॥ देशी गोखरू और तिलके फूल पीसके शहद और घी मिलाय के सिरमें खूब मले तो अल्पकेशी जाय ॥

और जतन ॥ कड़ ॥ नील कमल कर मूल मुनक्का दाख नवीली ॥ डाल मुलेठी सबै बराबर भाग छबीली ॥ तेल घिरत या दूध मेल के पीसो चारी ॥ करै शीश पर लेप केश लंबे हों प्यारी ॥

अर्थ ॥ नीले कमल की जड़ मुनक्का दाख मुलेठी ॥ ये सब बराबर लेके घी तेल या दूध में पीसके सिर पै लेप करै तो बाल लम्बे होंय ॥

अथघनीजंभाईकाजतनलि० दोहा

नवलसोंठ पुनिपिप्पली अरुअजमोदमगाय
गरमनीरसे खाइये सेंधामिरच मिलाय॥

अर्थ॥ सोंठ मिरच पीपल अजमोद सेंधानमक इन सबका चूर्ण गरमजलसे फांके तो जंभाई जाय॥

और जतन॥ दोहा॥

मरदन कड़वे तेलका मीठा भोजन खाय
अथवा चाबेपान इक तुरत जंभाई जाय

अथअनुग्रहरोगकालक्षणजतन लि०

दोहा॥ दांतहिलें जिह्वाफटे सूजमसूढे जाय॥
मुखरदपट फटतेरहैं दुखसे भोजन खाय

अर्थ॥ दांत हिलनें लगें मसूढे सूज जांय जीभ होट फटे रहैं भोजन करते कष्ट होय॥

कड़ा॥ दुखसंग भोजन खाय अनुग्रह वायु बखानें॥ तिसकी औषधि सेक धुवेंया जल से जानें॥ मुहंआया जो होय सर्द औषधि मुख राखै॥ दांत मसूढे दुखें सोंठ पीपल रस चाखै॥ ल्हसन अदरक डार उडदके बड़े क रावै॥ सेंधानमक मिलाय अनुग्रह रोगी खावै॥

अर्थ॥ अनुग्रहरोगकीदवा गरम पानीके कुल्लेयाहु क्का पीना है जो मुंह आरहा होयतो ठंडी बस्तु कत्था सेलख ड़ी सीतल चीनी आदिमुंहमें रखैदांत और मसूढों में दर्द हो तो लहसन अदरक मिलायके उड़दके बड़े सें धानमक डलवाके खायतो अनुग्रहरोगजाय॥ इति॥

अथ जिह्वास्तंभ वायु रोगके लक्षणजतन०

दोहा॥ नाडी जिह्वामेंजुदै तामे रहै जु वाय
तिसी वायके दोषसे जिह्वादुखैजाय

कड़ा॥ दुखै जिह्वा जात बात मुखसे जो बोले॥ जल पीवत में कष्ट होय जब रद पट खोले॥ येसब लक्षण कहे जीभ थंभन के प्यारी॥ अब सुन तिसके जतन औषधी न्यारीन्यारी॥

अर्थ॥ जिह्वा मे रहने वाली नाडी में जो वाय रहती है उसके दोष से जिह्वा में दर्द होता है बोलने मे जल पीने मे जब होठ खोलने पड़ते हैं बहुत कष्ट होता है॥ ॥ अथ जिह्वा स्तंभन रोग की चिकित्सा॥ दोहा॥

मीठा खट्टा नौन रस घृतसंग गरमकराय
जिह्वापर मरदनकरै निश्चै रोग नसाय॥

या सुहाते२गरम जल से कुल्लु करावेतो जिह्वास्तंभजाय॥

अथ गूंगा पण गिण गिणापण औरहकलाते का जतन लिख्यते ॥

सोरठा

कफके सहित जुवाय धमनी नाडीमें बसे
गिणगिणकरै गुंगाय गदगद पणनिश्चैकरै

चौपाई

सुरभीघिरत सेर इक आनै॥ बकरीदूध चतुरगुणजानै
मूलसहजना धावड़ फूला॥ लैंगरकाभर सब समतूला
सबकोपीसदूध में डाले॥ घिरतडालपुनि ताहि उबाले

दूधदवा जब सब जल जाई॥ घिरत मात्र को लेय छनाई
दोहा॥ प्रति दिन इस गोघिरत को इकीस दिन लौं खाय
गूंगोपण अरु गिण गिणा सकल रोग मिट जाय
अर्थ॥ जो पवन कफ के साथ धमनी नाड़ी बसती है गूंगा पणा गिण गिणा पणा और गद्गद पणा करदेती है तिस का जतन॥ गौका घिरत सेर १ बकरी का दूध सेर ४ सहजने की जड़ टका १ भर लौंग टका १ भर धाय के फूल टका १ भर इन तीनों को पीस दूध में डाले इस के बाद गै का घी सेर १ उसी में मिलाके खूब उबाले जब दवा और दूध सब जल जावे घृत मात्र रहै तब उतार के छान रखे इस घी को २१ दिन तक खाय तो गूंगा गिण गिणा और गद्गद पणा निश्चय जाय॥ और जतन॥ मालकंगनी के तेल का सेवन करै तो गूंगा पण गिण गिणा पण और गद्गद पणा जाय॥ और जतन॥ कुंडलिया॥
पीपल जीरा कूट मुलेठी महुवा लावो॥ निमक लहौरी सोंठ और अजमोद मगावो॥ भाग बराबर लेय सकल ये औषधि प्यारी॥ कूट कपड़ छन करै युक्ति से धरै संवारी॥ दस दस माशे लेय बराबर माखन चाषै॥
गिण गिणपण सब जाय शब्द अति नीके भाषै॥
अर्थ॥ पीपल जीरा कूट मुलेठी महुवा सेंधा नमक सोंठ अजमोद ये सब औषधि बराबर लाय कूट कपड़ छन करै दस माशे मक्खन में मिलाय चाटै तो गिण गिण पणा जाय॥ ९॥ इति॥ १॥ ९॥ १॥

अथ प्रलाप और बाचाल रोग का लक्षण लि०

दोहा

कुपथ करे ते बायु जो भरे अंग में आय
बोले बचन कु बचन नर अर्थ ज्ञान सब जाय

कुंडा॥ अर्थ ज्ञान सब जाय तिसे परलाप बखानो॥ बच न न कहै संभाल तिसे बाचालु हि जानो॥ १॥ इति॥

॥ अथ प्रलाप बाचालु को जतन लिख्यते॥

कुंडा॥ अगर तगर असगंध मूल दस कुटकी लावो॥ ब्रह्मी मोथा पीत पापड़ा दाख मगावो॥ शंखा हूली नवीन बराबर सब को लीजे॥ जौ कुट कर के धरे क्वाथ कर इन का दीजे॥ दूरे प्रलाप अपार खोज तिसका नहि पावे॥ दूर होय बाचाल पनो फिर निकट न आवे॥ अर्थ॥ अगर, तगर, असगंध, दसमूल, कुटकी, ब्रह्मी, मोथा, पीतपापड़ा, दाख, शंखा हूली, ये सब औषधि बराबर लाय जौ कुट कर काढा कर पिलावे तो प्रलाप और अति बाचालुपणा दूर होय॥ १॥ १॥ इति॥ १॥

अथ जीभ का रस ज्ञान तथा स्वाद जाता रहै तिसका लक्षण॥ दोहा॥

लवण खटाई चरपरा तथा मिठाइ आद
जिसकी कोमल जीभ से नासे सकल सवाद

कुंडलिया॥ नासे सकल सवाद रसा अज्ञान कहावे॥ तिसके जतन बिचार कहूं जो शास्त्र बतावै॥ पीपल काली मिरच सोंठ अरु चूक नवीली॥ अमल बेद पुनि

नमक लहोरी रंग रंगीली ॥ पीस जीभ से मले कहा फिररोग सतावै ॥ तिसके जतन बिचार कहूं जो शास्त्र बतावै अर्थ ॥ खटाई मिठाई चरपरा आदि का स्वाद जाता रहै तिसे रसाज्ञान कहते हैं तिसका इलाज ॥ पीपल ॥ काली मिर्च, सोंठ, चूक, अमलबेद, नमक सेंधा, इन सब को पीस जीभसे मले तो जिह्वा रसाज्ञान रोग जाय और जाय का ठीक होय ॥ और जतन लि० ॥ कुंडलिया ॥ चीता राई प्लास पापड़ा पीपल धीरा ॥ ब्रह्मी पीपल मूल सूंठ पुनि काला जीरा ॥ पीस कपड़ छन करै जीभ के ऊपर लावै ॥ अथवा क्वाथ पकाय खूब कुल्ले करवावै ॥ रसाज्ञान को रोग नहीं फिर रहने पावै ॥ तिसको जतन बिचार कहूं जो शास्त्र बतावै ॥ अर्थ ॥ चीता, राई, पलास, पापड़ा, पीपल, ब्रह्मी, पीपलामूल, सोंठ, कालाजीरा, ये सब दवा बराबर ले कूट कपड़छन कर जीभ पर मले या काढ़ा पकाके कुल्ले करावै तो रसाज्ञान जाय और इस रोग के लिये अदरक भी बहुत गुणदायक है ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥ ९ ॥

अथ शरीर की त्वचा सून्य होगई होय ताको लक्षण जतन लि० ॥ दोहा ॥

गरम सरद कोमल कठिन जिसके अंगन ज्ञान
देह फटासा रहै सब त्वचा सून्य पहिचान ॥

कड़ा ॥ त्वचासून्य पहिचान फस्द तिसके खुलवावै ॥ अथवा सेंधा नमक धूम सा तेल मिलावै ॥ होय सुलायम

ख्याल रोग कबहू नसतावे लख२ ग्रन्थ अनेक वैद्य यह यत्न बतावै ॥ इति ॥ अथ वायु पित्त कफ के अर्दित रोग के लक्षण जतन लिख्यते ॥

प्रथम वायू के आर्दित रोग के ल०

दोहा ॥ बहुत राल मुखसे गिरै कांपै सकल शरीर
होंगे पै सूजन चढ़ै व्यापै अंग में पीर ॥

अथ पित्त के अर्दित रोग के लक्षण दोहा

पीला मुख अरु प्यास अति तपै देह ज्वर होई
पित्त आर्दित रोग यह कहै वैद्य सब कोइ

अथ कफ के आर्दित रोग के ल० सोरठा ॥

सूजन अधिक दिखाय कंधे सिर अरु कंठ में
लक्षण देहु सिखाय कफ के आर्दित रोग के

अथ कफ के आर्दित रोग के असाध्य ल० दोहा

नैनन से निद्रा नसै बोलत में हो पीर
तीन वर्ष पर्यंत लों कांपै सकल शरीर

अथ आर्दित रोग के सामान्य जतन लिख्यते

॥ छन्द ॥

तेल नित मर्दन करै विषगर्भ या नारायणी
देह में सुख होय व्यापै पीड़ना तिसको घणी
तेल घृत भोजन करै अति गर्म औषधि सेवई
पवन से बचता रहै नित नित पसीना लेवई
वायु को जो तेल ताको शीश में मर्दन करै
भाषै सुजान सुजान के यह रोग आर्दित को हरै

अथ ऊर्द्धबात का जतन॥ दोहा॥

दस दस हिस्से डारिये सुंठी और बिधार ॥
हिस्से पांच निसोत के इन्द्रसम हैड़हु डार॥

कड़ा॥ इन्द्र सम हैड़हु डार हींग इक भाग मिलावै॥ एक भाग असगंध नमक सेंधा पुनि लावै॥ चीता सब के तुल्य पीस कर कपड़ छनावै॥ दस दस माशे देय गरम जल ऊपर प्यावै॥ ऊर्द्ध बात का रोग सकल छिन में मिट जावै॥ ज्यों पछवा के चलत घटा कहुं देख न पावै ॥

अर्थ॥॥ सोंठ भाग१० बिधारी भाग१० हड़ की छाल भाग ५ निसोत भाग५ इन सब को पीस कपड़ छन कर १० माशे की फंकी गरम जल से ले तो ऊर्द्धबात रोग जाय॥

अथ आध्मान रोग को लक्षण इस रोग को प्रत्याध्मान भी कहते हैं

दोहा॥ पेट अफारो होघना अधोबायु रुक जाय
अतिही पीड़ा होय जो रुज अध्मान कहाय॥

अर्थ॥ पेट पै अफारा बहुत हो अधो बायु बन्द होजावे पीड़ा अत्यंत होतो आध्मान रोग जानो॥॥ अथ जतन॥॥

कड़ा॥ पीपल ढाई टंक टंक दस मिसरी लीजे॥ ले निसोत दस टंक कूट कर चूरण कीजे॥ ढाई टंक प्रमाण औषधी नित जो फांके॥ तिसके तन में कभी नहीं फिर रुज यह झांके॥

अर्थ॥ छोटी पीपल १० माशे मिसरी ३। तोले निसोत ३। तोले इन सब को कूट चूर्ण कर १० माशे की फंकी नित्य प्रातःसमय लेतो प्रत्याध्मान रोग जाय॥

अथ प्रत्याध्मान को दूसरो जतन ॥ छन्द ॥

कूटवच अरु नमक सेंधा हींग सेकजु लीजिये
सौंफ हू मंगवाय सब को तोल सम कर दीजिये
लेप कांजी नीर सों कुछ गरम करके कीजिये
रोग यह अध्मान फेर सुजान दिन दिन छीजिये

अर्थ ॥ कूट, बच, सेंधा नमक, भुना हींग, सौंफ, येसब दवा बराबर लेकर कांजी के पानी में पीस गरम कर सुहाता २ लेप करे तो प्रत्याध्मा रोग जाय ॥

और जतन ॥ महानारायणरस ॥ चौपाई ॥

दात्यूनी अरु कूट को प्यारी ॥ किरमालाको गिरी सुधारी
हेड़ आंवला और निसोत ॥ नवल लाव पुनि नागर मोथ
टका टका भर औषधि प्यारी ॥ थूहर दूध टका दो प्यारी ॥
आध सेर जल माहिं उबारे ॥ अष्टम भाग रहै तब तारे ॥
छन्द ॥ पीस बकल जमालगोटा पोटली कर लीजिये ॥
डार तिसको क्काथ में तर मंद अग्नी दीजिये ॥ क्वाथ सब जल जाय तब यह औषधी ठंडी करो ॥ युक्ति से पुनि खोल पोटली आठ भाग जु सम धरो ॥ पारा औ गन्धक की करो कजली मिरच काली परे ॥ भाग दोइस के जु ले पुनि सोंठ या सम कर धरे ॥ एक भाग सु शोधि गंधक तोल तामें डारिये ॥ एक भाग सुजान पारा सब हि खड़ल पधारिये ॥ पहर भर कर खड़ल सब की गोलिका बांधो भली ॥ एक रत्ती सेन कम जादे भी ना हो लाडली ॥ सरद पानी सा थ गोली नित्य प्रति इक खाइये ॥ शूल प्रत्यध्मान गोला उदावर्त नसाइये ॥ ७ ॥ ८ ॥

अथ बाहुक रोगको लक्षण लिख्य०

कंधे में रहने वाली वायु जो कोप करके बांह के कफ को सुखाय देती है इस सबब से नस खिच जाती हैं और कुहनी नहीं मुड़ती तिसे बाहुक रोग कहते हैं और अम बाहुक भी बोलते हैं॥

अथ बाहुक रोग का जतन॥ सोरठा

केवल जलहि सुंघाय अथवा पानी उड़द का
बाहुक रोग नसाय और जतन सुन लीजिये
छन्द॥ कूट यव अलसी उड़द अरलू कुलथ मगवाइये ॥
कौंच जड़ कपास सन का बीज कुटकी लाइये॥ जड़ खरैटी
बेर की जड़ खीय की जड़ डारिये॥ गोखरू सेला कटेली
रास्ना उर धारिये॥ लो गिलोय नवीन औषधि तेल में
सब सम करो॥ तेल में डारो सकल पुनि आग के ऊपर धरो॥
औषधी जल जांय सब तब तेल मात्र छनावई॥ हाथ
पै मरदन करे अप बाहु रोग नसावई॥

अर्थ॥ केवल जल सूंघने से या उड़द का पानी सूंघने से बाहुक रोग रोग जाता है या॥ कूट॥ यव॥ अलसी॥ उड़द॥ अरलू॥ कुलथ॥ कौंच की जड़॥ कपास सन का बीज॥ बेर की जड़॥ खीय की जड़॥ रास्ना॥ खरैटी की जड़॥ गिलोय॥ कुटकी॥ इन्हें तेल में पकावे बाद छानने के इस तेल को मले तो अप बाहुक रोग जाय॥ इतिमाष तैलम्॥

अथ विश्वाची रोग का लक्षण

हाथ की उंगली न मुड़े और भुजा के पीछे खाज ऐसी हो

कि हाय निकम्मा होजाय उसे विश्वाची कहते हैं ॥

अथ विश्वाची का जतन लि०

कड़ा॥ उड़द खरैटी डाल मूल दश काथ पकावै॥ पीवे तेल मिलाय रोग विश्वाची जावै ॥ ॥और जतन ॥ दोहा ॥ ॥

उड़द खरैटी रास्ना सोठ हींग दश मूल १॥
डारै या मे सुघर वच सेंधा नमक न भूल

कड़ा॥ सेंधा नमक न भूल पीस सब जल में लावे॥ तेल मेल कर मंद मंद तर आग जलावे॥ सब पानी जल जाय तेल कपड़े में छाने॥ करपै मरदन करै चतुर जो इसको जाने॥ विश्वाची अरु बाहु शोष अपबाहुक रोगा ॥ पक्षाघात नमीत फेर तिसको नहिं होगा ॥

अर्थ॥ उड़द, खरहटी, दशमूल, और तेल, इन सब का काढ़ा पका के पीवे तो विश्वाची जाय॥ तथा॥ उड़द, खरहटी, रास्ना, सौंठ, हींग, दशमूल, वच, सेंधा नमक॥ इन सब को जल में पकावे जब काढ़ा पक जाय कपड़े में छान कर फिर कड़ाही में उसी के बराबर मीठा तेल डाल के दोनों को पकावे जब काढ़ा जल जाय और तेल मात्र रह जाय तब उतार कर छान ले और हाथ पर मले तो विश्वाची पक्षाघात बाहुशोष और अपबाहुक रोग जाय

अथ ऊर्द्ध वात रोग का लक्षण

कुपथ्य के सेवन से अधो वायु कोप करके मुख के कफ से मिल जाती है तब बारबार डकार बहुत आवें उसे ऊर्द्ध बात कहते हैं ॥

अब जतन सब वायु पित्त कफ के जुदे सुन लीजिये
एक मन होकर सुनौ कहु और चित्त न दीजिये ॥

अथ वायु के आर्दित रोग का जतन ॥ दोहा ॥

काढ़े से दस जड़न के वायु आर्दित जाय ॥
अरक बिजोरा एक का निश्चय वायु नसाय ॥

कड़ा ॥ निश्चय पवन नसाय दवा यह अजब अनूठी ॥ भाग बराबर लेय खरैटी चित्रक सूंठी ॥ चव्य पीपला मूल नवल पीपल पुनि डारो ॥ वायु आर्दित जाय तिया निश्चय उर धारो ॥ ॥ अर्थ ॥ ॥ १ ॥ १ ॥

वायु के आर्दित रोग वाले को दस मूल का काढ़ा या बिजोरे का रस बहुत गुण दायक है या खरहटी चीता सोंठ चव्य पीपल पीपला मूल ये सब बराबर ले कर काढ़ा पका के दे तो वायु आर्दित रोग जाय ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

अथ पित्त के आर्दित रोग का जतन लि०

दोहा ॥ गरम दूध नित पीजिये पित्त को आर्दित जाय
अति उत्तम यह जतन है कहै वैद्य समझाय ॥

अथ कफ के आर्दित रोग का जतन लि०

दोहा ॥ तेल तिलों का लाय के लहसन लेय मिलाय
नित उठ प्रात सने भषे कफ को आर्दित जाय ॥

अथ मन्यास्तंभ का लक्षण लि० ॥ दोहा ॥

बैठक जो जादे करे या दिन में सो जाय ॥
कफ में आवे वायु तहां कांधो मुड़त पिराय ॥

अर्थ ॥ बहुत बैठे से या दिन में सोने से वायु कफ में

जाकर कन्धे मोड़ने से पीड़ा पैदा करती है तिसे मन्या स्तंभ कहते हैं ॥ १ ॥ अथ मन्या स्तंभ को जतन लि० दोहा ॥ १ ॥

काढ़ा कर दश मूल का गरम गरम दे प्याय
पंच मूल का क्वाथ वा मन्यस्तंभन जाय ॥

कड़ा ॥ मन्य स्तंभी जाय तेल का मर्दन कीजे ॥ तापर पात अरंड सेक कर के धर दीजे ॥ पुनि तहं पट्टी बांध यत्न से पवन बचावै ॥ मन्यस्तंभन रोग फेर कूढा नहिं पावै ॥ और यत्न ॥ कुक्कुट अंडा फोड़ नोन सेंधा घृत डारै ॥ कांधे मर्दन करै रोग तत्काल सिधारै ॥

अर्थ ॥ दश मूल का काढ़ा या पांच मूल का काढ़ा गरम२ पिलावे तो मन्यस्तंभ जाय ॥ तथा ॥ मीठा तेल कंधोंपर मलवाकर अरंड के पत्ते सेक कर बांधे परंतु हवासे बहुत बचाय के खोले तो मन्य स्तंभ जाय ॥ ॥ और जतन ॥ ॥ मुरगी के अंडे में घृत और नमक सेंधा मिला कर कंधों पै मले तो मन्य स्तंभ जाय ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥ १ ॥

अथ बाहु शोष को लक्षण जतन लिख्यं०

कंधे में जो वायु रहती है सो कोप कर के हाथ को सुखाय देती है तिसे शोष कहते हैं ॥ ॥ जतन ॥ ॥ दोहा ॥ ॥

क्वाथ खरटी काकरा मोथा नमक मिलाय
मन्यस्तंभ रु शोषरुज पीवत ही मिट जाय

अर्थ ॥ बेल खरहटी नागरमोथा सेंधा नमक ये तीनों औषधी पका के पिलावे तो मन्यस्तम्भ अरु शोष रोग जाते रहैं ॥

अर्थ॥ दात्यूनी टका १। भर कुटकी टका १। भर किरमाला की गिरी टका १। भर बेड़ का बक्कल टका १। भर आंवला टका १। भर निसोत टका १। भर नागरमोथा टका १। भर थूहर का दूध टका २। भर ये सब दवा जौ कुट कर सेर १ पानी में काढ़ा करे जब आठवां भाग पानी रहे तब उतार कर छान लीजे इसमें जमाल गोटे के कोतरे के बारीक चूर्ण की पोटली बांध कर डाले पोटली महीन कपड़े में बांधे कि काढ़ा उसमें मंद २ आंच से पकते २ सूख जाय तब ठंडा होने के बाद पोटली खोल के ८ हिस्से बराबर के करे तिसमें २ हिस्से सोंठ डाले फिर पारा गंधक की कजली करे ॥ सोधा पारा १ हिस्सा सोधी गंधक १ हिस्सा और स्याह मिरच २ हिस्से ये सब मिलाय उसमें डाल एक पहर खरल करे बाद रत्ती एक की गोली बांधे एक गोली रोजीना सरद जल से खाय तो अफरा भूल प्रत्याध्मान अनाह और उदावर्त ये सब रोग दूर होंय॥ इति महानारायणरस

अथ बातष्ठीला का लक्षण लि० दोहा

नाभी नीचे पवन की पथरी सी बन जाय ॥
रोके मल और मूत्र को बातष्ठील कहाय ॥

अथ प्रत्यष्ठीला को लक्षण० दोहा

नाभी नीचे पवन की पथरी सी पड़ जाय ॥
सो अति ही पीड़ा करे मल अरु मूत्र न साय

अथ बातष्ठीला और प्रत्यष्ठीला को जतन०

दोहा ॥ चीता सेंधा नमक अरु बनी का होंग भुनाव ॥ ९ ॥

जीरा संचर नौन पुनि काली मिरचहु लाव ॥
कहा॥ काली मिरचहु लाव पाठ पीपल अरु संठी ॥ धनियां
चव्य कपूर पीपला मूल अनूठो॥ सज्जी पुहकर मूल हैड़ की
छाल नवीली॥ अमलवेत अरु जवाखार ले रंग रंगीली ॥
सांभर बीज अनार मूल झाऊ की लीजे ॥ सब औषधि
सम पीस कपड़ छन विधि से कीजे ॥
दोहा॥ अदरक रस की तीन पुट मेले छांह सुकाय
तोल अढाइ टंक भर उष्णोदक से खाय॥
सोरठा॥ उष्णोदक से खाय प्रात समय इस चूर्ण को
बातष्ठीला जाय प्रत्यष्ठीला के सहित ॥
अर्थ॥ चीता१ संधानमक२ बच३ भुना हींग४ जीरा५ संचर
नौन६ कालीमिरच७ पाठ८ पीपल९ सोंठ१० धनियां११
चव्य१२ कचूर१३ पीपलामूल१४ सज्जी१५ पोहकरमूल
१६ हड़ का बक्कल१७ अमलबेत१८ जवाखार१९ सांभर
२० अनारदाना२१ डाभरिया२२ झाऊ की जड़२३ ये सब तो-
ल में बराबर ले पीस कपड़ छन कर अदरक के रस की तीन
पुट देकर छांह में सुकावे चूर्ण बना रक्खे ढाइ टंक प्रमाण
गरम पानी के साथ में खाय तो बातष्ठीला और प्रत्यष्ठी
ला जाय परंतु प्रातःकाल के समय खाय ॥

अथ तूनी प्रतितूनी का लक्षण जतन लि०

॥ दोहा ॥

लिंग गुदा की बायु जो पेडू माहं पिडाय ॥
तूनी प्रतितूनी कहैं तिसे वैद्य समझाय॥

अथ तूनी प्रतितूनी का जतन लि० छन्द

मिरच काली सोंठ पीपल हींग भूना लाइये
नमक सेंधा डार प्यारी जवाखार मिलाइये
औषधी सब ले बराबर पीस कर चूरण करै
टंक ढाई गरम जल से खाय प्रति तूनी हरै

अर्थ॥ लिंग और गुदा में रहने वाली वायु जो पेडू में आकर पीड़ा करती है उसे तूनी प्रतितूनी कहते हैं ॥

जतन॥ काली मिरच १ सोंठ २ पीपल ३ भुना हींग ४ सेंधा नमक ५ जवाखार ६ ये सब बराबर ले पीस चूर्ण कर कपड़े में छाने ढाई टंक प्रातसमय गरम जल के साथ खाय तो तूनी जाय॥ ॥अथ त्रिशूल रोग का लक्षण ॥ ॥

पीठ की हड्डी में दर्द होता है उसे त्रिशूल रोग कहते हैं॥

अथ त्रिशूल को जतन लि०

दोहा॥ गूल्हीवाली मूलका बकुल झाऊ छाल
अजवायन असगंध अरु सोंठ सौंफ पुनि डाल

कड़ा॥ डालो हींग मिलाय गमना गोखरू प्यारी ॥ नवल निमान मनावर सब सम चन्द्र उजारी॥ उत्तम गूगल सोध समांक तुल्य मिलावै॥ तिनसे चौथा भाग घिरत पुनि ताय मिलावै ॥ ॥ दोहा ॥ ॥ १ ॥

दारू पानी गरम वा साथ शारदे खाय ॥
प्रति दिन माशे पांच ये रुज त्रिकशूलन साय

अर्थ॥ गूल्ही वाली की जड़ की छाल १ झाऊ की छाल २ अजवायन ३ असगंध ४ सौंफ ५ सोंठ ६ मनावर ७ गोखरू ८

गिलोय ९ निसोत १० रासना ११ ये सब औषधि बराबर ले
के सबकी बराबर सोधी गूगल मिलावे और गूगल से चौ
थाइ घी मिलावे पांच पांच माशे की गोली बनाय रखे १ गोली
गर्म गरम पानी या शराब या शोरवे से खाय तो विकशूल
को भुजास्तंभ को संधिगतवायु को टूट हाड को खोड़ापन
को गृध्रसी को पक्षाघात को सब को फायदे मंद है ॥
और इस औषधि को त्रियादशांग गूगल कहते हैं ॥ इति ॥

अथ वास्ति वात का लक्षण ०

सोरठा ॥ पड़ की जो वायु रोके उतरत मूत्र को
आन पीडा हो जाय और रोग पैदा करे

अथ वास्ति वात का जतन लि०

दोहा ॥ छाल खैरेटी मूल की मिसरी तुल्य मिलाय
दो माशे नित तोलके गौ दुग्ध से खाय ॥

और जतन दोहा,

हेड़ बहेड़ा आंवला सम ले चूर्ण कराय
तार बराबर डार के माशे चार जु खाय ॥

अथ मूत्र बंद हो जाय ताको जतन ॥ चौपाई ॥

माशे पांच जवा को खार ॥ ता मे समतुल मिसरी डार ॥
जो नर इस चूरण को खाय ॥ छिन में मूत्र बंद छुट जाय ॥
और चीनियां कपूर की बत्ती बनाय भग वा लिंग में रखे तो मूत्र
आवे ॥ **अथ गृध्रसी रोग के लक्षण ० दोहा ॥**

पीडा होवे अंग में पेर थकित हो जाय
चलते में भारी पड़े गृध्रसी रोग कहाय

साकुजहै दो भांतिको वायु १ वायु कफ जान
इन दोनों के जतन अब बिधिसे कहूं बखान

अथ वायु की गृध्रसी रोग के लक्षण लि०

सिर टेढा होजावे जंघा गोडे और संधी फड़कने लगे और स्तंभित होजावे ॥ अथ वायु कफ की गृध्रसी के लक्षण ॥ शरीर भारी हो अग्नि मंद हो तंद्रा हो राल मुंहसे बहुत गिरै ॥

अथ जतन ॥ दोहा ॥

बमन करावै आदि में जुलाब हल्के का देय
ता पाछे ये औषधी गृध्रसी वाला लेय ॥

चौ ०॥ प्रथमहि तेल अरंडी लावे ॥ फिर तामें गोमूत्र मिलावे
एक महीना तक ये पीवे ॥ सुखी होय बहु रोगी जीवे ॥ ॥

और जतन ॥ दोहा ॥

घृत अदरक रस तेल पुनि अरक बिजौरा लाय
गुड़ अरु चूक मिलायके एक महीना खाय ॥

कड़ा ॥ एक महीना खाय गृध्रसी रोग नसावे ॥ कटि पेडू अरु जांघ पदों की पीड़ा जावे ॥ उदावर्त्त त्रिक शूल रोग सब नासै प्यारी ॥ गोला सा मिट जाय उदर का केथ दुलारी ॥ और० दोहा ॥

मींग अरंडी काढके करै दूध में खीर
एक महीना खाय जो हरै गृध्रसी पीर

अथवा १० तोले रास्ना और १० तोले गूगल घृत में मिलाय ४ माशे प्रमाण गोली बांधे १ गोली रोज खाय तो रोग जाय ॥

और जतन ॥ रास्नादि काथ ॥ ॥ चौबोला ॥

तेल चलती ॥ किरमाला की गिरी रास्ना सोंठ मिलाय नवीला ॥

साठी की जड़ जड़ अरंड की गोक्षुर रंभ गीली ॥ देवदारु पुनि डारपियारी सब का काढ़ा कीजे ॥ पसवाड़ा को शूल गृ-ध्रसी पीवत छिन छिन छीजे ॥ ॥ इति ॥ ॥

अर्थ ॥ रास्ना १ किरमाला की गिरी २ सोंठ ३ गिलोय ४ साठी की जड़ ५ अरंड की जड़ ६ गोखरू ७ देवदार ८ इन सब को बराबर ले काढ़ा कर पीवै तो पसवाड़ा का शूल और गृध्रसी रोग जाय ॥ ॥ इति रास्नादि काथ स० ॥ ॥

अथ षोड़ा पांगुली रोग के लक्षण जतन

कटि में रहन वाली वायु जो जांघ की नसों को खेंचती है उसे षोड़ा कहते हैं ॥ और वही वायु जो दोनों जांघों की नसों को खेंचे तो उसे तो पांगुली कहते हैं ये बीमारी जुलाब लेने से और तैलादिक के मर्दन से जाती हैं ॥

अथ कलाप खंज रोग के लक्षण जतन लिख्यते

दोहा ॥ चलते कांपे देह सब लंगड़ा सा हो जाय ॥
छोड़े नस निज थान को कलापखंज कहलाय

ये रोग विषगर्भादि तैल के मर्दन से जाता है ॥ ॥ अथ विषगर्भ तैल की विधि ॥ ॥ धतूरे की जड़ १ निर्गुंडी २ कड़वी तूंबी की जड़ ३ अरंड की जड़ ४ असगंध ५ पवाड़ ६ चित्रक ७ सहजने की जड़ ८ कागलहरी ९ कारिहारी की जड़ १० नीम की छाल ११ बकायन की छाल १२ दशमूल १३ शतावरी १४ चिरपोटन १५ गोरीशर १६ विदारी कंद १७ थूहर के पत्ते १८ आक के पत्ते १९ सनाय २० दोनों कनेर की छा० २१ आधीझा रारखीय ये सब

औषधी टके तीन भरले इनसब की बराबर काले तिलों का तेल डाले और इसी की बराबर अरंड का तेल डाले और इनसे चौगना पानी डाले औषधी सब कूट कर डाल चूल्हे पर रख नीचे मंद मंद अग्नि जलावे जब औषधि और पानी सब जल जाय और तेल मात्र रहे तब उतार कर ये औषधि और डाले सोंठ १ मिरच २ पीपल ३ असगंध ४ रासना ५ कूट ६ नागरमोथा ७ वच ८ देवदार ९ इंद्रजव १० जवाखार ११ पांचोनोन १२ नीलाथोता १३ कायफल १४ पाठ १५ भाडंगी १६ नौसादर १७ गंधक १८ पौहकरमूल १९ शिलाजीत २० हरताल २१ ये सब औषधि छः छः माशे ले सींगी मोहराटका १ भरले पीछे ये सब पीस तेल में मिलावे इस तेल का मर्दन करै तो वायु के सब रोग जांय ॥ इति ॥

अथ शीर्ष कोष्ठु को लक्षण लि० दोहा

रुधिर पवन के कोपसे गाडे सूज जु जाय ॥
होवे पीड़ा अतिघनी कोष्ठु शीर्ष कहलाय ॥

अथ शीर्षकोष्ठु को जतन लि० दोहा

ढाई टंक गिलाय ले त्रिफला ले दस टक ॥ १ ॥
इन चारों को कूटकर काढ़ा करै निशंक ॥ १ ॥

चौबोला ॥ काढ़ा निःशंक करे गूगल डारे ॥ ढाई ये टंक काथ बीच पधारे ॥ पीवे यह क्वाथ तीस दिन जो प्यारी ॥ करै जे सब रोग दूर होय सुख्वारी ॥

अथ ॥ हड बहेडा, आवला, तीनों १० टंक मिलोय, गूगल, २॥ टंक पांचों का काढा कर पीवे ३० दिन तक तो शीर्ष कोष्ठ रोग जाय ॥ इति ॥

अथगोंड दुखने को जतन लिख्यते॥ दोहा॥

मर्दन मीठे तेल का तापर सोंठ मिलाव
तापर पात अरंड के तेल चुपड़कर लाव

अर्थ॥ मीठा तेल मलवा के ऊपर से सोंठ बारीक पिसवा के मलवावे बाद उसके अरंड के पत्ते सेककर बांधे तो गोंड दुखने अच्छे होजावें॥ ॥ और जतन॥ ॥ कौंच के बीज टकभर दही के साथ ७ दिनतक खाय तो गोंड़ का दुक्ख बन्द हो॥

अथ खल्ली के जतन॥ ॥ कूट सेंधानमक दोनों का काढा कर इसमें तेल अमलवेत का रस डाल मंदर आंचसे पकावे जब सब जल जाय तेल मात्र आयरहे तब उतार कर छानले इस तेल का मर्दन करे तो खल्ली रोगजाय॥ १॥

अथ वात कंठ के लक्षण

दोहा॥ ऊंची नीची जगह में धरत पांव दुख होय
पुनि टकनों में पीड़ हो बातकंठ है सोय॥

अथ वात कंठ के जतन॥ रोड़ा छन्द॥

गूगल मल्ली गर्म औषधी खाय पसीना लीजे॥ अथवा तेल अंड को लेकर पांच टका भर पीजे॥ पीवे तेल महीना भर जो वातकंठ ना रहै॥ पवन वलसत होन भ्रम घनदल ना मैं जैसे॥

अथ पाददाह के लक्षण॥ ॥ वायु पित्त और रक्त मिलके पांव के तलवों में दाह पैदा करते हैं तिसे पाद दाह कहते हैं॥

अथ पाददाह को जतन दोहा

पीसे दाल मसूर की पतली करे पकाय
लेप पांव पर कीजिये जब ठंडी हो जाय॥

अर्थ॥ मसूर की दाल महीन पीस जल में औटावे जब ठंडी
हो जाय आठ या सात लेप करै तो पाद दाह जाय वा मक्खन
का लेप कर मर्दन करे और सेकै वा अरंडी के दूध में पकाकर
तलवों पर लेप करै तो पाद दाह जाय॥ १॥ १॥ १॥ १॥ १॥
अथ पाद हर्ष को लक्षण॥ दोनों पैरों में झुनझुनाहट हो और
पैर सो जावें दवाये से न जागें तो पाद हर्ष जानो॥ १॥ १॥ १॥

पाद हर्ष को जतन सोरठा

कफ अरु पवन नसाय ऐसा जतन जु कीजिये
तातें यह रुज जाय परमानंद सुजान कह॥

अथ पग फूटनी को जतन लि० दोहा

सांभर हलदी तिल नवल तीनों सम कर ल्याय॥ बीज धतूरे
अरक में सब को लेय पिसाय॥ १॥ तीनों को सम तोल के।
गो का माखन डाल॥ धर चूल्हे पर सबन को मंद अग्नि तर बाल॥ २
चार गुना गोमूत्र पुनि डारै बारंबार॥ घिरत मात्र रह जाय जब
ठंडा करै उतार॥ ३॥ पग तलवों पर लेप कै खूब मलो चित
लाय॥ परमानंद सुजान कह पग फूटन मिट जाय॥ ४॥

अथ वाताक्षेपक पित्ताक्षेपक को लक्षण।

पित्त में मिली हुई वायु पित्त के स्थानों में जाकर स्तंभित कर दे
दंड की तरह कर दे या वही वायु कफ में मिलके धमनी नाड़ी
में जाकर देह को स्तंभित कर दे और अंगों में पीड़ा करे तो
असाध्य है वा चोट लगने से जो वायु पैदा होती है तिसके
अक्षेप को भी असाध्य जानों॥

इति वाताक्षेप पित्ताक्षेप को लक्षण समाप्त

अथ आक्षेपकाजतन ॥ महावल्लातैललि
दोहा ॥ बेरीकीजड़ उड़द अरु मूल खरहटीवाल ॥ कुल
त्थ मूल दशमूलीजिये सबको क्वाथ उबाल ॥ १ ॥ रहे आठ
वोंभाग जब तामें तेल मिलाव ॥ आगे जो औषधिलिखूं
तेहु सम कर लाव ॥ २ ॥ छन्द ॥ नमक सेंधा सोंठ गोरी
सर मजीठ सतावरी ॥ अगरपत्र जराल साठी जड़ इलाय
ची लावरी ॥ कूट छड़ पदमाष अरु असगंध तामें डारिये ॥
देवदारु डार सबये तेल मांह उबारिये ॥ क्वाथ औषधि सब
पचे तब तेल मात्र रुनाइये ॥ अंगमें मर्दन करे आक्षेप व्या
धि नसाइये ॥ सांस हिचकी अंत्रवृद्धी क्षीणता सब खोव
ई ॥ स्वेदबूढा हाड दुखता रोग अच्छा होवई ॥
अर्थ ॥ बेरी की जड़। उड़द। खरहटी की जड़। कुलत्थ।
दशमूल ॥ इन सब का काढ़ा पकावे जब आठवां हिस्सा
रहे तब उसमें ये औषधि और तेल मिलावे सेंधानमक
सोंठ, गोरीशर, मजीठ, सतावरी, अगर, पत्रज, राल, साठी की
जड़, इलायची, कूट, छड़, पदमाष, असगंध, देवदारु, ये
सब औषधि मिलाय खूब पकावे जब काढ़ा औरये औषधि
जल जाय तेलमात्र रहे तब उतारके इस तेल का मर्दन
करे तो सब तरह का आक्षेपक सांस हिचकी अंत्रवृद्धि
क्षीणता स्वेद बूढे हाड का दर्द ये सब रोग जांय ॥ इ॰ म॰ ब॰ तै॰ ॥

अथ अंतर्याम रोग को लक्षण दोहा

पगउंगली पद हिया टकनों में की वायु
पकवें सुख नाड़ीनके नेत्र खुले रह जाय

सोरठा॥ सकल अंग तन जाय मुड़ कर होय कमानसा
अंतरयाम बताय मुडे जवाड़ा भी नहीं ॥ १॥

अर्थ॥ वायु उत्पन्न करने वाली वस्तु खाये से वायु कोप कर के देह की नसों को कंधों को पीठ को सुखाय देती है मनुष्य के शरीर को कमान की सदृश कर देती है तिसे प्रत्यायाम कहते हैं जो पीछे आर्दित रोग के जतन लिखे हैं वेही इस के हैं॥

अथ धनुस्तंभ का लक्षण॥ ॥ कमान की समान अंग हो जाय शरीर का वर्ण विवर्ण होजाय मुख बन्द हो जाय देह शिथिल हो जाय अचेत होजाय पसीना आवे तिसे धनुस्तंभ कहते हैं इस रोग वाले की १० दिन की अवधी है॥

अथ कुब्ज रोग के लक्षण॥ ॥ वायु कोप करके हिये को ऊंचा करदेती है हिये में पीड़ा बहुत होय तिसे कुब्ज रोग कहते हैं इन तीनों रोगों के वास्ते प्रसारणी तैल गुणदायक है॥ ॥ अथ अपतंत्र रोग के लक्षण॥ दोहा॥ १॥ १॥

वायु हिये में जायके सिर कनपटी पिराय
मोह बढावे अति घना देय शरीर नवाय॥
सांस लेय अति कष्ट सों कंठ कबूतर बोल
संज्ञा सब जाती रहे नेत्र फाड़ ले खोल
अथवा नैन मिच रहें जो ये लक्षण जान
यही रोग अपतंत्र है परमानंद सुजान

अथ अपतंत्र का जतन लिख्यते दोहा

मिरच सहजना बीज पुन नीजावायविड़ंग
पुनि अफीम लब सम धरा पीस करो इक अंग

चीन॥ जोयहचूरणलेयषडुलास॥ निश्चयहोअपतंत्रविनास
अमलवेलअरुहड़कीछाल॥ बचअरुसेंधानमकतुवाल
डालरासनासबसमकीजे॥ पीसमहीनछान पुनिलीजे
टंकदोयघृतअदरकसाथ॥ जा अपतंत्रप्रात जो खात
हेड़कीछालवचसेंधानमक॥ अमलवेलरासनायेबराबर
लेपीसटंक २ घृतशहदकेसाथखाय तो अपतंत्रजाय॥

अथपक्षाघातकेसाध्यअसाध्यलक्षणालि० सोरठा॥

केवलकोपेवायुपक्षाघातजुप्रकटहो
लक्षणसाध्यकह्यघपस्मानंदसुजानवह

दोहा॥ गर्भवतीपरसूतिकाबालरुद्ध अरुछीण
इनकोपक्षाघातहोसोअसाध्यपरबीण

अथपक्षाघातकाजतन लिख्यते॥ कुंडलिया॥

उड़दखरैटीमूलअरुकौंचवीजपुनिडाल
मूलअरंडकीडारकेकाढालेयउबाल॥
काढालेयउबाल मूलकरहींग मिलावे॥ नमकलहोरीडार
छान करबेगपिलावे॥ पवनलगननहिदेयरैनमेंओस
बचावे॥ पक्षाघातसुजानफेरदृढानहिंपावे॥

अर्थ॥ उड़द खरहटी की जड़ कौंचके बीज अरंडकीजड़
इनसबका काढा कर भुनाहींग और सेंधानमक डाल
करपिलावे तो पक्षाघातजाय॥

अथपक्षाघातकोग्रंथिकादितैललि० चौपाई
चीतापीपलउड़दअनूठी॥ सेंधानोनरास्ना सोंठी ॥१॥
मूलपीपलासबसमलावे॥ इनसातोंकाक्वाथपकावे

तामें तेल ड़ारसम जारै ॥ तेलमात्र जब रहै उतारै ॥ १॥
तिसी तेल का मर्दन कीजे ॥ दिनदिन पक्षाघात गुढीजे
अर्थ ॥ चीता, पीपल, पीपलामूल, उड़द, सेंधानमक, रास्ना, सोंठ, इनका काढ़ा कर तेल मिलाय पकावे जब काढ़ा जल जाय तेलमात्र रहे उतार कर मर्दन करे तोपक्षाघात जा-

अथ पक्षाघात को माषादि तैल चौपाई

उड़द रास्ना सोंफ अतीस ॥ सेंधानमकल्लाडली पीस ॥
कौंचबीज पुनिमूलअरंड ॥ करैक्काथ दे अग्नि प्रचंड ॥
काढ़ा क्वान तेलसम डारै ॥ तेलमात्र रहजाय उतारै ॥ १
तिसी तेलकामर्दन करै ॥ पक्षाघात रोग यह हरै ॥
अर्थ॥ उड़द रास्ना सोंफ अतीस सेंधानमक कौंच के बीज अरंड की जड़ इनसबका काढ़ा पकाय क्वान के बराबर तेल मिलायफिर पकावे जब तेलमात्र रहै उतार करमर्दन करै तो पक्षाघात जाय ॥ येभावप्रकाशमेंहै ॥

और जतन ॥ दोहा ॥

उड़द सोंठ जड़ अरंडकी मूलखरेटी आन
कौंचबीज सेंधानमक काढ़ा करै सुजान
क्वान क्वाथकोपीजिये पक्षाघात नसाय
यह है वैद्यविनोदका आशय सुन सत्भाय

अर्थ

उड़द सोंठ अरंडकी जड़ खरेटी की जड़ कौंचके बीज सेंधानमक इनका काढ़ाकर क्वान पीवे तो पक्षाघात जाय ये वैद्य विनोद में है ॥

अथनिद्रानाशरोगकोजतन ॥ ॥ भांगसेकीहुई महीन पीस अनुमान मोफिक शहत में मिलायचाटै तोनींद आवै अतिसार और संग्रहणी जाय और भूखलगे यापीपलामूल का चूर्ण गुड़के साथ खाय तो नष्ट भई नींद आवै या अरंड का तेल और अलसीका तेल कांसी के पात्र में घिस के आंजे तो नींद बहुत आवै या मुश्क स्त्री के दूधमें घिसकर आंजै तोनींद आवै या सौंफ और भांगमहीन पीसकर बकरी के दूध में घिसकर लेप करै तो नींद आवै॥ ये सब जतन वैद्य रहस्य में लिखे हैं ॥ इति निद्रानाश केज॰ सं॰॥

अथवात व्याधी का सामान्य जतन लि॰

अथ नारायण तैलविधि ॥ छन्द॥ दोनों कटेल्ली गोखरू असगंध अरलू लाइये॥ पाढ़न गंगेरण छाल प्यारी नीम छाल मंगाइये ॥ बेलगीरी जड़खैरैटीमूल साठी सांवरी सांप अरणी दश टकाभर सबै औषधि लावरी ॥ सेखोडष नीर तामें डार क्वाथ उवारिये ॥ भाग चौथा बच रहे तब तेल तिल सम डारिये॥ गाय दूध मंगाय प्यारी चौगना इसमें करो॥ आंचमधुरी बालनीचे औषधीपुनि ये भरो॥ लायची चंदन खरैटी रास्ना सेंधा नमक ॥ थाल पर्णी प्रष्टपर्णी माषपर्णी लाय रख॥ मुदगपर्णी सौंफ बच कुड़ इंद्रायण साफकर ॥ शिलाजीत असगंध प्यारी तोल दो दो टकभर ॥ पुनि टकाभर कूट सबसंग पीसतामें डारिये ॥ मधुरी आंच जरायनीचे मंद२ उवारिये॥ औषधी और दूध जब जल जाय तेलउतारिये

होय शीतल छानकर तब पात्रमाहिंयधारिये

अर्थ ॥ दोनों कटेली गोखरू असगंध अरलू पाटल गं गेरण की छाल नीमकीछाल बेलगिरी खरैटीकी जड़ सारी की जड़ सीप अरणी ये सब औषधी १० टके भरले कर १६ सेर पानी में काढ़ाकरै जब ४ सेर रहजाय तब इसमें ४ सेर तिल का तेल डाले और १६ सेरगौका दूध डालकर मंद २ अग्नि से पकावे पकते में नीचे लि खी औषधी और डाले कूटटका १भर इलायचीटका २ भर लाल चंदन टका २ खरैटी टका २ बचटका २ हड़ ट का २ शिलाजीत टका २ सैंधा नमक टका २ रासनाटका २ सौंफटका २ इंद्रायण टका २ शालपर्णी टका २ पृष्टपर्णी टका २ माषपर्णी टका २ मुद्गपर्णी टका २ जबये औषधी और दूध जलजाय और तेलमात्र रहै तब उतार तेल को छानकर कंचके पात्र मे रखे जो मर्दन करै तो ये रोग जाय ॥ पक्षाघात हनुस्तंभ बहरापणा गतिभंग कटि ग्रह गात्रशोषन बिषमज्वर अंत्रवृद्धि शिरोग्रह पार्श्वशूल गृध्रसी औरसंपूर्ण बायु के रोग दूरहोय ॥ इतिनारायण तैलम् ॥

अथ जोगराज गूगल की विधि

चौपाई ॥ चीता सोंठ पीपलामूल ॥ पीपल कुटकी चव्यन भू ल ॥ दोनों जीरे हींग अतीस ॥ भाड़ंगी बच मूर्वा पीस ॥ इंदरजव संभाल आन ॥ गजपीपल हू डार सुजान अजमोदा अरु बाय बिड़ंग ॥ सरसों पाट सभी इक संग

मासे चारचार लेआव ॥ सबसे दूना त्रिफला लाव॥
दोहा॥ गोली माशे चारकी बिधिसों लेय बनाय
रायसनादिक क्वाथसे नेम पूर्वक खाय॥

अथ रासनादि क्वाथ लि॰॥

रायसना सांठीकी जड़ गिलोय अरंडकी जड़ इन के काढ़े के साथ खायतो वायु के सब रोग जांय॥ और गोमूत्र से खाय तो पांडु रोग जांय और किरमालापंचक के काढ़ेसे लेतो कफके सबरोग जांय शहदेसे खायतो वातरक्त रोग जाय॥ इति जोगराज गू॰॥

अथ लहसन कल्प॥ चौपाई॥ टका एक भर लहसन लावे। ताही के सम तेल मिलावे॥ सेंधा नमक डारु जो पीवे॥ वायु नसाय सुखी हो जीवे॥ दूध घिरत संग लहसन खावे॥ सब प्रकार की वायु नसावे॥ मंदाग्नी पीड़ा अरु शूल॥ विषमज्वर की रहै न मूल॥ शिर के रोग पेट का गोला॥ वीर्य्य रोग यह हरै अमोला॥ चौदह दिन लों विधि से लीजे॥ पुष्ट होय अरु रुज सब छीजे॥

इति लहसन कल्प

अथ महारास्नादि क्वाथ लिख्यते॥ दोहा॥

रास्ना वक्कल सहजना पीपल सौंफ अतीस
मोथा हड़की छाल पुनि सांठीकी जड़ पीस॥
मूल खरैटी गोखरू देवदारु असगन्ध ॥
किरमालाकी मींग अरु शतावरी मुख चन्द
धनियां छाल अरंडकी दोउ कटकी मूर

चव्यधमासअडूसपुन बीधारो कचूर ॥
हरित गिलोयसमानसब काढालेयबनाय
जोगराजसेखायतोवातव्याधिनसाय॥

अर्थ॥ रास्ना१ सहजने का बक्कल२ पीपल३ सौंफ४ अतीस ५ मोथा६ हड़की छाल७ साठीकी जड़८ खरैटीकी जड़९ गोखरू१० देवदारु११ असगंध१२ किरमालाकी गिरी१३ शतावरी१४ धनियाँ१५ अरंडकी छाल१६ दोनोंकटेली१८ अडूसा१९ कचूर२० चव्य२१ धमासा२२ बिधारो२३ गिलोय२४ इनसबके काढेके साथ गूगल जोगराजखायतो सर्वव्याधिजाय॥ इति म॰ रा॰ क्वा॰॥ येभाव प्रकाशमें है॥

अथअष्टांगतैलविधि लि॰

अरंडसंभालू सहजना थूहरऔर कनेर ॥
कुटीबकायन जानिये सबकेपात सकेर ॥

चौबो॰ चल्ता॥ इन सबका रस चार भाग इक भाग तेलका डारे॥ सोंठ डारपुनिधर चूल्हेपरनीचे अग्नीवारै॥ तेल मात्र जब रहै पंजरके छान वस्त्र में लीजे॥ मर्दन करै सुजान बातकी बाधी छिनछिन छीजे॥

अर्थ॥ अरंड के पत्ते संभालू के पत्ते सहजने के पत्ते॥ थूहर के पत्ते कनेर के पत्ते बकायन के पत्ते मंगाय सबको बराबरले कूटरसनिचोड़ औरइससे चौथाईतेल डालकर पकावे पकतेमें सोंठ डारजब रस और सोंठ जल जाय तब तेलको उतारकर छानले॥ इसतेलका मर्दन करनेसे सब प्रकारकी वायुजाय॥ इति अष्टांग तैलबिधि॥

अथविष गर्भ तेलविधिः लिख्यते

मूल धतूरा निर्गुंडी पुनि कड़वी तूंवी मूला ॥ मूल अरंड सहजने की जड छाल बकायन तूला ॥ कारे हारी की मूल नीव की छाल विधारा कंध ॥ चिरपोटन गौरी सर थूहर के पत्ते असगंध ॥ पवाड़ चीता कौवालहरी सतावरी पिय प्यारी ॥ सनाय दोनौं कनेर बकली आधीझारो खारी ॥ दशौं मूल अरु आक पात सब टका२ तोले लावे ॥ इन सबही की तुल्य तोल पुनि तिल का तेल मिलावे ॥ पुनि अरंड का तेल तिलों के तेल बराबर डालो ॥ इससे चार गुना पुनि पानी सब एकत्र उबालो ॥ जल औषधि जल जांय सकल तब तेल हिमाब हिलालो छान वस्त्र मे कूट पीस के और दवाये डालो ॥ सोंठ मिरच पीपल इंदर जव जवाखार मृग नैनी ॥ पांचो नौंन रास्ना नीला थोता कोकल वैनी ॥ पोहकर मूल कायफल गंधक भाड़ंगी नौसादर ॥ देवदारु असगंध कूट अरु गिला जीत हलाधर ॥ वच हरताल औ नागर मोथा पाट सबै सम लीजै ॥ टका२ माशे सब ये औषधि पीस कपड़छन कीजै ॥ ले दो तोले सींगी मोहरा पीस तिसी में डारै ॥ मर्दन करै तेल यह प्रति दिन वायु सुजान सिधारै ॥ ॥ इति ॥ ॥

अर्थ ॥ धतूरे की जड़ १ निर्गुंडी २ कड़वी तूंवी की जड़ ३ अरंड की जड़ ४ सहजने की जड़ ५ बकायन की जड़ ६ कारि हारी की जड़ ७ नीम की छाल ८ बिधारी कंद ९ चिरपोटन १० गौरीसर ११ थूहर के पत्ते १२ असगंध १३ पवाड़ १४ चीता १५ कागलहर १६ सतावरी १७ सनाय १८ दोनों कटेली १९ कनेर का बकोल २०

आधी झारोखीय २१ दशमूल २२ आक के पत्ते २३ ये सब छः छः तोले लेके इन सब की बराबर तिल का तेल और इसी की तुल्य अरंड का तेल और इसमें चौगना पानी डाले सब एक कर मंद आंच से पकावे जब जल और औषधि जल जाय और तेल मात्र रहे तब उतारकर ये दवा और मिलावे सोंठ मिरच पीपल इंद्र जव जवाखार पांचों नोन रास्ना नीला थोता पोहकरमूल कायफल गंधक भाडंगी नौसादर देवदारु असगंध कूट शिलाजीत वच हरताल नागरमोथा पाट ये सब दवा छः छः माशे और सींगी मोहरा २ तोले बारीक पीसकर उसी तेल में मिलादे रोज इस तेल को मले तो सब प्रकार की बायु दूर होय॥ पीठ जांघ संधिगत का सोजा उतरे गृध्रसी रोग सिर का रोग हड़फूटनी कान का दर्द गंडमाला ये सब रोग दूर होंय ॥ इति विषगर्भ तेल॥ अथ लक्ष्मीविलासम-सु-तै॥

दोहा॥ हैड़ बहेड़ा आंवला नागर मोथा वाल

तजपत्र जगंधक सुधी बीद कटेली डाल

कड़ा॥ बीद कटेली डाल और मंजिष्ट सुहागन॥ देवदारु कचूर और बच लोबड़ भागन॥ दोदो तोल तोल औषधि सब ये लीजे॥ कूट क्वाथ कर तेल सेर उसमें पुनि कीजे॥ जब सब रस जल जाय तेल तब लेय छनाई॥ पुनि ये औषधि कूट छान कर देय मिलाई॥ मेडल चंपा मूल पीपला मूल सुवाला॥ मर्वा संचर नोन बेर जानेत्र रवाला॥ नपछड़ अरु असगंध अल लोबान पियारी॥ दोदो तोले कूट छान कर

गरो तैयारी ॥ चन्दन केसर नागलायचीलौंगनवीली ॥
जायकली कंकोल मिरच सुन रंगरंगीली ॥ एक एक
तोला ले मर्दनकर इसमें डारै ॥ मृगमद माशे बार तिसी
में और पधारै ॥ जब औषधि जलजाँ कपूरनौ माशेली
जे ॥ डाल तैल के बीच देह में मर्दन कीजे ॥ सूजनगोला
मेह बात की व्याधि नसावै ॥ परमानंद सुजान ग्रंथल
ख युक्ति बतावै ॥

अर्थ ॥ हड़की छाल १ बहेड़ा २ आँवला ३ नागरमोथा ४
बज ५ पबज ६ सोधीगंधक ७ चीढ़ा ८ कटेली ९ मजीठ
१० देवदारु ११ कचूर १२ वच १३ येसबदवा दोदोतोलेकूट
काढ़ाकरे काढ़े में १ सेरतेल डाले जबकाढ़ा जलनेलगे
ये दवा पीसकर औरमिलावे मेडल चम्पाकी जड़ पीप
लामूल मूर्वा संचरनोन नेत्रवाला बेरजा नषछड़ अस
गंध लोबान येसब दोदो तोले और चंदन नागकेसर
लायची लौंग जायकली कंकोल येसब तोला २ भर क
स्तूरी ४ माशे जबयेसब रससहित जल जावें तब तेल
छानकर उसमें ८ माशे कपूर मिलाके मर्दनकरै तोप्रमेह
सूजन गोला और सब बात की व्याधि दूर हो ॥ इ० त० तै० ॥

अथ विजयभैरव तैलबिधिः

पारा गंधक हरताल येतीनों बराबरले कांजीके पानीमें
३ दिनखरलकर कपड़ेपरलेप करै फिर उसकी बत्तीबनाकर
चौगुनमीठे तेल में भिगोवे जो तेलबचे जलतीबत्ती पर
डालताजाय लोहे का पात्र नीचेरखे जो तेलबत्ती के फूलसे

टपके निकाल कर शीशी आदि में भरे जो इस तेल का मर्दन करे सब प्रकार की वायु दूर हो॥ इति विजयभैरव तैल॥

अथ बिजयभैरवरस लिख्यते

सवैया॥ ॥ चित्रक तीन टका भर ले पुन हैड की छाल तिही सम जानो॥ पत्रज नागरमोथ इलातज ये सब द्वादशमाष बखानो॥ पारद गंधक होय सुधी पुन पीपल पीपलामूल हु आनो॥ सींगीमोहर मोथ भया अरु सोंठ सियाह मरी च प्रमानो॥ ये सब माष सुजान दरेक संभालुक पांच हि माष बिसावो॥ केसर नाग अढाइ हि माष सवै मिल वाय मर्दन पिसावो॥ गंधक पारद की कजली कर तामहि ओषधि पीस कुनावो॥ सेर सवा गुड लाय पुरातन मेल इसे गुटिका जु बनावो॥ दोहा॥ गोली सींगी बेरसी एक तथा दो खाय॥ युग्म मास सेवन करै कफ पित्त की रुज जाय॥ बारमहीना खाय जो हरै वायु की पीर॥ एक वर्ष जो लेइ से बलयुत होय शरीर॥

अर्थ॥ चीता टके ३ हैड का बक्कल टके ३ पत्रज तोला १ नागरमोथा तो·१ इलायची तो·१ तज तो·१ पारा टके १० सोधी गंधक टं·१० पीपल टं·१० पीपलामूल टं·१० सींगीमोहरा सोधा हुवा टं·१० सोंठ टं·१० काली मिर्च टं·१० संभालू टं·५ नागकेसर टं·२॥ सबको मिलाय पीसे पहले पारे गंधक की कजली करे तिसमें ये सब दवा डाले सबको सेर १। गुड में मिलाय कोटे बेर की गुठली समान गोली बनावे १ या २ गोली रोज २ महीने तक खाय तो कफ पित्त के सब रोग दूर हों ४ मास लेतो वायु के सब रोग जांय १ वर्ष लेतो आयु बल बढे॥ इ·वि·भै·र·॥

अथवातारिरसलि० चौपाई

पाराभागएकहीजानो ॥ गंधककेदोभागबखानो ॥
त्रिफलातीनभागकरलीजे॥ चारभागचीतेकेकीजे ॥
पांचभागपुनिसोधीगूगल ॥ अरंडतेलमेंकरेजुखरल ॥
खरलएकदिनकीजेताही ॥ पुनिहिंगवाष्टक डारेमाही
दोहा॥ एकदिवसपुनिखरलकरछाई टंकप्रमान
गोलीताकीकीजिये परमानंद सुजान
सोंठअरंडजडलौंगकेकाथसाथजोखाय
एकमासकेबीतते वात व्याधि नशाय

अर्थ॥ पाराभाग१ गंधकभा०२ त्रिफलाभा०३ चीताभा०४ सोधीगूगलभा०५ अरंडकेतेलमें१दिनखरलकरोफिरतिसमें हिंगवाष्टक चूर्णमिलावे यानि सोंठ मिरच पीपल अजमोद सैंधानमक दोनोंजीरे हींग येसब मिलाय १ दिनऔरखरलकरे फिर२॥ टंकप्रमाण गोली बनावे १गोलीनित्य सोंठ अरंडकीजड औरलौंगकेकाढेकेसाथ १महीनेतकखाय और जितेंद्री रहे तोसबवायुकेरोग जांयऔरसामान्यवायुतो७दिनमेंहीजातीरहे॥इ०वा० ॥

अथसमीररसलि० चौपाई ॥

कालीमिरचअफीमनवीन ॥ तीजाकुचलालावप्रवीन
पानअरकमेंखरलजुकीजे॥ गोलीरत्तीभरकरलीजे॥
गोलीएकप्रातनितखाय ॥ पुनिऊपरसेपानचबाय
सज्जनअरुचीमिरगी जावे ॥ सबप्रकारकीवायुनसावे
॥ इतिसमीरराजकेसरीरससमाप्तं॥ येवैद्यरहस्यमें है ॥

अथ लहसन पाक विधि लि० ॥ दोहा ॥

लहसन पैसा एक भर ताके जवे कराय ॥ पुनि धेला भर नीरमें जल पैसा भर पाय ॥ १ ॥ तीनों को एकत्र कर नीचे आग जलाइ दि ॥ जल पय सब जल जाय तब खरल करै पुनि ताहि ॥ २ ॥ लुगदी लेय बनाय पुनि धेला भर घृत डार ॥ नले आँच पुनि दीजिये लाल होय तब तार ॥ ३ ॥ दो तोले अंदाज कर नीकी मिसरी लाव ॥ करै चाशनी युक्ति से ये सब दवा मिलाव ॥ कवित्त ॥ आधी रत्ती कस्तूरी मे रत्ती चार लौंग डार जायफलो दारचीनी माशा माशा दीजिये ॥ सोना के वरक एक माशा ये सब औषधी लै खूब पीस छान कर चाशनी मे दीजिये ॥ पुनि लहसन डार गोली बांधे जो सवांर पर गिन्ती मे चार कमो वेश मत कीजिये ॥ एक गोली खाय प्रात वायु मिट जाय रोग होय जो सिवाय सांझ एक और लीजिये ॥ दोहा ॥ इक्किस दिन तक ले इसे अथवा ले उंचास

वायु रोग का अंग में रहै सुजान न वास ॥

अर्थ ॥ लहसन पैसा एक भर के वारीक जवे तराश कर पैसा भर दूध और धेला भर पानी मिला के पकावे जब दूध पानी जल जाय तब उतार के खरल करके लुगदी बनालो इसे ६ माशे घी मे भूनो जब सुरखी पर आवे तब उतारलो अगर घी बचे तो अलहिदा करलो बाद इसके दो तोले मिसरी की चाशनी कर ये दवा और पीसकर मिलावे ॥ कस्तूरी आधी रत्ती लौंग ४ रत्ती जायफल १ मा० दारचीनी १ माशा सोने के वर्क १ माशा फिर लहसन डार

गोली ४ बनाओ १ गोली सुबे को खाऔ बीमारी सख्त होतो १ शाम को खावो २१ या ४१ दिन खाने से वायु की कुल बीमारी जाय बदन पुष्ट हो भूख लगे ॥ इति लहसनपाक ॥

इति वायुरोग की उत्पत्ती लक्षण जतन सम्पूर्णम् ॥१॥

इन रोगों से जो अपर रोग हैं उनके लक्षण जतन इस पुस्तक के दूसरे भाग में लिखे जावेंगे ॥ ॥ इतिश्री वैद्यक गुटका छंद भाषा पण्डित सुजान सिंह हेड मास्टर कृत समाप्तम् सम्बत् १९४५ फाल्गुण कृष्णा १४ भृगुवासरे शुभमस्तु श्रीरस्तु मंगल ददातु ॥

छन्द

नगर मेरठ वैश्यपाड़ो ज्ञानसागर मत्तवा
मुलतानिमल हरदेव सिंह पंडित जहां पर येछपा
ईसवी सन अष्ट दिग्गज वसु निशाकर जानये
विक्रमादित अंक नंद पुनंक बेद सुजान ये

समाप्तम्

श्री

यहपुस्तकपंडितसुजानसिंहहेडमा-
स्टरने वैद्यकके ग्रंथोंसे दोहेचौपाई
छन्दऔरकईचौवालेआदिमें उल्था
कियाऔरपंडितहरदेवसहायजूकोछाप
ने कीइजाजतदी बगैरइजाजत मा-
स्टर साहबकी कोईसाहबनछापै ॥

"The Baidiyak Gutka

Not to be printed with-
out permission of
Pundit Hurdeo Sahay
Printed at the Gyan
Sagur press Meerut
city

वैद्यरत्न



दर शहर आगरा मोहल्ला पुराना काजीवा
डा में मतबा हुसैनी में अमीरुद्दीन उर्फ़ क
ल्लन के प्रबंध से बहुत सुद्ध कारवा का०

श्रीगणेशाय नमः

अथ वैद्यरत्न

दोहा

नारदादि सेवत जिन्हें पारद विमद प्रकाश ॥ नारद
विधि बन्दन करहिं हिये शारदा पास ॥ १ ॥ वैद
आलस लखत बडो ग्रंथ अभिराम ॥ तिनको यह
छोटो करत वैद्यरत्न इति नाम ॥ २ ॥ अथ नारीप
रीक्षा ॥ भूखो प्यासो सयन युत तेल लगावे कोय
जैवो न्हायो तुरतही नाड़ी ज्ञान न होय ॥ ३ ॥ हाथ
अंगूठा निकट की नाड़ी जीवनि मूल ॥ तासो पं
डित देह को जाने सुख दुख मूल ॥ ४ ॥ नरको कर प
ग दाहिनो तिय को कर पग वाम ॥ तहां वैद्य जानै
निरखि नाड़ी को परिमान ॥ ५ ॥ सम्प्रदाय पोथीन सोअ
रु अनभव सों जान ॥ नाड़ी लक्षण वैद्य फिरि औषधि
कहैं बखान ॥ ६ ॥ जैसें परखै पारखो रतन जतन
कर एन ॥ नाड़ी निरखत वैद्य इमि भली भांति सुख
चैन ॥ आदि मध्य अरु अन्त में बात पित्त कफ जान

क्रमतें नाड़ी विधि यह नाड़ी को ज्ञान ॥ ८ ॥ मोर कबूतर पांडुराज हंस तमचूर ॥ इनकी गति नाड़ी निरखि कफ जानै यह मूर ॥ ९ ॥ बार बार इन की गति बार बार अहि गौन ॥ बात पित्त की नाड़िका पंडित जानै एन ॥ १० ॥ सर्प हंस गति सम चलै नाड़ी तब कफ बात ॥ सिंह हंस गति पित्त कफ नाड़ी तब यह धात ॥ ११ रहि रहि कठिन काठ ज्यों कठ परा करि सोर ॥ यों नाड़ी तब जानियों सन्निपात नहि जोर ॥ १२ ॥ तीस बेर लौं फरकि फिर नाड़ी रहि २ जाय ॥ तब यह निश्चय जानिये नाहि रोगी ठहराय ॥ १३ ॥ रहि रहि रहि कर फिर चलै नाड़ी बार बार ॥ तब रोगी के प्राण वह लेय रहीनि र धार ॥ १४ ॥ **छप्पय** ॥ जिमि जिमि अरु कुटिल कुटिल व्याकुल फिरि ॥ रहि रहि नाड़ी चलै राजाय सूक्ष्म है फिरि गिरि ॥ फरकै कंठ मझार नित्य नाड़ी पुनि नबहूं ॥ चलि चलि अंगुरी छुबहरि नाड़ी वह कबहूं ॥ इमि होय भाव बहुतहिं जबहिं नाड़ी ऐसे निरखि नित ॥ जानै असाध्य नाड़ी तबहिं सन्निपात बुध जानि चित ॥ १४ ॥ पहले पित्त गति होय वात गति होय बहुरि बहु ॥ कफ गति नाड़ी होय भेद कहि दियो बहुरि यहु ॥ चक चढी सी फिरे थान अपनो नाड़ी तजि ॥ बहुत भयानक होय मोर गति चलै बहुरि भजि ॥ पुनि होय जाय सूक्ष्म बहुरि जान किराच्य रस ॥ यह भांति होय जबहि तब असाध्य कहि घमरस १५ ॥ **दोहा** ॥ नाड़ी करकै मास मधिव इमभीर वर बानु ॥ नाड़ी ज्वर के जोर से कुपित उष्ण अति

जानु ॥१७॥ चौपाई ॥ काम कोप ते चंचल नाड़ी ॥ चिं
ता रोग छीन निरधारी ॥ छीन धातु मंदाग्नि भारी ॥ ता
की नाड़ी मंद बिचारी ॥ दोहा ॥ लोहू आम विकार
ते गरुई नाड़ी होई ॥ उदर अगिन अति तब चपल हलुके
लक्षण होय ॥ सोरठा ॥ लक्षण जानो एक भूखे की ना
ड़ी चपल मुनि जन करो विवेक अफरे की थिर जानिये ॥२०
दो० ॥ दुपहर अग्नि समान चर मल गिरि चंचल नारि ॥ वह
नर जीवे एक दिन मुनिन कही निरधारि ॥२२॥ जैसे ड
मरू चलत है यों नाड़ी चलि जात ॥ जो नर जीवे एक दिन
नीठ नीठ ठहरात ॥ इति नारी परीक्षा ॥ अथ जिव्हा
परीक्षा ॥ दरकी पीरी खरखरी जीव पवन कह देत ॥
लाल श्याम बहु पित्त से पिकले होवे स्वेत ॥२३॥ सूखी
कारी कंठ युत सनि पात कह दीन ॥ मिलवा लक्षण होय
के अशुभ सुलक्षण हीन ॥२४॥ इति जिव्हा परीक्षा ॥ अ
थ नेत्र परीक्षा ॥ सूखे चंचल धूमरे भीम जरत से नैन
निहचे उपजे ॥ जानिये वात रोग तब एन ॥२५॥ दीप
सुहाइन सेत पित्त पित्त नैन तव पीत ॥ गीले चिकने तेज
घट मंद जात कफ मीत ॥२६॥ वात पित्त कफ वात के कै
कफ पित्त मिलंत ॥ तब मिलवा लक्षण कहे नैन वान लखि
संत ॥२७॥ कारे टेढे अरु अरुन तेत न्द्रा जुत तब देष ॥ लाल
भयानक नैन लखि कहत त्रिदोष विवेक ॥२८॥ आंख
भयानक एक लखि वह दूजी मुंद जाय ॥ तब रोगी दिन
तीन में यम के घर ठहराय ॥२९॥ चौपाई ॥ जाकी आं
ख अलज सम वारी ॥ लाल कि होइ रकत अनु हारी ॥ चित
वन लगी भयानक भारी ॥ तब रोगी की मीच बिचारी ॥

दोहा ॥ भ्रमते दृग तारे फिरैं एक ठौर नहिं चेतु ॥ एकरु
ति में यम नगर रोगी मारग लेत ॥ ३१ ॥ इति नेत्र परीक्षा
॥ अथ असाध्य व्याधि निरूपनम् ॥ छप्पय ॥
नींद नास निशि होय कंठ कफ़ भरि आवत होत देह
मधि दाह चैन फल एक न पावत ॥ वात कहत तुत-
रात होय लघु इन्द्रि यमून वल बदन सकत लैय जी-
व बिचारी ॥ होइ जाइ रोग जुडुमि तुरत रोग आधा
न जब ॥ ताकहं बिचारि औषधि कहत राम नाम
तजि काम सब ॥ ३२ ॥ अथ ज्वराधिकार ॥ जा
ने सगरे रोग को ज्वर राजा सिरदार ॥ ताते पहले कह
तहों अब खरको अधिकार ॥ दो० ॥ अथ वात ज्व
र ॥ धनासरी ॥ कंप वेग कंठ मुख होठ सूखे निंद्रा
नाश छींकहू न आवे होइ देह में रूखाई ॥ जास अंग
हिय मूड पीर वदन निरस होय गांठ वाढि बात बदन
उरू सो विषले पहाई ॥ जानौ संधि को सम भय दंत
लोम हरष सुख काम वमन जो होइ बात ज्वर इमि जा
नतो ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ पीठ मूत नैन अरुन प्यास मलाप
जंभाइ ॥ सूल अफर वो बात ज्वर लक्षन विधि यह आ
इ ॥ ३५ ॥ इति अथ पित्त ज्वर ॥ चौपाई ॥ तीक्षन वे
ग जोर अति सार ॥ आलस नींद उकलेद अपार ॥ कंठ हो
ठ मुख नाक बखानो ॥ तिन का पकि वो वह मन आनो ॥
स्वेद प्रलाप बदन कडुताई ॥ दाह मूर्छा तृषा वताई
। भ्रम मल पीतम घन मल आदि ॥ पित्त ज्वर लक्षण अ-
रू आदि ॥ ३७ ॥ अथ कफ़ ज्वर लक्षण ॥ चौपाई
॥ दिन चल अंग वेग पतराइ ॥ मधुर मदन आलम ठहरो

ई ॥ मल अरु मूत स्वेत रंग होइ ॥ तमः तृतिय जानो ये दोई ॥ ३८ ॥ गुरुता सीत अरु उकलेद ॥ रोम हर्ष निद्रा द्वि भेद ॥ फरिया अंग सीत पर सेंक ॥ कंड तन्द्रा छर्दि विवेक ।३९ ॥ तात बस्तु बहुत मन माने ॥ मंद पेट की अगिन बखाने ॥ पीनस अरुचि सेत दृग कांस ॥ कफ़ ज्वर कोय ह कहो प्रकास ॥ ४० ॥ इति ॥ अथ वात पित्त ज्वर ॥ चौपाइ ॥ तृषा दाह मूर्छा आई ॥ नींद न आवे मूड पिराई ॥ भ्रम मुख कंठ शोष अधिकारी ॥ रोम हर्ष वमिअ रुचि बताई ॥ ४१ ॥ गांठि गांठि उपजे अति पीर ॥ मानो लागे निसरे तीर ॥ मोह होइ अरु होइ जमाई ॥ बात पित्त ज्वर रीत बनाई ॥ ४२ ॥ अथ वात कफ़ ज्वर ॥ चौ॰ निश्चल अंग नींद अति आवे ॥ गांठनि गांठनि पीर बढ़ावे ॥ पीनस रोग होय अरु कांस ॥ मूंढ पिराइ पसीना नास ॥ ४३ ॥ वेग होइ मध्यम नहि जोर ॥ देह सांस संताप कठोर ॥ ऐसे लक्षण जब अनुमाने ॥ बात कफ़ ज्वर तबही जाने ॥ ४४ ॥ अथ पित्त कफ़ ज्वर ॥ चौपाइ ॥ लिवर अरु मूह करोई ॥ तंद्रा मोह प्रगट ये होइ ॥ कांस अरुचि अरु लागे प्यास ॥ फिर फिर होइ दाह परकास ॥ अरु फिरि फिरि जाड़ो लगि आवे ॥ रोगी पाल पल चैन न पावे ॥ प्रगट होइ जब लक्षन राह ॥ पित्त कफ़ ज्वर तब बुध कहेह ॥ ४५ ॥ इति पित्त कफ़ ज्वर लक्षण ॥ अथ सन्निपात ज्वर लक्षण ॥ चौ॰ छिन में जाड़ो छिन में दाह ॥ मूड पिराइ न होइ निवाह ॥ संधि हाड़ में होवे पीर ॥ नैननि में भरि आवे नीर ॥ करन नाद नैन हमिलाल ॥ भरि रासे है मनो गुलाल । करन ना

द अरु कौन पिराई॥ कंटक होइ कंठ भरि आई॥ ५८॥ तहां मोह प्रलाप प्रकाश॥ स्वास अरुचि चित अरु भ्रम उपजै कांस॥ जीभ खुरखुरी जरे समान॥ सिथल अंग सब होइ निदान॥ कफ़ लोहू उगले मुख पित्त॥ धुनै सीस दुख पावै चित्त॥ नींद नास तृष्णा अधिकारी॥ हिये होय तृष्णा अति भारी॥ आवे अल्प पसीना अंग॥ थोरी नींद मूत संग॥ देह दुखरई अधिक न आई॥ घन सम कंठ बनो घहराई॥ देह ददोरा कारे लाल॥ पंडुल होंहि कि बहुत विसाल॥ पकै कान मुख बोलन आवै॥ अधिक उदर मधि खोन बनावै॥ जाड़ो लगै सबै दिन सोवै॥ और जागन सबरी निशि खोवै॥ रैन दिना के सब जागत जाई॥ बहुत पसीना कै नहि आई॥ हंस हंस नाचै गावै गीत॥ लीला निरखि होय मन भीत॥ बहुत दिना रोग पचि जाई॥ सन्निपात ज्वर लक्षण आई॥ इति॥ अथ ज्वर लंघन करण॥ दोहा॥ ज्वर में लंघन में लंघन प्रथमही मुनिजन दियो बताय॥ कांस स्वांस भय कोप क्षय वात जुरहिं कहाय॥ चौ०॥ वात ज्वर अरु छई ज्वर वारो॥ भूखो होइ कि बहुत बिचारो॥ गर्भिन नारी बालक प्यासो॥ बूढो अरु डरपोकर प्यासो॥ अरु दुरबल इन मधिगति ताई॥ इतने रोग वृद्धि मन लेइ॥ लंघन करन इनकह नहि देइ॥ दोहा॥ लंघन मानुष करत है दोष सकल वह आइ॥ दोष गये फिर कै सेइ लंघन कह्यो न जाइ॥ ६०॥ साते राति में वात ज्वर पित्त ज्वर दस राति॥ कफ़ ज्वर बारह राति में पचत कहत मुनि जात॥ ६१॥ सात रात में तरुन ज्वर बारह मध्यम जान॥ अरु गिवारह

रात में सीरन ज्वर मन आनि ॥ प्यास भयानक बूड़
त जो प्यास हरत है प्रान ॥ प्यासे कहं जल दीजिये
वात है निदान ॥ ६३ ॥ मोह प्यास ते होत है प्यासेह
लेत है प्रान ॥ ताते रोगी को न बुध बरजै जाको पान
६४॥ दोहा ॥ नैन रोग ज्वर मंडल भंग ॥ ऊपर रोग
को लीग परसंग ॥ मंद अगिन अब अरुचि विचारो
॥ मुख रूखो पीनस निरधारो ॥ मग अरु सोथ रोग
फिर वैसे ॥ कोरा अरु मध मह जो तैसे ॥ इतने रोग
जाहि लखि पावै ॥ ताहि कुनकुनो नीर पियावै ॥
६६॥ **सवैया** ॥ मूर्छा दाह महा गरमी अरु पित्त घनो
जिन से दुख पावै ॥ राह चलै अति हाय परि श्रम छांह
लगे कछु जासो न भावै ॥ पित्त करत को दाह को जोर
कियो एतो माहुर जोर जतावै ॥ होत है रोग इते नर जो
कह ताकहं सीतल नीर पिवावै ॥ ६७ ॥ चौपाई ॥ ५
पीनस अरु नूतन ज्वर जानि । और गल यह रोग बखा
नि ॥ पीर पसुरिया की कह देइ ॥ संग्रहनी पुनि मन ध-
रि लेइ ॥ आध मान अरु अरुचि बताइ ॥ बात दिया अ
रु कफ पित लाइ ॥ गुल्म रोग कास अरु स्वांस ॥ विद्र
धि रोग सो होइ प्रकास ॥ बार बार हिक्का जो होइ ॥
स्नेह पान न करे जो कोइ ॥ इतने रोग जाहि लखि पा
वै ॥ ताकहं ताते नीर पिवावै ॥ **चौपाई** ॥ औटे ते
निरवेग जल निरमल फेन विहीन ॥ आधो बाको जब
रहै उष्ण उदक कह दीन ॥ स्वास कास ज्वर मेद कफ
बात अरुचि मिटि जाय ॥ सोधे वपुरे आगिन ९
उष्ण उदक गुन गाय ॥ चौथो आधो आठवो

हंस घटावे नीर ॥ ७३॥ चौपाई ॥ चरन हीन जल वात नसावे ॥ आधो हीन पित्त विनसावे ॥ कफ हर तीन अंस जल हीने ॥ लघु पाचन दीपन कह दीने ॥ ७४
दो० सन्निपात ज्वर जुगल ज्वर ताकी वेदन जाइ ॥ उष्म उदक ही जान अति वैद्य पिवावै ताहि ॥ ७५ ॥ चौपाई ॥ आध पाव जल सरस घटावे ॥ चरन हीन हेमंत बनावे ॥ ग्रीष्म ऋतु अरु शिशिर वसंत ॥ अरध घटावे यह सुनि मंत ऋतु विपरीत सुवर्षा भाषे ॥ तब जल अंस आठवा राखे ॥ उष्म उदक कहि सरस विधान ॥ सुनि जल सब महु कहे निदान ॥ इति उष्णोदक विधि ॥ दोह ॥ लंघन ज्वर की आदि करु पाचन दे ज्वर बीच ॥ क्षार लेप ज्वर अंत में जात रहे ज्वर नीच ॥ अथ ज्वरो पचार
सोंठ धना सुरदारु अरु दोइ कटाई लेइ ॥ ज्वर आवे ताको पहल यह पाचन कर देइ ॥ फिर वासो मोथा मिले काढो देइ बनाइ ॥ ताके पीवत तुरतही वात ज्वर मिट जाय ॥ कुटकी मोथा जाय फर नीम छालि करि क्वाथ ॥ पित्त ज्वर को इन्द्र जौ सहित सवे दिन खाय ॥ नीव छाल गुड़ वे धना अरु चौथे पद मारव ॥ एतो चदन सकल ज्वर हरे क्वाथ मुनि भाष ॥ मठा पानी अरुचि पुनि दारु छर्दि अरु स्वांस ॥ इन को याही क्वाथ सों जानो तुरत निकास ॥ ८ ॥
पित्त ज्वर हरन को पित्त पापड़ा मीर ॥ चन्दन मोथा कहो अरु मिल जाइ उसीर ॥ चन्दन धनिया पापरा सोंठि उसीर समान ॥ तृषा दाह ज्वर वमि हरे सीतल क्वाथ निदान ॥ मोथा गुड़ मे पापरा फिर वाराख उसीर ॥ पंच भद्र काढ़ा करे वात पित्त ज्वर पीर

८५॥ चौपाई॥ त्रिफला अरु सैमल की छाल॥ इन मधि फिरि गासन कहि घाल॥ फिर बारी और बासा मेले॥ बात पित्त ज्वर क्वाथ ढकेले॥ दोहा॥ दाख सोंठि गुरु मैं मिलाय मे ले पुहकर मूल॥ क्वाथ बात कफ ज्वर हरै करै त्रिदोष निर्मूल॥ फिर बारो मोथा हरर कुटकी पीपरामूल॥ क्वाथ महा कफ बात ज्वर तुरत करे निर मूल॥ चौपाई॥ गुरवै कुरकी मोथा लावै॥ उदा निंबु की छाल मिलावै॥ सोंठि इंद्र जव पर वर पान॥ चदन डारै वैद सुजान॥ ९९॥ विधि सौं काढो औटि उतारै॥ पीरि चूरन नामहि डारै॥ अम्रतारु यह काढो आई॥ पित्त कफ ज्वर कढो जाई॥ १००॥ दोहा॥ पर वर चन्दन मुरहटी कुटकी पाढ गिलोय॥ पित्त कफ ज्वर दाह बमि कंइ हारै खोइ॥ १०१ सामस जाडो तीन फल निंब सुपर वर पात॥ इन के काढे सो तुरत पित्त कफ ज्वर जात॥ १०२॥ लंका उत्तर कोन में कुमुद नाम कपि रइ ताके सुमिरन करत ही तुरत इकतरा जाइ॥ १०३॥ चौपाई॥ पर वर पात निंब की छाल॥ दाख और फिर बारो घाल॥ त्रिफला और अडसी डारै॥ क्वाथ करै इकतरा विडारै॥ १०४॥ दोहा॥ सेहत खांड यह क्वाथ में आन डारै बैद्य सुजान॥ क्वाथ देहित ब पान को यह बैदक को त्रिफला पर वर इन्द्रजव मोथा निंब सुदाख॥ हरै इकतरा क्वाथ ज्वर कही बार दस लाख॥ १०६॥ हरै जवासा इन्द्र जव पर वर गुरुवे नीब॥ जात रहै यह कासों संतत ज्वर अति भीम॥ १०७॥ सोंठि धना गुरुवै सरस चन्दन मोथा लेउ॥ यह उसीर इन नीम्र बकुरि चतुर

जान कहदेउ ॥ क्राथ को इन को जहां डारै मधु अरु-
खांड ॥ या काढ़े से वेदाह ठिकरे तिजारी भांड ॥ १०९
छप्पय ॥ लंका पति मद हरन जानुकी सोच विदारन ल
छमन क्षत्रिय तिलक पान रक्षा के कारन ॥ इद्रिय
जीतन हार सुभट राक्षस कुलगारन ॥ पवन तनयब
ल वंत नगर लंका पति जारन ॥ हनुमान के नाम जो
नित उठि प्रातहि नर पढ़हि ॥ ताके न फेरि दुख कर-
न वह ज्वर तृतिये कवहू चढ़हि ॥ ११० ॥ सोंठि हर्र
कटसेरुआ आग कला सो नोन ॥ डारि अरु सा इभि
करे जिम काढे की हौन ॥ १११ ॥ दोहा नामहि मिश्री
डारि कै सहत सहित ले खाय ॥ मंदाग्नि या सों मिटै चा-
तुर्थिक ज्वर जाय ॥ ११२ ॥ देव दारु हर्र: वहुरि सोंठि
अरु सो होइ ॥ इन ही में सालोनि फिरि आम कलारी-
होइ ॥ ११३ ॥ काढ मैं मिश्री सहित डारि भली बिधि
खाइ ॥ स्वांस कांस घटि अगिन अरु चातुर्थिक ज्वर
जाय ॥ ११४ ॥ रस अगस्त के पान को काढ़ पाथर कूटि
॥ नास लेइ नर जाय तो चातुर्थिक ज्वर छूटि ॥ ११५ ॥ चौ
पाई ॥ मोथा और कटाई छोटी ॥ सोठि आंवरे गुर से
मोटी पीपरि सहित डार कै प्यावै ॥ काढो विषम ज्वर
हि नसावै ॥ ११६ ॥ दोहा ॥ गुरु अरु जीर मिलाय के
पैसाभरि नित खाय ॥ वात वेदना लघु अगिनि और वि
षम ज्वर जाय ॥ ११७ ॥ चून करके हर्र को मधु सों लेइ
चढाय ॥ विषम ज्वर के हरन को औषधि दई बताय ॥
११८ ॥ पीपरि पांच दूध में प्यावे ॥ पांच पांच वे रोज व
ढावे ॥ ४ ॥ ५ ॥ सो पीपरि लौं बढती करै ने सेहिं

फिर घटती उर उर चै ॥ स्वांस वात और रुधिर विका
र ॥ पांडु अरस और सोथ अपार ॥ गुल्म उदर विषम
ज्वर आई ॥ १२० ॥ दोहा ॥ वर्द्धवान पीपरि भषे जो न
र यह सुख पाय ॥ और भख सब छोड़ि कर दूध भात
वह खाय ॥ १२१ ॥ भगरा की जड़ कान में बांधे डोरा
डारि ज्वर आवत है रात को ताको देइ बिडारि ॥ १२२ ॥
ऐसे हिं बाधे कान में स्वेत आक की भूल ॥ तासों सवरे
और ज्वर तुरत करे निर्मूल ॥ १२३ ॥ बांधे सेत कनेर
की जड़ कर में नर लाय ॥ तासों निहिन्वि जानिये संत
त ज्वर मिटजाय ॥ १२४ ॥ सोरठा सहदेई की मूल ल्या
वे वसन उतार सब ॥ चातुर्थिक ज्वर जाय कान बांधहिं
जवहिं १२५ ॥ दोहा ॥ को बांधेदी पात को रस काढो कुट
वाय ॥ वासों अंजन करत हीं चातुर्थिक ज्वर जाय ॥ १२६
॥ पीपरा मूल हरीत की मोथा मोकर काथ ॥ ताके खाये
मिटत है आमाशय ज्वर साथ ॥ १२७ ॥ इति काथः ॥
अथ अधूरो ॥ दोहा ॥ कूटि सोंठि असगंध वड़ारि
सरसों ले समजानि ॥ करि अधूरो अंग में पित्त ज्वर क
र हानि ॥ १२८ ॥ अथ अवलेह ॥ चौपाई ॥ पोह
कर मूल कायफर लेइ ॥ काकरा भृंगी पीपरि देइ स
हत डारि के वैद्य चटावे ॥ स्वांस कांस ज्वर कफ़हि
न सावे ॥ १३० ॥ दोहा ॥ स्वांस कांस ज्वर कफहिं न
सावे ॥ १३१ ॥ दोहा ॥ औटि पीसि मथि मेनहर वैद्य
लगावे अंग ॥ हाथ पांय को ज्वर जनित हरै दाह पर
संग ॥ १३२ ॥ चौपाई ॥ दाह देह जाकी नित जारै ॥
ताको पहले उताने पारै ॥ फिर कांसे को वासन आने

जामैं अधिक गहराई जानै ॥ वासन ल्याय दूंडी पर धौ
शीतलाता यह व्यापै ज्यों ज्यों ॥ दाह मिटै तन की वह त्यै
त्यौं ॥ १३३ ॥ दोहा ॥ पातनीम कै बेर मथि करि उपजा
वे फन ॥ फैन लगावे देह में दाह मिटै यह अैन ॥ १३४
अथ चूरण ॥ हरड़ आमरे पीपरें चित्रक सेंधा नोंन
चूरन मंदागिनि अरुचि ज्वर मल धन को पौन ॥ १३५
॥ धनाक्षरी ॥ छप्पय ॥ कर्ष एक तालीस कर्ष कर्ष दे
मिरचै लीजै ॥ कर्ष तीनि लै सोंठि चारि पीपरियै दी-
जै ॥ पांच कर्ष भरि तहां वंश लोचन वधु आनै ॥ आध
कर्ष तज आन आध एला लघु जानो ॥ मिश्री मिला
य बत्तीस फिरि करष चूरण करई ॥ ज्वर दाह सो
थ अफरा अरुचि स्वांस छई पिलहा हरई ॥ १३६
॥ इति चूरण ॥ अथ तैलम ॥ हरदी लाप मजी
ठ को कलक करहु बुध वीर ॥ लेहु तेल छः गुनो
वहुरि दही की नीर ॥ १३७ ॥ छाड़ि कलक वह ते
ल में डारै वैद पचाय ॥ तेल लगावे अंग में शीतल
ज्वरये जाय ॥ १३८ ॥ चौपाई ॥ लै मजीठ अरु बड़ो
कटाई ॥ सेंधो कूट शतावरि भाई ॥ जाय मासिका
रासना आनो ॥ एक प्रस्त भरि तेल बखानो ॥ चा
रि प्रस्थ लै दधि का पानी खरल करै लै औषधि आ
नी ॥ १३९ ॥ कलक दही को पानी डारि ॥ तेल बढा
वै वैद विचारि ॥ सिद्धि होइ तव तेल उतारै ॥ ते-
ल लगावे सव ज्वर जारै ॥ इति अंगार तैलम ॥ अ-
थ रस ॥ सोधि लेहु विष गंधक पारो ॥ कनक वी
ज तीन उसम भारो ॥ इन तें दूनी त्रिकुटी दीजै ॥

नोषा लाइ काढ़ो करि लीजे॥१४०॥ चूरन करे भा
वना चारि॥ काढ़े की मन बुद्धि बिचारि॥ सुख द
पा मधि वरिन लेई॥ दो रत्ती पीवे कद देई॥१४१॥अ
नो पान आदो रस लेइ॥ कींतो जे भारी गूदा देइ॥ या
को गुन सब देहं बताइ॥ नित ज्वर और इक तरा भारी
॥ याके खाये जाय तिजारी॥ बिषम ज्वर चातुर्थिकू
जाय॥ सव ज्वर की यह औषधि आइ॥ अथ सन्नि
पात चिकित्सा॥ दोहा॥ तीन दिना कै पंच दिन
दश दिन करे उपास॥ सन्निपात ज्वर जानिके करि जी
वे की आस॥१४२॥ काढ़ो करि दश मूल को पीपरि रि
डारि पियाउ॥ सन्निपात जोर अति ताको वेगि नसा
उ॥१४३॥ कुटकी सोंठि चिराय तो दारू हरद दश
मूल॥ धना इन्द्र जव लीजिये सम पीपरि सम तूल
१४४॥ ये औषधि सव जोरि कर पीवे क्वाथ वनाय।
स्वास कांस तंद्रा अरुचि दाह मोह ज्वर जाय॥१४५
धना हरी॥ भारंगी चिरायतो इन्द्रोरन की जारि छाल
नीव की ले मोथा वच कुटकी हरद दे॥ पीपरि मरिच वा
य सुरही आदि सों निसोत देव दारू जवासो पटोल इक
पात दे॥ पुहकर मूल त्रायमाण ब्रह्म नोनिया गुड़ची
दारू हरद निसोत सो अती सउ मिलाय के॥ सोनो इन्द्र
जव पाडवर कटाय और त्रिफला कचूर सव औषधि जमा
य कै॥१४६॥ स्वांस कांस मूल और हिच्च की पवन विथा गु
ह जाको जो होत अधमान है॥ पींच को पिर वो और पिं
डरी को पिराइ वो और आन की वदन की विथा जो निदा
न है॥ संधि संधि विथा को विनास करे पलक यह वुध

जन को परम बखान ॥ सन्निपात ते रहै मतंग ताके मर्दि
वेको यह क्राथ ॥ यह सांचु कहि सिंह समान है ॥ १४७
दोहा ॥ दै हरदी त्रिफला बहरि कुटकी मोथा लेउ ॥ नीव
छाल सुपटोल रस अलप खटाई देउ ॥ अथ सन्नि
पात अवलेह ॥ चौपाई ॥ पुहकर मूल काय फरली
ज्यौं ॥ काकरा भृंगी त्रिकुटा दीजियो ॥ डार कलौंजी
और जवासो ॥ चूरन करै मिहीं अति वासो ॥ सहत
डार चूरन यह चाटै ॥ हिचकी कांस स्वांस कफ काटै
॥ कंठ रोग वासों मिट जाई ॥ सन्निपात को ओषधि आ
ई ॥ दोहा गुरु वे मोथा सोंठि ले और चिरायतो डारि ॥
चूरन आदे रंग सो चाटै कफहिं बिडारि ॥ १४८ ॥ अथ
अधूरो ॥ दोहा ॥ वच चिरायतो काय फर कुटकी ले
उ सभारि ॥ करो अधूरो कूटि के और कलौंजी डार ॥
१४९ ॥ ज्वर त्रिदोष को जाय अरु मिटै अंग पर सेद ॥
या विधि मुनिजन कहत हैं या ओषधि को भेद ॥ १५०
सोंठि मिरच पीपरि हरर लोघ सु पोहकर मूल ॥ कुटक
लौंजी इंद्रजव कुटकी और कचूर ॥ इन मधि डारि चि
राय तो चूरन करै बनाय ॥ सन्निपात ज्वर हरन काम-
लो अधूरो आइ ॥ १५१ ॥ कुलथी भूनि पिसाय के करै
अधूरो अंग ॥ सन्निपात अरु ज्वर मिटै सकल पसीना
भंग ॥ १५२ ॥ इति अधूरो ॥ अथ नास ॥ दोहा बच
पीपरि सेंधा बहरि अरु महुआ को सार ॥ नास देइ
नि हचै सु नर भयेउ अचेत अपार ॥ १५३ ॥ अथ
कर्णिक सन्निपात ॥ दोहा ॥ आदि मध्य अरु अंत
में करन मूल अधिकाय ॥ वह असाध्य दुखसाध्य सुख

साध्य सुक्रमतें आइ ॥ सोंठि कलौंजी कायफर कुलथी ये सम आनि ॥ करन मूल कहं कुनकुनो लेपन कर कर जान १५४॥ अरनी सोंठि सितावरि आनो ॥ देवदारु रासन फिरि जानो ॥ और बिजोरे की जड डारे ॥ करन मूलयह लेप बिडारे ॥ अथ सन्निपात रसः ॥ त्रिकुटा नोन पांचहू लेऊ ॥ सोंठि बक्वरि दोउ जीरे देऊ ॥ तीन न वार तेहू ले धरे ॥ औषधि ले चूरन करे ॥ सेंधो पारो गंधक लीजे ॥ मारो अभ्रक तामाहि दीजे ॥ ये औषधि ये औषधि सब लेय समान ॥ आदे को रस काढ सुजान ॥ १५५॥ ता रस में ये औषधि साने ॥ सुरस खरल अरु सोटा आने ॥ डारि खरल में औषधि लेऊ ॥ एक दिना लगि रगरे देऊ ॥ वीरभद्र नाम रस आइ ॥ मासे भरि यह देइ खवाइ ॥ आदो सेंधो चित्रक लीजे ॥ अनो पान जल में घिस दीजे ॥ १५६॥ बीरभद्र यह रस कहेउ मुनिजन चतुर सुजान ॥ सन्निपात गज हरन को यह है सिंह समान ॥ १५७॥ प्रात गरू रस दीजिये यह पोषन की बात ॥ रस खवाय पुनि दीजिये मध्य दूध अरु भात १५८

इति सन्निपात ॥ अथ ज्वर दशा उपद्रव ॥ दोहा ॥ स्वास मूर्छा अरुचि अरु छेर्दि तृषा अतिसार ॥ मल वध हिक्की कास अरु अंग पीर सरदार ॥ १५९ ये ज्वर के दश जानिये कहेउ उपद्रव ऐन क्रमतें औषधि कहति हौं ज्यों पावे नर चैन ॥ चौपाई ॥ त्रिकुटा मोथा और कचूर ॥ पथर सगा और पुहकरमूल ॥ पांच मूल और लेइ कटाई ॥ तिन मधि गुरुच वै और बताई ॥ ये औषधि सब लेइ समान

यह काढो करि वैद्य पिवावै ॥ स्वांस उपद्रव तुरत नसा
वै ॥ १६० ॥ दोहा ॥ फिर वारो दाखै बडी कुटकी हरर उ-
सीर ॥ क्काथ पापरा सहित यह हरै मूर्छा धीर ॥ १६१ ॥
कौनि सोत मिश्री हरर चूरन सहत मिलाय ॥ चाटै
तासो तुरतही विकट मूर्छा जाय ॥ १६२ ॥ वार वार मु-
ख में धरै सोंठि मिरच यह नीर ॥ अरुचि हरन को मुख ध
रहि निंबु वारस मुनि धीर ॥ १६३ ॥ काढ विजौरे को सु
रस केसर नोन मिलाय ॥ मधु जुत राखे वदन में तासों अ
रुचि नसाय ॥ कुटकी पीपरि सहत जुत मोर पंख की रा
खा कै गुरु में करि क्काथ मधु छर्दि हरै मुनि भाष ॥ आंम
रे विजौरे चूक निंबु वारस जंभीर ॥ जाभले अमले इते ह
रै तृषा गंभीर ॥ रूपे की गोली करै वह राखे मुख माहि ॥
ताही सों वह जोर अति नर की तृषा बुझाय ॥ तज पत्र
ज और इलायची चन्दन दाख उसीर ॥ चूरण मिश्री स-
हत जुत यह याको गुन धीर ॥ ले चिरायतो पापरा गुरु वै
मोथा पाढ सोंठि अरु इन्द्रजव कुटकी तहां विचारि ॥ य
ह औषधि सब जोरि के काढो यह तार ॥ या काढे के पी
यत ही ज्वर अतिसार भगि जाय ॥ अनुलोमनु विधि ज्ञा
तरह करे जाते मल वंध ॥ तीक्ष्ण फल बतीन सों के काढे
मल वंध ॥ थोडा निर्मल नीर ले सेंधो नोन घिसाय ॥ नास
दइ याको जनहि तव हिचकी मिटजाय ॥ पीपरि पीपरा
मूल ले सोंठि दंद्र जो चूर ॥ चूरण चढावे सहत सों करे
काम को दूर ॥ काढि अरूसे को सुरस मधु सों चाटि मि
लाय ॥ जाको चाटे से तुरत कांस दूरि हो जाय ॥ ज्वर विशेष
निज दारु को सीतल करै निदान ॥ मिटे उपद्रव ज्वर मिटे

यही वेद को ज्ञान॥ सहस सीस हरि जगत पति न के
वो महाराज॥ तिन सौं हरि अस्तुति करें सब ज्वर जाइ अ
पार॥ इति श्री स्वामी जनार्द भट्ट विरचिते भाषा वैद्यरत्ने
प्रथम प्रकाशः १॥ अथ अतीसार चिकित्सा॥
अगिन बुझाव न उदर की जब बाढ़ी जल धात॥ होइ पवन
आधीन मल सहज तरे वह जात॥ स्रवण लगी मल जल स
रस जब ही बार बार॥ अतीसार यह जानियो विविध वदे
निरधार॥ वात पित्त कफ सोष अरु आम त्रिदोष जु और॥
या विधि ऐसे जानियो अतीसार छः ठौर॥ ३॥ धना सोंठि
मोथा बहुरि वेल उसीर सुहाय॥ आम सूल और बंध हर पा
चन क्काथ पकाय॥ ४॥ धना आदि दे पांच हैं तिन में सोंठि
चाढ़॥ क्काथ करे यह पित्त को छिन में देय बहाय॥ मोथा
वेल उसीर और धनिया सोंठि अतीस॥ क्काथ करे इन को
हरे तो विवेध जगदीस॥ ६॥ आंव सूल और ज्वर हरे औ
र सर कन अतिसार॥ यह जानो यह क्काथ को कहो
जो गुन विस्तार॥ ७॥ चूरण चित्रक कूट को चांटे सहत
मिलाय॥ रक्त पित्त बहु दिने को अति कष्ट त पुनि जा
य॥ ८॥ अरिल्ल॥ मोथा और उसीर को चारो पुनि लीजि
ये॥ पाढ़ पीय के फूल सुन्दर बाढ़ी जिये॥ चन्दन लाल
अतीस क्काथ इन को करे॥ परिहां हो जी कूट जो षक
अतिसार नीके हरे॥ ९॥ दारु रक्त और सूल आंव के रो
ग जे॥ अतीसार के भेद और सब जान ते॥ तिन को से
वन हार क्काथ यह जानियो॥ परिहां जी याके गुन ये
सांच चित्त मन आनियो॥ धनाक्षरी छन्द॥ आछी
मोकी बकुला कुर को लाइची काके धावन थांवे माही रो

लाके कारन कौ॥ जामन केई आछे नीके पान न कौ॥ दैना
करै गोली जो बनावै मह ताही के धर्म कौ॥ वांध कस सेभा
पेट माटी पुट पाक करि काढ़ि सब पावै मेल मधु के चाट
न कौ॥ कृष्ण अत्रि सुत ताकौ कह्यौ सबै औषधि ते जो-
ग राज अति सार के घटन कौ॥१२॥ दो०॥ पानी बूंद वा
हारके जो जो ओटे जात॥ त्यों त्यों बुध वा जानियो अती
सार घन कात॥१३॥ अथ संग्रहनी अती सार जव
हीं मिट जाय॥ मंद अग्नि तव रहे वो खाय॥ तासें आग्नि
उदर यह सोखै॥ उदर अग्नि तव ग्रहणी दूखै॥ गृहणी
दूख ना अन्न पचावै॥ जो कछु खाय काचो निक सावै॥
पचै न पीर बहुत दुरगंधी॥ फिरि २ द्रवै और फिरि वंधी
॥१५॥ दोहा॥ संग्रहणी को यह कह्यौ लछमन विवि
ध विचार॥ इमि संग्रहणी जानि तव करियै उपचार
॥१६॥ सोंठि बेल सम धना और सेंधो नोन मिलाय॥ वा
त संग्रहणी वंधको काढ़ो करि के खाय॥ चौ०॥ मोथा
लोध कुर की छाल॥ सोंना सोंठि खटाई घाल॥ वेल त
जाल मादा उसीर॥ और मोचरस डारो धीर॥ आंव छाल
इन्द्र जो आनै॥ और बत्तीस तै दून मधि छानै॥ सोरह मासे
चूरण खाय॥ चावर धोवन सहत मिलाय॥ १८॥ संग्र
हणी करि डारै छार॥ अती सार रुज और अपार तिन
को कर कह्यो विवेक॥ गंगा धर यह चूरण एक॥२०
इति गंगा धर चूरण म॥ दोहा॥ सोंठि धाय के फूल
अरु मोथा वेल मिलाय॥ छाल कुर की इन्द्र जो
कुटकी पाठ सुखाय॥ मिलै रसौत अतीस अरु
चूरन करै बनाय॥ चावल जल सों घोरि घोरि के

सहत डारि के ष्यावा ॥२२॥ पित्त संग्रहणी अरस अ-
रु गुद पीड़ा अति सार ॥ नागरादि चूरण हरै एते दोषनि
रुधारि ॥२३॥ इति नागरादि चूरण ॥ धनाक्षरी छ-
न्द॥ गंधक १ अफीम २ पारा २ कौड़िन की राख ७ टि
ष१ पीपरें ८ धतूरे के बीज २० सोधि लीजिये ॥ दश चा
र दोऊ सात एक आठ तीस फेरी गंधक से क्रम ही सों अं
स इमि कीजिये ॥ गृहणी कपाट रस तीन रत्ती भरि
यह जीरो अरु सहत सब सो खैबे को जबरी जिये ॥
उदर बंध अफरा हरै संग्रहणी अती सार आमाशय
रोगनि को केसेहू न छीजिये ॥२४॥ इति संग्रहणी
कपाटरस ॥ दोहा ॥ एक और सब और सब अषधै स-
हणी को जानिये ॥ एक और जानो मठा यह सुनि
कह्यो बखानि ॥२५॥ चौपाई ॥ वैद तहां लै मठा
वढावे ॥ बंध्यो जहां लो मल पुनि आवे ॥ क्रम ही
क्रम पुनि मठा छुटावे ॥ तब रोगी को नाज खवावे
॥ इति संग्रहणी ॥ अथ अरस ॥ दोहा ॥ वात पित्त
कफ सहज ते लोहू और त्रिदोष ॥ छः प्रकार गुद मव
ल में होत अरस को दोष ॥ इकस बहु भांति के भेद भाप
और ख्याल ॥ गुद मधि अंकुर मास के करै अरस ब
हु ख्याल ॥२६॥ चौपाई ॥ एक टका भरि मि
र्च लेहु ॥ सोंठि दोइ टका भरि देहु ॥ चित्रक चारि
टका भरि लीजे ॥ आठ टका भरि चूरन माने ॥ सब
चूरण गुर फिरि डारि ॥ बांधो गोली युक्ति स-
भारि ॥ यह प्रसिद्ध प्राण मोदक जानो ॥
ताको फल इमि सांच प्रमानो ॥ २७ ॥ अरु यद रोगन

पावै चैना ॥ अरस रोग को औषधि औना ॥ ३१ ॥ पैसा भरि इलाइची लेउ ॥ द्वै पैसा भरि तज पुनि देऊ ॥ पत्रज पैसा तीनि समान ॥ चार भाग गज केसरि जाना ॥ मिरच पांच पैसा भरि त्योंही ॥ द्वै पैसा भरि पीपरि योंही ॥ सोंठि सात पैसा भरि धरै ॥ सब औषधि ले चूरण करै ॥ ३३ ॥ सब चूरण सम मिसरी डारि ॥ रोगी चूरन खाय विचारि ॥ औषधि अरूचि हिय रोग विडारि ॥ गुल्म हरे उदर व्याधि निकारे ॥ चूरण सूरण सोरह भाग ॥ चार भाग सोंठि पुनि देहु ॥ एक भाग मिरचै पुनि च लेहु ॥ ३५ ॥ सब औषधि चूरन कर आनि ॥ चूरन सम गुर लेकर माने ॥ गोली बांध प्रात उठि खाई ॥ अरस जाइ नहि होइ लखाई ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ पीपरि पीरी डारि कै मठा मधर अभिराम ॥ तो तिहहां सुनि हो नही फेरि अरस का नाम ॥ ३७ ॥ सोरठा ॥ कोढ हरन को होइ वैद विजोरे ले धरौ ॥ अरस हरन को होइ तैसो मिलवो अरु करे ॥ दोहा ॥ सोरे हरदी जोग सों ज्यौं परमेह विलात ॥ साजी चित्रक जोग सों त्यों गुड अंकुर जान ॥ ३९ ॥ भुरता सूरन कंद को कीच लपेट पकाय ॥ देइ तेल अरु नोन सों अरस रोग मिट जाय ॥ ४० ॥ कै नैनू मल वाय कै केसर नै नखांड ॥ दही सिखरन को मठा करि करै अरस को भांड ॥ ४१ ॥ देवदारु की काथ करि गुद धोवै नित नित ॥ धूप देइ कै तो मिटै अरसरै मिता ॥ ४२ ॥ देव दारिन को सोधि दीध को नीर ॥ गुद अंकु गुद अंकुर या लेप ते मिटे अरस की पीर ॥ ४३ ॥ ४ ॥

अथ अजीरण रोग

सहज वात कफ पित्त सो और रसा रसा से पांच ॥ विष-म असन ते दुमि सुके कहै अजीरण सांच ॥ ४४॥ गंध क ३ सेंधो ३ सोंठि कै १ तीन दोष अरु एक ॥ क्रम सों ली जो अंसरा करि करि पित्त विवेक ॥ ४५॥ चूरण करै मही न कर निंबुवा को रस डारि ॥ क्षुधा बोध दुमि नाम है ली जौ रसहि बिचारि ॥ संखा कराहि सो संयम सो नित-खाय ॥ भख बहुत वासों बढहि सरस अजीरण जा य॥ ४७॥ चौपाई ॥ हरड़ें पीपरि सोंचर लेउ ॥ चूरण घोरि छाछ में देऊ ॥ कै ताते पानी सों धारो ॥ जानि दोष नित दीजो मारो॥ ४८ ॥ मिटै अजीरण अरु वि रसाई ॥ उदर अग्नि बढुतै अधिकाई ॥ आधमान औ र गुल्म नरहै ॥ वात शूल सोऊ पुनि कहै॥ ४९॥ **छन्द भेद** ॥ सोंठि मिरच पीपरि अजमोदा सैंधो जी रो दोऊ ॥ चूरण तोलि आठ वांसा भरि हींग भूजिये सोऊ ॥ भात घीव सों भोजन पहिले चूरन बेर खवा वै ॥ बात रोग सब तुरत नसावै ॥ ५०॥ चौपाई ॥ पका जंभीरी ल्यावै तोरि ॥ पांच सेर रस लेय निचोरि ॥ तीन टांक हींग पुनि लेइ॥ हींग भूंजि बुकनी कर देई ॥ ५२॥ पीपरि मिरच सोंठि अरु राई ॥ अजवाइ न दुमि माझ बताई ॥ सेंधो लोंग बाइ बिडंगी॥ दश ही टंक लेइ सब संगी ॥ पद्मावती छन्द ॥ अज मोदा कटु त्रिय हिंगु सेंधव हि सुरतरु ग्रंथ कचीता ॥ सोअ विडंग बिडंग विदित नव नागर वृद्ध दारु दश कीता॥ अभया पचांनन नम सो जल पिउ मुद्ध पंगु परसू ती॥ जंघ संधि भुज बात विदारन गुड गोली अनु भूती सोंच

र नोन टंक चालीसा ॥ रस मधि डारै वेद को ईसा ॥ फिरि बद्ध रस सीसा में भरै ॥ भूमि में खोदि गाड़ि पुनि धरै ॥ एक मुद गाड़ि के राखहि सीसी ॥ बीते दिना एक और बीसी ॥ सीसी काढहि वैद सुजाना ॥ सिद्धि होय जबही संधाना ॥ ५५॥ एक अधेला भरि रस खाइ ॥ सकल अजीरण देह भगाइ ॥ विथा सूल की तनक न रहै ॥ बाढ़हि भूख खाउ यह रसहि ॥ ५६ ॥ इति जंभीरी संधानं ॥ दोहा ॥ सोंठि हरड़ और पीपरैं चित्रक वाय विडंग ॥ भिलवा बच गुरु वेसु बिष करै बदेह संग ॥ ५७॥ पीस गाय के मूत में औषधि सबै समान ॥ चतुर वैद्य गोली करै गुंजा के परिमान ॥ ५८॥ एक अजीरन को कही है विसूका धारि ॥ तीन सांप काटे तवे सन्निपात को चार ॥ ५९ ॥ आदे को रस ल्याइये ताके संगहि खाइ ॥ यह गुटिका संजीवनी नर जीवनि चितलाइ ॥ ६०॥ इति संजीवनी गुटिका ॥ दोहा ॥ पीपरि कंजा सोंठि अरु हरड़ वेल अरु खांड ॥ वड़वानलचूरण करै सकल अजीरण भांड ॥ ६१॥ इति वड़वानल चूरण ॥ चौपाई ॥ एक भाग हींग ले आउ ॥ दोय भाग बच्च तहां मिलउ ॥ तीन भाग पीपरि पुनिडारो ॥ अदरक चार भाग निरधारो ॥ भाग पांच अजवायन आनै ॥ हरर भाग छह तहां बखानै ॥ सात भाग चित्रक फिरि लेय ॥ आठ भाग कूट फिरि देइ ॥ चूरण औषधि जोरि बनावे ॥ दही छाछ सों घोरि पियावे ॥

खातो जल के मदिरा संग ॥ चूरण खाय होय सब रंग पीड़ा उदर अजीरण आवा ॥ उदा वर्त्त को रहे न नाव ॥ वात सास वेदन विष जाइ ॥ चूरण नाम अगिन मुख आइ ॥ इति अगिनि मुष चूरण ॥ दोहा ॥ कै गुरु संग कै सोंठि संग कै सेंधो संग खाय ॥ हरड़ रोज नर तौ बढ़त उदर अगनि अधिकाय ॥ ६७ ॥ जवा खार सम सोंठि लै प्रातहि घीसों खाइ ॥ भूख बढ़ै अरु रुचि बढ़ै अन्न तुरत पचि जाइ ॥ ६८ ॥ हरड पीपरहिं सोंठि जो ये तीनों लै खाइ ॥ उदर अगिन बाढ़ै अरु रोग त्रिदोष नसाय ॥ ६९ ॥ सेंधो पीपरा मूल अरु पीपरि चाव मंगाइ ॥ चित्रक सोंठि हरड़ ये इनमें देइ मिलाय एक एक एकत्र करि सब को भाग बढ़ावई ॥ अगिन बढावन को यही पुरुष बड़वानल भाई ॥ ७० ॥ इति बड़वानल चूरण म ॥ छप्पय ॥ पीपरि सोंठि चित्रक हरर सो चर्ले आवै ॥ ये सब लेइ समान कूट चूरण करवावै ॥ चूरण खाइ प्रभातई रुचि अग्नि बढै पुनि ॥ प्लीहा गुल्म न रहै होय बल यह पुनि ॥ उदर आव विष नास चूरण मुनीपु किये सरस ॥ इति पंचम चूरणम ॥ चौपाई ॥ सोधि टका भरि पारो देइ ॥ दोइ टका भरि हरड़ मिलावे ॥ तीनि टका भरि सोंठि रलावै ॥ सेंधो मिरच पीपरै लीज ॥ छह छह पैसा भरि यह दीजे ॥ फेर फेर पुट तिनहि दिवावे ॥ निबुवा रस के घाम सुखावे ॥ खरल मध्य घिस रत समान ॥ गोली बांधहिं बैठ सुजान ॥ होत अजीरण अरु इमि जान ॥ इस ताको इमि गुन परमान ॥ दीपन पाचन सरे घत भारी ॥ दूना

वढा खाय भूख अधिकारी ॥ इति अजीरण रसः॥ अथ विसूचिका उपचार ॥ दोहा ॥ सूची सम वेदन करे पाय अजीरण बात ॥ वैद्य विचित्र विसूचिका ताही सों कहि जात ॥ ७६ ॥ तर ऊपर निकसे नही अन्न वात कफ दुष्ट ॥ ताको कहत विलंविका कहै वैद्य गुण पुष्ट ॥ ७७ ॥ चूक कूट सैंधो कलूक करि के चुरवै तेल ॥ ७८ ॥ पल्ली मूल विसूचि मिटे लगावै तैल ॥ ७९ ॥ सोंठि मिरच पीपरि हरद करंज विजौरे मूल ॥ अंजन करिये छाछ सों मिटे विसूचिका सूल ॥ ८० ॥ अथ अतीस भंगरा हरद हींग इंद्र जौ आनि ॥ सोंचर नोन मिलाय के चूरण करियो छान ॥ ८१ ॥ चूरण तुष के नीर में घोरि जवहिं वह खाय ॥ सूल विसूची आरु ढोरक अजीरण जाय ॥ ८२ ॥ अथ कृम ॥ दोहा ॥ हृदय रोग ज्वर कांस भ्रम वात रोग अतिसार ॥ होवें किचुआ उदर में यह लक्षण निरधारि ॥ ८३ ॥ करि दरि वाकी छाल को क्वाथ मेलि तिर तेल ॥ खाय तीनि दिन गिर पडे तो किचुवा यह खेल ॥ ८४ ॥ वासी जल सों वांटि के खादु सांझ की प्रात ॥ अजवायन गुड़ घीव के तुरत करे कृमि पात ॥ ८५ ॥ राई सैन के बीज कौ ले मधु के संग खाय ॥ की विड़ंग चूरण करे कृमि की ओषधि आइ ॥ ८६ ॥ अथ पांडु रोग दोहा ॥ स्वांस काम पीरे नयन पीरे नख अरु खाले स्वास कास पीरी अगनि पांडु रोग को ख्याल ॥ क्वाथ पिये दश मूल को सोंठि कपर छन डारि ॥ अतीसार ज्वर सोथ कफ पांडु रोग निरधारि ॥ ८७ ॥ लै त्रिफला

कै नीम रस कै गिलोय मधु मेलि ॥ दारु हरद मधु प्रा
त हीं खाइ काम ले ठेलि ॥ ८९ ॥ अथ रक्त पित्त उ
पचार ॥ तीक्षण कटु खारो अमल रस जाते रहि पित्त ज
र को रुधिर को यह मेरे हे मित्र ॥ गुद मुख नासा माहि
दे लोहू बार बार ॥ निकसे तासों कहत हैं बुध जन पि
त्त विकार ॥ ९० ॥ फल कुम्हेरे के दरस अरु कमर पकी
खजूर ॥ दाख खाइ ये सहद संग रकत पित्त कर दूर ॥
९१ ॥ खाइ अरूसे को जुरस सहित बराबर डारि ॥
सलिल बुझावन अगिन ज्यों रक्त पित्त को मारि ९२
धनाक्षरी छन्द ॥ चन्दन उसीर लोद कमल केस
रि उसीर फिर वेल मोथा खाइ हू मिलाइये ॥ पाटना
ग केसरी गुणोन चारो कुरो थाये आधो ले अतीस
गदाइन में पिसाइये ॥ दवा को बकुल मजीठ छोटी
लाइची रसोत पोही आम को सुमोचरस आइले ॥
जामुन को सारनी क कमल समान भाग औषधि पिस
इ सब चूरन कराइले ॥ ९३ ॥ दोहा ॥ चामर को धोवन
सहित तामहि सानि ॥ खाइ प्रात ही कहत सो ताके
गुणनि बखानि ॥ रक्त पित्त ज्वर भेद अरु तषा मूर्छा
जाइ ॥ अतीसार अरु छर्दि पुनि या सों तुरत नसाइ
९४ ॥ गर्भ गिरत यासों रहे मुलताने कूं देहु नातेच
रन तियन की याही ते दियो बताइ ॥ ९५ ॥ अ-
थ कास ॥ प्राण वायु ऊपर जबै मिलि ब्रह्मांडसो
जाय ॥ कमल नाभि पै चल हृदय तबै कास अधि-
काइ ॥ पंच मूल को काथ करि पीवरि चूरन नाइ ॥
खात प्रात उठते तुरत वात कास मिट जाय ९६ ॥

हरड़ सोंठि पीपरि मिरच्च गुरु ते षांड मिलाय दीप
न पाचन काम हर गोली है दर्द बनाई ॥ ९९ ॥
सो मोथा दाड़िम कायफल हरर भरंगी लाइ ॥ का
करा भृंगी सोंठि बच देवदारु सुमिलाय ॥ १०० ॥
कंठ रोग मुख रोग अरु मूल रोग अधिकाय ॥ हिक्का
ज्वर अरु कास को मारन को सिरदार ॥ १०२ ॥ धेना
पापरा डारि के कर काढो हित जानि ॥ पित्त वा
त कफ़ कास को हीग सहित सो जाने ॥ १०२ ॥
एक करषले पीपरें मिरच्चें करष प्रमान ॥ दरवार्की
वकुला कहे दोय करष मनिदान ॥ १०३ ॥ जवाखार पा
चो करष आधो करष गुड डारि ॥ गोली मासे चारि
करि मुख में लीजे धारि ॥ १०४ ॥ गोली के परिभाव
से जितने हैं सब कास ॥ यह तुम निहचे जानियो
तिन में होय निवास ॥ १०५ ॥ सोरह मासे जायफल
सोरह वाके फूल ॥ सोरह मासे लौंग ले यहे वात
को मूल ॥ १०६ ॥ चारि टका भरि सोंठि ले मिरच्चें पैसा
एक ॥ मिश्री चूरण श्रम कहो या विधि कयो बिवे
क ॥ १०७ ॥ स्वास कास पर मूल ज्वर अरु रुचि अगि
नि अति मंद ॥ और अनेक न रोग पर या चूरण
को फन्द ॥ १०८ ॥ खील कुहारे दाख घृत मिश्री
पीपरि डारि ॥ मधु सो गोली बांधिये पित्त कास दे
टारि ॥ १०९ ॥ अथ स्वास ॥ अधिक कास जब
बढ़त है तब उपजत है स्वास ॥ हिचकी याही है
तु से ता मधि ताको वास ॥ ११० ॥ सोंठि मिरच्च
पीपरि हरड़ गोली करि गुड मेलि ॥ उदर अगिन

अरु कास हर स्वास रोग देठेलि ॥ ११२॥ क्वाथ करो द-
शा मूल को मेलो पुहकर मूल॥ स्वास कास पथरी वि
षा सूल करै निर्मूल ॥ २१३॥ मोथा सूठी दाड पुनिगो
लीकर मुख नाउ॥ एक बदे ही पाँहि मुख कास स्वास-
बिन साउ॥१३॥ कुहडा की जड पीसि कै ताते जल सों
खाय॥ स्वास कास दारून महा बनर तुरत मिटाय॥
१७॥ आदे को रस काढ़ के तामहि सहत मिलाय॥
स्वास कास कफ हरन कूं यह औषधि नर खाय॥
चौपाई॥ सोंठि मिरच अरु पीपरि लीजै॥ काक
रा शृंगी दून मदि दीजे॥ जटा मासिका त्रिफला आ
ने॥ पांचो नोन भारंगी साने॥ पुहकर मूल कटाई
धरे॥ ऐसे वहुका चूरन करै॥ ताते पानी सों यह
खाय॥ स्वास कास कफ वाय नसाय॥ गुड़ अरु
घी तेल संग एक बीस दिन खाय॥ यह तुम निश्चय
जानिवो स्वास न फिरी निज काय॥ १८॥ धना हरी ह
न्द॥ पारो और गंधक सुहागा विष मैनसिल टंक भरि
सोधि औषधि यह लीजिये॥ आठ टंक मिरचै एक
एक मिरच देखरल मधि डार सब चूरण ये कीजि
ये॥ फिर कै त्रिकुटा को मिलाय चूरण सीसी माझ
धरिये और प्रात संझ दीजिये॥ रती एक स्वास का
स को कुठोर स्वास कास कै सन्निपात वाय माहि जु
डीये सोच कीजिये॥ ११६॥ इति स्वास कुठार रस:
अथ हिक्का॥ दोहा॥ आरक बाधक उष्ण गु
डु शीतल रूखो खाय॥ सीरो पानी घोरि अरु
धूमा घास बचाय॥ २०॥ सीस बोझले बहुत

राह चल दौर ॥ और स्वास कास हिचकीन की मई भ
नो है ठौर ॥ २१ ॥ सोरठा ॥ मधु सोंचर के संग पिये
बिजोरे को जुरस ॥ हिचकी जाय सुरंग औषधि कह
दीन्ही सुरस ॥ २२ ॥ दोहा ॥ सोंठि पीपरें आमरे खाड
या मधुसों सानि ॥ हिचकी को यह दूसरी औषधि ली-
जो जान ॥ २३ ॥ सोंठि भरंगी दीजिये ताते जल सों घो
रि ॥ औषधि कह दीनी सुरस हिचकी डारै तोरि ॥ २४
इति काथ ॥ अथ क्षय रोग प्रतीकारः ॥ दोहा
अति कफ अति संभोग ते दुखी जो दुख लगात ॥
स्वास कास पीडित महा लोहू अगलिनि जात ॥ २५
मंद अग्नि अरु स्वास तप मास पीत सित नैन ॥ वी
न छर्दि विस्वास सब मास पीत सित नैन ॥ ज्वर को
चूरण में कह्यो पहले जे ताली सादि ॥ ताके पाछे छ
य रोग में नीके करियो यादि ॥ २७ ॥ खाड सहित नै
नू मिले नर चाटै जो रोज ॥ रजे निश्चित छय रोग
को सहज मिटावै खोज ॥ २८ ॥ जरगगे रुवा की ले
आवै ॥ मासे तीनि रोज पिसवावो ॥ बढती सौंय-
ह औषधि आदु ॥ याते दूध नाज घरि जाय ॥ हो-
य पुष्ट बल और निरोग ॥ छई रोग को यह है जोग
॥ अरिल्ल ॥ केवलकलास कढि करै छके बीज है ॥
जरगं गेरुवा ल्याय ताहि पुनि पीस ले ॥ खांड स
हित घृत संग रोज उठि खाय जो ॥ परि हां हांजी
स्वास कास सम जाय छय रोग तो ॥ ३१ ॥ दोहा
॥ चूरण असगंध गोखरू सहत दूध के संग ॥ खाय
प्रात उठि तौ करै स्वास कास छय भंग ॥ ३२ ॥ छप्प ॥

लौंग अगर कपूर कमल गटा और चन्दन जारो ॥ और उसीर इलायची मोथा देमन ॥ जटा मासि का तगर बंश लोचन और डारो ॥ पीपरि कंकाल जाय फल तज निरधारो ॥ नेउ नाग केसरि सरस मिश्री चूरण आध सम ॥ गुन निधान चूरन क- ह्यो लंवंगादि चूरण परम ॥ ३३ ॥ रुचि उपजावै बहुत तृप्ति बल करै अधिक पुनि ॥ वात पित्त क- हं हरै पीनस यह पुनि पुनि ॥ कंठ रोग हिय रोग कास हिचुकी छिन खोवै ॥ अतीसार और स्वास रोग छर्दि मगावै ॥ संग्रहनी परमेह अरु गुल म रोग क्षय रोग धर ॥ यह खाय रोग सब हरन को लंवागादि चूरण सुधर ॥ ३४ ॥ इति लंवंगा दि चूरण ॥ छप्पै ॥ गंधक तोला एक सोधि तोरे लै पारो ॥ अभ्रक तोले एक तीनि यह सम निरधारो ॥ मैनसिल तोले डेढ़ तोरा दश रूधरू ॥ छय तोले ले सार खरल मधि सब एकत्र करि ॥ काढि पातावरि को सुरस देइ भावना चारि दश ॥ यह भांति सिद्ध यह होत है कुंभ ईश्वर नाम रस ॥ रत्ती दोय के तीनि मिरच मिश्री संग खावै ॥ रस के सरस सकल गुननि बनि बताइ ये तवै ॥ पित्त कफ वाय छर्दि रोग विकट टारि ॥ ज्वर आदिक कब मिटै न मिटै वात दान नर हरि ॥ सदा यह सेव नर अनुपान संग प्रात नित्त ॥ तन मधि न होय जु कते वार होय सुनि लाय चित ॥ ३५ ॥ छन्द सा- र ॥ रसत सुसांघु सीतली है गजषम में धरिये सतपति

नि सु स्वामी हू दे बिचारियों ॥ है सुन्दर भाग एक है भाग मुक्ता डारि कै ॥ दुगुण सुहागो भाग तीन के मि रचभाग सुधारि के ।४०॥ घनाक्षरी छन्द ॥ सोने के तव क अरु पारो ये समान लै दोऊ के समान डारि फिरि मै ती आन के ॥ पारे की बराबर ले गंधक चौथे हिस्से साजीना मधि मिलाइ दे जान कें ॥ एक दिन बल मुधि डार मर्दन करो गोली बांधो धान तुस सखिल सानि के ॥ हंडिया में नो नी भरि तामें एक गोली धरि एक दिन आंच देइ हितु पहि चान के ।४१॥ दोहा ॥ यह मृगांगारस पीपरें सहित संग स ब लेइ ॥ तीन रत्ती भरि देत वै छर्दि रोग दूरि करि देइ ॥ सं गृहणी यातें मिटै मंदाग्नि मिटिजाय ॥ सीतल पित्ते हित हुर दियो पथ्य बताय ॥४२॥ इति मृगांगरस ॥ इति गोस्वामी जनार्दन भट्ट बिरचिते भाषा बैद्यर त्ने द्वितीय प्रकाशः ॥ अथ अरुचि ॥ दोहा ॥ सं निपात अरु दोय सो अरूचि दोष कहि देइ ॥ मिर च इलायची डारि गुड जल दूमिली को लेइ ॥ जीभ दोष हिय दोष तें अरुचि दोष संताप ॥ या औषधि सों तुरतही अरुचि हू दूरि करि दाप ॥२॥ छन्द सिंह मिश्री औषधि जब आठ भाग सों लीजिये ॥ तिहि डारि खरल सुमध्य बांटे एक दिन कहदीजि ये ॥ चौपाई ॥ मिरच कलोंजी जीरा दाख ॥ तंतरीक कहि कहि अभिलाख ॥ गुरच सोंचर चावउ डारि ॥ गोली करो तनक निरधारि ॥ दोहा ॥ गोली मुख में पानिवयो यहि तु जान अपार ॥ अरुचि रोग का सोमि टै यह कीयो निरधार ॥ ५ ॥ बार बार पानी पिये

तृप्त न क्योहूं होय ॥ फिरि फिरि चाहे सलिल को तृष्णा कहिये सोय ॥ मिश्री घोलि दाख मधु दून मीडार यह ॥ तृष्ण करदे दूर इन के पानी को दिये ॥ ६ ॥ मुठाकूट मधु पील वर पारा लाल पिसाउ ॥ गोली करके राख मुख तिरषण रोग नसाउ ॥ ७ ॥ इति तृषा ॥ अथ छर्दि ॥ दोहा ॥ बात पित्त कफ ते बहुरि और त्रिदोष बलवाय ॥ लटी बस्तु देखे बढे छर्दि पंच विधि आय ॥ ८ ॥ कोमल कै जायात ले लोन करार्इ डारि ॥ धंड प्रात ही खाइ कै दीजो छर्दि बिडारि ॥ ९ ॥ छप्पै ॥ प्रथम लाइची लोंग नाग केसरि ले आवहु ॥ मींगी बेर की बहुरि ल्याइ इन मांझ मिलावहु ॥ मोथा और प्रियंगु सते चन्दन इन मधि धरु ॥ पीपरि पील मिलाइ कै सूक्ष्म चूरण करु ॥ मधुर डारि मिश्री सहत चतुर चाट चूरन सरिस ॥ कफ बात पित्त उपजी प्रबल छर्दि फेरि नाकर परस ॥ १० ॥ दोहा ॥ लै जामुन और आंवरा क्वाथ पात कर बाइ ॥ सहत पील चूरन मिले खाय छर्दि मिट जाय ॥ इति छर्दि ॥ अथ मूर्छा ॥ दोहा ॥ जाने परे सुख दुख नहीं गिरे काठ सम देह ॥ जासों कहिये मूर्छा षट विधि निःसंदेह ॥ १२ ॥ पंखा जल को सींच बो सीतल मणि गण हार ॥ फल सुगंध अनेक ये मूर्छा अरु उपचार ॥ चौपाई ॥ सिगी बेर की और उसी गज केसरि ले मिलवे धीर ॥ पीपरि सीतल जल सों प्याउ ॥ विकट मूर्छा तुरत नसायु ॥ १४ ॥ दोहा ॥ पीपरि की बुकनी करे चाटे सहत मिलाय याऔषधि सों मूर्छा नर की तुरत नसाउ ॥ १५ ॥ ५ ॥

मिरच आदि को नास दे मूंदि नाक मुख ओर॥ मूर्छित रहे अगाड़ यो परयो होय जाठौर॥ इति मूर्छा॥ अथ दाह॥ पित्त करत को मूर्छित तृषा न उठ मांदा द॥ त्वचा मांझ वह करत है तहां पित्त सो राह॥ १७॥ देह चुप रिस व होठ घृत मिश्री सहत मिलाय॥ घी व डारि के तुरत ही दाह देह की जाइ॥ १८॥ वासपात को काथ करि सीतल भै मधु डारि॥ नल वह बच्चा बाइ का कमल सिसर जल धारि॥ दाह हरत चंदन सहित सुन्दर तरु निर धार। २०॥ इति दाह॥ अथ मृगी-रोग चिकित्सा॥ वंक नाल सीसी को ल्यावे॥ कपरौटी इक ईस दिवावे॥ ल्याइ करू खा मडुवा गोली जब खार सिंगरफ़ लै भली॥ २१॥ जल गुलाव सब खरल करावे॥ सो यह सीसी मांझ धरावे॥ सीसी वे जल ऊपर धरे॥ २२॥ यह चूवे जो ले धरि आछें लेइ काढि ताही के पाछे॥ सीसी भाग तेल वह नाखि मुंह को मूंदि जतन सों राखि॥ २३॥ यह मल सो व दाल दिसावे॥ ताको पहले नास दिखावे॥ फिरि वे सीसी सों वह तेल॥ अंगुरी माझ लगावे खेल॥ लेप करै सोई कनपटी तरुवा॥ काढे नादि नहरवा॥ दिन इक्कीस लों यह विधि सही॥ सो धनवन्तर निज मुख कही॥ २६॥ चौपाई॥ असगंध कूट लोन दिजीरा॥ सोंठि मिरच पीपर लै जीरा॥ अजमोद अरू पांखा हली॥ पाट ल्यादि जव चूरन को करै बनाइ॥ चूरन सब सम चूरन आइ॥ त्रह्मा नोनिया को रस लेऊ॥ ताकी बहुत

भावन्त देऊ ॥ चूरन मधि घृत देइ मिलाइ ॥ साठि
दिना नर चूरन खाई ॥ मोसे सौरह कही प्रमान ॥ ३२॥
खावे की यह कहत सुजान ॥ बढ़ो बुद्धि मन धीरज
रह्यो ॥ खार खते मिना मैं लह्यो ॥ लटी बुद्धि उनमाद
नसाई ॥ अपसमार यासों कहि जाई ॥ ३१॥ छंद भे
द ॥ तेल लगाइ सरस सरसों को बांधि उतारो घाम ॥
घाम माझ पुनि चावुक वोदरी लै लहर फिर कारे ॥
भांति भांति डरपावो बंदति आनो सूने रासे ॥ उन्मा
दिक कौ भले करन कौ बचन भयानिक भाखे ॥ ३३॥
तानो करै लोह वाले लै वाके अंग लगावै ॥ तातो क
रै तेल अरु पानी ताती तन छिरकावै ॥ ऐसे जतन क
रै बहु भांतिन तव दमि बंदन पावे उनमादी नर कोउ त
वे चितने चित्त ठिकानो आवै ॥ ३४॥ इति उन्माद

अथ अपस्मार: ॥ चौपाई ॥ मोह न मन सुदि ना
रहै ॥ भूलि जाइ बातें जो कहै ॥ दोष को पका बदती
कही ॥ अपस्मार की लीला कही ॥ पीत ल्यावै पुष्य
को कुत्ता को उर फारि ॥ ताको घिस अंजन करे तौ
अपस्मार दे टारि ॥ ३५॥ कुत्ता को पित्ता मिले चित
सों धूनी देय ॥ अपस्मार के हरन को यह औषधि
कर लेइ ॥ ३६॥ चूरन बच को सहत संग ताहि प्रात
उठि खात ॥ अपस्मार मिटि जाय तौ पथ्य दूध अरु
भात ॥ ३७॥ जाड़ो जल में पीसि के नीन लौ प्याउ अ
पस्मार कर दूरि नर बहुत दिने लगि जीउ ॥ इति
अपस्मार ॥ अथ बात व्याधि ॥ दोहा ॥
होत पाप के आपनो कुपित गहत जब अंग ॥

तव पीड़ा इमि होत है असंसी बात परसंग ॥
उदर परहटी अंड जड़ असंगध राहिम और ॥
रस्ना बीज करेल्ह के तेजानौं या ठौर ॥ ४० ॥ इनको
क्काथ बनाय के डारि हिंग और नोन ॥ पीवे ताको त
न रहे बात व्याधि कहि कौन ॥ ४१ ॥ करा नाद अठ
रक वडरि तीजो पक्षा घात ॥ मन्यास्तंभ हरै हरीष
स्वाए दिना जो मात ॥ ४२ ॥ देवदारु कसेरु वासो
ठि डारि करि क्काथ ॥ तेल डारि पीवे तुरत लगे बात
को हाथ ॥ ४३ ॥ हींग त्रिकुट कटुले तुरत अमलवे
त के धरि बिचारि ॥ पाढ़ धना और वावई भाई इ
न मधि डारि ॥ ४४ ॥ जवाखार साजी सरस वच
अजमोदा लाइ ॥ तितरा काजी रोब कुरि पीपरा
मूल मिलाउ ॥ ४५ ॥ सार हरड़ के डारि के चोखो-
वा करो बनाय ॥ स्वास कास साँही अरुचि मूल वा
न मिट जाइ ॥ ४६ ॥ हृदय रोग गल रोग लरोग
मल रोग अरु पांडु हू खातो जाय ॥ उदर वंद अफ़
रा मिटै हिंगुलादि जो खाय ॥ ४७ ॥ गाद मूत्र में
मेलि के तेल अंड को खाइ ॥ उर दरद अरु ग्रहन सो
रोग तुरत मिट जाइ ॥ ४८ ॥ आदे का रस तेल घृत
बीज पूर रस चूक ॥ ये पीये गुड डारि के यह वेदन की
कूक ॥ ४९ ॥ गुल्म मूल कटि विक व्यथा अरु विथानुवी
र उदावर्त्त और प्रधसी औषधि है बहतीर ॥ ५० ॥ पी
ये पीपरी डारि के दश मूल को क्काथ ॥ वात विथा बहु
भाति की अर्दित छोड़े साथ ॥ ५१ ॥ चौ० ॥ पास पह-
ले टका भरि लेइ ॥ पैसा २ भरि यह देइ ॥ सामस अंडे

जवासो आनै ॥ देव दारू लै इन मधि सानै ॥ बच कचूर सोंठि अरु बासा ॥ हरर आंवरे करै तमासा ॥ पुनर्नवा मोथा सो मिलाय ॥ सोंफ विधारो ये लै दोउ ॥ असगंध और गोखरू आनै ॥ लै अतीस किरवारो सानै ॥ पीपरि पीपरि बासो धन्न ॥ दोइ कटाई मेलै मना ॥ सरस सतावरि इन मधि डारै ॥ बैद्य बनावै काथ बिचारै ॥ सोंठि संग कै पीपरि संगी ॥ काढा खाइ होय तब चंगी ॥ ५२ ॥ जोगराज गुग्गुल संग खाइ ॥ अज मोदादि तेल कहलाई ॥ कै अरंड जर तेल मिलाई ॥ अनूपान याको यह आइ ॥ ५३ ॥ सकल अंग को कंपन साइ ॥ पक्षा घात कुबज ता जाइ ॥ आमबात अरु बहुत ग्रधसी ॥ श्लीपद अपतानक जानसी ॥ अंड बृद्ध अपरासु कठोरा ॥ जाय जानु मर्रिनन जोरा ॥ शुक्रलिंग वंध्या भग रोग ॥ रास नादि का करिये जोग ॥ ५३ ॥ इति रास्नादि काथः ॥ अथ गुग्गल ॥ दोहा ॥ देव दारू रासन हरर सोंठि गिलोइ पिसाउ ॥ सब सम गुग्गल लाइ कर वह इन माझ मिलाउ ॥ ५४ ॥ वात विथा मस्तक विथा दाह भगंदर रोग ॥ यह गुग्गल खाये मिटे इन रोगन को जोग ॥ ५५ ॥ अथ तैल ॥ दोहा ले जड़ कनक कनेर अरु आक पात को रंग ॥ धातु तमी जल तेल सम और तेल के संग ॥ ५६ ॥ करै अंग यह तेल को मर्दन बारं बारं ॥ बात बिथा बहु विधि मिटै यहै किये निरधार ॥ ५७ ॥ छंद भेद ॥ तेलरका बोजक भर लेइ का पहले ही शुद्ध करावै ॥ क्वाटका भरि बोमाधिलेके फिरि इन

मांझ मिलावै ॥ पीपरि और मिरच वच चित्रक फेरय
ह औषधि लावै ॥ कूट धतूरा और रास्ना विष अरु चौ-
वपिय पुण गावै ॥ करड कनेर मजीठ दूरद हु मासी
चिफला तैसो ॥ तेल नाम विष गर्भ बना बहु वेद कह-
हूं है जैसो यह तेल लगावै तन में वात रोग बह कैसो ॥
५९ ॥ चौ० अरनी सोना बेल मिलाउ ॥ और पसारिणी अ-
गंध आनु ॥ दोउ कटाई इन अधि जानु ॥ ६० ॥ कहही
औषधि रहटी साउ ॥ पुननेवा और गोखरू दोऊ ॥ दश
२ भार ये औषधि लेऊ ॥ चार दश चोदह में देउ ॥ चरन
एक वांटि जल राखै ॥ वह जल लेइ तेल धरि राखै ॥ सों
फ सिल्लारस सैंधो नोन ॥ देव दारु पुनि कहियत तौन ॥
६१ ॥ मासी लाव खरैटी और ॥ चन्दन तगर जानु पद
ठौर ॥ चातुर जात लायची रासन ॥ पुनर्नवा आध-
मिल्ल तासन ॥ ६२ ॥ कूट सहत है है पल लेऊ ॥ इन
कर कूट कलक कर देऊ ॥ तेल मांझ वह कलक पचा
वै ॥ फेर सता वरि खादि मंगावै ॥ तेल बराबर रस कढ
वाई ॥ तेल मांस रस लेइ पचाइ ॥ गाइ किधौ छेरीदु
हि लावै ॥ ६५ ॥ पीछे वाई तेल लगावै ॥ नास देइ या
को यह खेल ॥ पोरा यह मानस होइ ॥ वात मंते वह
नीकी होवू ॥ ६६ ॥ हाथ पाव वेदन करि हा की ॥ वा
त विथा दंत सिर नाकी ॥ वात भेद जितने है भारी ॥
ताको यह औषधि निरधारी ॥ ६७ ॥ अंग अंग के
जितने वात ॥ तिन तिन की यह करन निपात ॥ वात
विथा हरि लेत वे खेल ॥ यह जानो नारायण तेल ॥
६८ ॥ इति नारायण तेलम् ॥ दुष्पिला छंद ॥ पैतल कौ

तेल सेर चारका लै माटी टिकिया डार सुधावहु ॥ नेग
ड़ आक धतूरो भंगरा सेंहुड़ पाव तब काढ़न लावौ ॥ ७०
अरंड कनेर पान कोरस लै सेर भर तेल पकावहु ॥ अ
ठरमा यह तेल वान करि अगना बेद लगावो ॥ ६८ ॥
इति अथ रस ॥ छप्पय ॥ गंधक और हरताल सोधि
पारो लै तीनो ॥ मीनारि लो हर जलेउ औरतै सो करसी
नो ॥ अरनी नेगड़ हरड सुहागो और त्रिकुट कह दीजो ॥
नेगड़ कोरस काढ़ु एक दिन ताको मर्दन कीजो ॥ मुंडीरस
सो एक दिन मर्दन गोली करहू ॥ गुंजा समान है वात कहं
दस मुकुंद भैरव धरहु ॥ दोहा ॥ रासन गुरु वै देव तरु
सोंठि अरंड मिलाय ॥ अनूपान गुग्गल मिलइ दीजे
काथ पिवाइ ॥ इति भैरव रस ॥ अथ वात रक्त ॥ दोहा
पवन रुधिर असवार कह इमि करि डारन दुष्ट ॥ अंग
छुवत जानत नहीं व्रन उपजाति पुष्ट ॥ ७२ ॥ मंडल
होइ विसूचिका विकल अंगुरिया और ॥ वात रक्त ल
च्छन कविन वैद्यक कहत कुठौर ॥ ७३ ॥ वात रक्त ज
ब अंग में रहत बहुत दिन छाइ ॥ तब वह नर की देह
में देत कोढ़ उपजाय ॥ ७४ ॥ चौपाई ॥ दारु हरद बच
और गिलोई ॥ कुटकी त्रिफला नीम गुड़ोई ॥ अरु म
जीठ में काथ पिवावै ॥ वात रक्त और कोढ़ नसावै ॥ ७५
धनाछरी ॥ त्रिफला मजीठ छाल नीब कौ चितावरि
मरु सो दोऊ हरद मिलाइ कै ॥ फेर लाल चन्दन चिराय
तो बकुची औ फिर वारो कुटकी मुरहटी सो लाइ कै ॥
रासन इन्द्रोरन विडंग जटा मासी पाढ़ दातन पीपरि
सोत मो लाइ के ॥ मिरच जवासो काकमाची सोना

परवर पात कूट क्वाथ के विधि बनाय यह पाइ कै ॥७६॥
दोहा ॥ वात रक्त कंडू षता रुधिर बिकार अनेक ॥ सिहु
वा धामा कोढ़ को क्वाथ कहेउ यह एक ॥७७॥ नाग
वेल अरु मालती कनक पात रस लेहु ॥ और मुरह टीक
ट और मेन सिल नामधि देहु ॥७८॥ इन मधि पारो
मेलि कर घोटहु तेल मिलाइ ॥ खाज विवाई कोढ़ अ
रु रोग बिसर्प जो जाइ ॥७९॥ मिटै देह की श्याम ता
वात रक्त मिटि जाइ ॥ तेल लगावै अंग में यह गुन दयो
बताइ ॥ ८० ॥ इति वात रक्त ॥ अथ आमवात ॥
दोहा ॥ अधिक पवन प्रेरित जवहिं आवुक कास थै जा
य ॥ यह नारी सों पाइया आम वात यह जाय ॥ ८१ ॥
जानु जाघ कटि मुर मधि मूल होइ जब जोर ॥ आम-
वात लक्षन कहेउ यह वेदन सुक ठोर ॥ ८३ ॥ रासन
गुरुवे अंड जर देव दारु संग खाय ॥ आम वात सब
अंग को पीवै सोंठि मिलाय ॥ ८४ ॥ त्वम्वा हाड गति
संधि गति मज्जागति है रान ॥ यह औषधि सों वह मि
टै नर पावै सुख चैन ॥ ८५ ॥ दूध साजी पाइ कै मिगी
अंडी की खाय ॥ आम वात कटि मूल अरु रोग ग्रध
सी जाय ॥ मिगी अंड की सोंठि सम खाय खांड के
संग ॥ तो न रहै नर देह में आम वात पर संग ॥ छप्प
य आठ टका भरि सोंठि दूध बत्तीस टका भरि ॥ बी-
स टका भरि चाव डारि तहँ ले कसार करि ॥ खांड अ
ढाई सेर घोर करि पाक बनावहु ॥ टका टका भरि सों
ठि मिरच पीपरि ये लावहु ॥ तज पत्रज एला बहुरि पी-
स डारि कतरा करहु ॥ चून पुष्ट बल आयुष्य करि आमवात

औषधि धरइ ॥ ९७ ॥ इति आम बात ॥ अथ सूल बात १ पित्त २ कफ ३ बात पित्त ४ पित्त कफ ५ कफ बात ६ ॥ आमाष्य ॥ ७ त्रिदोष जे आठ ८ सूल कहि जात ॥ ९९ ॥ अथ परिश्रमसूलम् ॥ करू जाकी भूजी भिगी कोरि आगु में आपु ॥ ताके खाये पेट के मिटे-सूल संताप ॥ १०० ॥ काढो तिल गुर सोंठि को दूधमा भ करि खाय ॥ बिथा सूल परिमान को सात दिना में जाय ॥ १०१ ॥ अरंड सितावरि गोखरू पुनर्नवा-फिरि लेउ ॥ सोंठि मिरच सम औषधि यह चूरन करि देउ ॥ १०२ ॥ ताते पानी से पिये चूरन सरस बनाय बिकट सूल पर वान कहि यह चूरन सों जाय ॥ १०३ अरिल्ल ॥ सेंधो सुपीपरी मिरच सोंठि विष दीजियो ॥ गंधक कौडी राख पापरो लीजियो ॥ नाग बेलि रस डारि पीसि करि योवरी ॥ परि हां हां जी छहर त्रीभरि खाउ सूल गज केसरी ॥ १०४ ॥ अथ गुल्म ॥ दोहा ॥ हृदय नाभ बीच जो चपल गांठि अति होय ॥ रुधिर दोष ते पांच विधि गुल्म कहावत सोइ ॥ १०५ ॥ छप्पय ॥ घी कुमारि को लेइ सेर छह आठ टका भरि ॥ नामधि गुरू प्राचीन सेर पांच के लेकर ॥ धरि धरि पांच पसेरि और टका भरि बाहर पानी ॥ त्रिकुटा त्रिफल औरसार मारो अजवायनी ॥ या मधि मिलय मिलावे बहुरि जे औषधि लेउ सुनि ॥ त्रिकुटा त्रिफला और सार मारो अजवायन ॥ मोथा बाइ विडंग सिता वरि और-बताइन ॥ टका चार भरि और एक एक ये औषधि ये तीसाई ॥ यह सब लेकरि एक भरि धरि राषई ॥

गुल्म पांडु जठर स्वास को सब सोरस ॥ ७ ॥ चौपाई ॥
दोइ टका भरि वच लै आवड ॥ तीन टका भरि हरड मि
लावहु ॥ टका छह भरि बाइ विडंग ॥ चारि टका भरि
सोंठि दे संग ॥ ८ ॥ हींगि टका भरि डारै तामहि ॥ आठ
टका भरि पीपरि यामहि ॥ पांच टका भरि चित्रक र
खहि ॥ सात टका अजवायन भाषहि ॥ १० ॥ कूट छा
न चूरन करवावहु ॥ ताते जल संग मधु संग प्यावहु ॥
गुल्म शूल स्वास और कास ॥ और संगृहनी रहै न पा
स ॥ ११ ॥ हिंगु सोंठि राई सरस तिंतरीक और नौन
॥ यह चूरन भख गुल्म नर दूरि करै तौ क्यो न ॥ पारो
गंधक पापरो हूरर बरावर लेउ ॥ किरवारे के क्काथ
सम यह फिरि घोटन देउ ॥ १२ ॥ फिरि थूहर के दूध
संग मर्दन करै बनाय ॥ सहत संग मासे भरि फिर नर
यह रस खाय ॥ १३ ॥ गुल्म जलंधर तियन को मिटै ९
पथ्य दूध और भात ॥ अनु पानई मिलाइनो यह पं
डित की बात ॥ इति गुल्म ॥ अथ हृदय रोग ॥ दो
हा ॥ रस सुस्वादु के दोष जब तिगुनहि मधि यह जा
त ॥ पवि करई न बुद्धि ही हृदय रोग कहि जात ॥ १५
के घृत से कै प्राव सेकै जल गुरु सो खाय ॥ को हात
रु की छाल वौ हृदय रोग मिट जाय ॥ ४६ ॥ चूरन पुह
कर मूल को सहत संग नर चाट ॥ स्वास कास दारुण
महा हृदय रोग वड कद ॥ १७ ॥ इति हृदय रोग अ
थ उदर रोग ॥ दोहा ॥ छेद पनीमा करके रोग दोष
बहि आउ ॥ प्रान पान दुष करन रग्नं गन हुमि पाउ
१८ ॥ आध मान दुख बल अगिन ॥ ५ ॥ ५ ॥

दुर्बल तन अति दाह ॥ तन्द्रा चूले टल जाय यह उ
दर रोगी की राह ॥१९॥ अथ सीहा ॥ उदर जठ
र कृत रोग लक्षणम ॥ दोहा ॥ परी बस्तु सों दुष्ट
कफ अरु लोहू ये दोइ ॥ ल्पीह बढावै उदर कहं सो
निश्चय करि जोय ॥ ल्पीहा बाई और बङ्ज कृत दा
हिनी और यह विधि ल्पीहा जकृत कहं लक्षन कहे
कठोर ॥२१॥ जवाखार और कूट बच जीरे चित्रक ला
इ ॥ अजमोदा दातोन अरु हींग चाउ पुनि दाइ ॥
२२ ॥ तीन नोन साजी बङ्करि चाउ सोठि पिस-
वाय ॥ ताते जल सों खाय तो वाय उदर मिट जाय
॥२३॥ त्रिकुटा कुट सौंधौ जवाखार हिंगु पिसवा
य ॥ बीज पूर रस सों सरस सीहा मूल को खाय
॥२४ ॥ सर फोंका की पीस जड़ पीजो मठा मिला
इ ॥ सीहा बङ्त दिनान को सोउ यह सों खाय॥
२५ ॥ चौपाई ॥ जवाखार सोंचर और वारी ॥ कच
लोना साजी निरधारी ॥ सैंधा नोन सुहागो दोऊ
॥ ये सब ले चूरन करि लेऊ ॥ दूध आक सेंहुड
को लावङ्ग ॥ दूध डारि दिनतीन सुखावङ्ग ॥ ती-
भावना यह विधि धरि के ॥ सब चूरन इकठौ
रे करके ॥ ल्यावङ्ग तोर आक के पत्ति ॥ तर ऊ
पर राखङ्ग यह घात ॥ सब ले यह हंडिया में
धरहि ॥ हंडिया की कपरोटी करहि ॥ ताहि
आंच गज पुट की देइ ॥ सीतल भये काढि तब
लेइ ॥ फेर पीस चूरन करवावङ्ग ॥ ये औषधि इन मा
हि मिलावङ्ग ॥ सोंठि मिरच पीपरि अरु राई ॥ वायवि

विडंग वाव मिल बाई ॥ मेल मठा मथि चूरण खाइ ॥ २८ ॥ सोथ गुल्म मंदागिनि जाइ ॥ सीहा गुल्म जकृत कहं खाइ ॥ उदर रोग कहं पावहि चैन ॥ व्रज सार चनायो ऐन ॥ ३० ॥ इति सोभा ॥ दोहा ॥ बात १ पित्त २ त्रिदोष ३ कफ ४ मूत्र वेग कफ घात ६ ॥ धुक रोग ७ अरु अस्मरी ८ मूत्र कृच्छ ९ कहि घात १० ॥ ३१ ॥ दोहा तनक २ भरि आइ के मूते वार वार ॥ निकसे पीड़ा सहित यह मूत्र कृच्छ नर धार ॥ ३२ ॥ क्वाथ गोखरू बीज को जवा खार जुत लेइ ॥ मूत्र कृच्छ अति जोर युत ताहि विदा कर देइ ॥ ३३ ॥ चौपाई ॥ पीपरि और सिलाजित दीनो ॥ अरु पाषान भेद पुनि कीजे ॥ मेलि लायची चूरन करै ॥ चावर धोय नीर लै धरै ॥ ३४ ॥ तापानी में गुर लै घोरै ॥ वाही में यह चूरन बोरै ॥ यह यह विधि सो यह चूरन खाय ॥ मूत्र कृच्छ से का बुनड़ राय ॥ जवाखार मिश्री रस दोऊ दोऊ लेय समान मूत्र कृच्छ कह यह कही औषधि पाय सुजान ॥ तनक कुन कुनो दूध करि तामहि देइ गुर मेल ॥ मूत्र कृच्छ अरु अस्मरी वात रोग दे ठेल ॥ ३७ ॥ कपय डारि मूल फल पात जुत पांच सेर सब ल्याइ ॥ गोखरू औटे डारि जल पांच सेर कहि जाइ ॥ सवा सेर जल राखि खांड है सेर आध धरू ॥ धीर मंद करि आंच औटि वह नरम पाक करि ॥ जवाखार सूंठी मिरच पीपरि नाग केसरि सुफल ॥ कहां लायची जाय फर रुष बीज है सुफल ॥ ३८ ॥ टका आठ भरि सास बंश लोचन ले आवड़ ॥ यह औषधि सब डारि फेरि अवलेह बनावो ॥

चिकनी हंडिया लादू पर अंचलेय छिन॥टकाटकाभ
रि प्रात उठि करन सुभस्तान॥मूत्र दाह अरु अस्मरी
रुधिर मेह मधु मेह॥मूत्र कृच्छ अरु मूत्र को रोध ता
हि नर दूरि करेह॥ दोहा॥ सरकंडा कुस अरु उषदा
भये पांच॥पित्त मूत्र के कृच्छ कंह यह पीजो नर सां
च॥४०॥ इन्द्री को करि कलक बड़ पचड़ दूध सो उ
रि लोह गिरत जो लिंग ते सोऊ दे किन टारि॥इति मू
त्र कृच्छ॥अथ अस्मरी॥पथरी॥ दोहा॥यह
रोके के मूत की कटि और वस्ति मंझार॥ करे बैद न
अस्मरी यह जाने निरधार॥ भेद अंत या वान को
जवाखार गुड़ डारि॥मूत्र बंध अरु शर्करा देइ अस्म
री टारि॥४३॥ अरिल्ल भेद॥अत या वान अरंड जर
लाइयो॥ ताल बुखारे की मूल सुबरन मिला
इयो॥ औटि कटाई देह गोखरू संग दही॥
परि हांहां जी लेइ अस्मरी मूत्र बंध औषधि क
ही॥ ४५॥ दोहा॥ धना तुषा के नीर में घोरि इरर गु
रू खाइ॥ बिकट अस्मरी लिंग की तुरत बिदा होजा
य॥ ४६॥ पथरी ऐसे जतन सौं जब नहि हटे सुजान॥
तब काटो यह जतन सौं पथरी चतुर सुजान॥४७॥
इति अस्मरी॥अथ प्रमेह॥ दोहा॥जथा कहै छह
पित्त ते दश कफ तैसे साध्य॥ चारबात ते होत है ते प्र
मेह असाध्य॥४८॥त्रिफला चूरन कर सरस सहत संग
नर चाट॥उपजे बहुत दिनान कर तुरत प्रमेह सुकात ४९
॥छुये वर ऊमरि और आम केथ पीकर किरवार॥जामु
नि सोना सांजि चारि को हां निरधारो॥महुवा आदी नी

बरनौ त्रिफला पुनि ॥ धोंकं जाकी मिगी इन्द्र जौ मिलवं सुनि पुनि ॥ चूरन करि यह सहत संग खाइ पिये त्रिफला सरस ॥ परमेह बीस फुरिया मिटइ मूत्र कृच्छ न करइ परस ॥ ५० ॥ दोहा ॥ कूट आमरे काढि रस मधु औरअरु दे मिलाइ ॥ मिटे सकल परमेह गृह जैगयारे दिन खाइ ॥ ५१ ॥ नर गुर मैं कोरस पिये डारि सहित सिरताज ॥ हने बीस प्रमेह यह ज्यौ मारत मृरग राज ॥ रस सेंमर की छाल लै खाय हरद मधु साथ ॥ तौ नर बीस प्रमेह करै तुरत लगावै हाथ ॥ ५३ ॥ रस सेमर की छाल को हरद सहत अरु संग ॥ खाय बीस परमेह को तुरत मिटै यह संग ॥ ५४ ॥ हरद शतावरि लीजिये अभ्रक चन्द्रक हीन ॥ मधु संग खाइ प्रमेह को यह उपाय कहू दीन ॥ ५५ ॥ छप्पय ॥ आठ टकाभरि लाइ कपर छन करै सुपारी ॥ दूध अढाई सेर तामधि पावहि तारी ॥ मंद आंच सों औटि चतुर नर करइ कसारी ॥ खांड अढाई सेर शुभ घोरि बनावै पाक जब ॥ तामधि कसार डारे बहुरि जे औषधि सो कहत अब ॥ मोथा चन्दन त्रिकुटा नागकेसर आमरा अरु ॥ चारि बेर की मिगी दोय जीरे की सुधिकरू ॥ तज पत्रज अरु लेइ लाइची धना जायफल ॥ बंशलोचन चूरन सिंगार कर नर ॥ लेसही है कर षटि डारि आवरे को जुरसा ॥ रस डारि सतावरि अंजली रस पुनि कर गोली सरस ॥ ५७ ॥ षाइ पाक परिमान जाइ जीरन ज्वर तजि तनु ॥ लमस पित्त यह जाय जाय मंदाग्नि यह मनु ॥ आय वाक मुखक छत रुधिर मिटि जाय तऊ छिन ॥ पुष्ट गर्भ यह विधि कहत पाग पाक गुनवैद्य जन ॥ इति ॥

सुपारी पाक॥ छप्पय॥ पारो अभ्रक गंधक सारी मारी रुक सबलेह॥ मिश्री सेमर छाल लायची आवरा ये हैं॥ ताल मारवानो अरु वा पूरन सारु मिलाव हु॥ और जाय फल पीस डारि इन मधि सबाव हु॥ रस परमेह कुठार य ह है मासे भरि खाइ सहत सों॥ वाके प्रमेह जो होइ तु रतु जाइ मुनि कहत अस॥ ५९॥ इति प्रमेह॥ अथ मेद॥ दोहा॥ दिन सवेरे नि चलौ फिरौ मधु अन्न न खाइ॥ और कफ कारक खाइ तौ मेद रोग अधिकाय॥ ६०॥ उदर पेट कुच मधि बढ़े मास बढ़त यह भेद बल उतसाह घटै बढ़त ताहि कहत है मेद॥ ६१॥ प्रात बराबर सहत जल पिये मुटाई जाय॥ माड़ पिये के मात को औषधि आइ॥ ६२॥ सुत वारिधि के नीर सों पिये घोर नर रोज॥ तौ यह निहचित जानिये मिटे मेद कर खोज॥ ६३॥ बेल पत्र कर रस पिये कूट वस्त्र में छानि मेद रोग दुब सिना मिट इ लेउ यह जानि॥ ६३॥ खरि ल दारु हरद तिल कूट कचूर पिसाइ ले॥ सरसों हरद मजीठ सुमोथा मिलाइले॥ आंव छालि पिस वाय उ बटना कीजिये॥ परि हां हां जी मेद रोग धर खोई चिरजी जिये॥ ६६॥ इति मेद॥ अथ सोथ॥ दोहा बात बाहरी न सब सै त्याइर लो कफ पित्त॥ दोष मुचि य और चोट तें करत सोथ निह चित्त॥ ६७॥ गुरु पीप रि और सोंठि कर चूरन करके खाय॥ मिटै अजीरण आम अरु मूल सोथ मिटि जाय॥ ६८॥ छप्पै॥ गुरु आदी गुरु सोंठि के हरड़ वाय बढ़ती॥ सो रह मासे औषि टका तीन लै बहती॥ पैढ़े के तीस भरि सेवन करियो॥ सोथ

कंठ गुण नेक न डारियौ ॥ स्वांस कास पीनस अरस ज्वर संग्रहनी बात गद ॥ कफ के विकार जितने कहे तितने यह सब करततरद ॥ ६८ ॥ सवैया ॥ पीपरि सोंठि के हाड़ सिता बरि मोपा मंगाइ के जीरक आवै ॥ चाह जड़ हरदी गजपीपरि कूटि २ कपरा मधि छानै ॥ चूरन लेय द तातै पानी करवावे के लाडू के बीरक सानै ॥ सोथ विकार के दारन कौं यह तीन अपारि औषधि जानै ॥ ६९ ॥ इति सोथ ॥ अथ अंड वृद्धि ॥ दोहा ॥ वात १ पित्त २ कफ ३ मेद ४ अरुचि ५ मूत्र रुधिर बढ आन ॥ मूत्र कृछ कहं सात बिधि रचन करि कहि जात ॥ ७० चौपाई ॥ चंदन जड़ यौ पद माप ॥ नील कमल उर ईं जर भाव ॥ पीसि दूध सौं लेपहि करहि ॥ अंड वृद्धि व्रण दाहहि हरहि ॥ ७१ ॥ दोसा मस गुरबै गोखरू जा डो रासन अंड ॥ अंड तेल जुत क्वाथ करि अंड वृद्धि कर खंड ॥ ७२ ॥ इति अंड वृद्धि ॥ अथ विध्र रोग ॥ दोहा ॥ ऊरू संधि मधि दोष से जे तहि सोथ कछु होत ॥ विध्र मत सोथ सों कहत मुनी सुर गोत ॥ ७३ ॥ पीपरि सेंधा डारि के हरर पीर करवाय ॥ भूनि अंड के तेल में संधो विध्र कटि जाइ ॥ ७४ ॥ तुरत मार कोवा उदर फार पीठ कट बाइ ॥ ले निकोरिया जतन सों विध्रधि रोग तब जाय ॥ दैव जोग ते बिद्रधि जोप के चैर सिर दार ॥ तौ बह चीरि पुनि करे जन को सो उपचार ॥ इति विद्रधि ॥ अथ गलगंड भाषा साथ व्है कंठ मधि लय के अंड समान ॥ कै छोटे के अति बडो बह गलगंड समान ॥ ७७ ॥ अथ ग्रंथि ॥ दो० नाव आदि जब दुख दुष्ट मानस सम छेद ॥ गांठ गोल

करी कैसे ग्रन्थ विथा विन भेद ॥ ७८ ॥ अथ गंड माला ॥ दोहा ॥ बेर आमरे सम बड़रि गांठ होइ निरधारि ॥ का ख कटि करि आदि में गंड माला सुविचार ॥ ७९ ॥ सनमूरी ओर सहजनो तीनहू के ले बीज ॥ सरसों जौ अरसी बहुरि पीस चूर गाढ़ कीज ॥ ८० ॥ पीस सठा को लेप करि ग्रन्थ मिटै सुविवेक ॥ गंड माला गल गंड कहु यह औषधि है एक ॥ ८१ ॥ इति गल गंड ग्रंथ गंड माला ॥ अथ श्लीपद ॥ दोहा ॥ सोथ होइ कफ भेद कर खाइ कान कर नैन ॥ चतुर बैद्य कह देत है श्ली पद लक्षन ऐन ॥ ८२ ॥ सरसो निगड़ सहजनों पुनर्नवा अरु अंड ॥ पीस धतूरे लेप कर श्लीपद करि खंड ॥ ८३ ॥ इति श्लीपद ॥ अथ विद्रधी ॥ दोहा ॥ बात १ पित्त २ कफ ३ रुधिर ४ असु ब्रन निरदोष समूल ॥ लाविद्रधि तिय कुचनि गुल आति सुविद्रधि सूल ॥ ८४ ॥ जौ गेहूं अरु मूंग यह पीसे मथ मठ देइ ॥ लेप करहि विद्रधि उपर चतुर दूरि करि देइ ॥ ८५ ॥ इति विद्रधि ॥ दोहा ॥ एक ठौर तन में कहूं सोथ होइ सिरदार ॥ पूरव लच्छन जानिये ब्रनको यह निरधार ॥ ८६ ॥ बात पित्त त्रिदोष ते ४ कर आगंतुक पांच ॥ और होय रुधिर ते ब्रण छह विधि यह सांचा ॥ ८७ ॥ बरडा मिरच कु पीपरें अरु यह कमल बैन ॥ पीउ सहत ब्रण सोथ का यह औषधि है दैन ॥ ८८ ॥ तेल पीव सों सोगनि को सत बत घन कर वाइ ॥ बांधे पीके अबता और सोथ मिटि जाइ ॥ १०९ ॥ चौपाई ॥ पारा गंधक ये सम देऊ ॥ मुरदा संख दाह सम सेऊ ॥ लेइ कबीला सबहि समान ॥ ९ ॥

हरिया घृता तनक प्रमान॥ ९०॥ पीब चौगुनो चरनब नो॥ व्रन सोधे कछु और न पावे॥ जेन मिटे सो औषधि लाये॥ व्रन मिटे मलहम के लगाये॥ ९१॥ इति व्रण

अथ सघन व्रण॥ दोहा॥ भांति भांति की धार के भां ति २ हथियार॥ भांति भांति के होत हैं तिन के घाउ अ- पार॥ ९२॥ सद्यौ व्रण लक्षण कहेउ यह बिधि किया बिचार॥ अब तिन के मैं कहत हौं भांति भांति उपचार ९३॥ छप्पय॥ पहले घायल घाउ पाट होरा सो सीजे भैदा लावहु सानि बहुरि लोई करि लीजै॥ लेई ताती करहु सेंकता सों कर वावहि॥ अजमोदा नोन पुटरिया करि सिक वावहि॥ करई सेंक यह बिधि चतुर ज्यों घाय ल पावहि न दुख॥ है एक हि भांतिक किये मिटहु पीर पु रुष पावहि सो सुख॥ ९४ चौ०॥ दारू हरद अरु तेल पचा वै॥ तेल कबीला दोइ मिलावै॥ तेल दूवरस एको जानै व्रण रोपन औषधि यह बखानो॥ ९५॥ दोहा॥ जातौ कुटकी और हरद कंजा के फल पात॥ जाती परवर नीव के पात मैन कहि जात॥ ९६॥ घृत मैं औषधि मेलि के मल्हम नीक बनाव॥ पीर मिटै यह सो तुरत और पुरवा हि घाव॥ ९७॥ पीर मिटै यह सो तुरत और पुरवावहि घाउ॥ इति सद्योव्रण॥ अथ विदीरण सद्योव्रण॥

ईंट काठ पाथर भरि लगे फटे मास खाल॥ सद्यौ बिदीर ण नाम व्रण लक्षण कहत त्काल॥ ९८॥ फटेउ घाव ल खि तुरत ही सींचे सीतल नीर॥ बांधै कीचल पेट कर मि टै अवल तब पीर॥ चावर घृत सन पीवा सो पीसि लेप करवा थ॥ जातुवा सोंठि मजीस घाव लेप करि ल्याउ॥ १००

इति बिद्रीरण संयोग व्रण ॥ दोहा ॥ चाइ फूल चूरन करे करि और सरस मिलाइ ॥ बार बार लेपन करइ अग्नि दग्ध मिटजाइ ॥ १ ॥ बिषला लेप कराय के अरु अलसी को तेल ॥ यह को लेप करै मिटे आगदग्ध व्रन खेल ॥ २ ॥ इति अग्नि दग्ध व्रन ॥ अथ भगंदर ॥ दोहा ॥ गुदा अंड के बीच ही पकि फोरा परि जाय ॥ पीर करै अति पांच बिधि वह है भगंदर आय ॥ ३ ॥ पुनर्नवा रषै वद्धरि साठि वर पात ॥ पीस लगावै तब हि यह भगंदर मिटजात ॥ ४ ॥ तिल मजीठ सैंधो सहत गज केसरि अरु निसोत ॥ करिहारी दातौन अरु करो हरर और आक ॥ वीज पूरकर बीर अरु नोनतेल अरु पाक ॥ ६ ॥ इनकर कलक बनाय के तेल बनावै ऐन ॥ तेल लगाये से मिटे रोग भगंदर चैन ॥ ७ ॥ इति भगंदर ॥ अथ उपदंश - फिरंग ॥ दोहा - हाथी दांत नख के लगे जौन दोष ते सांच ॥ यह विधि करि उपदंश यह होत लिंग निध पांच ॥ धोवे त्रिफला क्वाथ सौं भगरा को रस डारि ॥ खता लिंग के दूरि करि और फिरंग दे टारि ॥ ८ ॥ त्रिफला डारि कराह में सहत संग कीर राख करै लेप उपदंश यह मुनि संगन ते भाष ॥ ९ ॥ कोहकजा नाम वर जामुन सोलय पात ॥ तेल पचावै कलक कर जाको गुन कहि जात ॥ १० ॥ दाह पाक अरु पीब जुत है उपदंश ये दोष ॥ तुरत मिटै यह लेप सो यह याको गुन दोष ॥ ११ ॥ पारो मिरचै लोंग मस्तंगी अकरकरा है पुनि ॥ लव्व बाइ बिडंग पुनि तै निती सुनि ॥ लै मिलवा चालीस होइ आंवरे वे डारइ ॥ बार्ड लव अजमोद अ-

में पुनि में गुरु आरहु ॥ करि गोली है करष भरि इक इस दि
न खावे सुपारि ॥ दूध भात बोरा बुहारि नर मिटा उपदंश
जाँरे ॥ १३ ॥ इति उपदंश ॥ गजकेसरीरस ॥ अथ
अविसर्प ॥ दोहा ॥ फुरिया सवरे देह में निकसे धातु
समान ॥ फिरन लगै पीडा करे वह विसर्प सु प्रमान ॥
१४ ॥ आग जरे कैसी परइ फोडा अरु ज्वर होइ ॥ कब इक
सवरी देह में रक्त पित्त ते सोइ ॥ १५ करे लेप घृत डार के
खता दाह ज्वर जाय ॥ औषधि एक विसर्प की यह
मुनि दई बताइ ॥ १६ ॥ चौपाई ॥ गुरु वे मोथा परव
पान ॥ खैर अरुसा लेइ सुजान ॥ लै सतौनि अरु का
री वेत ॥ नीव पात अरु हरदी लेत ॥ इनको काढा खा
इ बनाय ॥ फोडा कोढ तुरत मिट जाइ ॥ औषधि ए
कि विसर्प की यह मुनि दई बताइ ॥ १६ ॥ चौपाई
जाइ सीतला रोग विसर्प ॥ सीत पित्त अरु ज्वर को सर्प
दोहा ॥ त्रिफला नीम चिरायतो चन्दन कुटकी लाय ॥
और परवर के पात ले वासा आनि मिलाय ॥ २० ॥ ये औ
षधि सब लाय कर इन को खाइ ये क्वाथ ॥ कंइ दाह वि
सर्प ज्वर तृषा को कप क्वाथ ॥ इति विसर्प ॥ अथ स्नेहरो
ग ॥ दोहा ॥ दोष कोय करि मैंनन मांघ पहिल साथ उ
पजाय ॥ डोरा सम इकर इक्ला यु रोग वह आइ ॥ २१ ॥
गाय मूत सम पीस कर बीज बबूरन गाउ ॥ रोग नहरू
वा सोय अरु पीर सो तुरत न साउ ॥ २३ ॥ घीव गाय को प
उ के तीन दिना लगवाय ॥ नेगड़ को रस तीन दिन रोग
नहरूवा जाय ॥ २४ ॥ चौ० बीट कबूतर की ले आउ ॥ त
मह्दि पोरो सहत मिलाउ ॥ गोली बाध लीजिये ताहि

रोगन हरयारे इनवाहि ॥ २५ ॥ अथ मसूरिका-सीतला ॥ दोहा ॥ फुरिया होय मसूर सम बहुर समसूरिका नाम ॥ संग भंग कंद्र अरस भ्रम ज्वर पहिले बखान ॥ २६ ॥ वेल वैत को क्राथ करिवा साधै नमभार ॥ पावै ताहि मसूरिका होय यही निरधार ॥ सीतल जल अमली हरद पीवे पहले तानि ॥ ताके तन में सीतला कढ़े जो पहले आनि ॥ २७ ॥ स्तोत्र पाठ ग्रह मंत्र जप दान यज्ञ सु विचार ॥ एक सीत को कहेउ यही बडो उपचार ॥ जेम सूरिका रोग को कहेउ बहुत उपचार ॥ २८ ॥ जेम मरिका रोग को कहेउ बहुत उपचार ॥ सकल सीतला भेद को यह जानो निरधार ॥ ३० ॥ छप्पै तेल लगावे नाह मूंड पेड़ा होन मुडावे ॥ छोड़े मंगल गीत और बाजे न बजावे ॥ धोये कपरा होइ और भूतन नाजडावे ॥ जा घर में बालक परता घर में यह बात सबना कोरे ॥ परमेश्वर मंगल करै ध्यान उसी सब करे ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ धनापारा चंना गला मोथा दारु कचूर ॥ सिधारे कोरू मिलात अरु बिचरनात व होइ निरोग जब ॥ इति मसूरिका ॥ अथ अमलपित्त अरिल्ल ॥ वर्ष नयो अम होइ न पाय बचावही ॥ षटिकाइ और उसे उपकार सुहावही ॥ उदर कंठ और उदरद ह सुबहुत पयानियो ॥ पारि हांहां जी अमलपित्त इमि रोग सुलक्षण जानियो ॥ छप्पै ॥ लैकु हरापर पक छाल वत्तीस टका भरि ॥ डारे सेर छह जीर चुरे लेपमंद आंचकरि ॥ वाको करै कसार गाय को डार घृत तव ॥ ल्या वैना रि पर सली बहुरि सारे सुटका स्याव गाय के दूध पुनि ॥ करियो कसार इमि जीमि न वह जौ लैउ यह सास्र सुनि

चार सेर गौदूध सोंठि चौसठ भरि ॥ डारि देहि केसरि
पागपदिलो यों करि ॥ तज पत्रज और उसीर चूरन
पैसा २ भरि ॥ सकल यह बांधि डारि गोली करष भरि
सीतल सों एक फेरि पल ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ अमल पित्त का
हू नहीं मिटै कहेउ असाध्य ॥ सेवन तें वह पाक के -
होइ जाइ वह साध्य ॥ ३५ ॥ इति कूष्मांड पाक ॥ धानज
वासा पीपरे दाख हरर और षांड ॥ मधु सों चूरन खाइ -
ये अमल पित्त कर भांड ॥ ३६ ॥ गुरु पीपरि और दूध सों खोया
चीव पचाय ॥ कै गुरु बहेड़ा खाके खांड आमरे खाय ॥ इति
अथ उदर्द रोग ॥ दोहा ॥ सीत पीत तें देह में परे ददो
रो जोर ॥ कहूं जिमि काढ़े परइ रोग उदर्द कठोर ॥ ३८
अजवायन मेथी सगा हरद कलोजी देइ ॥ और मिर
चें यह औषधें टका २ भरि लेइ ॥ गंध कदोइ टका भरि
लीजो शुद्ध कराइ ॥ चूरण करइ गोली करइ आदे को र
स नाइ ॥ ४० ॥ रोज अधेला एक भरि गोली खाइ उठि प्रा
त ॥ जानोगे नरकेसरी रोग उदर्द न जात ॥ सेंधो घृत न
चुपरि करि वोरै कमलाल ॥ सोवो रोग उदर्द करि मिटै
ददोरा ख्याल ॥ सेंधो घृत गेरू सरस और कसूम को
फूल ॥ करइ उबट नों तव मिटै ददोरा ख्याल ॥ सेंधो घृ
त गेरू सरस और कसूम को फूल ॥ गुरु अजमोदा कूट
नै तनक डारि कटु तेल ॥ खाइ तुरत ता को मिटै करत पि
त यह खेल ॥ ४४ ॥ सेंधो घृत तनक चुपरि करि वोरै क
मलाल ॥ सोदा रोग स उदर्द करि मिटै ददोरा ख्याल
इति उदर्द ॥ अथ कष्ठ ॥ दोहा ॥ पूरब षाइ अहार अ
म धाम विरक बखान ॥ कोष्ठ अठारह भांति के दूरि

होय जान ॥ ४५ ॥ अरिल्ल ॥ सबसों कंजा हर देइ कबीज
कही ॥ सैंधो बाइ बिडंग सु औषधि है सही ॥ नाग्य मू
त्र सों पीसि लेप करियो तहां ॥ ४६ ॥ चौपाई ० ॥ १
कूट लाइची बाइ बिडंग ॥ समान सौंफ सिता बिरसं
ग ॥ और दातनि रसौत पिसावै ॥ कर लेपन यह कोढ
नसावै ॥ ४७ ॥ द्रोन २५६ एक त्रिफला जल धरै दस
सो १००० ॥ मिलवो तामधि धरै ॥ वह जल औटै तब
लगि ऐसे ॥ चौथे हिस्सा रहि सब जैसे ॥ ४० ॥ ताम
हि दस पल गूगल डारै ॥ पल दस पांडु तही निरधा
रै ॥ ४८ ॥ एक टका भरि वकुची डारै ॥ और औषधैय
ह निर धारै ॥ ४९ ॥ नीवरू खैर दूद दौरत बीजे ॥ हैहर
दी त्रिफलै दीजौ ॥ हरद सज्जी और सुरदारू ॥ और
भंगी यह निरधारू ॥ ५० ॥ गोली करइ मटर पर मान
॥ वैद्यवै कोई यह निदान ॥ गोली एक प्रात उठि खाइ
बहुत भांति कै कोढ़ नसाइ ॥ यह सर्वांग सुन्दरी करी
कोढ काज ये मुनि की करी ॥ ५१ जमससी के पान पान
मगावै ॥ तिनति चौरता जल अन्हवावै ॥ दिन इक इस
न्हाय सुपावै ॥ ताही की फिर दातौन करावै ॥ पैसा भ
रि यह सब लेऊ ॥ चूरन करि ताते जल देऊ ॥ यह सब
औटै वैद सुजान ॥ गोली बांधे मटर प्रमाण पैसा पै
सा भरि निरधार ॥ चूरन कर यह में सब डार ॥ यह
ले यह आठ गोल बंध बावै ॥ निहचै करके वैद खवावै
॥ गोली एक प्रात उठि खाय ॥ भांति २ को कोढ नसाय ॥
यह सर्वांग सुन्दरी करी ॥ कोढ काज मुनि वर यह करी
॥ इति सर्वांग सुन्दरी गुटिका ॥ दोहा ॥ नेगढु आक मको

सर फों का अरु खंड ॥ अरनी औव करहारी ये स्याह धत
रो खंड ॥ इन कर वकला ल्याइ कर छांह माहि सुखवाय
तेल जंत्र वा ताल को लेइ फेर निकसाइ ॥ ५४ ॥ मासेभ
रियह तेल नर दिन उनचास जो खाय ॥ मिटै कोढ इह
सो तुरत दिव्य देह व्है जाय ॥ ५५ ॥ पत्थर गंधक १ पल
पारो मासो सार पल ॥ एक बिधारो चौसठ पल घृत ता
सों लेउ ॥ पल भरि गुगल लाल सदेउ ॥ ५६ ॥ त्रिफला
लीजो अरु फल तीन ॥ लेउ वकायव पल भर बीन ॥ ४
पल भरि तहां सितावरि आनि ॥ पल भरि शुद्ध शिला
जित जानि ॥ चौसठ पलकं जाके बीज ॥ कृटि कपर छ
न चूरन कीजे ॥ सव चूरन घृत मधु सों साने ॥ चिकने
वासन में धरि जाने ॥ मासे आठ प्रात उठि खाय ॥ या-
को गुन अब देत बताय ॥ गलित आदि कोढ़ सब जांई ॥
कोढ कुमार नाम रस खाई ॥ २९ इति कुष्ठ म ॥ अथ
कछु सेहुवा या पाढ दुगज चर्म चिकित्सा ॥ पत्ववैय
ह सब तेल में हरद आक दल रंग ॥ मिटै लगाये तेल
सों तन से कछु पर संग ॥ ६० ॥ किरवारो दोऊ हरद का
कमाछि कापात ॥ कर वो तेल पमार के बीजि मठा कहि
जात ॥ ६१ ॥ ये औषधि सव पीसि के पिठी समान बता
इ ॥ करे उवटनो देह में पानादिक मिट जाय ॥ ६२
त्रिकुटक बीज पमार के और मूरा के बीज ॥ मठा मे-
लि सब कीजिये पीठी समगहि कीज ॥ ६३ ॥ य हऔ
षधि को उवटनो करे अंग ये ख्याल ॥ सेहुम एक दाद की
दूरि कर इत त्काल ॥ छप्पै ॥ गुंजा चित्रक मूल पोष की राख
निब पुनि ॥ सेहुड बीज कंरज अरु दबरो हिसलेहु सुनि ॥

मोथा चीव कुमार आक का दूध मिलावहु॥ सैंधो वाय विडंग मिरच अरु सहत मिलावहु॥ और पमार के बीज पीस कर करहु उवटनो अंग सब॥६५॥ छप्पै लेकर पहले सुजन पत्र तांबे करवावहु॥ तेल मठा गो मूत छाछ ता मांहि बुझावहु॥ पात्र चौगुनो ल्या नोन से धो सुलगावहु॥ तर ऊपर ये पत्र एक दिन रात धरावहु॥ हरताल पत्र से दुगुनो फिर निंबु बारस डारि सठ॥ कर चन्द तीन घट वाय तब अति पलटावहु पत्र सब॥६६॥ कपरा में धरि पत्र गेंद सी वहुरि बनावहु॥ कपरौटी दुमि सात गेंद ऊपर करवावहु॥ सुखई गेंद कर बाउ आंच दे वहुरि फुंकावहु॥ स्वात सीतल निकसई पीस कर रख करावहु॥ दोइ रत्ती चूरन वहुरि मिश्री मासे चारि भरि॥ यह खाइ प्रात उठि पथ्य चारि पी परैं डारि नर॥६७॥ इति श्री गोस्वामी जनार्दन भट्ट कृते वैद्यरत्ने तृतीय प्रकाशः॥ अथ सिरोरोग॥ सूर्यावर्त्त आधासीसी बेग होइ सित वार॥ सहज पीर आदिक कहे सिर के रोग अपार॥१॥ पीस गाय की छाछ सों पीस कर मूल॥ पहुप कि तरु मुच कन्द को मिटइ मूड को सूल॥२॥ केसरि घृत मैं भूंजिये ता मांहि मिश्री डारि घोर दूध सों नास दे रोगन पहले विचार॥३॥ नास देइ मुख नदि का हि मूड सूल सुकठोर॥ सूर्यावर्त्त आधा सिसी मिटै पवन को जोर॥४॥ जाइफर मोथा पीपरें सोंठि सोंफ सुजीर॥ जटा पीस जल लेप करि तुरत मिटै सिर पीर॥५॥ जाइफर महुआ सोरि अरु भंगरा वाय विडंग दून को घृत सों नास दे मूड पीर हरु रंग॥६॥ चौपाई॥

बड़ी कटाई के फल लावहू ॥ तिन को कूटि सुरस कढ़वाव हु ॥ तासों गुंजा पीसि लगावहु ॥ इन्द्र प्रकार धुज हि मि टावहु ॥ दोहा ॥ आधासीसी की पीरसों दुख पावत है जीउ ॥ मिश्री सीतल नीरसों क्यों न पीसि के पीउ ॥ ८ ॥ इति शिर ॥ अथ नेत्र रोग ॥ दोहा ॥ बात पित्त कफ़ व्याधि तें गिरत नयन से नीर ॥ नयन रोग बह कह त हैं प्रबल करत है पीर ॥ ६ ॥ अरिल्ल ॥ लोध पीउ सें भूमि पर भूंजि पीसि जल सों धरहि ॥ वह कपरा मधि डारि बांधि पुटरी करहि ॥ दारहरद के क्वाथ में बहु वार लगा वही ॥ परि हां दां जीअरिपुयनको इ मि कोप विन सावही ॥ १० ॥ चौपाई ॥ जात्यो गेरू सें धों नून ॥ दारु हरद सर्वत्र वह तौन ॥ जल सों पीसि पल कुलपरावै ॥ सवल वाय सों रोग मिटावहि ॥ ११ ॥ दोहा ॥ और रोग उपजे नहीं अरु उपजे मिट जात ॥ जो त्रिफला के क्वाथ सों लोचन धोवै प्रात ॥ १२ ॥ खाइ अच इक रधो य के जल कन नैना डारि ॥ चल जल सों नु तुरत नरति मिर नयन को टारि ॥ १३ ॥ पिये प्रात उठि नाक सों विमल स लिल नर कोय ॥ मति पूरन अरु गरुड़ दृग अजर रोग वि न होइ ॥ १४ ॥ सहत पीउ संग सानि के त्रिफला चूरन खाइ ॥ चाकर छोड़न छीन धुज नैन रोग तिमि जाय आजे घर के दूध सों घिस कपूर रज नैन ॥ फूली मिटै को टी बड़ी और पावै नर चैन ॥ पीपरि त्रिफला लोध अरु लाख सु सेंधा नोन ॥ घिस२ एक सग सों करै इहि गोली न र तौन ॥ १८ ॥ घस गोली अंजन करहु ये गुन सरस विचतित मिर कांच कंडू फुली नैन रोग दे टारि ॥ १६ ॥ इति नैन ॥

अथ कर्ण रोग ॥ दोहा ॥ मुख पवन कफ साहनु कर कान
भेद कहु दोष ॥ पाकि भवन अरु बधिरता मूल करत यह
दोष ॥ २० ॥ दुमिला छन्द ॥ पकपके अच्छे सुबरन से
आक पात दस बारह लावहु ॥ घीउ घुमरि निन अंगा
रन पर धरि पान मंद करि के सिकवावहु ॥ मीज के पा
त काढ रस कान मांझ में फिर निचरावहु ॥ कानशू
ल यह औषधि करि कर प्रबल बेदना सहत मिटावहु
॥ तुंबर सोंठि हींग सों सिद्धि सुसरसों तेल ॥ मूल बिधिर
ता नाद यह हरै कान कर मेल ॥ २२ ॥ सोरठा ॥ समुद्र फेन
पिसवाय डारि बुकनी कान महं ॥ पीर तुरत हमि जाय अं
धियारी ज्यों भान तें ॥ २३ ॥ दोहा ॥ सूरज मुखी १ सि दूर
या २ मूल लागनी नीर ॥ त्रिकटा कान को कृमि हरैयें औ
षधि और पीर ॥ इति कर्ण ॥ अथ नासिका ॥ झिर
वो लोहू पीव को पीनस अर्स बिकार ॥ रोग होत इमि
नाक में सुनि यह जतन बिकार ॥ २५ ॥ छन्द ॥
त्रिभंगी ॥ धरि उन में ल्यावे मिरच मिलावे गुर संग
प्यावो रुचि भरि के ॥ तव पीनस वैसो कहिये जैसो जो
यत तैसो जरि भरि के ॥ नवगेरू लावे चूरन चबावे पी
परि जाको पात अद्रम मधि दानो नि पुनि सव मुनि जन
कहि जतन २६ ॥ दोहा ॥ इन को कलक पचाइ के लीजो
तेल बनाय ॥ पीनस यह कैकासते तुरत बिदा होइ जाय ॥
२७ ॥ तास सक चौबहु करइ तो यह यतन कराय ॥ गाढी मिसी में
लिके गाढो दूध पिवाय ॥ २८ ॥ कोर कलोंजी पीसके वच सारी निसवा
ष ॥ उटरी सु धेल बराबै पीनस थे मिट जाय ॥ इति नासिका रोग प्रथमु

ख: रोग ॥ रुधिर सहित कफ कोप करि करत वदन के रोग। जी भ दोष दुर्वासना कुरिया फोरा जोग ॥ डारि और वाव वारि की कु ल्ली करिये प्रात। फोरा कुरिया जीव फदि याही सौं मिटजात॥३२॥ एला मैने गुरु डारि के तेल बनाय ॥ ओठ दरकिवो कठिनता आ दि लगाइ मिटजाइ॥३३॥ अरिल्ल॥ चिकुटक वाय विडंग हरद मो था मनो॥ सुखर नीम के पांत सरस इन में सनो॥ गाय मूत्र सों सानि सुखवो फिरी॥ परि ढांढा जी ये मुख में डारि दंत दिढ यह करी॥ छप्पय॥ गज पीपरि और हरद कूट अजमोदा लैके ॥ सोंठ चवेली पात पीय वांसा को दैके ॥ पुन नेवाये कूट खान चूरन मुख राखहु ॥ या के गुन गन कहें मुनि- नने यह विधि भाखहु ॥ दंत मूल कम वात हर सिथल दं त दृढ करन अति ॥ दुर्गंध दोष नासक परम ज्या त्यादि जानो सुमति ॥ ३५॥ दोहा॥ कारो नीरो इन्द्र जो कूट धसो दिन तीन ॥ वदन पाक दुर्गन्ध व्रन दूरि करे यह बीन ॥ ३६॥ चौपाई॥ पाठक पूरनि पीपरि आने ॥ जवाख र रस वत ये जाने ॥ दारु हरद लै आवहि ज्योंही ॥ १ कूट खान चूरन करहि वोही ॥ ३७॥ सहत डारि चूरण संग खावहि ॥ तनक २ गोली वन वावहि ॥ गोली मु ख में राखहि नाइ ॥ कंठ रोग सव देहुन साइ ॥ ३८॥ दो हा ॥ पान खान में बहुत सो चूना खायो जाय ॥ फिरि २ खाली तेल सों कुल्ला ताहि कराइ ॥ ४०॥ इति मुख रोग ॥ अथ स्त्री रोग ॥ तवा दी कुसुम जन विधि ॥ कारे तिल को क्वाथ करि सीतल गुड़ करि डारि ॥ तिय पावे रज मिगवे फेरि निर धारि ॥ इति कुसु ॥ अथ गर्भ स्थित ॥ ४ ॥

दोहा ॥ बीज तितौरा एक के पीसे दूध सौं प्याय ॥ स्नानकरे जादिन त्रिया पुत्र होइ अधिकाय ॥ ४२ ॥ सोरठा ॥ दूध सा थ पिय पाय नाग केसरि सरस ॥ चौथे दिन जब न्हाय पु त्र होइ ताकी सरस ॥ ४३ ॥ लाइ पुष्प को लक्ष्मना फूल दू ध घृत दोय ॥ घृत अस गंध के क्वाथ सों सिद्धि दूध तिय खाय ॥ मात न्हाइ इकही मनो गर्भ रहै सुख पाइ ॥ ४४ ॥ शिव लिंगी को एक फल तिय न्हाय गलि जाय ॥ चौथे दिन ते बांझ ऊ सुत पावे यह आय ॥ ४६ ॥ इति गर्भ स्थित ॥ अथ गर्भ रक्षा ॥ दोहा गिरन लगे तिय गर्भ ज्यों तौ यह जतन कराइ ॥ ले कुम्हार की मृति का जलमें घोरि पियाय ॥ ४७ ॥ कन्या काते सूत सो सइ कटही को मूल ॥ बांधे तिय के तौर है गर्भ मिटे अरु सूल ॥ ४८ ॥ अंड कांस कुस गोखरू जरि सो दूध पकाय मिश्री सौं तिय गर्भ के सूल हरन कौ प्याय ॥ ४९ ॥ दुर्मिला छन्द ॥ सो ना धना लाल चन्दन और समस्त मोथा गुरुवे ल्यावहु ॥ सर सज वासो डारि क्वाथ करि नारि गर्भिनी को यह प्यावहु ॥ व्याधि अनेक रुधिर ज्वर पीरा गर्भ मूल निर्मूल कराव ॥ इति गर्भ रक्षा ॥ अथ सुख प्रसव औषधि ॥ दो हा ॥ बीज बिजौरा के सहत जोठ्यो घिस के प्याउ ॥ सु ख सौं नारि गर्भिनी ताको जनम नाउ ॥ ५१ ॥ सापात औ र सांतरा गुंजा जड के खंड ॥ कटि मधि बांधे तियज ने सुख सौं होइ घमंड ॥ सरफोंका की लाइ जड तिय क टि माहि बंधाउ ॥ यह औषधि परिभाव सौं सुख सो ति यहि जनाउ ॥ सोरह १६ है बारह १२ बहुरि छः ६ दस १० चौदह १४ और ॥ आठ ८ अठारह १८ चारिये ४ ॥ ५

१६	२	१८
६	१०	१४
८	१८	४

लिखि कोठे नौठौर ॥ सोलह दो क्रम तें किम तें लिखे कपरे पै यह अंक।जंत्र देख मिसास्यय दू नारि खाय निरसंक।५५॥ अथ अपराध पातन विधि॥ दोहा। अंगुरी वारल पट के धसै कंठ में कोय॥ अपराध पातन उदर तें इह इलाज तें होय॥५६। पीस लगावे पग करन किर किच हाट्ट मूल कै याही उपचार सौं कारि अपराध निरमूल॥५७। इति अपराध पातन विधि॥ अथ सूतिका रोग। अंग मर्दज्वर कफ अरुचि प्यास सोथ गुरु गान। मूल बेगि हमि सूतिका रोग बैद्य कहि जात॥ पीवे पीपरि डारि के दशमूलन को क्वाथ॥ सकल सूतिका रोग कों तुरत लगावे हाथ।५८। चौपाई॥ आठ टका भरि सोंठि पिसावै वीस टका भरि घीउ मिलावै॥ दूध टका चौसठि भरि डारि षांड पचास टका भरि लावै॥ घोरि छानि ये पाक बना वहि॥ डारि सोंठि त्रिकुटी त्रिंग ध॥ अरु अजवायन करके कर बंध॥६१॥ मिश्री चाव चित्रक मोथा पुनि और कलौंजी इन में ले सुनि ॥ टका टका भरि ये सब लेउ ॥ तीन टका भरि अभ्रक देउ॥ तीन टका भरि मारेउ सार। रूपो सोनो त्यों निरधार॥ करू अवलेय ही सब डारि घृत वासन में धरि सुबिचार॥६३॥ यह अवलेह सूतिका खाय ॥ ताको गुन अब देइ बताइ॥ आयु बढाय वरन बल करै॥ गुजल कसी इन कबहु न परै॥६४॥ रहै ज्वान से मतिय निरधार॥ कबहू होइ सेत नहिं वार ध्याम मूल मंदा गिन जाइ॥ मस्तक मूल रहै को आय॥६५॥ देखि अग्नि बल ताहि खवाय॥ दिन २ यह सों रुचि रुचि उपजावै॥ यह सौवैठि सुक्रसूति पाको॥ कह दीनो

सब गुन है ताको ॥ अरिल ॥ आक कनक के पात ल्याइ सु
पहिल पिसावही ॥ तिस में सरसों तेल चौगुनो लाव
ही ॥ यह पचाय के तेल हेम सुन्दरि करहि ॥ परिहां
हांजी सकल सूति का रोग चुपरि तासों हरहि ॥ ६७ ॥
इति सूति का रोग ॥ अथ क्षीर विवर्धनम् ॥ दोहा ॥
काढ सतावरि रंग तिय दूध संग जो खाय ॥ तौ वाके कुच कल
स में दूध बहुत अधिकाय ॥ ६८ ॥ दूध कुनकुनो करि तिया
पीवे पीपरि डारि ॥ दूध होय तब बहुत ही कही बात निर-
धारि ॥ ६९ ॥ बांटि बिलाई कंद को तिया सहत रस खा
य ॥ दूध होय ताके बहुत गाय भैंस को आइ ॥ ७० ॥ घृत
क और काजर हरज जल सूं पीसि लगाउ ॥ ७१ इति ॥
क्षीर विवर्धनम् ॥ अथ प्रदर ॥ दोहा ॥ अति स्वास
बारी तुरंग की अति मैथुन अति दाह ॥ तातें तिय भग-
तें गिरत रुधिर प्रदर निरबाह ॥ छप्पय ॥ लाल सुपा
री लाय फेरि माजूफल आनहि ॥ फेरि धाय के फूल
मोच रस इन मधि जानहि ॥ गेरू और रसौत और चौ-
राई जर डारहि ॥ कूट कपर छन करहि औषधें यह नि
रधारे ॥ पैसा भरि चूरन सरस चावर जल सो घोरि करि
॥ पीवे प्रात नित नैम करि तो जीवे तिय प्रदर हरि ॥ ७३
दोहा ॥ चावर जल सौ पीसि के सहत चौरइ मूल ॥ ४
डार रसौत तिय तुरत प्रदर करत निरमूल ॥ ७४ ॥
चावर जल सौं पीसि के कुस जरि सहित मिलाइ और
रसौत पीवे तिया प्रदर तुरत ही जाइ ॥ ७५ ॥ चौपाई ॥
जैसे सोरह टका प्रमान ॥ दूध सेर छः लेइ सुजान ॥ आध

टका भरि घृत ले आउ ॥ ७६ ॥ खोवा द सब मेलि बनावै ॥ गोहा गाढी होन न पावै ॥ सोरह टका भरि पिस वावहि ॥ मिश्री खोवा मांझ मिलावै ॥ ७७ ॥ सोंठि पीपरि चातुरजात ॥ मोथा जीरो यों कहि जात ॥ धनाउ सीर रसौत जुलावै ॥ बरि वांब कला हरद मिलावै ॥ ७८ बंश लोचन और पद माष ॥ त्यौं षरली जौ कहत सुजान ॥ पैसा २ भरि ये लेउ ॥ चूरन करि खोवा मधि देउ ॥ ७९ ॥ यह जीरक अब लेह बतावौ ॥ यह कोगुन मुनि जन मन भावो ॥ प्रदर अरुचि ज्वर तृषा स्वांस ॥ कांस छर्द अरु दाह निरास ॥ ८० ॥ दोहा ॥ सिय चाउर कीनी सो मूमा वल की मूल ॥ पीस पियो दिन तीन में प्रदर करै निर मूल ॥ इति प्रदर ॥ अथ रंडा गर्भ नि वारण विधि ॥ अरिल ॥ गेरू तालीस कर्ष भरि ल्याबहि ॥ सीतल जल सौं बहुरि पिस वावही ॥ चौथे दिना अन्हाय तहां औषधियें षाये ॥ परि हां हांजी गर्भ निती संग रहे तिय जब लौं जियहि ॥ दोहा ॥ मधु घृत बीज पलास के पीस जोनि मधि लाउ ॥ चौथे दिन गर्भ नारहेरा तुरत कर वाउ ॥ ८३ ॥ चौपाई ॥ पुष्य नक्षत्र जाही दिन आवे ॥ षोद धतूरे की जड़ लावै ॥ करि हां बांध करे संभोग ॥ रंडा के गर्भ न रहे यह जोग ॥ ८४ ॥ तिल गाजर के बीज सौं अवर कलोंजी खाय ॥ रांडी तया को तुरत ही रहा गर्भ गिरि जाय ॥ इति गर्भ निवारन ॥ गर्भ पतन विधि ॥ अथ कुच दृढ करन ॥ दोहा ॥ रस कुम्हेरी अरु सकल तिल को तेल पकाउ ॥ भिजइ रुई यह तेल

तेल में कुच ऊपर लपटाउ ॥ ८६ ॥ सिथल भये ज्यो होंय कुच लगि पिय के अंग ॥ तेऊ कुच यह तेल सों गिरिस म होंय तुरंग ॥ ८७ ॥ इति कुच दृढ करन ॥ अथ योनि संकोचन ॥ बांध पुटरिया भांग की तिय राख हि भग माहि ॥ व्यानी केयो बार की योनि होय जिमि बांझ ॥ ८८ ॥ बुकनी करे मोचरस तिय राखहि भग माहि ॥ व्याई-केयो बार की छोटी भग ह्वै जाय ॥ इति भग संकोचन ॥ अथ योनि रोम दूरि करन ॥ कुंड लिया आवै रोमन तेहि करहि ऐसो उपचार ॥ अजवायन अजवायन अज-मोदाही मरू ल्यावै हरताल ॥ ल्यावै हरताल घांस चूरन मिलवावहि ॥ पुनि इन सौ तेल बनाय ताहि सिद्ध कर राखहि ॥ यह मुनियन को तेल बनाय ये ही भग मांझ लगावे ॥ तुरत बार गिरि जाय बार तहां फेरि न आवे ॥ ६० ॥ इति रोम दूरि करन ॥

अथ बालक रोग ॥ दूध पिये के नाज खाय के नाज खाय के नाज दूध पुनि बालक ॥ तीन प्रकार पहले निश्चय करिके सुनि दूध अन्न नहि खाय जभी बालक सुख पावे ॥ दूध अन्न नहि दुष्ट तबहिं बुध रोग बतावे ॥ बडे नर को यही औष धि रोग पर ते देह बाल के औषधि हि मात्रा लघु कर बैद्य वर ॥ ६१ ॥ बाइ बिडंग समान तुरत उपजे के दीजे ॥ मास उपरंत एक से बढ़ती कीजे ॥ बीस दिना के बाल के बेर गुठली समता को ॥ औषधि देइ प्रवीन रोग उप-जै जो जाको ॥ पौषधि दूध पिये जो शिशु दूध ता-की माता खाय औषधि वही ॥ तब धाय जो खाय

दोहा ॥ बालक को कुछ रोग जो तौ बरजे सब बात ॥ दुग्ध पान बरजे तरुण यह पंडित कहि जात ॥ ९३ ॥ अरिल ॥ जाढ्यो हरद प्रियंगु लोध पिस बाइयो ॥ इन को कलक बनाय तेल सुबनायो ॥ बालक नाभि ये केत व तेल लगायो ॥ परिहां हो जी त्रिसवाय के चूरन डारियो ॥ ९४ ॥ दोहा ॥ तुरत भयो शिशु सो जनो चूची पीई न जाय ॥ सेंधो मधु घृत आंवरे हरद जीभ लगवाय ॥ दुगये उंगली जो शिशु तो घृत सनवाय ॥ दोइ कदाई बच सर स पंच कोल को चटाइ ॥ ९१ ॥ जो बालक को होइ ज्वर तौ यह यतन कराइ ॥ कुटकी खांड मिलाइ के सहत संग चटवाय ॥ ९७ ॥ चौपाई ॥ काकरा श्रृंगी मोथा आनु ॥ और अती सार पीपरि ये जानु ॥ बाल के मधु डारि चबवै ॥ काम छर्दि ज्वर रोग नसावे ॥ ९८ ॥ मोथा सोंठि अतीस अरु हर जवा उरई मूल ॥ क्वाथ खाइ शिशु को करइ अतिसार निर्मूल ॥ ९९ ॥ चौपाई ॥ काकरा श्रृंगी पीपरि डारि ॥ अरु अतीस इन में निरधारि ॥ सहत संग शिशु चूरन खाय ॥ अतीसार ज्वर खासी जाय ॥ १०७ ॥ अरिल ॥ पुहकर मूल अतीस पीपरें लीजिये ॥ काकरा श्रृंगी पीसि कपरछन कीजिये ॥ बालक को यह सहत संग सु नदे ॥ परिहां हा जी कास स्वास पांच बिधि जानदे ॥ दोहा वंस लोचन सहत संग चाटे जोइ प्रकास ॥ तो बालक की वेगिही दूरि करै यह स्वास ॥ अरुसा कुटकी को चूरन करे सहत खांड के संग ॥ बालक की ऊच की मिटै अरु पुनि बमन मंस ॥ ३ ॥ ५

मिश्री सेंधो पीपरें मिरचे ये पिसवाइ ॥ जो बालक को मुष पके तो पीपरि की छाल ॥ तासों मुख लेपन करो वासी पानी घालि ॥ सारा आम को लाइकर चूरन सरस कराउ ५॥ लरिका के मुख पाक को दीजे यही लगाय ॥ बेल पत्र गूगल हरद उरद छंद दरियापीठि ॥ अरिखेंधूपव नाइये जोर औषधि नीठि ॥ लरिका रोवे रात को लेत न पल भर चैन ॥ ताको याकी धूपदे यह उपाय है ६॥ इति बालक रोग ॥ अथ गृह ग्रहस्तो उपचार ॥ छंद ॥ पलक करे उदवेग पलक में बालक रोवे ॥ दांत काटै देह अपनी देह बिदारे ॥ धाई माइ के काढ़ि नोचि बित्या पारे ॥ सावन के जुर इमि होइ जो बालक तब हिं ॥ चेष्टा बिलोकिय विधि सकल जतन करइ बुध बर तबहिं ॥ दो० ॥ दुर्बल लागे रैनि सब छिन वोर मल और ॥ मन्य अंग जिव्हा बढ़त ये लच्छमन या ठौर ॥ ८ ॥ चौ० ॥ नदीन के संगम जहां ॥ वाक कूल विलोकि तहां ॥ दोऊ कुल की माटी ल्यावे ॥ ताकी पुतली एक बनावे ॥ पुतली ऊंची हाथ प्रमान ॥ तीन नैनन कर चतुर सुजान ॥ दोऊ हाथ पुतली के करदी ॥ शूल कपाल हाथ में धरदी ॥ जटा बनावे सरस अनूप ॥ वाको करइ रुद्र की रूप ॥ करे सर्व भूषन तेहि संग ॥ भस्म लगावे सबरे अंग ॥ सर्वभ्नी पति रुद्र कहावे ॥ उह मूरत में ताहि बुलावे ॥ मंद आदि पूतना और ॥ सद्र आदि सुहृते ठौर ॥ चावर पीस चूरण कर वावहि ॥ चौरस ठौ तब चौक पुरावहि पूरब मुख प्रतिमा बह राखे ॥ सो तो मित्र कहे भाखे ॥ दीप धूप चंदन अरु भोग ॥ फूलन कर कीये संजोग ॥ एक

त ज्ञा होय जो गोबर सैं लीपै फिर हाथ भर चांवर के चून सौं
चौखूटो चौक पुरावै तिहि यही बास कै जलवा सूखा के ध
रहि ता माटी की मूरति धरहि महीना तिथि वार उच्चूरथ
मुक बालक यस्यु पर्व ग्रहस्य त्यर्थः सर्मण हुवल कारि
छाया भांति सकल करै फिर वो प्रतिमा सूर्य आवाहयामि
ति सर्व ग्रहन को आवाहन करै ओं सर्व ग्रहादि पतिनये
ह्र फटि स्वाहा॥ या मत्र सूं स्नान धूप दीप नै वैद्य करके
सात बेर सात ठौर चून के दिया गुरु को पानी पछरी मा-
स बुरा गेहूं की ककही बराबर हसव साज प्रतिमा के आ
गे परसे ओं नमो भगवते त्र्यंबके सत्य सुवाहु सत्या प्रवा
ह्र हूं हूं ह्र फट स्वाहा - यह मंत्र पढ़ के यह मूठि को हौ ल-
ड़ के हाथ में देह जोन साज रौवे आग पहे यह से होइ सह
मग डरावा है फिर दूसरी मूठि को हौ लएक को हाथ दे-
ह ह्रीं ह्रीं स्वरू। फुर वै न याय: नमः यह मंत्र पढ़ के पी
से अन्न में डरावे लड़का की बराबर फूलन की माला ब
नावे लड़का के उपर तीन बेर फेरे ओं करनी सुस्या पय
या पद्धि माल प्रतिमानु साधरा फिर पाछे को न देखे या
भांति चल दास करि धर बावे फिर लड़को धूप देय या-
बिधि यो परि मिरच जटा मासी मनुष्य के बार बिलावी
की बीट कचूर ऊन नयवा बिसार ये हाथी दांत गाय
भैस की सींग अहार सब मले कुधारे यह भूत प्रेत कृ
त्या उन्माद नुसरा वस गृह राक्षस पिशाच दो तिरिया
॥ इति गोस्वामी जनार्दन सुत महं विरचिते वैद्य र-
ते चतुर्थ प्रकाशः॥ अथ बाजी करनम॥ छंद
॥ मोसरू तालवो पारा सतावर बीज कारिछु केली मगावो॥

सामस अरू गंगेरू की जर खोदि सुपादिल मंगावो॥ औ
षधि सब कूटि कपर छन राखो दुग्ध मह धारि पीवै ॥ ६
सो मेहरा धर जो वुरू जाके ताहो को चूरन वैद सवावै
॥१॥ चौ०॥ बीज गोखरू को पल एक॥ दो पल बीज
करे छके देय॥ बीज गंगेरू बीजो लीजे॥ द्वै पल कुं
द बिदारी लावै॥ द्वै पल खीरा जर मंग वावै असगं
ध अच्छो लीजे बीन॥ ताको डारे ले पल तीन तोइ
अरू सो तोल वोखादु॥ चन्दन लाल गिलोय क्वा
रि॥ तज पत्रज एलाले घु दोऊ॥ लोंग आंव रेइ न
मधि देऊ॥ पीपर और गज केसर सोउ॥ सोरह
सोरह मासे दोऊ॥ इतनी एसब औषध लावै कू
ट छान बुकनी कर वावै॥ ताकी द्रव्य भावना पोत॥
एक अधिक ते मानो भौत॥ ल्यावै खैर कुस कांस ज
रै॥ सात भावना ताकी परै॥ चूरन बराबर खांड मिला
इ दुष्ट अरू बीरज को हान॥ मूत्र कृच्छ्र ये सब जान
॥ सगरे मूल धात के दोष॥ तेहनि करे धात की पोस
॥ सोनासे सौ गुन करे॥ तो कैसे सो मनुष वल धरै वां
रू खाय चूरन सुत जावै॥ कामदेव चूरण ये कहावै
दो०॥ चूरन मधुघृत संग सो करई सकल संजोग॥
बढ़े धातु यासो तुरत करई दस त्रिय सो संभोग॥१॥
कुंडलिया॥ ज्वान होय चाहे फेरि तो राइज का करा
य॥ आंवरा को रस काढ़ि के आंवरा चूरन खाय॥
आंवरा चूरन खाय भावना दे बहु तेरी॥ सुखादु घा
म मह सोख सुनिये तेरो॥ चूरण को सुखवादु अरु मधु
सेवनो॥ दोहा॥ सोरह मासे बीज करे छके खाद मधु घृत

छोयजो पिये फिर दूधसौं करदस त्रियसौं रसरंग ॥
छप्पय ॥ एक प्रगोखरू १६ टका दूध २४ मधु डारै ॥ औ
र गोखरू चूरण यह दूध धरहि कसारै ॥ षपूर मिरच
पीपरि और लौंग सारजाजी पकर ॥ समुद्र सोष अज
मोद आवरे अकर करा भलु जाती ॥ पुह करके सरिसु
परिये सम चूरण करउ ॥ दै जीरा हरदी बहुरि सोंठि
बहेरा पास धरेउ ॥ चूरन और कसार मिलाय के स-
व तोलौ ॥ चूरन आधभाग खांड तोलो यह औलो ॥
ये सव तितने भाग औट के पाक बनावे देखि अग्नि
बल सनपृ और धातु कर ॥ ८ ॥ लादू प कोरा निर धारो
॥ छोलि के कलश करथ बनारो ॥ पांच सेर जल हांडी
डारो ॥ चूरन तै आंच मंद तव वारो ॥ चुरो जानो कुह-
डा उतरास्वो ॥ मिट्टी पीस कर घोट बनावै ॥ घीव
टका सोरह भरि डारि ॥ कुहड़ा करि सरस कसार ॥
पांच सेर मिश्री को पाक कसा एसो करहु जो छूटे ता-
रू चिकला धना सवहि बिचारो ॥ तज पत्रज एलाल घुंडा
रो ॥ नाग केसर जीरा अरु लेहु ॥ फिर तालीस निसोत से
देहु ॥ गज पीपरि मोथा दातोंनि ॥ ताल बुखारो तिलको
हौत दाख गोखरू मोथा बेसो ॥ चाकट असगंध ले ते-
सो ॥ खैर करेळः के वीज अजारो ॥ जाको अरु कचूर नि
र धारो ॥ बंधा लोचन पीपरा मूर ॥ कमल गट्टा लखि
दि सूर ॥ जाती फल कंकोला ॥ कंद बिदारी ल्यावे मोल ॥
॥ सेमर छाल सुसेंधो नोन ॥ मूसलि कंद कहो ले ती-
न ॥ भांग सिंगारो लाजो सब से ॥ सोरह मासे तबरो ॥
इनको चूरन करहु बिचार ॥ अभ्रक देउ टका भरि डा-

रि ॥ सबै बनाइ पाग मधि डारे ॥ सिद्ध होइ जब दे-
खिय सार ॥ ताकी गोली धरहि बनाइ ॥ गोली प्रमा
न टका भरि खाई ॥ धातु पुष्ट करै अग्नि बढाये ॥
बमन अमल पित्त छुट जाइ ॥ पांडु न स्रावन रक्त पि
त्त अरु अपान सावै ॥ रोग प्रमेह नजदीक न आवै ॥
अस्सी वर्ष को मानुष खाइ ॥ सोयो सो बह ज्वान कहा
इ ॥ उज्जल कपडे तक बहु अंग ॥ दिन दूनो बढहि अ
नंग ॥ सुक्र सुद्ध याते अति होय ॥ बाढै कांति कुवांरा
दोइ ॥ कुहड़ा पाक मसगहि जानो ॥ ताके यह गुन कह
त बखानो ॥ २० ॥ छन्द ॥ नोन सात टका भरि तोल तवै
॥ बीज करेळ के चूरन करै ॥ छः सेर मंगाइ के दूध सुनी
॥ वह चूरन डारि बढाउ गुनी ॥ जब औटि के खोवा होइ
सवै ॥ घृत आठ टका भरि डारि तवै ॥ अषाढ टका इकती
स भरो ॥ मिलवाय टका भरि बांधबरो ॥ अरु पाय मि-
ल वै तबही बंधवाय सब कै बरी ॥ जब ही गज केसर बा
ने सुजाय फरी ॥ अज मोद लौंग अकरकरा मिरचै अ
ति सोंठि सुपी परिदे ॥ और सारूक को पुनि लेउ ॥ तज
पत्रज औरे । लायची जहां ॥ तजि पीपरि लेउ प्रियां गुरू
हा ॥ और बीज धतूरे के उग्र है ॥ सोरह २ मासे कहि इन
में सो सिद्ध के सोष कहाऊ ॥ बनाय दय वाको जासु
॥ पर मेह सुकी बना कृच्छ मिटै ॥ पथरी मूल और गुल्म
घटै ॥ सब बात के रोग बियोग लहौं ॥ त्रिय कू पनि घाय
तें गर्भ रहै हटि संकट कहि फारि कुप मर्द करै ॥ अरु धा
तु धाइ अरु वृद्धि करै ॥ त्रियन के लोह विकार हरै ॥
नर के मन वे मनोज टरै यह खाय ॥ विचार यामें ॥ त्रिय

को गुरू रहै रितिमें ॥ यह पाक कौरछु के भोजन के ॥ हित आवन बालक के मन भषे। २९ पीपरि पहले टका से भर पीसि के ॥ सो औटै दूध टका चौसठ भरि सोक के ॥ आठ टका भरि घी उड़रि कै कसार पुनि॥ चौसठि टका भरि षांडु को पाग करै सुनि औषधि डारै॥ बहुरि पूरण करिये पाग मनाते॥ औषधि बनाय कहत सुधिआन तज पत्रज और लौंग लायची डार दूस कोतर मोथा पीपरि तगर चन्दन बान धनूर तोल सकपूर असजवी के सार अरू॥ अभ्रक लोहा सिंगरफ एक २ पल सब धरू। चार टका भरि सहत सुडारि पुनि गोली करहु बल अगिन समान निरखि खाय गोली तिन्ह यह धरहु॥ पुष्ट करै बल करै नेत्र की जोत करै॥ यह धातु करइ बल करइ छर्दि भ्रम मोह हरै॥ कोढ त्वषण दाह हरहि बीस परमेह नसावै॥ कोढ अठारह आठ ज्वर बात रोग सकल कल बिष गर्भ होय बांझ अरू कस्पिप्पली कहै षांड मल॥ ३०॥ सूखी कली आंव रे ल्यावै ॥ सोरट के भरि सोतो लेबे गा बे दूध सोति समधि डारि चौसठ टका भरि दे निर धारि॥ एक राति फिर दूध टरकावै॥ नयो दूध आनी भरि वावै॥ तीन राति इमि करसुनि षाय॥ पीसे लोम लोद कल लेई ॥ और पीठी सी करइ ॥ चौसठ टका भरि दूध पुनि धरहू॥ आंबरा घोरि दूध में आने॥ कपरा राधी रे पुनि छाने॥ भट्टी की साई ले आवै ॥ तिह में आबरा डारि चुरावे ॥ आग बार चूल्हे में सुनी॥ नावा करिये बात यह मुनी॥ मिश्री चौसठ टंक प्रमान॥ घोरि बनावै पाक सुजान॥ तजपत्रज एला सम डारै

और नाग केसरि निरधारै ॥ जायल पत्रज फरमावै ॥
मय धना लयरह ठौर ॥ चंदन तगर सुनीरा दोउ ॥ कम
ल पट्ट लजा टिउ सोऊ ॥ मोथा अरु केसरि जे सई ॥ अ
कबाब चीनी कह दई ॥ एक एक मासे भरि बत्तीस ॥ ली
जौ कहत बैद्य कोइ स ॥ चूरण कराय औषधि ले ल्या
वै ॥ पाक मोगई में मिलावै ॥ खोवा डार बनावे गोली
टका एक भरि बह निर्मोली ॥ सोरह मासे अभ्रक बंग
र मिलवै खोवा के संग ॥ औषधि सरस हकीम कीक
ही ॥ नाम नौसदारू कह दई ॥ याके गुन अब कहत
बखान ॥ लीजौ सकल बैद्य अवजान ॥ बल और वीर्ज
को बहुत बढ़ावै ॥ पित्त रोग चालीस मिटावै ॥ उदर
रोग आठ भजावै ॥ तनक जो यह औषधि कों खावै

अथ लक्ष्मी विलास रस ॥ छप्पय ॥ एक टका पै
दस मासे गंधक भाग धतूरा बहुरि यारीति पारो इन
को बीज फेरि बिदारी कंद जाय फर लीजौ बीज ॥ गुर
सक्कर निर सोरह मासे सात पीस के चूरन सरस ॥ ध
रहु सोरह मासे बहुरि जापित्री बुध आनौ ॥ दे दस मा
से कपूर मिलाय सब जल सौं सानो ॥ पल मधि डार घो
टि किनी कर चावै ॥ सुवहरे गोली बहुरि खाय प्रात उ
ठि नित पुनि ॥ याके विचार पुनि कहत अब सरस ले
उ कवि सो सुनि ॥ सन्निपात और बाय पित्त के रोग जायं
सब ॥ कोढ अठारह जायं बीस परमेह हरै कब ॥ नारी
ब्रन और गुदा तेरो गम मंदर अति वृद्धि पीनस छई अर
स स्वास और मेद गद ॥ आम बात रुसता उदर कान ॥
नाक मुख रोग पद ॥ उदर मूल सिर मूल जीभ के भर

यह त्रिय जनके जे मूल तुरत डारै तेरा हू आनौ पान नि
पृान मास दधि मूल मठा जल सरा संग जो खाय वृद्धि
पावै सो तरून ॥ नवला सौं त्रिय सों संभोग ॥ करे घटइ
ना घटइ तनक ॥ बूढौ नरकै बार सिथल नहि होइय
यह सुनि भनक गज के सो बल होइ बात सुनि यह द
मन नारद सों यह मैं उचित विचारि कृस्न सों देइ तरा
रस में यह नाम लक्ष्मी विलास निधान रस सरस देइ
मभ्फानी ॥ ये छय उत्तव जाई कृष्ण तिहुलोक पति
लषनारी बस भयौ ॥ इति लक्ष्मी विलास रस ॥ अथ
चन्द्रोदय रस ॥ छप्पय ॥ टका भरि लेइ सोन बहु सु-
न्दरा ॥ आठ टका भरि लेय तथा पारा ते बुधवर ॥ लावै
गंधक सो धटका सोरह भर सोऊ ॥ घोटै लाल कपास
के फूल के रस में सोऊ ॥ घृत कुमारी को काढ़ रस तासें
सव ये घोटि करि सीसी में कपरोटी करि तामें सब ये
रखि भरि ॥ ८ ॥ सीसी को मुंह मूंदि हंडिया में धरिये
॥ तीन दिना लगि आंच तरे हंडिया के करिये नय थान
समलाल जब टका एक लेइ वहक पूर लोंग अरु जायफ़ल
पीपरि पल १ लेइ सब मृग मद मासे चार डार सब की बुक-
नीकर मासे २ तोल के पुड़िया सब की करि धरि ॥ पान
साथ ये खाइ विथा सब गर्भन सावे ॥ थावर जंगम गरल
दरद कबहू नहिं पावै ॥ वर्ष दिना लगि खाय यह चन्द्रोदय
जन मति न मृत्यु जब सुमर नर ॥ अजर अमर बहु होइ
इति चन्द्रोदय ॥ अथ सर्प बिष को उपचार ॥ दो०
दैव योग ते सांप हू काटै वाये मंत्र ॥ और औषधि करण
छूट है ताते अरु ये जंत्र ॥ १२ भानु भानु वृष रासि के सिरक

बीजतब एक पसेवाके निकट ही अहि २ आवै बिष खा
वा जल सौं पीव ही बारह वासो मूल॥ पीर जुते ही सांप के
तुरत करै निर्मूल॥ १५॥ घृत मधु नौनी पीपरें मिरचें आ
धादै नौन॥ याको खाये रहत सकत तक्षक को विष कौन
छप्पय॥ अजैपाल की मींगी लाई दुगनी कर वावो॥ निबु
वा को रस काढि एक बीस भावना दिवावो॥ ताकी बांध
बी फेरि छोटी छोटी॥ सुखाइ घाम मधि धरै नहीं पतरी
नह मोटी॥ विस मानु के थूक में गोली तनक करै॥ पुनक
रहि जो नर जिय सुख पाय के सकल सांप के बिष हरै॥
१६॥ अथ बिच्छू का उपचार॥ लाल आपी हू-
रो निरखि ताके पात खवाय॥ बिच्छू काटो होय तौ
ताको बिष मिट जाय॥ १७॥ अजैपाल लै पीस कै
पानी सौं लगवाउ॥ बिच्छू बिष सब तुरत ही बिदा
करै यह भाउ॥ १८॥ अथ बर्र बिष उपचार॥
सैंधो सोचर मिरच ही सोंठि पान को रंग॥ लेप करै तो
मिटै चढाउ बिष तन संग॥ १९॥ अथ षनखजूरे
बिष उपचार॥ मनसिल गेरू हरद के है लेपन आय
के दीया के तेल सौं खन खजूरो बिष जाय॥ अथ कू
कर के बिष का उपचार॥॥ पात मूल जर वेत के कूट
काथ कर बाय॥ करि सीतल तौ वेग ही कूकर को बिष
जाय॥ साले जर कै रज बीज धुरा पिसवाय के॥ बिष
कूकर को मिटै यही औषधि आय॥ २२॥ अथ मक
री के बिष को उपचार॥ दोहा॥ हरदी दोउ मजीठ पु-
नि गज केसरि सुपतंग॥ सीतल जल सौं लेप करू-

मकरि विषभंग॥२३॥ अथ मादुर बाय ताको उपचार॥ सीतल थल सीतल सलिले अरु सीतल उपचार॥ हरत काज विष विषम कर सीतल सब सार॥२४॥ चौ०॥ मोर पक्ष को तामें ल्यावे॥ तामधिकि चंद मारि बनावे॥ लेइ जहर मुहरा को नीको॥ करे बीज की आदि मन दै के॥ ये सब पानी डारि घुवावे॥ धोवे एक बिजोई यामें॥ ताके पानी देह पिवावे॥ विषके भांति के जंगम जाई॥२५॥ हलिया थूथा मिरच सुहागा॥ ये तीनों लीजे सम भागा॥ भाग लीजिये विष के दोई॥ विषगिरि वज्रपात रस होई॥ देव आदि दाली रस ल्यावे॥ गोली तीन पीस बनवावे॥ गोली मासे चार प्रमाना॥ कै गाय मूत वह अनूपान॥ खाय होइ जटा विष जोई॥ उतर जाइ जासों विष सोई॥ सब विष जाइ जहां लगि वाको॥ कौन आई विषएते रहस कै॥२७॥ अथ क्षुद्र रोग तत्रा दौ योवन पीडिका॥ ज्यों सेर के पेट में काढा बहुत बिथाई॥ मुष में फोडा होत है जोबन पीठि को भाई॥२८॥ बरने को कीक्राथ मुख वासी घायल गाय॥ जानी फल काचे न्हत मिरच जीवने फोरा जाइ॥२९॥ कुष्ठ रोग॥ दोहा॥ बाहुबगल और कंध पर जब स्याम पित्त की कोप ते पीर जुत र फोरा कच्छा नाम कट सिला जीत देवतरु ओटि लगावे नित्त॥ बात पित्त कफते मिटै फोरा कच्छा मित्त॥२
अथ बाइ के उपचार॥ नवन दूध वृत्त सों लगाइ जो मगन लगाऊं॥ फूटे पाषन के करत चलत महा सुख पाऊं॥ सेंधो मधु घृत एलवा डार कटु तेल

॥ ताके वेपन ते मिटै वन्न विवाद मूल ॥ अथ गुरु मया: अथ अट्ठाईस नक्षत्रों की रेखावली का दान

अ.	२	१७	१०	१९	भोजन	स्वा	१७	३	२०	२५	महिषी
भ.	०	३२	२०	२६	घृततै	वि	०	१	६१	२१	गोदान
क.	१	८	१२	१६	दधिघृ	अनु	८	१६	४	५	अन्नसोना
रो.	१०	११	१४	१७	घृतपात्र	ज्ये	११	४	३	१७	तेल लोहा
मृ.	१	२	११	२८	तंदुल	मू.	०	३१	१८	२१	कृष्ण गौ
आ.	०	२१	२२	१०	श्वेतगौ	पू.	०	११	१२	२२	गुड़ तिल
पु.	७	१२	११	१७	गुड़ति	उ	६	१०	२१	२७	भोजनदान
पु.	०	३०	६	१०	गौकृष्ण	श्र	१२	२८	७	११	गुदलदान
श्लेषा	६	३०	७	१४	वस्त्र	ध	६	२०	२५	१७	घृत चप
म.	६	५	११	१२	गोसोना	श	०	३०	२१	२६	वस्त्र श्वेत
पू.	१४	३०	७	२७	गोपृथ्वी	पू	२०	२०	३०	२२	लो रूपा
उ.	१४	३०	३०	७	गोभूमि	पू.	०	२	१६	२६	वस्त्र श्वेत
ह.	०	१०	८	७	गो तिल	उ	१४	२	२८	१६	हिरनाय
चि	१०	३०	२०	२५	गोमूत्र	रे.	१०	६	६	२६	सुवर्ण
०	०	०	०	०	० ०	०	०	०	०	०	० ० ०

अट्ठाईस नक्षत्रों का दान ॥
कहा है यथा शक्ति देय मिटै

दो० ॥ दगत निकरि आवत गुदा वै फिर भीतर जाइ ॥ मी लि गाय के दूध सौं वैग विकाने नाइ ॥ कटि भूसरि की व घ गुद भाग बंधटाउ ॥ मिटै गुदा को निकसबो नर आव रस पाव ॥ ३५ ॥ सजी कोटि द्रही वेन दही पिस बाय ॥

अलपानी निया डारि के दून की कलक कराइ॥ ३६॥ घृ
त पचइ देन को करद सिधारी दान नवार॥ गुदा भंग पीड़ा
सहित सो यासों मिट जाय॥ ३७॥ अथ त्रिफला विधि॥
दोहा॥ हर्र बहेरा आंवला भाग एक दुइ चार॥ या क्रम
ते लीजै सदा याको यही विचार॥ ३८॥ दूनी मिश्री डारि
के कारि घृत मधु संयोग॥ खाय जाय परमेह अरु सोथ को
ढ के रोग॥ ३९॥ अथ हरीत को जरगा॥ चौ०॥ वाय बिडंग
उदर अग्नि बाढै॥ पीसि खाय तो मल को काढै॥ खाद उ
से ई बंध तब करै॥ भुंजी हर्र त्रिदोष यह हरै॥ ४०॥ ग्रीष्म
काल गुरसंग में सेंधो वरषा में॥ खांड संग ऋतु सरद सों
ठि हिमवंत महा में॥ पीपरि संग हर रितु शिशिर जवहिं तब
हिं नृपराज वीरसित ताज हूमि तुवरि युत वासि संगमंग॥ ४२
अथ त्रिकुट दोहा॥ सोंठि मिरच पीपरि मिलै सवनि कुट
वै जान॥ दीपन ज्वर को ढाहर पीस हरै पै आन॥ पंच कोल ष
ट कटु। दो०। चावर चितावर पीपरैं सोंठि पीपरा मूल॥ पंच
कोल अफ़रा मिटै गुल्म पीर अरु सूल॥ ४३ पंचकोल लै एक
रि मिरच मिलै तव एक॥ पंच कोल अधिक गुन अग्नि बढै सुवि
वेक॥ ४४ सोंठि जोग॥ चौ० सोंठि भूंजि के सैंधो खाय॥ तो पृह
दोष आम मिट जाय॥ खाद सोंठि जो गुड़ के संग॥ मिटै
तौ त्रिविध वात पर संग॥ सोंठि खाड़ दूध में मेल॥ देइ
उदर ते आउ ढकेल॥ मठा संग सोंठिये खाय॥ जारे आ
उ सहै सुख पाय॥ अथ चातुरजात॥ त्रिसुगंध तज
पत्रज लाइची त्रिसुगंध सो जान॥ मिलै नाग केसरि
जवै चातुर जाति सो जान॥ ७६॥ लघु रोधो अरु

पित्त कफ उष्णा करै रसरंग ॥ वीहन हरकफ दूमि कहौ चा
तुरजात प्रसंग ॥ ४७॥ पंच क्षीरवृद्धि ॥ वर उमरी पीपिरि र
बढ़रि पारा सुपारी ओर ॥ पाक सुआकर क्षीर चय सीतल
बनहर आइ ॥ ४८॥ ओर बंधक वा सौंव सील दोष मिट
जाय ॥ बिर सुख कोउ कहि परा शाशि पर ओर ॥ पारास
पीपरि केठौ रही वैद्य कहैं हे ओर ॥ त्वचा क्षीर तरु पाव
रा मूल बन हर आइ ॥ ओर बंधक यामैं बढ़रि ओर दोष
मिट जाइ ॥ ५१॥ अथ दश मूल की बिधि ॥ दोहा ॥ कर्टाई
दोऊ गोखरू अरु नीअरु सालोन ॥ पाडर बेर कुहेर अरु
सोनो पाटा रोन ५२॥ यह दश मूल कहावई याको क्वाथ
बनाय ॥ रोग प्रसूता सब मिटै बात प्रसूता जाय ॥ ५३॥ पं
च कोल की बिधि ॥ सांभर पारी चूर मरो सेंघो सोंचर कांच
नोन एक द्वै तीन अरु चार कहै पुनि पांच ॥ ५४॥ ४
क्षुद्र क्षारक बिधि ॥ दोहा ॥ जवा पार साजी बढ़रि
देइ बात पर क्षार ॥ क्षार जहां ओषधि कहैं इहतासा
निरधारि ॥ ५५॥ अथ युक्ता युक्त कथनं ॥ पीपरि वाय
बिड़ग पुनि धना सहत पक्ष डार ॥ नई नई ओषधि
अवे लीजे सकल बिचार ॥ ५६॥ पीवने की बिधि ॥
गुरु अरु करो सता बरी बासा कुहड़ा जानि ॥ अंस
गंध सोफ पसारि नी पिया याही सों मानि ॥ ५७॥
अरिल ॥ अंग कहे नाहि होय तो मूल लगायी भाग क
हेउ नही तहां होय तहा सम जानियो ॥ परि छांडां जे
पाव कहा नहीं नो मारी को आनियो ॥ ५८ ॥ दोहा ॥
एक पाठ में बारहे आवै ओषधि मान ॥ दुइ मात्रा ली

जिये तहां यही परमान ॥ दोहा ॥ चरिसा दिन जाइ को
औषधि कहिये स्वादु ॥ दीजो जाको मास दुइ औषधि
गुनि नहि जाइ ॥ ६१॥ चौपाई ॥ बरस दिना बीता जो बा
ही ॥ गुटका होय हीन गुन ताही ॥ चार महीना पाछे
॥ घृत मातेल हीन गुन आछे ॥ बरस दिना पीछे निक
साव ॥ गुन तेहीन औषधि भा पाव ॥ ज्यों ज्यों होय पुरानी
संत ॥ सीसा धातु रस त्यों गुनवंत ॥ दोहा कही जो औ
षधि पाठं महं अनहित रोग दिखाय ॥ तेही को देत
बिचार के दीजै और मिलाइ ॥ ६२ ॥ मिलवा ना हि
स है जो तो डारें चन्दन लाल ॥ बंसलोचन पूरे नोनी
सुर ले वह ख्याल ॥ ६४॥ खावै को औषधि करै तो अ
जबायन डारै चतुर डारै कचन और ॥ ६५॥ खैवे को
मत दीजियो कारी जीरी जान ॥ कारी जीरी डारो ॰
ज्ञान ॥ ६६ ॥ खैवे को औषधि कहं बच तहां मत डा
रू ॥ बच की ठौर कुली जनहि लीजे यह निरधार
॥ ६७॥ नीम आदि को लीजिये खपरं आदि को सा
र ॥ पहिले पर वरआदि देदरिया आदि फल डारू
॥ ६८ ॥ मुक्ता फल की क्षार ले मुक्ता फल की छीप। सहित सुठे
र प्राचीन गुर सुन करं सुसमीप ॥ ६९॥ मिश्री शामितो घाइ
ले खीले साठी धान ॥ दाख न मिल कुहेड़ फल तके ले यही
प्रमान ॥ तितरीक कफ़ मिलै तहां डारत रूसी बीज ॥ अमल
बेत ना मिलै तौ चना खार कह दीज ॥ चंदन सहित मिलै
न तहां पत्ती चंदन डारि ॥ या बिधि कहदी जै ॥ स-
कल जुक्ता जुक्त बिचार ॥ अथ विरुधाहार-

कथने ॥ गुर विरुद्ध अहार है सोई गरल समान ॥ पावे ज्ञान को नृप वर वैद्य सुजान ॥ ७३ ॥ कछु दिन जी ते कीन बुरत करत विरुद्धाहार ॥ छोड़ विरुद्ध हारत व कर भोजन सुविचार ॥ ७४ ॥ व्याधी तुम भई मरण म रु सब इन्द्री बल हीन ॥ करत विरुद्धा हारतब ते वर जेव नरि दीन ॥ ७५ ॥ छप्पय ॥ कुरथी मदिरा संग तेल बन फल बेल खवाय ॥ पार मीन दधि मास सहित जानुनी ब छाई ॥ दुग्ध दुष्ट कहि जादु वृन्द के संग परहि जब हिं वाव हुय सक्त बहुरि फेरि मठा दूरा संग जब ही ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ बीते ते दस घरी मूर दूध हो सुविकार ॥ बीस घरी बीते परे विष सम यह निरधार ॥ ७७ ॥ विन औटे पंच दस घरी औटे बीस प्रमान अपय जल लगे मधुर वह तब लगि पथ्य प्रमान ॥ मीन करे जो कोइ प्रसंग ॥ ७८ ॥ साग जाके गुने मधु के संग दूध जो खाय ॥ वह जैसे सांप कहि दीजे दूध पि याय तीतर लवा बटेर मृग मोर सकल बन जान ॥ मास सकल मे संग कर भली भांति मिदान ॥ ८० ॥ छप्पै ॥ स कल खटाई मांझ आकरो भलो बतावो ॥ सकल नोन तिन्ह मांह नोन सेंधो मन भावो ॥ जैसे जो खादु सकल ताहि गुन दायक ॥ सकल मोद कटु वर्ग सोंठि ते अधि ते लायक ॥ तिक्त मांझ परवरस रस मधु मांझ खाउ व रसन साथ दूध उत्तम है और साथ विकार ॥ दोहा मूर मधुरता वो सलिल गोह मास खाए ॥ मठा उक्ष इन सो घी घृत खांड बोन नाह ॥ दस दिन घृत सो डारि के

कै लोध कासि षि दारि ॥ तौ वह विष सम जानिबे दई
षचै पै मारि ॥ ८३ ॥ छप्पय ॥ मंड तेल सौं गोह लवा
तीतर कैकी ॥ गुरु मधु मंद रूष अमल संग मृग रीछ वि
बेकी और कपोत के मास तेल सरसों के ताके ॥ रांधे हो
इ विरुद्ध औगुन सुनिये याके ॥ भांति २ के मांस जब
रांधे सब एकत्र करि ॥ तब जानि लेउ याके औगुन पंडह
र वह जारि मरि ॥ १ ॥ जो हारियल को मास दार हरदी की ज
र में ॥ सो कुसुंभ को तेल मास न्योढा कै जानो ॥ मांस काक
रो को छेद करि खाइ सो कछु न हित ॥ मदिरा सोंठि त्यों अहि
त करुष कली को मास चित ॥ ८४ ॥ निंबुआ रस कपूर खी
र खिचरी जुत त्योंही ॥ तेल साथ अफीम भात बासी
अति होइ ॥ सुवार बरसों सिद्ध मास बगुला को डा
रइ ॥ घृत करि सों विष वढारि मिलो दोष जुत जानौं
अति ॥ यह भांति वैद्य वर कहत यह यह विरुद्ध अह
रगति ॥ वमन विरेचन करमें ए ताने अति खाय ॥
खाय खरी समार पिये के कर दब बताव दारिद उड़द की खाय
संग मूल कै तौ यह ॥ गुल्म मूल अरु घृत दूध अरु घृत अरद सा
थ गुरु ताके जो खाय जाय दुख पाय छीन होइ सुनि लेउ यह
भांति मांस अरु दूध नासे तृषा दुखदाई पीपर गुरु मधु संमदी
कुछ माषी सुवाय ॥ भुंजी घृत मा तेल मांस मछरी ब-
हां ॥ आसी सुवाय ॥ भुंजी घृत मा तेल मांस मछरी
बहां ॥ आसी दूध तारू यह सीनी या पासी मद्य संग
के पिल बंग मिल बांता ते ॥ अब संग यह खाय दुख
अहार नर ॥ जानि बुझे तो कहि कुठए ॥ दो॰ दूध गवाइ

दूध खाइ के राति के या सोवै नहिं तथा ॥ आयुर्बल
सोवे घटे दिन सोये ते पथ्य ॥ और दुहिबो राति के दि
न को साझ दुहाउ ॥ राति दिना के दूध को इहि विधि
भेद सुनाउ बरषा ऋतु के अंत में शिशिर माझ दधि
खाइ ॥ ग्रीषम शरद बसंत में नहीं भलो नहिं खाइ ॥
इति श्री गोस्वामी जनार्दनभट्ट विरचिते वैद्यरत्ने पंचमो
प्रकाशः ५ दो० ॥ एक टका भरि औषधी तहां सोरह टका प्र
मान डारि चढ़ाइये है यह बात प्रमान ॥ १ ॥ हांडिया
में औटे रहे टका दुइक भरि नीर ॥ तबहिं क्वाथ उतारि के
छान लेउ बलवीर ॥ २ ॥ सीत १ कषाय २ निर्यूह ३
अरु काढ़े ४ क्वाथ ५ सु सांच ॥ या विधि पंडित क
हत हैं क्वाथ नाम विधि पांच ॥ ३ ॥ अथ अवलेह
॥ औटि २ गाढ़ो करत क्वाथ आदि अवलेह ॥ करत
अवलेह यह पल भर खाइ हि साव रस मार खाइ थे
वाहि चूरण मधु गुड़ डारि सम खांड़ दूनी मिलाय
चूरण मधु गुड़ डारि के और खांड एहि विधि भेद
॥ बताइ मांड पथ्य के विधि हेखिये ॥ चौ० ॥ टका
एक भरि चांवर निरधारे ॥ चौदह टका भरि जल
निरधारे ॥ ऐसे औटि के मांड बनावै ॥ जैसे दूदे
सीत न सावे ॥ कूट छान दुगनी करवावे ॥ चूकनी
डारि मांड में प्यावे ॥ सेंधो सोंधि तहां ले आवे ॥
पांचल दीपन लघु सुवतावे ॥ दली चावर मसालेई सत
दोऊ तनक तनक भुजवावे काऊ ॥ तेहि का नाम बतावे भी
सोंठि मिरच पीपरि ले हरि ॥ सेंधो नोन धना पुनि दोऊ ॥
भुंजी हरी मठा हनि दोऊ ॥ यह सब पीस मांड में ॥ ४ ॥

मे डारे ॥ मोड़ अष्टगुन नाम विचारे ॥ जबर त्रिदोष
याते मिट जाई ॥ दिन दिन भूख बढै सुख पाई ॥
कर परंतु शोधन इहि भांति ॥ गुन बताये सकल सुहा
ति ॥ दो कोरे ये मूंग चावर सीत के कफ पात रुजो मंड
ग्राही ज्वर कफ वात के करै निषी कारवंड ॥ चौ॰ ॥ एक
टका भरि मूंग विदारी ॥ टका अठारह भरि जल डारी
॥ ताको पोठ बनावे गुनी ॥ डारे तनक सांवरे सुनी ॥
मूंग आंवरे को यह जूष ॥ भेदी बहुत लाव अति भूख
तृषा दाह कफ पित्त मिटावे ॥ सीत मंद भ्रम रहन न पा
वै ॥ श्लो॰ ॥ मान्धाता च महीपतिः कृत युग लंकारभू
तो गता सेतुर्येन महोदधौ विरचितः कासौ दिशा शात
पोडन्ये चापि युधिष्ठिर प्रतिमं बाण भावान् भुस्तान भू
पते एकेन च सुधरोन समतीं भुजान्च पानाच्छु पी ॥ १ ॥
दोहा उत्पति क्षीर समुद्र ते उडगण ते परिवार ॥ ते मह
देखे रोपभवन कौन मतिन पर हार ॥ २ ॥ उडगन परैवारि
नाथ कौ वधीनाम मृत प्रय शरीरो कांत युक्तोपि चंद्रः
भवति विकल मुर्त्ती मंडल प्राप्तिः भानुः परसद निवे
ष्टः कोन घनवन जाति ॥ ३ ॥ अथ वमन विधि ॥ वरष
सरद बसंत मे वमन विरेचन होइ ॥ करवावे जो वैद्य व सु
खी रहे नर सोइ ॥ ५ ॥ चौपै ॥ मकर कुंभ रितु सिसार हित
कफसंचय यह सुनी कफ यकु पन सूरवा ऋतु हारि
कौर करवाई परकौ पातत चयु ॥ कही सर्द कन्या तु
ला पित्त कोप अरु वपन रहै मत ॥ होइ वृश्चिक
पटर दोष मृदुल्या इम न नाटक कहै ॥ वल पतरू फ
अरु थोर जु है पहिल्या मम दोष नाहि कहै ॥ विष

रोग खिली पद रोग भयो ॥ अरु काटि विसर्पिजीरन जौ ॥ भ्रम कास विमाद प्रमेह गयो ॥ कफ ज्वर पनि स भेद उपास वयो ॥ उन्माद अपस्मार पित्त जहां ॥ रक्त अतीसार सुजात देहहां ॥ अरु नाक पके बहे कान बहे ॥ तत्व ज्वर कोढ को पाक कहे ॥ गल सोय जुड़ई को जेम जबै ॥ खल रोग बात करि वितवै ॥ दोहा ॥ ५ वासी पत्वर नीन के पान क्वाथ कर पीव ॥ पित होय तो वमन कर हूने रहे चिरजीव ॥ १ ॥ बहुत बात पीड़ा जब दिं अरु जब कफ अधिकाय ॥ वमन काज कर मैनफर दूध साथ यह प्याय ॥ २ ॥ जोर अजीरन होय तो सेंधो नाते नीर ॥ वमन काज प्यावे चतुर दध जाइ सापीर ॥ ३ ॥ चौ० ॥ वमन काज यह औषधि प्यावै ॥ कछु ऊंचे पर ताहि चढ़ावै ॥ अह पानन केरु अगारी डारि ॥ वमन करा वैद्य बिचारि ॥ ४ ॥ अथ इतने जने कहूं वमन करावै नहीं तिन के नाम कहत हीं ॥ छप्पै ॥ तिमिर लगत है जाहि गुल्म पुनि ताके जानो ॥ उदर रोग होय जाय ताहि दुर्बल कहि जानो ॥ अतिहि वृद्ध नर होय बहुत मोटो गुरु भव मित्र ॥ अरु आतुर कन दूषित बाल रूपो पहिय ॥ उदर मान करले क्षुधित नाव व्याधि थ्यान जो नर ॥ ऐसी पुरुषनो बचावो नर वमन कराव हूवैद्य बर ५ ॥ दो० ॥ कफी अजीरन विष रहूं मन जो रानढूं ॥ कछु कर कोइ तो जाके केक्वाथ सों वमन कहत सब कोइ ॥ फिरि वमन कीरत ताको कौन वस्तु सों कहत हौं ॥ दो० ॥ पीत भोजन जल पान अति ताहिनम

त्रिय बेल ॥ वमन करावै तो एक दिन न लगावै तैल ॥ विरेचन विधि ॥ तेल लगा से काई के पेट वचन करवाई ॥ विरेचन फेरि देइ विधि यह विधि देइ बताई ॥ मृदु कहियत वहु पित्त नर मध्यम कफ तव होइ ॥ केरि लातो या बात तुत कहत वैद्य सब को य ॥ अथ जिनको विरेचन देउ तिन के नाम कहत हैं ॥ धनाक्षरी छंद ॥ जीरन ज्वर वारो विष म ज्वर वारो वात रक्त भगंदर अरषा पांडु उदर अ रोचक हियरोग ॥ गुल्म प्रमेह ग्रंथी सीहा व्रण विद्र धि छर्दि कोढ विस्फूचिका है निवाह कान नाक मुख मुंड गुद्र लिंग ॥ और निरोग सोष कृम वात मूलमू त्र घात नो यहि ॥ ऐसे रोग विचारि जाके अंग चतुर सुजान वैद्य विरम्वुन में देउ ताहि ॥ अथ अभि मत चूरण हरका ॥ मिरचे पीपर सोंठ हर्र है हर्रा ॥ आवरा वहेरा लेउ लायची वाय विडंग अरू मोथा के करौ प्रसंग ॥ पत्रज कूट ताहि में डारि ॥ टंक २ ये सब निरधार ॥ लेउ टंक चालीस निसोत ॥ अरू इ स टक मिश्री तव नावै ॥ सौरह मासे चूरण खाइ ॥ दिये रेचन सकल बताई ॥ अथ एरुभ यादि मोदक भार ॥ छप्पै ॥ हर्र मिरच अरू सोंठि आंवरा लीजिये ॥ पीपरि और विडंग तज पत्रज दीजिये ॥ ९ ॥ १ ये सब लेइ समान तिगुन दीजै निसा ते ॥ २ ॥ अठ गुन लेइ निसोत षट् गुण मिश्री याते ॥ सब ले चूरन मधु में गो

ली बांधि बहु ॥ लेइ प्रात उठ वर्ष भरि चारि ॥
पीपरै डारि तब ॥ दो० ॥ ज्यें । ज्यों जल शीत
ल पिये त्यों त्यों लागि भार ॥ जब जल ताते
पिये तब विभार निरधार ॥ विषम ज्वर मंदा
ग्निता पांडु रोग अरु कास नसाइ ॥ सूपी भगंदर
कोढ नार छै गुल्म और गलगंड औदा उदर दाह
भ्रम जोई ॥ छर्दि रोग अरु सीह विलाई ॥ दृग के
रोग कान के रोग । अर्दि मान के सहे न जोग ॥ मूत्र
कृच्छ्र अरु पथरी टरै ॥ पीर पेट की ताकी हरै । पेट
पसुरिया की जो पीर ॥ ताहू के यह टरै न धीर । यह
मोदक जो सदा नर खाय ॥ वेग न वृद्ध होइ न जाय
॥ याते गुन पावे यह ताने ॥ यह मोदक चरमाई भा
ने ॥ अथ इच्छाभेदीरस ॥ छप्पे ॥ पारो मिर्च
सुहागा लावो ॥ सोंठी अरु गंधक मिलवावो ॥ चि
त्रक अरु जैपाल सों घोटि सुनो वह बंक । यह चूरण
करि खाइ दोइ गुंजा भरि अद्भुत ॥ वढे योग सो असु
रसीम पानी के संगयुत ॥ २ ॥ इच्छाभेदीरस सरसह
रत सकल मल सम गुन ॥ हरत रोग अनेक यह सक
लकंहत गुन वैद्य जन ॥ अथ नाराचरस ॥ दोहा
त्रिकुट सुहागा सोंठ ले गंधक अरु जैपाल ॥ पारो
सबै मिलाय के करि एकत्र विशाल ॥ घृत मिश्री
के संग नर मासे भर यह खाइ ॥ शीतल जल ऊपर
पिये जितना पिया जाय ॥ उदर शुद्ध नीके करै
यह कोई गुन आइ ॥ आव मूल अनाह ज्वर बल
पुनि जाइ ॥ इति विरेचनः ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

अथ तोल भेद ॥ दो० ॥ जानो जाहि औषध लखै ताहि तोल्ल परमान ॥ तासों क्रम से दी कहों तोल को करत बखान ॥ १ ॥ तोल होय द्वै भांति की माग धओर कलिंग ॥ मागध पुष्य कलिंग के ताकी करत प्रसंग ॥ २ ॥ चौ० कहिये प्रथम तीस परमान ॥ तिन को चारि विसरेष जाने ॥ वह विसरेष दूसरा नाम वही यह जावा अभिराम ॥ छेद झरोखा में जो लखावे ॥ तामधि सूरज किरन जो आवे ॥ तामधि उड़त धूरि जो देखै ॥ वंशी वाको नाम विशेषै ॥ छः वंशी की मरीचिका जानो ॥ छः मरीचि का राई मानो ॥ राई तीनि की सरसों एक ॥ सो जव चारि की गुज्जा एक ॥ छः गुंजा को मासा जानो ॥ मासा फेरि नाम दुइ मानो ॥ देम एक है धन्या जानो ॥ मासा चार सुनिय पर मान ॥ परती विषम टंक परमान ॥ ४ टाक दोय कोल पद लावे ॥ छः द्रम एक द्रम टंक कहावे ॥ दुइ कोल को करवा कहावे ॥ पानी नाम कनो म सो पावे ॥ यह अक्ष पिक तंदुक जानो ॥ वहुरि पान तान वखानो ॥ बहुरि विडाल पद कहिये ताही ॥ षोड़षिका पुनि मानो ताही ॥ वह के मध्य हंस पद होई ॥ अरु सुवरन कवल ग्राह होई ॥ घटे उम्बर दृमि कहिये चारव नाम ॥ वाहो कहि प्रि ये दोय कर्ष है पल होता वाही सकुन्चि अभी स पल गासा दोय सुक्ति कर पल अभिराम ॥ सुक्ति का अभ्रक एक का नाम ॥ चातुर्थक कहिये ताहिये ॥ विल्व प्रकुंचित षोडशा ताहि दुइ मम्मित

और कुडव अंजलि ठहराव॥ अंजलि दुइ की मान
क कही॥ लीजे समुझ तौल है यही॥ चारि टका भ
रि अर्द्ध पुराव॥ आठ टका भरि पूरा ठहराव॥ दुइ
पुराव को प्रस्थ बखानो॥ चारि प्रस्थ को आढक
जानो॥ आढक नाम सुनो करि हो मल॥ भाजन के
स पात्र चौसठि पल॥ आढक चारि द्रोण कहि
देई॥ द्रोण नाम तेहू सुनि लेई॥ नल्वन मण जल
सकदावे॥ घन उन्मान राशि मन भावे॥ दोइ द्रोण
को कुंभ कहावे॥ सूत्र नाम वाहि पुनि आवे॥ दुइ
सूरज को गोण कहावे॥ गोणी चार कहावे खार॥ ता
सों तोल इन मधि निरधार॥ चार हजार टका भरि
लेउ॥ और खानि के ऊपर देउ॥ यह चारि को योग
प्रमान॥ जान लीजिये चतुर सुजान॥ दोपह चार
टका भरि जासु॥ भार कहत हैं मुनि जन तासु॥ वो
भ टका साभरि जो होय॥ तुला कहत तासों सब कोय
यह विधि इहि सब तोल प्रमान॥ ताको कीन्हो सर
स बखान॥ अरिल॥ मास १ टंक ४ सुवर्ण १६ चित
१६० चित ल्याइये॥ कुडव १५६ प्रस्थ ६६४
राशि २४८६ तोल प्रमान इति आनिये॥ चरिकहूं
बीज अ तेहि चतुरगुन मान सो जानिये॥ ५॥ ५

इति श्री गोस्वामी जनार्दन भट्ट विरचिते
भाषा वैद्य रत्ने पञ्चमः प्रकाशः॥ ६॥ ५

अथ अजीरन कांड लिख्यते॥ कटहर को
अजीरण होय तो करण खाय॥ केरा को अजीरन
होय तो घाव खाय॥ घृत का अजीरन होय केऽ

पीवै मेथी का अजीरन होय तो नोन खाय नोन का अ
जीरन होय तो चावल का धोवन पीवै के वासी महेरी
खाय पापर के अजीरन में मीठा खाय सहजने के कुआ
माटा लडुआ सहारीगो खाउ पचवे को पीपरामूर
को अवलेह नरियर तारफ़ पचवे को चांवल धोवन है
दो०॥ होय अजीरन आंव को करिये दूध को पान ॥
पचे चिरोंजी हर्र सब यह है बात प्रमान ॥ महुवा
बेल खजूर अरु बेल फल चार ॥ नीम बीज सों यह पचे
के घृत सों यह विचार ॥ पीपर बर ऊमर बहरि जो
या के फल खाय ॥ और सिंघाडा आदि को सीतल-
सलिल पियाय ॥ ३ ॥ चौ० ॥ जबहिं अजीरन बहुभ
च बाई ॥ अजमोदा पीपर जब खाई ॥ साठी का जु दही
को पानी ॥ मांस पचै तुस जल सों जानी ॥ दोहा ॥ ४
गोह ककरा सों पचे उर्द मठा के संग ॥ चना पचे मूरा
न सों यह देखे यह रंग ॥ मूंग आंवरे सों अजमोदा सु
नु बारि ॥ उरद खांड सो पचत है कुलथी तेल विचारि
॥ सेवै नूत बदाम ही पिस्ता दाख विचारि ॥ इन को होय
अजीरनो लौंग करो उर धार ॥ ६ ॥ सामा पस बाई का कु
नी को इर मेथि बनाउ ॥ इन को होय अजीरनो तीनी रस
ही को प्याउ ॥ बहुत खाइ हररे कोई तो होय अजीर
न जोर ॥ ताहि बेल के पात सों रस पियाउ निचोर ॥ ८ ॥
सीतल जर नीर मिठाई काजै ॥ खिचरी को रोपी सिर
ताजै ॥ नीम मूल सोइ उर हर मइ ॥ पैसा कर सा मूंग
के मंगा ॥ दो० ॥ रहन अचंभव खाउ के पिये मास स-
ज जाइ ॥ भूंजी मछरी मास को पचे पचे अचंभो खाइ ९

बेल को तेरू बावरि के षार कारष को उतारहि ॥ ताके खाये कहत हौ सब साल नख वष जाइ ॥ सर सौ वषुआ चिंच को होइ अजीरन जाइ ॥ जर औष धि विष खपर की वैद पिवावै ताहि ॥ ११ ॥ पर वा अंकुर बांस के बहुत करेला खाय ॥ सोऊ सोह काथ सौ तुरत बिदा ह्वै जाइ ॥ चौपाई ॥ मक्क री पचै आम फल खाय ॥ कछुवा जवाषार सेभइ ॥ नील कपी खग खाइ कपोतु ॥ कुस की ढार सौ इन की भौत ॥ सूरन पचै जबै गुर खाइ और चांवल धोवन को प्याइ ॥ पचै बिडारू को दो खाये ॥ पचै कसेरू सौंठि चवाये ॥ दूध गाय या भैस को मठा पिये पचि जाय ॥ भैंस दूध सौं धोबई अरु चूरन दधि खाय ॥ १५ ॥ सिखरन पचै त्रिकुट के खाये ॥ जवाखार तेहि बताये ॥ ताही सों सिग वाचै जाय ॥ नोन पढ़ाई दाईया पचै ॥ पचै ख टाई नोन हरर चौरूप सों ॥ चिकनाई रूष सों खाइ ॥ औषधि यही परसपर जानों ॥ मुनिय न कही बाचन पर मानों ॥ दोहा ॥ सत बेर ता को करइ नोन नीर बुझाइ ॥ यह पानी पीवै तबै नीर अजीरन जाइ ॥ सोने के नीर को होइ अ जीरन केरि ॥ चाटै मोषा सकल सत गुन जन बरनी हेरि ॥ गुन जो अपरा कोइ के पुनि सुनि ये सब कोइ ॥ भली भांत जाने जु यह वह नर दु खी न होइ ॥ १९ ॥ बीस प्रमेह बखाने कहते है अथ बीस प्रमेह ॥ एक प्रमेह वह मूत्र-

प्रमेह २ चिनिया प्रमेह ३ पिय प्रमेह ४ पाठा प्रमेह पित्र प्रमेह ६ सबज प्रमेह ७ लिलकट प्रमेह ८। लासा प्रमेह ९ फीच प्रमेह १० सबज प्रमेह ११ बहु क्षुधा प्रमेह १२ मी प्रमेह १३ वाग्नि प्रमेह १४ रेत प्रमेह १५ सुर्ख प्रमेह १६ च्यारयातके असाध्य हैं॥ इति प्रमेह वर्णनम॥

इति श्री गोस्वामी जनार्दन भट्ट विरचिते भाषा वैद्य रत्ने सप्तमो प्रकाश॥७॥

अथ स्वयंचर चूरणम॥ दारिवां का वक्कल १२ लिंतरीक १२ तज १२ इलायची १२ लोंग १२ कपूर १२ वंशलोचन १२ सोंठ १२ पीपर १२ मिरच १२ कंकोल १२ सहदेई अरई की जर १२ नाग केसर १२ विधारा १२ तालीस पत्र १२ काला जीरा १२ सुफ़ेद जीरा १२ जायफल १२ जावित्री १२ कस्तूरी रत्ती १२ बारडा १२ आंवला १२ अजमोद १२ गुलशकरी १२ गुरच १२ तगर १२ धनिया १२ चंदन १२ पीपरा मूल १२ पुहकर मूल १२ अजबाइन १२ मिश्री धेला भर॥ इति चूरणम्॥

अथ अंजन॥

फुल्ली हलका बंद करने का॥

गेहूं लोंग कपूर बेहया हाद स्त्री के दूध सें रगडे तो जाय जब चाहै तो लगावे नीकी होय॥

अथ तेल प्रसूति

तेल अंड टका ४ काकड़ा सृंगी टका ४ अफ़ीम टका ४ शिगरफ़ टका ४ करिहारी टका ४ गोरोचन-

टका ४ संभालू टका ५ तेल विधान से बनावे मस्-ति रोग जाय ॥ इति तेल विधानम

इन्द्री जुलाब

रेवत चीनी १२ जवाखार १२ चूरन करि पुरियाती न करे और गाय के मठा संग पिये तो इन्द्री झार होय ॥

इति श्री गोस्वामी ज-
नार्दन भट्ट बिरचि
ते भाषा बैद्यरत्ने
अष्टम प्रकाश
सम्बत्
१९४४
शु
भ
म

सूचीपत्र



ज्ञानसूर्योदय

जिसमें बड़े २ प्रमाणों और सुबूतों और दलीलों से
भली प्रकार सिद्ध किया है कि इस दुनियाँ को ब-
नाने वाला कोई ईश्वर नहीं है
बल्कि अनादि से ऐसी ही
चली आती है
संसार का कर्ता कोई भी नही है इसका
हैडिंग (शीर्षक या अनवान) देखते ही
आप को इससे
नफरत
होगी
लेकिन इसके सुबूत देखने पर आप की नफरत
दब जायगी इस लिये एक दफे शुरू से आखीर
तक पढ़लो अवश्यलो मानना चाहे न मानना

मुअल्लिफ़ (कर्ता) ज्वालाप्रसाद एल॰
पी॰ जे॰ बुंदेले तत्पुत्र परमेश्वरीलाल
निवासी कायमगंज

प्रथम बार २५० जि॰) (मूल्य प्रति पु॰ ।) आ॰

क्षमा १

सब पाठक जनों से निवेदन है कि यदि इस पुस्तक में किसी स्थान पर
प्रकार की त्रुटि- भूल- गलती - तौहीन आदि होगई हो तो सेवक को सू
करें ताकि सबके सानी (द्वितीय बार छपने में) में उसकी दुरुस्ती क
जावे- बल्कि स्वयं सभाल लें तो मैं निहायत ही मशकूर और ममून
होऊंगा- लालता प्रसाद बुंदेला जैन कायम गंज -

प्रार्थना २

छपने में समय अधिक लग जाने के कारण हमारे पाठक महाशयों को
कुलता के साथ बाट देखना पड़ी उसकी क्षमा मांगता हूं -
लालता प्रसाद बुंदेला -

निवेदन ३

छपने ही की देरी के कारण इसकी कापी को शोध नहीं पाया जिससे
गलतियां हो गई हैं हमारे अज़ीज़ पाठक वृन्द उन को भी सभा
तो मैं निहायत ही धन्य वादित होऊंगा - लालता प्रसाद बुंदे

अर्ज़ ४

भूल में कानूनन कोई ना जायज़ बात छप गई हो तो दास को उस से
इत्तिलाअ दें- ताकि उसकी भी दुरुस्ती करदी जावे -
लालता प्रसाद बुंदेला -

गुज़ारिश ५

इस पुस्तक को शुरू से आख़ीर तक (आदि अन्त) एक बार पढ़ जा
और जहां तक हो सके इस के सुबूत और दलीलें ज़बानी याद
करलें ॥

लालता प्रसाद बुंदेला

दीबाचा

मुझे इस बात का बड़ा भय है कि लोग इस पुस्तक के शीर्षक (हेडिंग) को देखते ही इससे घृणा करने लग जावें गे क्योंकि इस पुस्तक में ईश्वर का न होना सिद्धि किया गया है और सर्व पुरुषों के मन में ईश्वर मज़बूती के साथ जमा हुआ है - और अधिक तर डर इस कारण से है कि कि इस पुस्तक के पढ़ने वाले हिन्दुस्तानी ही होंगे - और यह लोग लकीर के फकीर प्रसिद्ध ही हैं - परंतु ये पाठक गणों ! मेरा यह लेख आप के सन्मुख ऐसा है - जैसा कि भारत में रेल जारी होने के प्रथम ही यह सुनाना कि एक ऐसी सवारी है जो हज़ारों मन बोझ और हज़ारों आदमियों को एक घंटे में सौ मील ले जाती है और उसको कोई जानवर नहीं खींचता है आप से चलती है - या तार (टेलीग्राफ़) प्रचलित होने के पहिले यह खबर सुनाना कि एक पल के बहुत छोटे भाग एक लाख कोस खबर पहुंचाने वाला एक चिट्ठी रसां है तो आप को कैसा आश्चर्य्य होवेगा और उसको झूठा ठहिराओगे - लेकिन यह सब बातें आप को मालूम होगई हैं इससे आप का आश्चर्य्य जाता रहा - जिसबात को आप किसी समय में झूठ मानते और जिसका सुनना भी आप पसंद नहीं करते उसी से कितने बड़े लाभ आप उठा रहे हैं - इस जिन्दगी में आप ने इन से (रेल व तार व खुर्दबीन व बहिरा मेटर थरमा मेटर आदि) बड़े २ लाभ उठाये होंगे - अंगरेज़ों ने जो सैकड़ों कलें बनाई हैं - और इस समय सब से अधिक बुद्धिमान गिने जाते हैं इसका कारण यह है कि वे नई बातों की खोज में रहिते हैं - और नई बातों के तलाश करने

का शौक़ है और नई बात को सुनकर हिन्दुस्तानियों की तरह नहीं उछल पड़ते हैं बल्कि उसपर वज़न कुछ बिचार करते हैं- यदि वह बात ठीक मालूम होती है तो उसको मान लेने में किसी तरह उज्र नहीं करते- चाहे पहिले उसबात को वह न मानते हो- और चाहे उनके धर्म के भी वह बात बिरुद्ध हो लेकिन उनको ठीक मालूम होतो वह फ़ौरन ग्रहण कर लेते हैं- सो ऐ मेरे बुद्धिमानों भारत बासियो इस पुस्तक को पढ़तो अवश्य लो मानना न मानना आप को इख़्तियार है यह बात ठीक है कि आप को ईश्वर का कर्ता मानना बाल्य अवस्था ही से सिखाया गया है = और ईश्वर का कर्ता न होना अभी सुनोगे - मगर यह क्या ज़रूर है कि जो बात पहिले सुनी हो वह सत्य हो और पीछे सुनी हो वह असत्य हो- नहीं बल्कि बुद्धिमानों का यह काम है कि दोनों को परखें जो सच हो वह ग्रहण करें चाहे वह बात पहिले की हो चाहे अभी सुनी हो इसमें आप का कुछ बिगड़ता नहीं यदि ऐसा मानोगे तो बड़े लाभ की प्राप्ति होगी ।

हां इतना अवश्य आप को भय लगेगा कि ऐसा मानेंगे तो धर्म कर्म हमारा सर्व नष्ट होजावे गा- और कोई मत भी नहीं रहना ला मज़हबी आती है- मगर साहिबों मैं आप को यकीन दिलाता हूं कि इसको मानने से धर्म कर्म और मज़बूत होता है और नेक कर्म और धर्मात्मा बनना होता है और परमेश्वर को मानने की हालत में धर्म और नेक कर्मों में बड़ी खराबी आती है - और आ रही है- आमतौर पर इसबात का आश्चर्य होगा कि ईश्वर को न मानते हुए धर्म कर्म क्या हो सक्ता है परंतु यह बात ऐसी ही आश्चर्यान्वित है जैसी इस पुस्तक को पढ़ने से पहिले ईश्वर का नहोना आश्चर्यान्वित है जैसे छोटा बालक जब कुछ

बिगाड़ का काम करता है और कुछ दंगा फिसाद करता है तो उसके माता पिता उस बिगाड़ के काम से उसको हटाने के लिये उसको डराते हैं कि तू ऐसा काम करेगा तो लुल्लू या हौआ आकर तेरे नाक कान काट लेगा ऐसे ही बुरे कर्मों से बचाने के लिये यह परमेश्वर का भय दिलाना लुल्लू या हौऐ की तरह से झूठा है परंतु जैसा कि लुल्लू के झूठ होने और बुरे काम से जानकार होने पर वह बुरा काम छोड़ दिया जाता है इसी तरह ईश्वर के न होने से जानकार होकर शुभ और अशुभ कर्म की असलियत को जानकर और गुमराही (भटकने) और धोके से छुटकर आदमी धर्म की तरफ पहिले से अधिक तरक्की करेगा और यह तरक्की सच्ची होगी इस पुस्तक के दो हिस्से हैं - प्रथम हिस्से में यह सिद्ध किया है कि ईश्वर ने दुनिया नहीं बनाई और कहां से आई - और इसका काम किसतरह पर हो रहा है और दूसरे में यह सिद्ध किया है कि ईश्वर के मानने में क्या दोष है - और क्या २ मुश्किलें पेश आतीं हैं और आवागमन क्या है - मरने के बाद आत्मा फिर शरीर पाती है :-

पाठकगणों ! से निवेदन है कि मुमकिन है कि किसी बात के प्रमाण और खंडन के विषय कुल दलीलें एकही स्थान पर न दी गई हों इस वास्ते इस पुस्तक को शुरू से अखीर तक अवश्य पढ़लें किसी एकही प्रमाण या दलील को पढ़कर अपनी सम्मति न स्थायें और कुल पुस्तक को पढ़ने के बाद निर्पक्षी होकर कुछ इसपर विचार करें फिर जो राय हो उसको क़ायम करें अगर किसी साहब को यह प्रमाण मिथ्या सिद्धि हों तो मुझ को सूचित करें मैं उनका धन्यवादित होऊंगा - क्योंकि मुझ को पक्ष से रहित होकर सत्य की खोज करना है ॥

लालता प्रसाद एल· पी· जे· स्थान
कायम गंज जिला फर्रुखाबाद
पश्चिमोत्तर देश

छोटी पुस्तक क्यों रची - इसलिये कि दोनों तरफ लोग लाभ उठावें · छपाई कम लगे · छपाई में वक्त कम लगे · कागज कम · पढ़ने में समय कम लगे · मूल्य कम · डाक महसूल कम पोष्ट मेन को बोझ न उठाना पड़े - पाठकों को घंटों सिर दर्दी न करना पड़े - मुखालिफों का दो २ ही बातों में मुंह बंद होजावे - ज़ियादा न बकना पड़े - पुस्तक भरमें एक दलील भी अच्छी हाथ लग जावे तो दाम वसूल समझो सो इसमें तो एक २ दलील और सबूत पुस्तक के मूल्य के बराबर है - दाम वसूल समझना चाहिये - पुस्तक का मूल्य और आकार देख घबड़ाना न चाहिये - इसके सबूतों और दलीलों की प्रशंसा करनी चाहिये यदि बड़ी पुस्तक से रुचि होतो चार आने के कोरे कागज इसकी पुश्त पर और अधिक लगाकर सीलो आपका मतलब भी निकल जावे - पुस्तक की मोटाई नहीं देखना चाहिये उसके मजमून पर गौर करना चाहिये ऐसी उत्तम पुस्तक यदि आप इसको हस्त लिखत खरीदते तो आप के पांच सात रुपये से कम नहीं व्यय होते - रुपयों का काम आने देरहे हैं - हर जैनी को यह पुस्तक मगाना चाहिये - इस पवित्र पुस्तक से किसी भाई का भी घर खाली न रहना चाहिये - हाथों हाथ बिक रही है शीघ्रताई से मगाओ नहीं तो द्वितीय बार छपने की बाट [illegible] पड़गी - मूल्य भी कुछ अधिक नहीं है मगाओ [illegible] अच्छा [illegible] - आठ आने की कोई बड़ी बात नहीं है

पुस्तक इस पते से मगाओ

लालताप्रसाद एल·पी·जे
(तत्पुत्र परमेश्वरी लाल (बुदेले) जैन)
स्थान कायम गंज
ज़िला फ़र्रुखाबाद
(पश्चिमोत्तर देश)

पहिला परिच्छेद

१ अध्याय

यह दुनियां कबसे है और किसतरह चलरही है

प्रकृति

मैंने संसार में मनुष्यों के मुख से चार चीज़ें अर्थात् आग[1] वायु[2] खाक[3] पानी[4] सुनी हैं और इन्हीं चारों से पृथ्वी गरी हुई है परंतु बिचार करने पर इसके बिरुद्ध पाया -

देखिये ! पानी जमकर बर्फ़ एक ठोस चीज़ बन जाती है वृक्ष पानी पीते हैं और उनकी लकड़ी बन जाती है पानी आग की गर्मी पाकर हवा होकर उड़जाता है दो प्रकार की हवा आक्सिजन और हेड्रोजन के मिलाने से पानी बन जाता है और रांग चांदी सोना आदि आग की गर्मी से पिघल कर पानी बन जाते हैं पत्थर से पत्थर और लकड़ी से लकड़ी रगड़ने पर आग पैदा हो जाती है जहां तक खोज लगाते हैं इन चारों चीजों को एक दूसरे से हालत बदलते हुए देखते हैं इससे यह बात सिद्ध हुई कि चारों चीजें एक दूसरे से पृथक •

हैं वलिक एकही वस्तु की चार हालतें हैं कि कभी एक हालत हो जा
ती है कभी दूसरी हालत कभी तीसरी इत्यादि जैसे एक सोने के चार
आभूषण आरसी • कंगन • हार • लटकन हैं और इनमें से चाहे कि
सी को गलाकर एक से दूसरा भूषण बना सक्ते हैं जैसे आरसी गला
कर कंगन और कंगन गलाकर हार और हार गला कर लटकन
इत्यादि किन्तु वास्तव्य में वस्तु एकही है एकही वस्तु की चार
हालतें होसक्ती हैं और उस वस्तु का नाम लोगों ने प्रकृति रक्खा
है इसलिये हम भी इसी नाम को पुकारेंगे इस प्रकृति को अजी
ब २ शक्लों और सूरतों में हम बदलते हुए देखते हैं परंतु इसमें
दो बातें अवश्य पाते हैं (१) यह कि यह प्रकृति जब बदलती है
तो उसकी शक्ल अवश्य होती है यानी असलीयत नहीं होती (२)
यह कि प्रकृति न कभी नई पैदा होती है और न कभी मिटती है
बल्कि इस दुनियां में जितनी नई चीज़ें पैदा होती हैं वह नवी
न नहीं पैदा होती हैं बल्कि प्रकृति की एक हालत से दूसरी हा
लत होजाती है और वह ही नई चीज मालूम होने लगती है
दुनियां की जिस वस्तु को दृष्टि फैला कर देखो हर जगह यही बा
त पाई जावेगी जैसे कि वृक्ष कहां से आये मिट्टी पानी हवा
बीज आदि से बनता है इनके बिना नहीं बन सक्ता है वही पें
ड़ आग धुआं राख आदि की शक्ल में हो जाता है या गलकर मि
ट्टी बन जाता है गरज़ कि बिना वस्तु के कोई नई वस्तु नहीं
बन सक्ती अंगरेज़ों ने लकड़ी को तौल कर और उस स्थान की
हवा को भी तौल कर जलाया है फिर जब लकड़ी जलगई तो
फिर उसकी राख को तोला और जहां जलाई थी उस जगह की
हवा को भी तोला तो कुछ भी न कम बढ़ न हुई बराबर ही
पाया यानी जब राख तोली गई तो लकड़ी से कम हुई परंतु

जब हवा को तोला तो जियादा होगई उतनी ही ज़ियादा होगई जितनी लकड़ी की राख में कमी आई पस कम बढ़ कुछ नहीं हुआ बल्कि हालत बदल कर हवा की शक्ल में आगई एक ज़रा भी कोई चीज़ घटी बढ़ी नहीं दूसरी बात यह देखने में आती है प्रकृति की कोई हो चीज़ क्यों न बने कोई न कोई शक्ल उस वस्तु की अवश्य होगी यानी प्रकृति बिना शक्ल के नहीं रह सक्ती है और जब उसकी शक्ल है तो उसमें रंग भी अवश्य होगा और जब रंग शरीर आदि उसमें है तो उसका नाम भी अवश्य होगा ऐसे ही और अन्य गुण हैं कि उस में सदा होते हैं इससे यह सिद्ध हुआ कि प्रकृति न कभी पैदा होता है और न कभी मिटती है शक्ल (शरीर) रंग (वर्ण) नाम आदि उसकी असली गुण हैं जो सदा उसके साथ रहते हैं और कभी अलग नहीं होते- यानी प्रकृति अनादि है इसको किसी ने पैदा नहीं किया और न कोई मेट सक्ता है॥

२ अध्याय

अजीव वस्तुओं (बेआत्मा) के गुण

दिया सलाई के रगड़ने से क्यों आग पैदा होती है यदि रगड़ने वाले ही में आग पैदा करने की शक्ति होती तो और चीज़ों में भी उत्पन्न कर सक्ता था या जेब में पड़ी हुई दिया सलाई अजान में रगड़ पाकर जल उठती है इससे यह सिद्ध हुआ कि रगड़ने से दिया सलाई जलउठती है और मिट्टी में यह गुण है कि आग में पक कर बहुत कड़ी (सख़्त) होजाती है और लाल होकर फिर काली होजाती है- कागज़ को आग पर जला कर कोई सख़्त नहीं

कर सक्ता है एक लकड़ी को दूसरी लकड़ी पर रखकर ठोकैं तो दोनों जुड़कर एक हो जावें गी - परंतु रितिया को रितिया में ठोकर नहीं जोड़ सक्के हैं इसी प्रकार परीक्षा करने पर दुनियां की वस्तुओं में यह मालूम होता है कि इन वस्तुओं में यह गुण है कि इनमें खास कार्य्य वाई करने से खास हालत हो जाती है यानी खास वस्तु बनजाती है जैसा कि नीला और पीला रंग मिलाने से हरा रंग बन जाता है दुनियां में जितनी चीजें दिखाई देती हैं वह इसी तरह पर बनी हैं कि एक चीज़ में सदा उलटन पुलटन रहिता है और एक दूसरे से मिलती बिछुड़ती रहती है और इसमें यह गुण है कि इस तरह मिलने बिछुड़ने और उलटन पुलटन से एक नई और बिलकुल निराली तीसरी चीज़ बन जाती है मिश्री के कूज़े को देखो कि उस के पहिलू कैसे इकसां और दर्पण वत चमकीले होते हैं मगर उन के पहिलुओं को कोई नहीं बनाता और न उनको चमकीला बनाता है चाशनी करके प्याले में टेढ़ा कर के रख देने पर कुछ शीरा उसका टपक जाता है और बाकी वही प्याले में जमकर ऐसे पहिलू और तरफें उसमें बन जाती हैं जिनको होशियार से होशयार से कारीगर हाथ से नहीं बना सक्ता यानी इन चीज़ों में अजीब २ कारी गरी की हालत में होजाने के गुण हैं मिश्री के कूज़े पर तो आश्चर्य होता ही है लेकिन जब वृक्षोंपर दृष्ट दौड़ाई और उनके उत्पन्न होने की तर्कीब बिचारी तो सर्व आश्चर्य जाता रहिता है और यह समझा कि जैसे दो हवाओं के मिलने से पानी बनता है वैसे ही और भी अजीब २ हालतों में पैदा होने की तर्कीब को देखा तो मालूम हुआ कि उनमें यह गुण स्वयं ही मौजूद हैं ॥

पेड़ किसतरह उत्पन्न होता है किसी खास वृक्ष के बीज को उस की खासियत के मूजिब हवा पानी मिट्टी धूप मिलें तो पेड़ बनजाता

है उसमें डालियों से फल फूल पत्ते आदि अजीब कारीगरियां हो जाती हैं और यह कारीगरियां उससे भी अधिक तर हैं जैसी कि मिश्री के कूज़े के टुकड़े में थीं - और जैसे कि वह टुकड़े हलवाई ने नहीं बनाया चाशनी को एक खास हालत में रखने से बनाये गये थे इसी तरह पेड़ के फल फूल पत्ते डाली भी कोई नहीं बनाता है बल्कि बीज को हवा पानी मिट्टी धूप उसकी खासियत के माफ़िक़ मिलने से बन जाते हैं इन चीज़ों की खासियत ही के वजह से ऐसी बारीक कारीगरी की चीज़ें बन जाती हैं जिसको होशियार से होशियार कारीगर नहीं बना सक्ता है पुरुष के शरीर में पेड़ों से भी अधिक कारीगरी पाई जाती है एक आंख ही की कारीगरी को देख बुद्धि चकराती है और हैरान होती है और कुल शरीर को देखकर तो अक्ल और भी चकराती है परंतु जब मनुष्य के शरीर की पैदायश को देखते हैं तो वह भी मिश्री के कूज़े और पेड़ की मानिंद मालूम होती है जैसा कि हर प्रकार के पेड़ को एक खास प्रकार की ज़मीन चाहिये - जैसे बाज़े वृक्ष खाद से बढ़ते फूलते हैं बाज़े रेत में इसी तरह हर जानदार के बीज के वास्ते भी एक खास प्रकार का पेट चाहिये जिस में वह परवरिश अर्थात् पल कर तैयार होकर पैदा हो - और जैसे कि गले हुए या सड़े बीज या और प्रकार के खराब बीज से दरख़्त पैदा नहीं होता - इसी तरह पुरुष के भी खराब वीर्य्य से गर्भ स्थिति नहीं रहता फिर जैसा कि खांड की चाशनी को एक खास तरह पर रखने से ही मिश्री का कूज़ा बन गया इसी तरह पुरुष का वीर्य्य भी पेट में (गर्भाशय में) एक खास तौर पर रक्खे जाने से बालक बनता है इन बातों के विचार करने से साफ़ मालूम हो गया कि दुनियां की चीज़ों में

यह खासियत है कि किसी खास शकील में होने से या किसी खास चीज़ के मिलने से ऐसी चीजें पैदा होती हैं जिनके देखने से अति आश्चर्य होता है कि यह किस तरह से अई इससे यह सिद्ध हुआ कि सब कुछ आप ही आप पैदा हो जाता है आदमी की करतूत से ईश्वर कुछ नहीं करने आता है

३ अध्याय

प्रकृति का मिलना बिछुड़ना

जब वर्षा होती है तो भूमि की सारी धूल जोकि उसपर होती है जाती रहती है और रेत (रेत) दीख पड़ता है इसका क्या कारण है ? धूलमें रेत और चिकनी मिट्टी मिली रहती है चिकनी मिट्टी में यह खासियत (स्वभाव) है कि पानी में घुल जाती है और रेत अर्थात् रेत नहीं घुलता इसलिये धूल में जितना रेत होता है वह तो भूल पर पड़ा रहता है और चिकनी मिट्टी पानी के साथ बहि जाती है ॥

पानी का यह स्वभाव है कि वह नीची तरफ़ को बहिता है इसलिये उसे जिस तरफ़ नीची जगह मिलती है बहिता चला जाता है आख़िर एक स्थान जहाँ नीचा होता है और जहाँ से बहिने को पानी निकलने को रस्ता नहीं मिलता है वहाँ ठहिर जाता है और वहाँ पर धूप की गर्मी से धीरे २ पानी सूख कर ऊपर चला जाता है यानी धुएं की शक्ल में होकर उड़ जाता है और चिकनी मिट्टी वहीं रह जाती है ऐसी जगह को तालाब या पोखर कहिते हैं

भाइयो ! पानी की इस कार्य्यवाही पर गौर करने से तो एक नई बात

मालूम हुई यानी पानी बेजान (निर्जीव) ने [illegible] ही गुण और स्वभाव से रेत और चिकनी मिट्टी को अलग २ कर दिया और अपने साथ चिकनी मिट्टी को घोल लिया — अपने आपही रस्ता ढूंढता हुआ बहिता चला गया और मार्ग को नीचा बना दिया और तालाब में आकर चिकनी मिट्टी जमा करदी और धूप एक बेजान वस्तु की खासियत से हवा होकर उड़गया इसी तरह बाज़ी दफ़े धूप की गर्मी से छत ऊपर की तरफ़ से फटजाती है और उसमें दरारें होजाती हैं — पानी जो बरसता है और चूंकि उसकी खासियत (स्वभाव) यह है कि ढाल की तरफ़ को जाता है इस वास्ते उन दरारों में भर जाता है और फिर वहां से ढाल (नीची) की तरफ़ को बहिता हुआ और कुछ रुकता हुआ कड़ियों में (धन्नों) पहुंचता नीचे जा गिरता है और कड़ियों को गलाकर बोदी अर्थात् खराब कर देता है और नीचे गिरा देता है इसी तरह नदियों का पानी बीच की मिट्टी को तोड़ता और हटाता हुआ निकलता चला जाता है और उस मिट्टी को समुंदर तक पहुंचा देता है दूसरे अध्याय में सिद्ध होचुका है कि दुनियां की चीज़ों में ऐसी खासियत है कि वह एक खास तर्कीब में लाने से या खास तौर पर इतनी वस्तु दूसरी वस्तु में मिलने से एक नई वस्तु पैदा कर देती है अब हम को यह भी साबित (सिद्ध) होगया कि पानी में ऐसी खासियत है कि वह खास वस्तुओं को किसी खास विधि में करदे या कुछ चीज़ों को खास तौर पर मिलादे या अलग करदे जिससे बिलकुल नई हालत पैदा होजावे इसी तरह जब हवा पर दृष्टि डालते हैं तो उसकी भी यही कैफ़ियत पाते हैं हवा कहीं की वस्तु को उठाकर कहीं डाल देती है और फिर उसी जड़ चीज़ दूसरी वस्तु से मिलाकर नई हालत पैदा करती है जैसा कि हवा ने किसी वृक्ष का बीज उड़कर नमी के स्थान पर डाल दे और वहां पर एक

वृक्ष निराला बिना बोये फल फूल पत्तों दार पैदा हो जावे या कहीं से आग की चिनगारी उड़ा कर लेजावे और किसी ग्राम में डालदे और वह ग्राम बजाय मकानों के खाक का एक ढेर होजावे - यानी सब को जलाकर खाक में मिलादे - यह हवा मकानों और वृक्षों को गिरादेती है बादलों को उड़ाकर कहीं का कहीं ले जाती है ग़रज़ कि हवा भी पानी की तरह चीज़ों को मिलाने छुटाने का काम करती है और उनकी हालतों के बदलने और नई वस्तुओं के पैदा करने का कारण होती है इसी प्रकार आग भी सहस्त्रों प्रकार के काम आती है धूपही को देखिये जिसका वर्णन प्रथम हो चुका है कि तालाब में जब गदला पानी जमा हो जाता है तो धूप उस गदले पानी में से साफ़ २ पानी को हवा बनाकर उड़ा ले जाकर ऊपर जमा (इकट्ठा) कर देती है और जब आकाश में वे परमाणु एक दूसरे से मिल कर भारी हो जाते हैं तो पानी बरस पड़ता है और कभी २ उसके ज़र्रे (परमाणु) बहुत से इकट्ठे हो जाते हैं तो वह ओले कहिलाते हैं और चिकनी मिट्टी को तालाब में छोड़ देती है इसी तरह यह धूप समुन्दर और अन्य २ स्थानों के पानी को भाप बनाकर ऊपर उड़ादेती है - जिससे बादल बनते हैं और नगरों में बरसकर अजीब २ वृक्ष पौधे - फल - फूल आदि उत्पन्न करते हैं धूप की गर्मी से हवा फैल जाती है और वेग (आंधी) चलने का कारण होती है इसी लिये आंधी और बरसात गर्मी में बहुत होती है धूप बहुत से वृक्षों को पालती है और बहुतों को सुखा डालती है - इसी तरह मिट्टी भी बहुत से काम आती है हवा जिस बीज को कहीं से उड़ा कर मिट्टी में डाल देती है तो मिट्टी अगर उसको पानी मिलता है तो खुद उस बीज की खुराक बनकर वृक्ष बन जाता है - और यदि पानी नहीं मिलता और बीज खराब

है या मिट्टी खारी आदि होजाती है तो उस बीज को भी मिट्टी बना कर मिट्टी में मिलादेती है किसी स्थान की मिट्टी अगर ऊंची होती है तो पानी के चलने से रोक देती है ऐसे अवसर पर पानी और टीले का युद्ध होता है - पानी उस टीले में बैल के सींग की तरह टक्कर मार कर आगे जाना चाहता है और टीला उसको जाने से रोकता है और जैसे बैल का सींग लगने से घाव होजाता है ऐसा ही पानी की टक्कर से यह टीला कटकर बहि जाता है यदि यह टीला मज़बूत होता है तो पानी को रोक देता है और अगर कोई मनुष्य जंगल में मुंह खोले पड़ा होता है और कोई ज़हरीली मिट्टी उड़कर उसके मुहमें गिर पड़ेतो वह मिट्टी पेट के अंदर जाकर तमाम पेट के कारखाने में गड़बड़ मचादेती है और तब हालत बद ल ने के कारण होती है - कि आत्मा शरीर से जुदी होकर उड़ जाती है तब मृत्यु कहलाती है ग़रज कि पानी हवा मिट्टी आग चारों चीज़ों पर ग़ौर करने से यह भले प्रकार सिद्ध होता है कि दुनियां की चीज़ों को मिलाने बिछुड़ाने और एक नई चीज़ पैदा करने की ताक़त इन चारों चीज़ों मे है और दूसरे अध्याय में सिद्ध हो चुका है कि चीज़ों में खास तरकीब होने से या ख़ास तौर पर मिलने से बिलकुल नई चीज़ें होजाया करती हैं इससे साफ़ तौर पर यह नतीज़ा निक ल आया कि यही चारों चीज़ें दुनियां की सब चीज़ें आप से आप पैदा करदेती हैं । कोई ईश्वर बनाने को नहीं आता है और यह चारों चीज़ें अनादि हैं । साइन्सदां (पदार्थ विद्या के जानने वाले) अच्छी तरह से जानते हैं कि पानी का बरसना - आंधी का चलना बादलों का गरजना - बिजली का तड़पना - कौंदे का लपकना - सर्दी गर्मी का होना - हवा का चलना - वृक्षों का उत्पन्न होना - चीज़ोंका बनना और बिगड़ना - सूरज चांद सितारों का आकाश में एक दूसरे की

काशिश (आकर्षण) से हिलगा रहना • ग्रहण का पड़ना • तारों का निकलना • सूरज का प्रकाश होना दिन और रात का होना अन्धकार और प्रकाश का होना आदि यह सब बातें आप से आप होती हैं इनको कोई ईश्वर या ख़ुदा बनाने बिगाड़ने नहीं आता या अपना दख़ल करने नहीं आता और जो साहब साइन्स को नहीं जानते वह यही कहते हैं कि मेह ईश्वर बरसाता है • आंधी ईश्वर चलाता है गर्मी ईश्वर कर देता है सर्दी ईश्वर करदेता है आदि तरह २ के संकल्प विकल्प पैदा करते हैं साइन्स को जानने वाले ख़ुद मान लेते हैं कि इसमें परमेश्वर की कोई करतूत नहीं है साइन्स का हाल मैं अपने मासिक पत्र में ख़ूब अच्छी तरह से करूंगा जो अन क़रीब ही (शीघ्र) प्रकाश करने वाला हूं और अन्य मतों की पुस्तकों की भी ख़ूब उधेड़ें और पड़तालें और ग़लतियां उक्त मासिक पत्र में की जावें गी जिन साहिबों को इस पत्र का ग्राहक बनना स्वीकार हो वो कार्ड द्वारा मुझे सूचित करें उनकी सेवा में नमूना भेजा जावेगा ॥ लालता प्रसाद एल पी • जे • स्थान क़ायम गंज ज़िला फ़र्रुखाबाद

४ अध्याय

जानदारों के नाम ॥

यहतो बार बार सिद्ध होचुका है कि किसी वस्तु की खास तरकीब होने एक नई तासीर पैदा हुआ करती है आदमियों के काम क्या हैं बोलना हंसना • रोना • उठना • बैठना • चलना • फिरना • कूदना • भागना • आदि इनकी भी खास २ तरकीब है इस वास्ते कामों में भी नई २ तासीर पैदा होती है मसलन सुस्त पड़ा रहिने से आदमी कम ज़ोर होजाता है व्यायाम (वरज़िश) करने ताक़त आती है इसीतरह सच्चे पुरुष पर सब भरोसा करने लगते हैं कपटी से दूर

भागते हैं सत्यबादी का एतबार (विश्वास) होता है झूंठे का एत
बार कोई नहीं करता इसी तरह हर प्रकार के काम अपनी २ खा
सियत (स्वभाव व गुण) के बमूजिब असर पैदा करते हैं - अच्छी
सुहबत (सत्संग) में रहिने से नेकी आती है बुरी संगति से बदी
आती है पढ़ने से बुद्धि चैतन्य होती है बैल बकरी चराने या
अकेला बैठे रहिने से बुद्धि जाती रहिती है अधिक अर्बी पढ़ने
को खासियत है कि लोग मौलवी कहैं संसकृत पढ़ने से लोग
पंडित जी कहिने लगें हजामत का काम सीख लेने की यह खा
सियत है कि अच्छे २ लोग सिर खोल कर आगे बैठें अगर कोई
अमीर (धनवान) ही क्यों न हो लेकिन नादिहंद (उधार लेकर
किसी के निबटा दे ना) हो तो उसका यह फल है कि उसकी बात का
कोई बिश्वास नहीं करता उसको कोई एक पैसे की भी चीज़ उधार
नहीं देता - और ब्योहार के सच्चे को गरीब से गरीब को आधी रात
रुज़ मिल जाता है ग़रज़ कि हर एक काम में अथक २ अजीब २
प्रकार के फल उत्पन्न करने की शक्ति है अलावह इसके पहि
ले अध्याय में ब्यान (बर्णन) हो चुका है कि जान दारों (जिसमें
आत्मा हो) में सिवाय प्रकृति के आत्मा एक अलग चीज़ है चुना
चि हर काम जैसे शरीर के ऊपर की हालतों को तबदील बदल कर
ता है और हर हालत की तब दीली से एक नया असर पैदा हुआ
करता है इसवास्ते आत्मा की हालत में भी तब दीली होने से आ
त्मा को उसका असर भी उठाना पड़ता है बाज़े आदमी पैदायश
ही से मक्कार (धूर्त) दग़ाबाज़ फरेबी - जाली - होते हैं और बाज़े
इसके विरुद्ध होते हैं इसका कारण है कि पूर्व जन्मों का असर
उनकी आत्मा पर पड़ता है - किसी बस्तु को खाओ उसका असर
अवश्य पड़ेगा अच्छी बस्तु खाओगे तो अच्छा असर होगा बुरा

खाओगे बुरा असर होगा - इसी तरह आत्मा के कर्म आत्मापर अ-
सर डालते हैं और भला बुरा नतीजा (फल) दिखाते हैं जैसा
कि पहिले हाजमा की चीज़ खाई उई के बाद कोई सक़ील वस्तु
(जोजल्द हज़्म न हो) खाओ तो कुछ नुक़सान नहीं करती इसी
तरह से पहिले के नेक कर्म आने वाले बुरे कर्मों के बुरे असर को
ढांक सक्ते हैं और पहिले के बुरे कर्म आने वाले अच्छे कर्मों को
ढांक लेते हैं जैसे कि जिस औषधि में जो असर है खाने पर वही
असर शरीर के अन्दर उत्पन्न करती है अपनी खासियत के विरु
द्ध नहीं करती इसी तरह आत्मा के कर्म भी अपनी २ खासियत के
मुआफ़िक़ असर पैदा करते हैं देखिये गेहूं से गेहूं पैदा होते हैं
चने नहीं होसक्ते बाज़ बीज में यह खासियत है कि जल्दी उगता
है बाज़ देर में इसी तरह किसी वृक्षमें छे महीने में फल आताहै
किसी में साल भर में किसी में पचास वर्ष में यही हालत कर्मों
की है कि कोई आत्मा पर शीघ्र असर करता है कोई देरमें इस
लिये एक जन्म के कर्म उस जन्म में भी असर पैदा कर सक्ते हैं
और अगले दूसरे तीसरे चौथे आदि जन्मों तक असर देते रहिते
हैं और फल दिखाते रहिते हैं ईश्वर कुछ नहीं करने आता आपही
करना आपही भरना होता है ईश्वर का कुछ दखल नहीं

५ अध्याय

दुनियां की कार्य्यवाई

जब मुझे यह बात सिद्ध होगई कि दुनियां की चीज़ें अपनी २
खासियत के बमूजिब दुनियां का काम करती हैं और नई नई
हालतें पैदा करती हैं तब मुझे ख्याल उत्पन्न कि तमाम दुनियां का
काम इसीतरह होता होगा इसवास्ते मैंने दुनियां के कामों पर भी

दृष्ट डाली –

यह बात सब जानते हैं गर्मी से पानी की भाफ बनकर ऊपर जाती है इसलिये धूप की गर्मी जो समुन्दर और नमी (गीली) की जगहों में पड़ती है उससे भाप उत्पन्न होती है और हलकी होने की वजह से ऊपर उड़ती है फिर चूंकि हवा हमेशा चलती रहिती है इस वास्ते हवा की वजह से भाप इधर उधर भी उड़जाती है और २ मुल्कों में पहुंच जाती है चुनान्चि बादल (पयोधर) होता है और किसी तरफ की तेज़ हवा चलती है तो जिस तरफ़ हवा उड़कर जाती है बादल भी उसही तरफ़ उड़जाया करते हैं इस भाफ से जब इधर उधर उड़ने से किसी क़दर गर्मी कम हो जाती है तो मुश्किल से बादल दिखाई देते हैं और फिर ज़ियादा ठंडी होकर पानी बन जाती हैं और भारी होने के कारण हवा पर ठहिर नहीं सक्ती तो पृथ्वी पर गिर पड़ती है जिसको मेह बोलते हैं जल थल ऊंचे नीचे पहाड़ आदि जहां जहां यह बादल पहुंच जाते हैं वहां वहां पानी बरस पड़ता है पहाड़ों पर बरसा हुआ पानी खोलों और गारों में घुस जाता है और बाकी बहिजाता है जिससे सैकड़ों छोटे २ ग्रामों के घर बहिजाते हैं और गारों में भरा हुआ पानी हर वक़्त निकलने की तदबीर करता है क्योंकि ढाल की तरफ़ बहिने की उसकी खासियत है इसी तरह पत्थर के जोड़ों को जिससे वह रुका हुआ हो ढीला करता रहिता है और निकलता रहिता है जिनको झरना कहते हैं इसी लिये दरिया हमेशा बहिते हैं जो कोई पहाड़ छोटा होता है या जिसकी खोल में पानी ज़ियादा नहीं भरता या निकल नहीं सक्ता है इस पहाड़ के दरिया किसी ऋतु में सूख भी जाते हैं और वर्षा ऋतु में फिर बहिने लग जाते हैं खोलों मेसे जो पानी निकलता है वह अपने साथ वह पत्थर वगैरः पहाड़ की चीजें भी बहालाता है ज़मीन पर आकर

ढाल की तरफ़ बहिता है अगर राह में कोई रुकावट मिलती और थोड़ी होती है तो साथही में बहा लेजाता है या अलग कर देता है और अगर रुकावट मज़बूत होती है तो दूसरा रास्ता करलेता है इसी सबब से दरिया टेढ़े तिरछे बहिते हैं इसी तरह ढाल को ढूंढ़ता हुआ घूमता घामता अगर राह ही में सूख न जावे तो समुन्दर तक पहुंच जाता है और उसमें आ मिलता है जो पानी वर्षा का ज़मीन पर पड़ता है वह कुछतो ज़मीन में घुस जाता है कहीं ज़्यादा नीचे कहीं कम जैसी ज़मीन हो इस पानी के कुएं बनते हैं और इसही वजह से कोई कुआं ज़्यादा गहिरा और कोई कम गहिरा होता है बाक़ी पानी बहिजाता है यह बात हर कोई जानता है कि पत्थर से पत्थर टक्कर खाने से आग निकलती है इसी तरह पदार्थ विज्ञान से यह बात सिद्ध होती है कि बादल से बादल टक्कर खाने से बिजली उत्पन्न होजाती है और ज़्यादा होने पर दरख़्तों वग़ैरः को फूंक देती है बिजली की यह खासियत है कि नोकदार चीज़ पर या काली चीज़ पर ज़ियादा पड़ती है अंगरेज़ों ने यह भी परीक्षा करली है कि जो कुछ खासियतें आसमान की बिजली में होती हैं वहही खासियतें उनकी बनाई हुई बिजली में होती हैं यानी एक है घास पर जो ओस पड़ती है अगर कोई सुबह ही सुबह उस ओस को देखे जबकि हलकी किरन सूरज की उस पर पड़ती है उसमें सात रंग चमकते हुये दिखाई देते हैं इसी तरह सूरज की किरन बादल पर पड़ने से धनुष दिखाई पड़ता है इनसान जो कुछ इस्तेमाल (काम में लाता है) करता है और जो कुछ ज़मीन पर पड़ा होता है वह धीरे २ मिट्टी में मिलजाता है वर्षा का पानी कुल वह जाता है और बहुत कुछ मिट्टी भी बहा ले जाता है जिसमें सब क़िस्म की चीज़ें मिली हुई होती हैं

यह दरिया का पानी समुन्दर में जाता है इसवास्ते मिट्टी भी ब हुत कुछ समुन्दर में चलीजाती है इसके अतिरिक्त दरिया का पानी ऊंचे किनारों की मिट्टी को उखाड़ कर अपने में मिलाता रहिता है वह मिट्टी भी उसके साथ समुन्दर में चली जाती है और समुन्द र का पानी भी हमेशा किनारे की ज़मीन से टक्कर खाता रहिता है और किनारे की मिट्टी को उखाड़ कर अपने में मिलाता रहिता है इसी तरह दुनियां की हर तरह की वस्तुयें समुन्दर में चलीजाती हैं समुन्दर में उसकी लहिरों की वजहसे कहीं पर बहुत गहिराव रहिता है और कहीं बहुत बड़ा टीला रहिजाता है उस टीले तक अगर कोई लहिर नहीं आती है तो पृथ्वी से आई हुई मिट्टी उस में मिलती रहिती है और होते २ यह टीला इतना बड़ा हो जाता है कि पानी के ऊपर तक आजाता है जिसको टापू कहिने लगजाते हैं यह टापू यदि ज़ियादा बड़ा हो जाता है तो जज़ीरा कहिलाने लग ता है चुनाचे टापू और जज़ीरे समुन्दर में निकलते रहिते हैं और ज ज़ीरे में अगर पानी की टक्कर लगने लगती है तो फिर पानी ही में मिलजाता है नहीं तो बढ़ते २ बहुत बड़ा मुल्क या द्वीप हो जाता है फिर भी रेत का मजमुआ हो जाता है और वह मजमुआ यदि बहुत ही बड़ा होजाता है तो पहाड़ कहिलाने लगता है समुन्दर में भी इसी तरह पहाड़ बन जाते हैं जो टापू अब समुन्दर में पैदा होते हैं उनमें अकसर पहाड़ भी होते हैं चूंकि यह जज़ीरा खुश्की से आये हुए मिट्टी से बनते हैं जिसमें सब क़िस्म की चीज़ें मिली हुई होती हैं इस वास्ते अब जो जज़ीरे निकलते हैं उनमें यह खासियत है कि अगर उनको बहुत सा इकट्ठा बारीक पीस कर मिला दिया जावे और पानी में घोल दिया जाये तो बाद सुखाने के किसी क़दर हर एक चीज़ का अलग २ मजमुआ हो जावे गा इसी तरह समुन्दर

में क़ानें होजाते हैं मैंने पहिले ज़िक्र किया था कि समुन्दर हमेशा खु
श्की से टक्कर खाता रहिता है और किनारे को तोड़ता रहिता है यानी
खुश्की की जगह समुन्दर होता रहिता है इसीतरह नये जज़ीरे जो
बनते हैं वह समुन्दर की जगह खुश्की होते हैं ऐसे अमल के जारी
रहिने से बहुत काल में समुन्दर की टक्कर की वजह से होते होते
कुल खुश्की पर समुन्दर होजावेगा और जज़ीरा बढ़ते २ बहुत बड़ी
खुश्की होजावेगी इन जज़ीरों में चूंकि कुल वह बातें पाई जाती हैं
जो इसवक्त खुश्की पर मिलती हैं इस वास्ते यह सिद्ध होता है
कि इस समय जो मुल्क और दीप हैं वह इसी तरह पर बने हैं
जैसे कि अब जज़ीरे बनते हैं और ऐसी उलटन पुलटन हमेशा
जारी रहिती है । रात और दिन का होना ऋतों का बदलना हर
कोई जानता है और जज़ीरा बात है कि सूरज या ज़मीन की गर्दि
श से पैदा होते हैं बाजे सूरज को फिरता हुआ ब्यान करते हैं बा
जे ज़मीन को चूंकि इस लेख में इस बिरुद्धता से कुछ हर्ज न
हीं है इस वास्ते इसकी हम बहिस नहीं करते हैं इस वक्त
हवा का चलना सूरज की गर्मी की वजह से होता है चूंकि सूरज
की गर्मी दुनियां के हर हिस्से (हर भाग) में कम या बढ़ पड़ा
करती है इसवास्ते हवा भी बदलती रहिती है गर्मी से हवा फैलती
है और फैलने की वजह से हलकी होजाती है जिस जगह की ह
वा हलकी होकर ऊपर चली जाती है वहां पर दूसरे स्थान की ह
वा अपनी खासियत के बमूजिब दौड़ आती है इस हवा के आने
से रास्ते में बहुत सी चीजें हिल जाती हैं ऐसे ही आंधी और तेज़ ह
वा भी चला करती है बाज़े कहिते हैं बे मरज़ी पत्ता नहीं हिलता
हवा का चलना तो सूरज का काम है ईश्वर को क्यों बीच में घुसे
ड़ लेते हो पस सिद्ध है कि ईश्वर न हवा चलाता है न मेंह बरसा

ता है न बिजली चमकाता है न कौंदा लपकाता है न बादल गरजाता है न आदमी पैदा करता है न जानवर बनाता न और कोई वस्तु बनाता है और न बिगाड़ता है बल्कि यह सब कारखाने अनादि से हैं एक की हालत बदली दूसरे से ग्रहण की ऐसे हैं ईश्वर की करतूत कुछभी नहीं है ॥

६ अध्याय

दुनियाँ की हालत में बिरुद्धता का कारण ॥

यह बात प्रथम ही प्रगट हो चुकी है कि हवा का चलना बर्षा का होना सर्दी गर्मी आदि का होना सूरज की वजह से होना है इसी तरह पर ज्योतिष को अच्छी प्रकार जानने वाले यह जान सक्ते हैं कि प्रत्येक तारागण अपना असर दुनियां की चीज़ों पर डालता है किन्तु चाल प्रति तारे की एक दूसरे से बिरुद्ध है यानी प्रथक है यदि किसी तालाब में एक ढेला फेंका जावे तो कुल तालाब का पानी गोल २ हल्कों ( ) में हिलने लगता है लेकिन यदि कई ढेले एक के बाद एक डाला जावे तो प्रति ढेला अपना दाइरा ( ) उत्पन्न करेगा और वह सब हल्के ( ) एक दूसरे से टक्कर खाकर बिलकुल बे तरतीब हो जावेंगे और तमाम पानी कहीं किसी तरह कहीं किसी तरह हिलने लगेगा इसीतरह सूर्य्य की गर्मी एक ही जगह नहीं पड़ती है बल्कि दुनियाँ के प्रत्येक प्रांत में पड़ती है इसवास्ते हवा की चाल भी बिलकुल बे तरतीब रहती है कभी किसी प्रकार कभी किसी प्रकार इसके अतिरिक्त कुल तारागण भी अपना २ असर हवा पर डालते हैं और उनकी चालें भी मुख्तलिफ (किसी की चाल कुछ किसी की कुछ) होती हैं इस वजह से भी हवा की चाल

हर समय मुख्तलिफ़ (विरुद्ध) होनी चाहिये और हवा बादलों को हरकत (हिलना) देती है इसवास्ते इनमें भी इख्तलाफ (विरुद्धता) होता है ॥

कल्पना करो (फर्ज़ करो) कि एक स्थान पर चंद्रमा और तारा गणों के स्वभाव से एक प्रकार की ठंढी २ मंद २ पवन चल रही है या काली २ मतवाली लटों की सदृश घटायें छाई ऊई हों फुइयों फुइयों २ वर्षा होरही हो कदाचित किसी दूसरे तारागण की चाल इसी प्रकार आगई कि वह उस स्थान से इस बादल (पयोधर) और वायु आदि सब को हटादेवे और जब यह दूसरा सितारा हट जावे तो वहही हालत फिर होजावे गी यानी वर्षा और हवा फिर प्रारंभ होजावे गी ॥

ग़रज़ कि दुनियां के प्रत्येक प्रांत में मुख्तलिफ (विरुद्ध) हालत (दशा) होना चाहिये चुनान्चे ऐसा ही द्रष्टव्य है - किसी स्थान पर आंधी है कहीं बिलकुल नहीं किसी जगह वर्षा होरही है कहीं ज़रा भी नहीं किसी समय कुछ किसी समय कुछ होता है और ऐसा ही देखने में भी आता है चंद्रमा सूर्य पृथ्वी और अन्य २ तारागण आदि की चालें यद्यपि मुख्तलिफ (विरुद्ध) हैं परंतु वे क़ायदा नहीं हैं वल्कि हर एक किसी न किसी क़ायदे में घूमते हैं क्योंकि यदि इनकी गर्दिश (चक्कर) यानी घूमना कायदे में न होती तो पञ्चाङ्ग (पत्रे) पहिलेही से कदापि नहीं बन सक्ते फलाने समय पर सूर्य फलाने स्थान पर निकले गा फलाने पर अस्त होगा - फलाने समय पर फलाना ग्रह निकले गा अस्त होगा आदि ऐसे पञ्चाङ्ग सहस्त्रों वर्ष प्रथम ही लोग बना सक्ते हैं इसवास्ते चाल जब इन सितारों की क़ायदे में है तो हवा और बादल आदि की हालत यद्यपि मुख्तलिफ (विरुद्ध) और बेतरतीब है परंतु एक खास क़ायदे का फल है सिवाय हवा और बादल के सिवारे दुनियां की

और अन्य बस्तुओं पर भी अपना असर डालते हैं इसवास्ते उनकी हालत भी मुखतालिफ (विरुद्ध) रहिती है - इससे सिद्ध हुआ तमाम दुनियां की बस्तुओं में बिरुद्धता है - इसका मतलब आगे चलकर निकलैगा -

७ अध्याय

सूर्य चंद्रमा पृथ्वी और कुल तारागण अनादि हैं

यह बात सिद्ध होचुकी है कि दुनियां की हर बस्तु में एक खास गुण मौजूद है इसके बिरुद्ध कोई काम कदापि नहीं होसक्ता - पस यह नहीं कहा जा सक्ता है कि दुनियां में किसी समय स्त्री पुरुष मौजूद न हों क्योंकि यदि किसी समय स्त्री पुरुष मौजूद नहोंतो भविष्यत काल में आदमी पैदा नहीं हो सक्ता है इसलिये यह बात अवश्य मेव मान लेनी पड़ेगी कि स्त्री औ पुरुष सदा काल से हैं

और जब स्त्री पुरुष अनादि हैं तो उनके रहिने का स्थान भी हमेशा से होना चाहिये तो यह भी अवश्य मानना पड़ेगी कि स्थान (पृथ्वी) भी अनादी ही है इसी तरह पुरुष बगैर: हवा - पानी - खुराक (खान पान) आदिके जी नहीं सक्ता है इसलिये यह बात भी अवश्य मानलेने पड़ेगी कि हवा - पानी खाने की बस्तुयें भी अनादि है -

पुरुष जो सांस भीतर से निकालता है वह खराब होती है और दोबारा यह हवा सांस लेने के लायक नहीं रहिती है प्रत्यक्ष प्रमाण से सिद्ध है कि पुरुष की सांस की निकली हुई हवा खराब होती है इस लिये इसके साफ होने का द्वारा भी कोई होना चाहिये और यदि कोई द्वारा न होतो सब हवा खराब होजावे गी कितने ही काल में खराब क्यों न हो खराब अवश्य होजावेगी और आदमी फिर वह ही हवा

(खराब) अपने काम में लावे गा तो जीता नहीं रह सक्ता यानी सब मर जावेंगे इसवास्ते यह भी अवश्य मानना पड़ेगा कि सदा काल से ऐसा द्वार भी मौजूद है जिससे हवा साफ (वायुशुद्ध) होती है - सांइस से यह बात सिद्ध है कि पुरुष के सांस की निकली हुई खराब हवा वृक्ष (पेंड) अपने में मिला लेते हैं वृक्षों को यही खुराक है और साफ हवा वृक्ष वाहर उगल (निकाल) देते हैं जिसमें पुरुष सांस लेते हैं यानी वृक्ष हवा के साफ होने का एक द्वार है - इसलिये सिद्ध है कि पेंड अनादि से हैं -

इसके अतिरिक्त वृक्ष बीज से उत्पन्न होते हैं और बीज भी वृक्ष से उत्पन्न है इससे यह सिद्ध है कि वृक्ष अनादि से हैं और खाने पीने के काम में भी वृक्ष आते हैं और तरकारियां भी खाने के काममें आती है इसलिये सारी तरकारियां आलू· भिन्डी· कद्दू लौका· मूली आदि यह सर्व वस्तुऐं अनादि हैं

इससे यह सिद्ध है कि सूरज·चांद· सितारे· हवा· पानी· वृक्ष· पृथ्वी आदि यह सर्व वस्तुऐं अनादि हैं

प्रथम अध्याय में भी सिद्ध होचुका है कि परमाणु अनादि हैं और अब भी सिद्ध है कि सर्व वस्तुऐं जोकि दुनियां पर मौजूद हैं अनादि हैं अब कहिये साहब ! यह ईश्वर की करामात है कि क्या है काहे के लिये ईश्वर को भानमती (तमाशा करने वाला) बनाते हो जबरदस्ती ईश्वर के गले रीछ बन्दर नचाने को बांधे देते हो औ का यदा उसको कलंकित करते हो मुफ़्त का पाप सिर धरते हो पुरुष जो पानी पीता है वह कुछ पेशाब की राह कुछ पसीना बनकर बाहर निकल जाता है यानी खराब होजाता है यदि इस खराब पानी के साफ होने का द्वार न होता तो कुल पानी एक समय में खराब होजावे गा इसलिये पानी के साफ होने का भी द्वार अवश्य

होगा और होना चाहिये -

पानी को सूर्य की गर्मी भाप की शक्ल में ऊपर उड़ा लेजाती है और पानी में की मिली हुई वस्तों को पृथ्वी ही पर छोड़ देती है और ऊपर जाकर इस भाप के बादल बनते हैं इसी लिये बादल (मेंह) का पानी साफ़ होता है इससे सिद्ध हुआ कि पानी के साफ़ होने का द्वारा सूर्य्य है और इसके साफ़ करने का काम सूर्य ही करता है पस जब दुनियां हमेशा से है तो उसके लिये सूर्य्य भी हमेशा से है यह बात तो हर कोई मान लेगा कि सूर्य्य याज़मीन मेंसे एक चीज़ अवश्य घूमती है और वह किसी वस्तु पर टिकी (ठहिरी) हुई नहीं है बल्कि आकाश के बीच में लटकी हुई हैं अब लोगों को यह भ्रम होगा कि बीच में कैसे हिलगे (लटके) हुए हैं वह भ्रम भी आप का बहुत जल्दी रफ़ा हुआ जाता है -

सांइसदां (पदार्थ विज्ञानी) इस बात को भले प्रकार जानते हैं कि सूर्य ज़मीन - सितारे आदि सब में आकर्षण शक्ति (खींचने के ताकत) मौजूद है पस हर एक एक दूसरे को अपनी शक्ति से खींचे हुए है और गिरने नहीं देता - और हमेशा चक्कर लगारहिता है और सूर्य ज़मीन के ठहिरने के लिये दूसरे सितारों की भी आवश्यकता है इसलिये जबकि दुनियां अनादि है तो तमाम सूर्य - चांद - और सितारे भी उस के क़ायम रखने के लिये हमेशा से हैं यानी सब कुछ अनादि है -

आकर्षण शक्ति का हाल जिन्हों ने इतहास (हिन्द) पढ़ा होगा वह जान गये होंगे कि सोमनाथ के मंदिर पर जोकि गुजरात में है महमूद ग़ज़नवी ने सतरह चढ़ाइयां की थीं और उस मंदिर की मूर्ति जोकि चकमक पत्थर से बीच में लटकी हुई थी किसी पर ठहिरी नहीं थी और न किसी में बंधी हुई थी उसको देख महमूद बहुत आश्चर्य्य अन्वित हुआ फिर उसको इसका भेद वहीं के पन्डों ने बतादिया कि चारों तरफ़ इस के चुम्बक पत्थर लगा हुआ है उसी की कशिश से यह महा

देव नीचे नहीं गिरता है तब उसने पत्थर एक तरफ़ का उखाड़ा तब वह मूरत दूसरी तरफ़ जाकर चिपट गई और वह उसको लेगया और उसको तोड़ा तो उसमें बहुत कुछ जवाहरात आदि निकला आकर्षण शक्ति में ऐसी ताक़त होती है – इसका हाल अच्छी तरह जानना होतो हमारे समाचार पत्र के ग्राहक बनो जोकि दोसौ ग्राहक होजाने पर जारी किया जावे गा - एक २ कार्ड भेजकर अपना २ नाम ग्राहक मन्डली (ग्राहकों की लिस्ट) में लिखा दो जारी होने पर नमूना मुफ़ भेजूंगा पसंदी पर ग्राहक समझे जायेंगे देरी न करो

दूसरापरिच्छेद

ईश्वर का कर्त्ता आदि होना ना मुमकिन है जब यह बात सिद्ध होगई कि दुनियां अनादि है और इसकी कार्यवाई (कारवाई) चीज़ों की ख़ासियत यानी गुणों से ख़ुद बख़ुद ही हो रही है तो यह ख्याल ऊआकि दुनियां का कोई पैदा करने वाला ईश्वर नहीं है किंतु और लोगों का ख्याल इसके विरुद्ध है। इस लिये अवश्य है कि उनके कहिने और ख्यालों और विचारों पर भी ग़ौर किया जावे – ईश्वर को मानने वाले कई प्रकार से बयान करते हैं कि ईश्वर ने दुनियां को इसतरह पर बनाया मुसलमान और ईसाई यह कहिते हैं कि परमाणु अनादि से नहीं है वाल्कि किसी समय पर ईश्वर ने उस को पैदाकिया है परंतु उनपर निम्न लिखित यह एतराज़ (शंकायें) पैदा होते हैं –

(१) प्रथम अध्याय में यह सिद्ध हो चुका है कि परमाणु न मिटते हैं और न नये पैदा होते हैं एक वस्तु बिगड़ कर दूसरी वस्तु का बनना यह एक हालत का बदलना है नई वस्तु कुछ नहीं पैदा होती है –

लोगों ने ग़लती से समझ लिया है कि इसको खुदाने बना दिया है नहीं २ वह वस्तु तो पहिले भी दूसरी सूरत में मौजूद थी

(२) एक धोखा लोगों ने बड़ा भारी खाया है कि कहते हैं कि ईश्वर सर्व शक्तिमान् है पहिले ईश्वर को सर्व शक्ति मानी भी तो सिद्ध कर लो तब यह कहिना कि उसने अपनी शक्ति से दुनियां को बनाया और तब सर्व शक्ति मानी की सुबूती काम में लाना

(३) प्रथम तो सिद्ध हो चुका है कि दुनियां के बंदोबस्त में किसी ईश्वर की आवश्यकता नहीं है अगर मान लिया जावे कि दुनियाँ के काम को ईश्वर ही चलाता है तो यह कहिना चाहिये कि दुनियाँ के कामों की शक्ति उसमें है नकि यहकि सर्व शक्ति मान है

(४) सर्व शक्ति मान होना उसका ठीक भी नहीं क्योंकि यदि मान लेंकि वह सर्व शक्ति मान है तो क्या वह अपने बराबर शक्ति वाला ईश्वर या अपने सेभी बड़ा ईश्वर बना सक्ता है या अपनेआप को मिटा सक्ता है इसकाउत्तर यही होगा कि वह नामुमकिन बात है फिर सर्व शक्तिमान कहां रहा यदि सर्व शक्तिमान के यह अर्थ हैं कि मुमकिन काम करे और नामुमकिन काम करे तो सर्व शक्तिमान की दलील में क्यों पेश किया जाता है यदि कोई कहि बैठे कि वह अपने से बड़ा ईश्वर भी बना सक्ता है तो इसका उत्तर यह है कि ईश्वर का गुण मानते हो कि एक ईश्वर है। तो अब कई ईश्वर हुए जाते हैं इसलिय सर्व शक्ति मान ईश्वर नहीं है

(५) लोग कहिते हैं कि बग़ैर बनाये हुए कोई चीज़ कहां से आई यानी परमाणु को भी ईश्वर ने बनाया है परमाणु अनादि नहीं हैं तो इसका यह उत्तर है कि बग़ैर बनाये ईश्वर को क्यों अन मानते हो बग़ैर बनाये हुए ईश्वर कहां से आगया। इससे सिद्ध हुआ कि परमाणु अनादि हैं।

(६) यदि मान लिया जावे कि ईश्वर में परमाणु पैदा करने की शक्ति है तो इसके पेश्तर (पहिले) किसने रोक रक्खा था यानी हमेशा से परमाणु क्यों नहीं पदा करता था और अबभी क्यों नहीं पैदा करता

(७) परमाणु पैदा करने के पहिले ईश्वर का रोकने वाला कोई न था तो अबतक उसने क्यों नहीं पैदा किया क्यों रुका रहा हमेशा से क्यों नहीं पैदा किया कोई भी उसका रोकने वाला नहीं था

(८) स्थान और समय भी अनादि हैं क्योंकि कहा जाता है कि एक वक्त वह था कि सिवा ईश्वर के सब जगह और कोई न था पस सिद्ध है कि वक्त और जगह अनादि है और यह कहिना ठीक नहीं कि सिवाइ ईश्वर के और कुछ नथा वक्त यानी समय और जगह यानी स्थान अनादि से उसके साथ हैं अगर कोई कहे कि इतनी बहुत जगह नहीं थी लेकिन यह तो अवश्य कहेंगे कि थोड़ी तो होगी जिसपर ईश्वर था ख्वाह वह आकाश ही क्योंन हो लेकिन जगह थी अवश्य - और अनादि से -

ईश्वर दुनियां नहीं पैदा करसक्ता है

(९) सातवें अध्याय में सिद्ध हो चुका है कि बिना स्त्री पुरुष के आदमी पैदा नहीं हो सक्ते - न कभी सुनने में आया - इसलिये आदमी अनादि से हैं

और यदि कोई इसके बिरुद्ध कहे कि बिना मा बाप के पैदा हो सक्ता है तो इस बात को वह ही सिद्ध कर के बतलाये क्योंकि असम्भव बात को कहिने वाला जो होता है तो सिद्ध करने के सुबूत का भार उसी के जिम्मे होना चाहिये — इस समय यदि कोई पुरुष यह आकर कहै कि फलानी जगह ईश्वर की शक्ति से वगैरः मां बाप के पुत्र पैदा हुआ है तो कोई भी इस बात को न मानेगा और तिसपर सब लोग मानते हैं कि ईश्वर सर्व शक्ति मान है जब भी कोई

विश्वास नहीं करेगा - किसी समय में भी बग़ैर मात पिता के आदमी का पैदा होना सिद्ध ही नहीं हो सक्ता बो दुनियाँ के अनादि होने के बिरुद्ध कौन दलील कर सक्ता है और जब अनादि है तो अकीतम (किसी की बनाई हुई नहीं) भी अवश्य है - कियों कि जब बनाई जावेगी तो उसकी आदि (शुरू) हो सक्ती है और जब अनादि है तो इसका कोई बनाने वाला नहीं हो सक्ता इस लिये इसका कर्ता कोई भी नहीं है -

(१०) जबकि आदमी अनादि है तो उसके रहिने का स्थान यानी पृथ्वी भी अनादि है और पृथ्वी पर की सब वस्तुऐं भी अनादि हैं यानी सब कुछ अनादि है -

(११) ईश्वर को दुनियाँ पैदा करने की ज़रूरत क्या हुई इसके पैदा करने से इसका कुछ नफ़ा नहीं हो सक्ता और बग़ैर नफे के या बग़ैर अपनी ग़रज़ (प्रयोजन) के कोई काम किया नहीं जाता है जब ईश्वर को इसके पैदा करने की कुछ आवश्यकता नहीं कोई प्रयोजन नहीं तो यही कहा जावे गा कि ईश्वर ने नहीं बनाया -

(१२) खुशामद पंसदी का दोषतो उसमें होही नहीं सक्ता है कि ऐसे आदमी पैदा करूं जो मेरी प्रशंसा और तारीफ़ और खुशामद करते रहैं - और मैं खुश होऊं यदि यह ऐब लगा भी दिया जावे और यही ग़रज़ उसकी दुनियाँ पैदा करने की मानें तो साथ ही इसके यह मानना पड़ेगा कि दुनियाँ पैदा करने से पहिले वह खुश नहीं था - उस समय खुशामद कौन करता - इसके अतरिक्त दुनियां में उसके न मानने वाले भी हैं और बहुत से उसको बुराई भी देने लगते हैं जैसे अब मैं ही ऐब निकाल रहा हूं तो मुझ को क्यों पैदा किया ऐसे ही आदमी पैदा करता जो हमेशा उसकी प्रशंसा गाया करते -

(१३) बाज़े आदमियों में गाली खाने की आदत होती है और किसी

को छोड़ कर गाली सुनकर प्रसन्न होते हैं यदि यह बेहूदा (बुरी) आदत उसमें है कि उसने ऐसे आदमी बनाये कि उसकी बुराई करें तो ईश्वर दिल्लगी बाज़ हुआ लेकिन सब मतों की पुस्तकों में लिखा हुआ है कि परमेश्वर की बुराई न करो और उसकी बुराई करने में पाप है तो यातो सब मतों की पुस्तकें और सब मत झूठे हैं - या उसमें गाली खाने की आदत है - दोमें से एक बात अवश्य है - और वह तो सर्व ज्ञानी है वह तो जानता था यह आदमी हमारी बुराई करेंगे फिर उसने ऐसे आदमी क्यों बनाये जो उसकी बुराई करें - या तो वह सर्व ज्ञानी नहीं तब ऐसे आदमी बनाये या उसने बनाये नहीं दोमें से एक बात अवश्य है पस यह सिद्ध है कि उसने नहीं बनाये -

१४ - दुनियां में पाप बहुत होते हैं तो पाप भी उसी ने बनाये लेकिन सब मतों में पाप करने की मनाई है तो यातो वह मत झूठे हैं या ईश्वर ने आधी चीज़ बनाई आधी नहीं बनाई बुरी नहीं बनाई मगर वह आधी चीज़ नहीं बनाता है फिर यह क्यों लिखा है कि ईश्वर पाप के विरुद्ध है या सब मत झूठे या ईश्वर ने कुछ बनाया नहीं दोमें से एक बात अवश्य मानना पड़ेगी -

१५ - किसी कीर्तम वस्तु (बनी हुई वस्तु) के देखने से उसके कर्ता (बनाने वाला) की बुद्धी और ग़रज़ मालूम हो जाती है - पस जब पाप अधिकता से हों तो यह फल निकलता है कि बनाने वाले की यह ग़रज़ है कि पाप बहुत हुआ करें तो या तो वह (ईश्वर) पाप कराता है या उसने दुनियां नहीं बनाई -

१६ - अगर यह कहा जावे कि दुनियां के बनाते समय उसकी यह ग़रज़ नहीं थी कि पाप हों - दुनियां पैदा होने के बाद यानी पीछे पाप होने लगे - तो इससे यह फल निकलता है कि उस समय वह अज्ञानी था लेकिन सर्व मतों की धर्म पुस्तकों में लिखा हुआ है

कि वह सर्व ज्ञानी है (सब कुछ जानने वाला) तो यातो सब मत झू ठे हैं या वह अज्ञानी है दोमें से एक बात है -

१७ - यह बात सब जानते हैं कि जिस को काम अधिक करना पड़ ता है वह दुखी है और जिसको कम करना पड़ता है वह कम दु खी है - और यह बात सब जानते हैं कि एक घर के काम से दो घर का काम अधिक होता है और दो घर के से चार घर का और से आ ठ का और आठ से सब दुनियाँ का काम बहुत ही अधिक हुआ तो दुनियाँ के ऐसे बड़े झगड़े को उसने अपने जिम्मे करके अपने आनंद में उसने क्यों खलल डाला -

और सर्व मतों की पुस्तकों मेंतो वह मना करता है कि दुनियाँ के झगड़े से अलग हो और आप उसी में फंसा रहे और हमसे क हे कि इससे अलग हटो इस दुनियाँ को छोड़ो यह तो वही मिसाल हुई " खुदरा फजीहत दीगरां नसीहत "

१८ - यदि तुम्हारा ही कहा मान लें कि दुनियां के पैदा करने से ईश्वर को नफ़ा हुआ है तो बड़े आश्चर्य की बात है कि उसने दुनियाँ को एक समय पर (यानी एक खास वक्त में) क्यों पैदा किया हमेशा से उससे क्यों फ़ायदा न उठाया तो मानना पड़ता है कि इससे पहिले वह अज्ञानी था या बनाने की शक्ति नहीं थी दोमें से एक बात अवश्य होगी -

१९ - किसी को अधिक दुख है किसी को कम कोई बद सूरत है कोई खूब सूरत है - कोई माल दार है कोई ग़रीब है - कोई काना है कोई अंधा है - आदि सब को एक सा रंग रूप सुख दुख क्यों नहीं दिया कम बढ़ क्यों दिया क्या वह एक पर अ धिक प्यार है दूसरे पर नहीं ऐसा क्यों यह उसका अन्याय यानी बे इन्साफी है यानी अन्यायी का दोष उसमें आता है -

२० - इस समय सैकड़ों मनुष्य और जानवर पशु पक्षी भोजनके लिये मारे जाते हैं - और बे कसूर सताये जाते हैं - और उनपर मुफ़ का जुल्म होता है और सरासर अन्याय होता है उनपर तो वह हत्यारा भी है ज़ालिम भी है अन्यायी भी है और बे कसूरों को सता भी है और जुल्म करने ही के लिये दुनियां को पैदा करता है फिर मज़हबी किताबों में क्यों मना करता है कि अन्याय मत करो बे कसूरों को न सताओ ऐसा मत करो वैसा मत करो - अब कौन सच्चा है ईश्वर या ईश्वर की बनाई हुई पुस्तकें किसका यक़ीन करें इन बातों से साफ़ मालूम होता है कि ईश्वर ने दुनियां नहीं बनाई - इन्साफ़ की ऐनक लगाकर देखना चाहिये पक्षपात और हट ग्राहिता को छोड़ कर देखो जैसा करना वैसा भरना आग को हाथ में लोगे तो जल जाये गा - पानी को लोगे तो नहीं जलेगा तो क्या ईश्वर हाथ को जलादेता है ? नहीं आग में ऐसा गुण है और उसका स्वभाव है जलाने का - आप से आप जलजाता है ईश्वर नहीं जलाने आता है -

२१ - बाज़ आदमी ऐसा कहिते हैं - कि प्रकृति और ईश्वर दोनों ही अनादि हैं - परंतु प्रकृति की खास हालत उत्पन्न करना ईश्वर का काम है - ऐसे अवसर पर सोचने की बात है कि कोई वस्तु किसी ही हालत में क्यों न हो कोई न कोई गुण अवश्य उसमें होगा कोई गुणी बग़ैर गुण के होता ही नहीं है - यानी जब प्रकृति अनादि से है तो उसके गुणभी अनादि से हैं यानी गुणों को भी किसी ने पैदा नहीं किया भलावह इसके दुनियाँ के पैदा होने के पहिले प्रकृति अवश्य किसी न किसी हालत में होगी - अब दुनियां जिस चीज़ का नाम है वह क्या है - प्रकृति की खास हालत को दुनियां कहि हैं - पस अब प्रकृति की एक ख़ास हालत का नाम दुनिया है -

तो पहिले की हालत को भी दुनियां क्यों न कहे - यानी दुनियां को अनादि से क्यों न कहें -

(२२) बाज़े कहिते हैं कि परमेश्वर और प्रकृति दोनों अनादि हैं और परमेश्वर दुनियां को बनाता है और तोड़ता रहिता है ऐसा ही हमेशा करता रहिता है - और हमेशा करता रहेगा - परंतु ऐसे अवसर पर बड़ा आश्चर्य्य होता है कि अगर इस दुनियां से परमेश्वर को कुछ लाभ है - तो हमेशा तब उसको रक्खे और यदि हानि है तो मिटा कर क्यों उत्पन्न करता है या पहिली दफ़े हानि मालूम नहीं हुई थी तो बाद को मालूम होने पर तोड़ कर क्यों बनाता है - अनादि से यही सिल सिला रहिने की वजह से यह मालूम होता है कि पैदा करना और तोड़ना अपनी खुशी से नहीं करता है यदि अपनी खुशी से करता होता तो कभी न भी बनाता और कभी न भी तोड़ता - बल्कि यह मालूम होता है कि किसी क़ायदे के माफ़िक़ जिस क़ायदे को उसने नहीं बनाया है मजबूरन उसको ऐसा करना पड़ता है - क्योंकि हमेशा यानी अनादि का क़ायदा परमेश्वर का बनाया हुआ नहीं हो सक्ता -

(२३) हक़ीक़त में यह बात मालूम होती है कि दुनियां का कुल काम चीज़ों की खासियत (गुणों) से होता है और कुल चीज़ों के गुणों के संयोग (समूह) को कुदरत यानी शक्ति कहिते हैं यानी क़ायदे कुदरत से सब काम होते हैं - इस क़ायदे कुदरत ही का नाम बाज़े बुद्धिमानों ने ईश्वर रख दिया है - अब लोग उसको एक अलग ही चीज़ मानने लगे हैं -

दुनियां के काम में ईश्वर का कुछ दख़्ल नहीं

(२४) यदि यह कहा जावे कि दुनियां का कुल काम ईश्वर करता है - तो चोरी • डाका • हराम • रन्डी बाज़ी आदि कुल पाप

के काम ईश्वर ही करता है - यद्यपि यह काम वह खुद नहीं करता - तथापि ऐसे काम करने की शक्ति वह ही देता है - और ऐसे काम करते जन्मों को बन्द नहीं करता ·

(२५) लाखों स्त्रियां वेश्या के यहां उत्पन्न होती हैं और वहीं पर बारिश (पलती) होती हैं और व्यभचार कराने की शिक्षा उनको दी जाती है - और लाखों आदमी आदमियों को खाजाते हैं तो यह सब कुछ ईश्वर ही तो कराता है - कि फलानी स्त्रियां रन्डी के यहां जाकर हराम कराया सीखें फलानी कौमें आदमी तक को खा जावें यह सब कुछ ईश्वर ही की करामात है -

(२६) इसके अतिरिक्त दुनियां के काम में बिलकुल बे तरतीबी है जिसको कुछ संक्षेप से नीचे लिखते हैं अगर यह कार खाई ईश्वर करता होता तो यह बेतर तीबी दुनियां के कामों में हरगिज़ न होती -

(अ) बर्षा जब होती है तो ऐसे स्थान पर होती है जहां पानी की बिलकुल ज़रूरत नहीं होती है - जैसे तालाब · नदी · समुन्दर · वगैर. में जहां कि पानी की बिलकुल ज़रूरत नहीं -

(ब) घास सड़क · दीवारों · छतों · आदि में पैदा होती है जहां घास सिवाय पैरों के नीचे से रुंदी जाने के और किसी काम की नहीं

(ज) ऐसे पहाड़ों पर जहां आदमी का गुजर नहीं और न कभी कोई आदमी वहां पहुंचता है - वहां ऐसे २ उम्दा रंग बिरंगे. नीले · पीले · फूल पैदा होते हैं जो सिवाय सूखकर मिट्टी में मिलने के और कुछ हाथ नहीं आता - और न कुछ फायदा पहुचता है -

(द) बहुत से खुदरौ (जो आप से आप उगे) वृक्ष और घास और बूटियां अगर पुरुष के मुफीद यानी लाभ दायक जंगल और बाग़ में पैदा भी होते हैं तो बहुत ही कम भाग उनका आदमी के काम

में आता है और अधिक भाग खराब जाता है यदि इसका पैदा करने वाला कोई तमीज़ दार होता तो जंगलों में उसी क़दर पैदा करता जितना काम में आता - और उसी समय पैदा करता जिस समय उसकी आवश्यकता होवे -

(म) कोठों पर घास पैदा करने की कोई वजह मालूम नहीं होती अगर कोई वजह भी है तो जिन छतों पर चूने का पलास्टर होता है उनपर क्यों नहीं उगाता

(ल) जो पुरुष बाल मुड़वाते हैं फिर उनके बाल उगाने की क्या वजह है - अगर पहिले कोई वजह भी होतो जबकि उसने मुड़वा डाले तो क्यों पैदा करता - जबकि हम जान लें कि अमुक पुरुष हमारा भोजन नहीं खायगा तो हम उसके सामने भोजन परोसें तो हम बिलकुल बेवकूफ हैं -

(म) अगर दुनियाँ का बन्दोबस्त वही करता है तो चोर क्यों बनाये और उसके रोकने को पहिरा दार क्यों बनाये - अगर चोरी कराना उसे पसंद होता तो अकेले चोर ही पैदा करता - या चोरी नापसंद है तो पहिरेही पर पैदा करता - हाकिम क्यों क़ायम किये और फिर भी इन्तजाम नहीं होता - अगर चोरी को बुरा समझता है तो चोर क्यों पैदा किये - अगर चोरी अच्छी है तो पुलिस और हाकिम की कोई ज़रूरत नहीं - इनबातों से उसकी यह हालत मालूम होती है कि चोर से कहे चोरी कर और साह से कहे जाग

(२७) क्या दुनियाँ की कुल कार रवाई ईश्वर ही करता है तो पाखाना - पेशाब आदि सब वह ही उठाता है और धरता है जिस के कहिने में भी लज्या आती है

(२८) इसी तरह दुनियाँ का कुल काम वह ही करता है तो मैं जो उसका खंडन कर रहाहूं तो वह भी परमेश्वर ही करता है यानी

अपना न होना वह आप ही सिद्ध करता है - यानी लोगों को धोखा देना चाहता है

११ अध्याय

यदि ईश्वर को दुनियां का इन्तिज़ाम करने वाला मानें तो आदमियों के कर्म कुछ नहीं हो सके -

(१) बाज़े आदमी ऐसा कहिते हैं दुनियां का कुल काम ईश्वर करता है - मगर आदमी अपने कर्म करने में स्वाधीन है और उसका फल भोगने में ईश्वर आधीन है - यानी फल ईश्वर देता है मगर जब इसपर ग़ौर किया जाता है तो यह मालूम होता है कि अगर ईश्वर को दुनियां का इन्तिज़ाम करने वाला माने तो आदमियों के कर्म कुछ भी हैं (वह तो ईश्वर ही कराता है) उसी के कर्म हैं)

(२) देखिये अगर खुदा दुनियां काम करता है तो कहीं का पानी कहीं ले जाता है किसी चीज़ को तोड़ना किसी को फोड़ना - कहीं गढ़ा बनाता कहीं टीला बनाता - ऐसे ही कुल काम आदमी भी करता है तो यह कहिना चाहिये कि आदमी भी एक छोटा ईश्वर है

(३) आदमी भी सर्व ज्ञानी तो है ही नहीं जो ईश्वर के इरादों का जानले

कल्पना (फर्ज़) किया कि कोई घास खुदा ने जंगल में किसी काम के लिये पैदा की है और आदमी उसको जाकर खोद लाया और अपने घोड़े को खिलाई - या ईश्वर ने जंगल में मिट्टी का टीला किसी काम के वास्ते बनाया और आदमी ने उसको खोद कर अपने यहां लाकर काम में लाया और घर बनाया -

तो खुदा का सरा करा कराया अकार्थ हुआ इससे यह सिद्ध होता है कि अगर मनुष्य के कर्म ईश्वर के कर्म नहीं हैं - तो आदमी खुदा का हर काम में मुकाबला करता है - और ईश्वर के किये हुए को बिलकुल खराब करता है*

(४) मां के पेट में जो बच्चा आता है उसकी सूरत - दिल - दिमाग - अकलमन्द - बेवकूफ - ईश्वर बनाता है - पस जब ईश्वर ने उसको इन्द्रियां और शक्ति दी तो उस शक्ति से वह जो कुछ कर्म करेगा तो वह कर्म आदमी के हुए या ईश्वर के -

(५) आदमी जो कुछ स्वाधीनता से खाता है तो उसके पेट में जाकर रस - रक्त - मास - हड्डी - मज्जा - वीर्य्य आदि कौन बनाता है अगर भोजन और पेट ही में यह गुण है कि वह आप ही ऐसा बना लेता है तो बात ही खतम हुई - इसी को तो हम सिद्ध करते हैं लेकिन ईश्वर को मानने वाले अवश्य यह कहेंगे कि पेट में घुस कर ईश्वर बना जाता है - पस जब वह शरीर के अन्दर काम की इसकदर चीज़ें पैदा करदे कि आदमी स्त्री को देख बे काबू हो जावे और व्यभचार करे तो यह कर्म आदमी ने किया या काम की उन चीज़ों ने करवाया जिनको ईश्वर ने इकट्ठा कर रक्खे हैं - इसी तरह पर बुरे कर्म आदमी के किये हुए आदमी को स्वाधीनता से हुए या ईश्वर ने कराये - अवश्य ईश्वर ने कराये -

१२ अध्याय

कर्मों का फल ईश्वर नहीं देसक्ता यदि किसी प्रकार से यह मान भी लिया जबकि आदमी के कर्म ईश्वर के कर्म से प्रथक हैं -

नों आदमी के कर्मों का फल ईश्वर नहीं देसक्ता -
(३४) सजा इस गरज़ से दी जाती है कि फिर ऐसा काम यह न करै - और जो काम ना पसंद होगा उसी की सज़ा भी दी जाती है मगर खुदा नौ पसंद काम होनेही क्यों देता है - बादशाह भी अपने कानून के विरुद्ध काम नहीं होने देता है लेकिन बादशाह सर्व शक्तिमान नहीं है इससे लोग विरुद्ध काम करते हैं तो क्या खुदा भी सर्व शक्तिमान नहीं है - और इतनी ताक़तभी नहीं रखता कि विरुद्ध काम करने वालों को रोक सके हजारों लोग बार २ बुरे काम करते हैं तो मालूम होता है कि खुदा कुछ इन्तिज़ाम नहीं कर सक्ता -
(३५) सजा जबही कुछ असर किया करती है जबकि सज़ापाने वाले को बता दिया जावे कि तुझ को फलाने जुर्म की सज़ा यह दी जाती है ताकि वह भय खावे कि अगर फिर ऐसा काम करेगा तो यही सज़ा फिर होगी - परंतु यहां आदमी प्रति दिन सैकड़ों मुसीबत और कष्ट उठाते हैं और कोई नहीं जानता कि यह कष्ट फलाने कर्म की वजह से ईश्वर ने दिया -
(३६) कर्मों का फल क्या है ? किसी का शरीर बलवान किसी का निर्बल - कोई खूबसूरत कोई बदसूरत - किसी का मग़ज़ तेज़ किसी का गुद्दल - किसी का खून साफ़ किसी का गन्दा किसी को औलाद देना किसी को न देना - किसी को दौलत अधिक देना किसी को कम देना यानी कर्मों के मूजिब हमारे शरीर को बना दिया - यह एक ऐसी बात है जैसे हम मकान बनाने का सूत बूत नहीं जानते और राजगीरी से बिलकुल वाकिफ़ कार नहीं - अब हम किसी राज को बुलावें और उसको मकान बनाने का कुल मसाला ईंट गारा मिट्टी आदि देकर कहैं कि

इसका मकान बना दो और वह मकान बनादेवे राजतो हमसे तनख्वाह लेगा और हमारा नौकर ह्रुआ लेकिन खुदा को बनाने से क्या फायदा- यानी हमारी नौकरी करने से ईश्वर को क्या लाभ है ईश्वर हर समय सब पुरुषों की ताबेदारी में लगा रहिता है कि जैसा वे कर्म उपार्जन करें उसी के मुताबिक उसका फल देदें- राज तो स्वाधीन है कि जब चाहे तब हमारी नौकरी करे जब चाहे छोड़ दे लेकिन ईश्वर हमारे काम को नहीं छोड़ सक्ता क्योंकि कर्म तो हमारे इख्तियारी है और उनका फल ईश्वर को अवश्य देना पड़ेगा- यानी ईश्वर हमारे आधीन है- और वे कौड़ी पैसे का गुलाम है- कैसा बुरा दूषण उसको लगता है इसलिये ईश्वर दुनियां का बनाने वाला नहीं है-

(३७) खुदा को कर्मों का फल देने वाला मानने में दया आदि सब मिटती है क्योंकि जब हम किसी दीन पुरुष को देखें और उसपर हम दया करके उसकी आवश्यकता को मिटावें तो गोया ईश्वर की कार्य्यवाई को बुरा मान कर उसके बिरुद्ध करना है और कभी उसकी ज़रूरत जाती भी रहिती है यानी हमारी कोशिश से वह अच्छा होगया तो गोया ईश्वर से भी बढ़कर काम हमने किया और हम ईश्वर से भी बढ़ गये

(३८) कर्मों का फल देने वाला ईश्वर को मानने से वैदक यानी हकीमी भी रद्द होती है क्योंकि जब कोई पुरुष बीमार होता है तो यह कहा जाता है कि ईश्वर ने इसको ऐसाही फल दिया है इसकी दवा करना व्यर्थ है- लेकिन सैकड़ों पुरुष हम रोज़ देखते हैं दवा करने से भले चंगे हो जाते हैं तो गोया खुदा हमको बुरा फल देकर बीमार बनाता

है और हम उसको अच्छा करलेते हैं तो खुदा के काम में हमने दख़ल दिया और उसके बिरुद्ध किया - अगर कोई कहे कि दवाई से कुछ नहीं होता जो कुछ करता है सो ईश्वर ही करता है - तो उन से कहो कि डाक्टर और हकीम और वैद्य सब बे फ़ायदा हैं और तुमने अपनी उम्र में कभी किसी बीमारी का इलाज कराया और कोई दवा अपने काम में लाकर फ़ायदा उठाया कि नहीं जो पुरुष प्रत्यक्ष हकीमों और दवाइयों को छोड़ ईश्वर को झूठ मूठ में मानते हैं वे सीधी राह को छोड़ कांटों और गढ़ों में घुसते हैं -

(३६) अगर ऐसे अवसर पर यह कहा जावे कि जो कुछ हम किसी को दिया करते हैं सो ईश्वर ही हमसे दुखित मनुष्यों को हमारे हाथ से दिलाता है - तो हमारे दान का फल न रहा - दान आदि कोई वस्तु ही न रही इसी तरह खुदा किसी को कुछ माल दे हम उसको छीन सक्ते हैं अगर यह कहा जावे कि उसके कर्म ऐसे थे - कि उसका माल जाता रहे - तो जबकि कर्मों का फल ईश्वर देता है गोया ईश्वर ने माल छिन वाया यानी चोरी डाका लूट खसूट आदि कोई चीज़ नहीं क्योंकि यह काम तो ईश्वर करता है इसी तरह ईश्वर किसी क्वारी लड़की को पवित्र रखना चाहे बदमाश आदमी उस क्वारी से ज़बरदस्ती व्यभचार कर लेते हैं - यदि यह कहा जावे कि उस स्त्री के कर्म ऐसे थे जिससे उससे व्यभचार किया गया - या ईश्वर की मर्ज़ी ही ऐसी थी कि उस स्त्री के साथ ऐसी कार्य्यवाई होनो व्यभिचार आदि भी कोई पाप न हुए क्योंकि सारी कार्य्यवाई तो ईश्वर की है - गोया ईश्वर को फल दाता मानने से पाप पुन्य सब मिटते हैं - इससे सिद्ध है कि ईश्वर कर्मों का फल देनेवाला

नहीं है -
(३५) उदाहरण - देखिये एक आदमी जवान है बहुत सुन्दर
है उसके पास मकान है - धन है - संपति - संतति आदि सबही
कुछ है रातको चोर आये तमाम धन लूट लेगये - उसको और
उसकी स्त्री बच्चों आदि सब को मार गये अगर यह कहा जावे
कि उसकी किस्मत में ऐसा ही था यानी उनके कर्म्मों का फल
यही था - तो चूंकि फल ईश्वर देता है यह कुल काम चोर से
ईश्वर ने कराये इसलिये हत्या करना - चोरी करना डांकाडा-
लना आदि कोई बुरे काम नहीं और यदि चोर ने उसके कर्मों
के विरुद्ध और ईश्वर की मर्ज़ी के विरुद्ध ऐसा काम किया तो
ईश्वर कर्मों का फल देने वाला कब हुआ और उसमें फल देने
की शक्ति भी नहीं हुई - इसके अतिरिक्त यदि ईश्वर चाहे
कि उस पुरुष की हालत जैसी थी वैसी ही करदे तोभी नामुम
किन है क्योंकि जो लोग यह मानते हैं कि आदमी मर कर फिर
पैदा नहीं होते तो ईसाइयों और मुसलमानों का ख़ुदा उसको
जैसा का तैसा बनाही नहीं सक्ता - खैर हिन्दुओं का ईश्वर
जो आवागमन मानते हैं यह कर भी सक्ता है - कि किसी स्त्री
पुरुष को खोज करके मैथुन कराकर गर्भ रखावे - उसमें उस
पुरुष को बालक की शक्ल में उत्पन्न करे इसी तरह उसके जुवान
होने पर उसके लिये एक स्त्री जुवान तलाश करे - या उसके लि
ये स्त्री बनाकर उसकी शादी (विवाह) रचावे - किसी को ग
रीब करके उसको धनवान बनावे - दश बीस साल उसका पा
लन पोषण करके उसकी वैसीही पुरानी हालत बनादे और
जैसा का तैसा करदे - मगर यह पहली पुरानी हालत कहां
हो सक्ती है - न वह समय रहा न वह लोग रहे न वह हवा रही

न वह आदमी रहे जिनसे उसका प्रेम था या बैर था उसकी जान पहिचान थी - इसके अतिरिक्त यह मान भी लिया जावे कि पुरानी हालत हो सक्ती है तो नौ मास माता के उदर में रहकर उलटा लटकना खून पीना - बाल्यवस्था में नंगे फिरना और यह समय नादानी और अज्ञान की हालत में काटना - उसके कौन से कर्मों का फल है यह तो ईश्वर को मजबूरन चोर की ज्यादती करने के कारण उसको पुरानी हालत बनाने में बहुत ही झमेला और दिक्कत उठाना पड़ती है - ऐसी ही और इसी तरह पर सहस्रों कार रवाइयां ईश्वर को मजबूरन करना पड़ती हैं फिर ईश्वर में कर्मों का फल देने की शक्ति कैसे मानी जावे अथवा ईश्वर कर्मों का फल नहीं दे सक्ता है -

(४०) दंड इसलिये दिया जाता है कि लोग जुर्म न करें नकि जुर्म सिखाने को दंड मिलता है - मसलन कोई मैजिस्ट्रेट किसी मुजरिम को व्यभिचार - व डाका व चोरी आदि की शिक्षा देवे या और किसी प्रकार का बुरा काम उसको सिखावे तो क्या वह मैजिस्ट्रेट पागल खाना भेजने लायक नहीं होगा ? अवश्य होगा जबकि यह माना जावे कि पुरुष की यह हालत है वह ईश्वर ने उसके कर्मानुसार की - तो जो लड़की कि वेश्या के यहां उत्पन्न की गई और व्यभिचार कराने की शिक्षा उसको दी जाती है तो क्या ईश्वर ने उसको यह सज़ा दी कि वह हराम करा कर अपने को और दूसरों को और भी पाप में फसावे - इसी तरह जो लोग आदमी को मार कर खाजाते हैं तो उनको यह सज़ा मिली कि आदमियों को मार २ कर खाया करें जोकि बड़ा भारी पाप है - इन बातों से भली प्रकार सिद्धि है कि ईश्वर का यह काम नहीं है - नहीं तो परमेश्वर की भी बदनामी

होना चाहिये जो मजिस्ट्रेट के लिये नियत की गई थी - यानी पागल खाने में भेजना चाहिये -

१३ अध्याय

यह दुनियां स्वप्न नहीं है-

बाज़े मता बलम्बी यह मानते हैं कि सिवाय ईश्वर के और कुछ नहीं है यह दुनियां कोई वस्तु नहीं है बल्कि एक स्वप्न केसा हिसाब है झूठी दिखाई देती है के कुछ भी नहीं जैसे स्वप्न में बड़े २ हाल देखने में आते हैं तैसेही यह दिखाई देती है

(४१) जबकि सिवाय परमेश्वर के और कुछ नहीं है तो यह दुनियां भूल में किसको दिखाई देती है ईश्वर को जानने में ग़लती आगई है या सिवाय ईश्वर के और कोई वस्तु भी है जिसको यह दुनियां ग़लती से दीख पड़ती है - यदि यह ग़लती परमेश्वर की है - तो यह ग़लती क्यों उत्पन्न हुई और ग़लती उत्पन्न होने का कारण जुदाही ईश्वर से हुआ - यानी यह सिद्ध हुआ कि सिवाय परमेश्वर के और कुछ वस्तुभी है - यदि यह कहो कि गलती (भूल) सिवाय परमेश्वर के किसी अन्य की है तो प्रत्यक्ष ही सिवाय ईश्वर के और वस्तु भी सिद्ध होगई

(४२) किसी वस्तु का ग़लत दिखाई देना ऐसे पुरुषों को जिन के ज्ञान में फ़र्क है - मुमकिन है - परंतु यह सारी चीज़ें प्रत्यक्ष दिखाई दे रही हैं तो कौन कहि सक्ता है कि यह स्वप्न है - यदि स्वप्न होता तो कोई बात एक समय में किसी को कुछ दिखाई देती और किसी को कुछ - जैसे दस आदमी बाजार में मकान

तो सब को दूकाने ही क्यों दिखाई देती हैं - अकाली स्वप्न स
ब को नहीं दिखाई दिया करता है - इससे सिद्ध है कि
दुनियां स्वप्नवत नहीं है -

(४३) ग़लती उसी वस्तु में मालूम होती है जबकि वह व
स्तु पहिले ठीक देख चुके हों स्वप्न में ऐसा होता है कि व
ह २ चीज़ें दिखाई देती हैं जिनको देखकर बहुत कुछ
आश्चर्य्य होता है - लेकिन ग़ौर करने की बात है कि स्वप्न
में वही चीज़ें दिखाई देती हैं जो जाग्रत हालत में देखी हुई
होती हैं - ख्वाह वह कभी की भी देखी हुई क्यों न हो -
देखी हुई अवश्य होती हैं - इससे सिद्ध है कि दुनियां स्वप्न
वत नहीं है -

(४४) जो जन्म का अंधा होगा उसको काले पीले हरे आदि रंग
की वस्तु स्वप्न में कभी दिखाई नहीं देंगे - जिस रीति से कानों
से सुनकर या हाथ से टटोल कर या और किसी तरह पर जिसको
वह जागते की हालत में देखता है वैसाही स्वप्न में भी उसको
मालूम होता है -

(४५) इन बातों से सिद्ध है कि दुनियां कोई चीज़ नहीं तो वह दि
खाई भी नहीं दे सकी इसके अलावह इसके बहुत अच्छे २ सुबू
त और दलीलें हमारे पास इसकी और मौजूद हैं - और अमरीका
देश के शहिर चिकागो में एक दफे इस विषय में जैनियों से बहुत
कुछ बहिस हुई थी उस बहिस के सब प्रश्नोत्तर हमारे पास मौजूद
हैं जो क्रम २ अपने मासिक पत्र में दूंगा इस मासिक पत्र के दोसौ
ग्राहक हो जाने पर जारी किया जायगा ग्राहक मंडली में शीघ्र २ नाम
और साफ़ २ पता लिखाओ ताकि २०० ग्राहक हो जाने पर शीघ्र ही
जारी कर दिया जावे - एक अंक नमूने का सब के पास मुफ़्त भेजा जायगा

फ़्लाती भर ग्राहक समझे जायंगे- नाम शीघ्र २ लिखाओ -

आवागमन के विषय में वादविवाद

ईसाई - हम ब्रह्मन से पूछते हैं । भाई तू बता कि तू विरह्मन क्यों बना और तेरे कौन से कर्मों का फल तुझ को मिला तू अपने पिछले जन्म की खबर दे सक्ता है वह कुछ जवाब नहीं दे सक्ता अगर आवागमन होता तो पिछली याद होती इसलिये आवागमन नहीं है -

उत्तर - यह प्रश्न आप का याद दाश्त के ऊपर है और याद रखना स्मरण शक्ति का काम है - यदि स्मरण शक्ति दुरुस्त बनी रहै तो पिछले जन्म की याद अच्छी तरह बनी रह सक्ती है - यह याद तो दूसरे जन्म की है की है पहिले इसी जन्म की याद - गर्भ की बचपन में बचपन की जवानी में जवानी की बुढापे में याद नहीं रहती है तो दूसरे जन्म की याद रखना तो मुश्किल काम है - और योग साधन करने पर केवल ज्ञान उत्पन्न होने के पीछे सब कुछ याद हो जाती हैं - हमारी तुम्हारी बात तो दूसरी है तुम्हारे खुदा को भी तो याद नहीं थी कि आदमीको मैं पैदा तो करता हूं लेकिन यह तो गुनहगार (पापी) होजावे गा यानी उसके गुनहगार होने पर बहुत कुछ पछताया - और खुदाने कहा कि मुझको नहीं मालूम था कि यह गुनहगार होजावे गा नहीं मैं कभी नहीं इसको पैदा करता - और दूसरे खुदावन्द ईसू मसीह को भी तो यूहदा इस करती को चेला करते समय नहीं याद थी कि यह मुझ को पकड़ा देगा तब मुझको फांसी (सलीब) होगी - अगर याद होती कभी भी उसको चेला नहीं करता - विदित होकि यूहदास्करूती एक पुरुष

नाम है जिसको यूसू मसीह ने चेला किया था और इसी चेले ने यूहू
दियों से मिलकर और तीस रु० रिशवत में लेकर यूसू मसीह को इस
तर्कीब से पकड़ाया कि यूहूदियों से यह कहा कि मैं तुमको एक प
हिचान अपने उस्ताद की बतलाता हूं नहीं तुम उसको पहिचान
नहीं पाओगे उन्होंने कहा बताओ - तब बोला कि जिसको मैं चूमूं
वहही मेरा उस्ताद ईसूमसीह है तब ऐसाही हुआ और मसीह
जब पकड़ गया तो उसपर लोगों ने थूका और मुंहपर थपेड़े मा
और कांटों का ताज उसपर रक्खा और पिटवाया और सलीब में
उसको जड़दिया उसके माथे और हाथ पैरों में कीलें ठोक दीं और
जब वह मर गया - तो तुम्हारे खुदा तक को भी तो नहीं याद था कि
हमको यह पकड़ा कर हमारी कुगति करायेगा तो हमको किसतरह
याद रह सकी है - और वाज़े २ याद भी रखते हैं जिनका हाल नीचे
लिखता हूं संवत् १९३३ विक्रमी में ग्राम कन्धा में मोहन लाल ठा
कुर बन्दूक से मारागया और उसी साल मौज़ा गरीबकापुरा में जो ग-
न्धा से ६ कोस की दूरी पर बस्ता है काशी राम के घर एक लड़का
पैदा हुआ जब वह तीन बर्ष का हुआ एक दिन बन्दूक की आवा
ज़ सुनकर रोने लगा और बहुत डरा जब उस बालक से पूछा तो
उसने उत्तर दिया कि मैं कन्धा ग्राम का रहिने वाला मोहन लाल
ठाकुर हूं मुझको हरबलबा ने बन्दूक से मार डाला था - जब
यह बात हाकिम तक पहुंची तब उसको इज़हार लिये गये उसी
तीन बर्ष के बालक ने हरबलबा को पहिचान लिया और जब
मास फरवरी सन् १८८१ ई० में मुकद्दमा गवालियर आया तो
वहां भी उस बालक ने वहभी इज़हार दिये और मोहन लाल ठा
कुर के भाई को देखकर कहा कि यह मेरा भाई है और कहा कि मैं
सब कुछ पहिचानता हूं (एक समाचार पत्र) द्वितीय याद

और न वर्ग यूरयी रूसका एक शहिर है जोकि यूराल परबत के निकट बसता है अनुमान से आज तक उन्नीस वर्ष ऊई होंगी कि इबराहीम चारकू एक धन वान यूहदी उस शहिर का वाशिंदा ज्वर से बऊत कुछ पीड़ित था ता॰ २२ सितम्बर सन् १८७४ की आधी रात को उसे एक महा भयानक बिचार उत्पन्न ऊआ उस आदमी को घोर कष्ट ऊआ - हकीम भी आये उन्होंने पागल पन बताया किसी ने भूत बताया आदि गन्डे तावीज़ और छूमंतर बऊत सारे ऊए कुछ न ऊआ कुछ समय के बाद देखते क्या हैं कि वह बीमार जोकि मौत के निकट हो रहा था अब अच्छी तरह से सास लेने लगा और उसने अपनी आंखें खोल दीं और आश्चर्य की निगाह से चारों ओर देखने लगा फिर वह आदमी जल्दी से सो गया - इसपर डाक्टर ने कहा कि इस समय उसका सो रहिना इस के लिये बऊत अच्छा है - प्राता काल तक वह इट कर खूब सोया उसके बच्चे और उसकी प्रय स्त्री उसके जगने की बाट देख रहे थे जगने पर उसकी प्राण प्यारी ने खुशी के कारण उसको गले लगा ना चाहा लेकिन उस पुरुष ने इशारों से उसे हटादिया - और एक ऐसी बोली में वहां के आदमियों से कुछ मांगा जिसको कोई भी कुछ न समझ सका जानना चाहिये कि इबराहीम चारलू श्याम वर्ण - लम्बा डील - लम्बी दाढ़ी स्याह आंखें लम्बी नाक रखता था और अपनी बीमारी के पहिले वह इबरानी बोलीके सिवाय कुछ थोड़ी सी रूसी बोली भी जानता था जोकि कम पढ़े ऊए यूहदी बोलते हैं - अब वह आदमी ऐसी बोली बोलने लगा - जिसको वहां कोई भीन समझता था - डक्टर जो कि उसकी चिकित्सा को आया था उसने भी उसकी बोली न समझी जब कभी उसके बालक और उसकी प्राण प्यारी उसके पास

आते तो वह बुरी तरह से उनको ढकेल देता था - डाक्टर ने यह राय दी कि ज्वर के अधिक होने के कारण यह पागल होगया है कुछ दिनों के बाद उसकी स्त्री ने अपने माता पिता को बुलवाया लेकिन उनके आने पर इब्राहीम ने उनको नहीं पहिचाना और न उनकी बोली समझ सका - और वह इसबात पर बहुत क्रोधित होता था कि मेरी बोली क्यों नहीं कोई समझता - एक सप्ताह के बाद वह बिछौने से उठा - और उसकी स्त्री ने उसको पहिनने को वह कपड़े दिये जोकि वह बीमारी से पहिले पहिना करता था रूसियों की आदत को देख कर वह बहुत हंसा वह बाहर दौड़ना चाहता था लेकिन लोग जल्दी से दरवाजा बन्द कर देते थे ताकि उसको सर्दी न लगजावे वह अपने कमरे में चलता लेकिन पग बहुत धीरे २ रखता और कुछ सोच २ कर देर २ के बाद पग उठाता था एक दर्पण के पास जाकर उसने अपनी शक्ल उसमें देखी और वहां ठहर गया और बड़ा हैरान हुआ - अपनी बड़ी नाक और लम्बी डाढ़ी को छूता था और एकाएक हंस पड़ता था और अचानक एक गहिरे सोच में पड़ जाता था लोग इस बात से बहुत कुछ आश्चर्य करते थे - उसकी स्त्री और माता पिता बहुत ही तअज्जुब करते थे और कहिते थे कि अब यह इब्राहीम चारकू नहीं है बल्कि एक गैर आदमी होगया है लेकिन इब्राहीम के माथे पर दो काली लकीरें थीं जिस डाक्टर ने दो मास तक उसकी चिकित्सा की वह इन लकीरों को देख कर आश्चर्य किया करता था - इब्राहीम चारकू खिड़की से झांक कर आसपास के लोगों को देख कर बड़ा ही आश्चर्य करता था एक दिन उसने बाहर भाग जाने की बहुत कोशिश की लेकिन न भागने पाया अब तो बहुत नामी

डाक्टर उसके लिये इकट्ठे हुए उन्हों ने कहाकि यह लिखकर हमको कुछ बताइगा उसको काग़ज़ और क़लम दवात दी उस ने लेटन ज़बान में बहुत साफ़ अक्षरों में लिखकर डाक्टरों ने देखा डाक्टर ने पढ़ा लेकिन समझ न पाया कि क्या लिखा और सब आदमियों ने बहुत कुछ आश्चर्य किया कि इसने लेटन ज़बान कहाँ से सीख ली और इसको लेटन हरुफ़ कहां से आगये यह तो लेटन पढ़ाही नहीं था और जब कुछ समय इसी तरह पर व्यतीत हुआतो शहिर सेंटपीटरसबर्ग - के मेडीकल यूनीवर्स्टी में इबराहीम चारकू को लाये ज्योंहीं वहाँ के प्रोफ़ेसर आरलू साहब ने इबराहीम चारकू की बोली को सुना फौरन जान लिया कि यह अंगरेज़ी भाषा बोलता है अब तो इबराहीम बहुत प्रसन्न हुआ कि इसने तो मेरी बोली समझ ली अबतो बड़ी देर तक प्रोफेसर साहब और इबराहीम में बातें हुई जब प्रोफेसर आरलू साहब ने पूछा कि तुम कौनहो तब उसने कहा कि मैं उत्तरी अमेरिका ब्रिटिश कोलमबिया के शहिर न्यूविस्ट मिनिस्टर का रहिने वाला हूं मेरी एक स्त्री है दो बालक हैं लेकिन खुदा जाने अमरीका से रूसमें मुझको कौन लाया मैं नहीं जानता कि किसतरह मेरा आना यहाँ हुआ - और मेरा नाम इबराहीम चारकू नहीं बल्कि इबराहीम दरहम है - और मैं यही चाहता हूं कि अमेरिका को अपने घर जाऊं - अब प्रोफ़ेसर साहब ने कहाकि तुम लोग धोखा देते हो यह बड़ा अकल मन्द इंगलिश मेन अमेरिका का रहिने वाला है तुम लोग इसको चुरालाये हो इस बात की तहक़ीक़ात होना चाहिये पुलिस के द्वारा पास पड़ोस वालों से और वहाँ के डाक्टर से खूब तहक़ीक़ात हुई सब ने कहाकि

हम इसको बालक पने से जानते हैं कि यह इब्राहीम चारकू ही है - तब डाक्टरों ने कहा कि इसकी आत्मा बदल गई है मगर कुछ दिनों के बाद सुबह को जो देखें तो चारपाई खाली इब्राहीम चारकू नहीं - बहुत कुछ उसका खोज लगाया जार रूस (रूस का राजा) को भी खबर हुई लेकिन फिर वह नहीं मिला लोगों ने यह समझा कि यह पागल धुन में दरिया में डूब मरा ऐंठ कर बैठ रहे -

सन् १८७५ ई० के बसंत ऋतु में सेन्ट पीटरस बर्ग (रूस का शहर) के प्रोफ़ेसर आरलू साहब एक अखबार पढ़ रहे थे उस अखबार में क्या देखते हैं - कि न्यू विस्ट मिनिस्टर में एक आश्चर्य्य आन्वित बात हुई है जिस खबर ने तमाम शहर में हलचल मचादी है ता० २२ सितम्बर सन् १८७४ ई० के दिन उस शहर का एक व्योपारी ज्वर से अति बीमार था और उसके जीने की उम्मेद नहीं थी तिसपर वह बचगया और भला चंगा हो गया लेकिन आश्चर्य्य की यह बात है कि बीमार जोकि एक ज़हीन अंगरेज़ था आपनी मादरी बोली भुला दी और ऐसी बोली बोलता था जिसको कोई भी न समझता था - आखिर को वहां के एक पुरुष ने कहाकि यह यूदियों की एक गवारी बोली है वह बीमार बीमारी से पहिले एक मज़बूत पुरुष था अब बहुत पतला और कुबड़ा होगया है - और कहिता है कि यह स्त्री और बालक मेरे नहीं हैं लेकिन इस बात की ज़िद करता है कि मेरी स्त्री और बालक किसी दूसरी जगह हैं उस पुरुष को पागल समझते हैं - फिर कुछ दिनों बाद एक मुसाफिर आया जिसका चिहरा ठीक इबरानियों कैसा था वही मुसाफिर कहिता है कि इस स्त्री का मैं खाविन्द हूं और उस स्त्री से वह उस बोली में बोलता है जिस

में उसका पति उससे बोला करता था लेकिन उस मर्द के माता-
पिता जोकि उसी शहिर में रहिते हैं इनकार करते हैं कि वह
हमारा लड़का नहीं लेकिन वह बार २ यही कहिता है कि मैं
इस स्त्री का पति हूं और इन्हीं मा बाप का पुत्र हूं - वह बेचारी
स्त्री एक बड़े, गम्भीर सोच में पड़ी है और कहिती है कि यह
किसतरह से कहिता है कि यह मेरी स्त्री है - जब वह पूंछती है
तो वह छुपी बातें जोकि सिवाय स्त्री पुरुष के कोई नहीं जान
ता कहिता है तब तो वह कहिती कि मेरा पति है लेकिन जब सू
रत देखती तो कहिती कि मेरा पति नहीं है और यहूदी चेहरे का
आदमी मेरापति कैसे होसक्ता है तब प्रोफेसर आरलू को उस
पिछली बात की याद आई और कहाकि इनकी आत्मायें बद
ल गई हैं - और बड़ा हैरान हुआ और इस बात को देखने के
लिये न्यू वेस्ट मिनिस्टर शहिर में गया तो वहां काला इबरा
हीम वहां पाया जिस को उसने छे मास पूर्व सेन्ट पीटरस बर्ग
में देखा था - उसने उस ब्योपारी से रूसी बोली में पूछा कि तू
कहां से आया है उसने उत्तर दिया कि मैं ओवन बर्ग से आया हूं
और जबकि उसने उसकी औरत का नाम पूछा उसने उस यहूदी
औरत का नाम लिया जिसने उसे अपना खाविंद कहा था -
जोकि उस समय सेन्ट पीटरस बर्ग में थी जब उसने उससे पूं
छा कि तेरा नाम क्या है - उसने उत्तर दिया कि यह लोग मेरा
नाम इबराहीम बरहम कहिते हैं लेकिन असली मेरानाम
इबराहीम चारकू है - प्रोफ़ेसर आरलू इस अजीब ख्याल
से हैरान होगया उसने सोचा कि शरीर तो नहीं बदला है क्योंकि
एक तो छोटा और मजबूत है और दूसरा पतला लम्बा और काले
रंग का है और फिर न्यू विस्ट मिनिस्टिर ओवन बर्ग से दो हज़ार

मील की दूरी पर है उसने कहा कि ज़रूर आवागमन हुआ है - और आत्मायें बदल गई हैं - यह याद रखना चाहिये कि २२ सितम्बर सन १८७४ को आधी रात के समय दोनों जिन्दगी और मौत के दर्मियान थे एक आदमी की आत्मा अवश्य दूसरे के शरीर में उड़कर दाखिल होगई - और इसी तरह एक पूरा आवागमन हुआ था और यह दोनों शहिर एक दूसरे के ठीक मुकाबिल हैं अगर एक मेख ज़मीन में ठोकी जाय तो वह ठीक वेस्ट मिनिस्टर में निकले गी - और दोनों शहिरों के दर्मियान ठीक ही १२ बजे का वक़्त है - और जबकि ओवन बर्ग में आधी रात के १२ बजते हैं तो न्यूबिस्ट मिनिस्टर में दोपहिर दिन के १२ बजते हैं और जब यहां आधी रात होती है तो वहां दोपहिर होता है -

इसी तरह के आस पास के ग्रामों में याद रखने वाले बहुत से बालक पैदा हुआ करते हैं इसकी बाबत आप बहुत कुछ जानते होंगे -

ईसाई - जानवरों में रूह (आत्मा) नहीं है सिर्फ जान है अगर रूह होती तो इन्सान (आदमी) हैवान (जानवर) में कुछ फ़र्क न होता -

उत्तर - यह तो खूब आपने सुनाई यह बचन आप का उन्मत्तों कैसा है जानबरों में रूह (आत्मा) नहीं है तो ऐसे २ आश्चर्य जनित काम बिना रूह के करते हैं शायद आप को इन की (जानबरों) चालाकियों से खबर नहीं लोमड़ी की चालाकियां बिल्ली की मक्कारियां - बगुले का ध्यान - तो सारे जहान में प्रसिद्ध है - शायद आपने सरकस कम्पनी का तमाशा नहीं देखा और न रीछ बन्दर नचाने वालों का तमाशा देखा - और न आ

पने बिलायती चूहों (मूसे) का तमाशा देखा है - चूहों की चालाकी आप को सुनाता हूं - तमाशा करने वाले ने चूहे से कहा कि अपना पानी भरलो - चौका बरतन करलो - घर झाड़ बुहार डालो - झट २ सब काम करने लगी फिर उसने कहाकि सास का पानी भरलो - झट चूतड़ फेर दिये और नहीं भरा - ऐसेही बहुत से जानवर हैं जो बडे चालाक होते हैं जिनकी चालाकी का कुछ थोड़ा सा हाल नीचे लिखता हूं -

बन्दरकी चालाकी ॥

१ - अमरीका देश के शहर न्यूयार्क में बन्दरों के पढ़ाने के भी चार स्कूल हैं उनमें दोसौ बन्दर शिक्षा पाते हैं जब स्कूलमें बन्दर दाखिल होता है पहिले उसका नाम रक्खा जाता है फिर उसको बन्दूक चलाना वगैरः अनेक काम सिखाये जातेहैं

अज़ जैन पत्रिका नम्बर १६ लाहौर छटी साल
२८ फरबरी सन १९०२ सफा २ कालिम २
सतर १ से ६ तक

२ - बन्दर की गवाही - मझगांव पुलिस कोर्ट में मजिस्ट्रेट बड़ी दुविधा में पड़े दो आदमी एक बन्दर पर मेरा २ कहि झगड़े हैं दोनों तरफ के गवाह पक्के हैं - मजिस्ट्रेट गड़बड़ी में पड़े. आगे बिचारा बन्दर तो बुद्धिमान जानवर है डारविन के मुताबिक़ बन्दर ज़ाद है - सो फर्य्यादी से कहा कि तुम बन्दर का कुछ बुद्धि का खेल दिखाओ वह न दिखा सका किन्तु आसामी ने अनेक खेल दिखा कर तथा बन्दरी सलाम में साहब को खुशकर समझा दिया कि बन्दर मेरा है तब साहब ने बन्दर आसामी को दिलाया फर्य्यादी एक पुलिस मेन है -

अज़ जैन मित्र मुम्बई साल ३ पूस सन् १९०८
अंक ४ कालम २ सफ़ा ३ सतर १४ से २८ तक -

३- एक साहब अपने सफ़र के हालत में लिखते हैं कि घूमते २ एक दिन हमारा जाना जंगल में हुआ अकेली जान कोई दूसरा साथी न था इत्तिफ़ाक़न् बन्दरों का एक झुंड आया - और एक जगह पंचायत लगाकर बैठे हम उनका तमाशा देखने के वास्ते उनसे ज़रा दूर ठहिर गये - जो जंगली फल फूल वह लाये थे उन सब को कूट कर उन्हों ने लड्डू बनाये और सब बन्दरों को चार चार बांटे इसके बाद उनमें से एक बड़े बन्दर की आज्ञा से एक बन्दर चार लड्डू हमारे पास लाया हमने लेलिये जब खाये तो ऐसे लज़ीज़ और मज़ेदार और स्वाद मालूम हुए कि शहिरों की उम्दा मिठाई भी ऐसी स्वाद नहीं होती-

४- इसी तरह एक जगह बन्दरों के मारने के लिये भुने चनों में विष लगाकर डाले गये मगर जो बन्दर आता था उसे सूंघ कर खड़ा हो जाता था खाता न था सब के बाद एक बड़ा बन्दर आया और उसने भी सूंघा और सूंघ कर सब को वापिस लेगया सब जंगल से घास तोड़ लाये और आते ही घास को चनों पर मलकर खागये विषने कुछ असर नहीं किया - तहक़ीक़ात करने पर मालूम हुआ वह घास विषको दूर करने वाली थी -

५- बन्दर और जंगली और पहाड़ी कौए अदालतें क़ायम करके अपने मुजरिमों को सज़ा दिया करते हैं लकलक और सारस और फ़िले मिंगोज़ (सुर्ख चिड़िया) भी अदालतें करती हैं - स्काट लेन्ड के टापुओं के कौए एक स्थान और समय अदालत के लिये नियत करते हैं औसी स्थान पर अदालत के दिन

जाते हैं और मुकद्दमें फ़ैसल करते हैं बाज़ी दफ़े एकही मुक़द्दमें की छान बीन में एक २ सप्ताह बीत जाता है जब अदालत बरख्वास्त होती है तो मुजरिम को वहीं मार डालते हैं लक़ लक़ - जिसतरह अक्सर स्त्रियां अपने आशिक़ से कहिती हैं कि मेरे पति का प्राण घात करो इसी प्रकार मादा लक़ २ भी अपने जवान चाहने वाले को पति के मारने पर आमादा करती है - बिना रूह के ऐसी चालाकियां हरगिज़ नहीं होसक्ती हैं

१ - कुत्तों के करतब - फ़रांस राज्य के पेरिस शहिर में कुत्तों की पुलिस बनाई जा रही है -

अज़ जैन पत्रिका नं० १६ साल ६
२९ फ़रवरी सन् १९०२ सफ़ा ३
कालम १ सतर ३ से ४ तक

२ - मंदरास शहिर में एक कुत्ते ने अपने मालिक के चार साल के बालक को जो तालाब में गिर पड़ा था डूबने से बचालिया -

अज़ जिया लाल प्रकाश उर्दू साल १६ नंबर ११
मास जनवरी सन् १९०२ सफ़ा ११ कालम १
सतर १७ से २० तक

३ - एक अंगरेज़ सैर को निकला कुत्ता साथ था जब वापिस आया तो कुत्ते को न पाया कपड़े उतारे तो जेब से कुछ कागज़ कमये वह अति आवश्यक थे उनकी तलाश की वह न मिले दूसरे वा तीसरे फिर उसी राह से निकला देखा कि कुत्ता मरा पड़ा है जब उसकी लाश उठाई तो कागज़ उसके नीचे पाये गये गोया मालिक के कागज़ों के लिये कुत्ते ने अपनी प्रिय जान देदी -

४ - अखबार रफ़ीक़ हिन्द लाहौर के सम्पादक सैयद

नादिर अली शाह अपने अखबार में लिखते हैं कि हमारे मुह्
ल्ले में एक बूचा नाम का कुत्ता था उसमें बडे गुण थे वह तमा
म मुहल्ले की रख वाली करता था - मुहल्ले के जानवरों को बा
हर नहीं जाने देता था और न बाहर के अन्दर आने देता था-
वह बडा रुआब दार जनरल था उसकी एक आवाज़ पर तमाम
कुत्ते इकट्ठे हो जाते थे और हर लडाई में चाहे कितनी ही तंगी
न क्यों न हो बगैर किसी पुरुष की सहायता के जीत आता था
उसने दिन में एक दफ़ै धोखा खाया - एक पुरुष गैर हाजि
र था उसका बैल एक चोर खोल कर लेगया और बूचा उस
चोर के पीछे होलिया और ज़िला स्याल कोट में उसका घर
देखकर चला आया - फिर बैल के मालिक को लेगया और
बैल के पास पहुंचा दिया - उसका बैल मिलगया और बू
चा हर लाश के साथ मरघट जाया करता था - बूचे की
एक आदत यह थी कि मैले कपडे पहिने हुओं पर बह
त हमला करता था और पुलिस के कानिशटवलों को ब
हुत तंग करता था और बडी सख्ती से उनपर हमला करता
था - इसकी वजह यह मालूम होती है कि बूचे ने इनको
चोरी करते हुए देखा होगा -

अज़ रहबर हिन्द उर्दू १४ अपरैल
सन् १८९२ ई०

कुत्ते मशाल लेकर चलते हैं दरिया में से गेंद उठा लाते हैं -
शिकार खेलते हैं - कवाइद करते हैं - चोरी होने से बचा
ते हैं और मालिक की जान की हिफाज़त करते हैं मालिक
को पहिचानते हैं - और उनके बाल बच्चों की रख वाली
करते हैं - रास्ता पहिचान ते हैं गमी शादी राजी कुराजी

गुस्सा आदि सब इशारों को जानता है - मालिक से प्यार करते हैं शोक २ ऐसे २ गुण और चालाकियां होते हुओं को बाज़े २ जैसे कि आप कहिते हैं कि यह वग़ैर आत्मा के हैं शोक २ तो मैं जानता हूं - बाज़े २ आदमियों में भी आत्मा नहीं होती है - तबतो आदमी को बाज़े २ खा जाते हैं और यही वजह है कि सैकड़ों जानबर बग़ैर रूह के समझ कर क़तल किये जाते हैं -

५ - अद्भुत सर्प - एक महाशय ने उक्त अद्भुत सर्प देखा यह कहिते हैं जब कोई आदमी उसे मारने जाता है तो सर्प टुकड़े होकर भाग जाते हैं - भय दूर होने पर वह सब टुकड़े अलग अलग सांप बनगये और सब जीते थे और वैसी ही शक्तिथी यह अद्भुत सर्प अजायब घर में रक्खा गया है -

अज़ जैन पत्रिका ६ साल नं० ६३ - १० अपरैल

सन् १९०२ सफ़ा ४ कालम १ सतर ९ से १८ तक

लाहौर स० बा ज्ञान चंद्र

ऐसे ही जिस जानबर पर दृष्ट दौड़ाओ - उसमें बड़ी चालाकियां दिखाई देती हैं - और मर्द से भी ज़ियादा बुद्धि रखते हैं बहुत से जानबरों को चालाकी का हाल मैं अपने मासिक पत्र में करूंगा जो अब हाल ही में जारी होने वाला है दोसौ ग्राहक रजिस्टर में नाम लिखा दें उनको नमूना भेजा जायगा स्वीकार और पसंद करने पर ग्राहक समझे जायंगे - और दोसौ से कम ग्राहक होंगे तब तक जारी नहीं किया जायगा इसलिये शीघ्र ही अपना २ नाम ग्राहकों की लिस्ट में लिखाओ - इस मासिक पत्र में कुल मत मतन्तरों की पुस्तकों की कलई खोली जावेगी जैसे ईसाई मुसल्मान - आरिया - बुद्ध - वैष्णव और धर्म समाजियों आदि की खूब कैफियत दिखाई जायगी शीघ्र

मी है - न दुर्गन्धी है - डेढ़ सप्ताह के अन्दर चाहे कैसी ही पुरानी दाद हो बिलकुल जड़ से जाती रहेगी और फिर कभी न होगी इस दवा को अवश्य आजमाओ - मगाओ ज़िन्दगी का लुत्फ़ उठाओ - मूल्य एक शीशी ३) रु० मुफ़्त लेने वाले को ।) टिकट डाक महिसूल के लिये भेजना चाहिये नहीं तो बैरंग में ॥) का बार उठाना पड़ेगा - बैरंग वापिस किसी भाई को न करना चाहिये नहीं तो यह बोझ हमपर पड़ेगा - दाद जाने पर ५) रु० ईमान के लेंगे

लोहे का तांबा बनाना

यह दवा बहुत उत्तम है चाहे किस लोहे की वस्तु पर ज़रा खटाई रगड़ो और फिर यह दवा मलदो तांबा मालूम होने लगेगा मूल्य फ़ी तोला =)

तांबे की चांदी करना

यह तर्कीब बहुत आसान है इस दवा का सफ़ूफ़ हमारे पास है (सफ़ूफ़ पिसी हुई दवा का नाम है) तांबे के बर्तन पर ज़र्के आदि पर ज़रा खटाई पानी में घिसकर रगड़ दो और फिर यह सफ़ूफ़ दवा का रगड़ो चुटकी से रगड़ा जाता है एक दममें सब का सब तांबे से चांदी बन जाता है - और कोई पहिचान नहीं सक्ता - इस दवा को अवश्य मगाओ - मूल्य फ़ी तोला ॥)

नक़द ५) रु० का ईनाम -

यह इनाम उन्हीं भाइयों को मिलेगा जो एक क़ायदा हमसे खरीदेंगे - इस क़ायदे में तारीख़ से दिन और दिन से तारीख़ मालूम करने की बहुत सुगम तर्कीब है और चाहे किस सन इसवी

(भूत भविष्य वर्तमान) तीनों कालों के सनों की तारीख एक दममें जबानी ही हिसाब जोड़ लो स्लेट पेंसल की भी ज़रूरत नहीं - यानी किसी ने यह मालूम करना चाहा कि १० जून सन् १९०२ ई० को कौनसा दिन होगा या १० जून सं- १९०१ में कौन दिन था या १० जून सन् १९० ३ को कौन दिन होगा कुछ यही तारीखें और महीने और सन् नहीं चाहें कि- स सन के चाहे किस महीने की चाहे कोई तारीख एक दमकी दम में हिसाब जोड़ लो - और मालूम करलो कि इसतारीख को यह दिन होगा - या इसदिन की यह तारीख होगी - इस कायदे का नाम अमूल्य कायदा है और मूल्य ।) है - सो ।) कायदे का मूल्य और ॢ) चन्दे का और ॢ) जिससे मनी आर्डर पांच रु० का किया जावेगा कुल ।ॢ) हमारे पास भेजदें - उनको कायदा तो छे आने के पहुंचते २ भेजा जायगा और रु० पर जिसके नाम की चिट्ठी निकले गी उसको भेजे जायंगे दोसौ चिट्ठी हमारे पास आजावे गी तब पांच रु० पर चिट्ठी डाली जावे गी - इससे शीघ्र २ चिट्ठी और ।ॢ) का मनी आर्डर या टिकट भेजो

चेतना

अक्सर सुनने में आया है - और हमारा ज़ाती अनुभव (तजरुबा) है कि डाक में जो टिकट भेजे जाते हैं सो मारे जाते हैं - इसलिये प्रथम तो लोगों को यह उचित है कि मनी आर्डर द्वारा दाम भेजे और मनी आर्डर न भेजा चाहें तो टिकट डाक खानेसे लाकर और एक लिफाफा लाकर चार या पांच दिन उसको अपने यहां रख छोड़ें तब चौथे या पांचवें दिन टिकट रख कर और लिफाफा अच्छी तरह से बन्द कर के भेजदें - और एक जवाबी कार्ड हमारे पास डालदो जिस के द्वारा आप को सूचित

करदें कि वसूल होगये - परंतु खर्च आप का टिकट भेजने में भी वह ही पड़ेगा और मनी आर्डर में भी वही पड़ेगा क्योंकि ᐟ॥ जवाबी कार्ड ᐟ॥ का लिफाफा ᐟ) कुल लगा और ᐟ) ही आना मनी आर्डर करने पर लगेगा पहिले ५) रु० पर दो आने लगते थे अब ५) रु० तक ᐟ) आना ही लगा करेगा मनी आर्डर करना बहुत अच्छा है सब तरह के पत्र व्यवहार नीचे लिखे पतेपर करो - पता - लालता प्रसाद एल·पी·जे·

स्थान कायम गंज ज़िला फ़रुखाबाद

पश्चिमोत्तर देश

मासिकपत्र

यह पत्र बहुत उत्तम होगा - इसमें हर मत की उधेड़ें और कलई खूब अच्छी तरह से दिखलाई जावे गी - और हर प्रकार की खबरें भी होंगी - व्योपार की बाबत भी इसमें अच्छी २ तर्कीबें बतलाई जावें गी - और रु० पैदा करने की सबीलें और तदबीरें लिखी जावें गी और दूर २ देशान्तरों की सैर करने के लिये वहां के हालात लिखे जावें गे और दुनियां के प्रसिद्ध मनुष्यों के जीवन चरित्र लिखे जाया करेंगे - कुछ दवाइयां भी छपा करेंगी - हिफ़्ज़ सेहत (आरोग्य रहने) के विषयमें अच्छी २ हिदायतें होंगी - कुछ नसीहतें भी हर पर्चे में छपा करेंगी - आवा गमन है ईश्वर कर्ता नहीं - मांस भक्षण ठीक नहीं - पानी छान कर पीना - रात्रि भोजन त्याग - आदि हर विषयपर अच्छी २ दलीलें और सबूत छपा करेंगे जैन धर्म सम्बन्धी और प्राचीन शास्त्रों का निचोड़ अकसर इसमें होगा - अलावह इसके चांदी सोने की पहिचान और तपाने आदि की तर्कीबें और चांदी के प

कार की होती है - सोना कितनी किस्म का होता है - आदि ऐसे ऐसे बहुत तर्कीबें इसमें छपा करें गी - मगर यह पत्र उस समय जारी होगा जब इसके २०० ग्राहक होजावेंगे - और मूल्य पेशगी पहिला अंक पाते ही भेज देंगे उन की सेवा में भेजा जायगा नहीं तो दूसरा अंक नहीं भेजा जायगा - मूल्य वगैरः का हाल पहिले अंक में देख लेना पहिला अंक नमूने का मुफ़ भेजा जायगा पसंदी पर ग्राहक समझे जावेंगे - इसलिये शीघ्र शीघ्र दोसौ ग्राहक अपना २ नाम लिखाओ - देरी न करो - लालता प्रसाद जैन कायमगंज (फ़र्रुखाबाद)

जादू

हर क़िस्म के जादू के खेल - जोकि बाज़ीगर किया करते हैं और लोगों को आश्चर्य में डालते हैं और माया के अजीब २ खेल हमारे पास तैयार मौजूद हैं जिस किसी को चाहिये नीचे लिखे मूल्य पर मंगाओ -

१ बिना दामों का गुलाम

यह जादू एक धागे में पिरोया गया है - उसको हुकम दो तो चलने लगे और हुकम दो ठहिर जावे - इसको देख कर बहुत हैरानी होती है मूल्य ।।) और कोई खेल बनाने की तर्कीब पूछेगा तो ३) तर्कीब बताने का पेशगी लेलेंगे तब बतायेंगे

२ जादू के तीन लट्टू

यह दुहरी मज़बूत सुतली में तीनों लट्टू पिरोये गये हैं - एक सिरा सुतली का एक शख्स को पकड़ा दो दूसरा सिरा दूसरे को - फिर इनको खूब उसी सुतली से जकड़ दो और जकड़ने के बाद दोनों सिरे सुतलियों के दोनों आदमियों को पकड़ा दो - और मय जादू की छड़ी मार दो तो तीनों

लट्टुओं के छेद कटेंगे और न सुतली की गाँठियां खुलेंगी न सुतली टूटेगी छड़ी मारते २ लट्टू नीचे गिर पड़ेंगे - मूल्य १।) रु०

तर्कीब बतलाने का १) रु० खेल अपने घर बना लेने की तर्कीब का ४) रु०

३ जादू की लकड़ी

इस लकड़ी में तीन सूराख हैं सब को दिखा कर एक शख्श से कहो कि इसके बीच के सूराख में सींक डालो वह डालेगा तो ऊपर के में पड़ जावेगी और नीचे के में डालेगा तो बीच के सूराख में सींक लोगों को मालूम होती है अजीब हैरानी का खेल यह भी है - मूल्य ॥)
खेल बनाने की तर्कीब पूछो तो पहिले एक रुपया भेजो तो पूछो

४ जादू का लोटा

यह कभी पानी से भरता ही नहीं और भर जावे तो सब पानी फैला दो और खाली दिखला दो तब भी भरा ही रहेगा - एक फूंक जादू की मारने पर आप से आप भर जावेगा - मूल्य ३) तर्कीब का एक चेहरा शाही -

५ जादू की किताब

इसमें रंग बिरंगे अक्षर निकलते हैं कभी दिखाओ तो सब की सब किताब कोरी ही होगी कुछ नहीं लिखा होगा फिर दिखाओ तो सब किताब में हिन्दी लिखी हुई होगी और फिर दिखाओ तो सब एक एक वर्क में उर्दू लिख जावेगी हिन्दी गायब हो जावेगी फिर हिन्दी उर्दू गायब होकर रंगरेजी आप से आप लिख जावेगी - और फिर दिखाओ तो कोरी की कोरी ही - मूल्य फी किताब ३) तर्कीब के भी ३) ही रु०

६ हुक्का का मुतना

एक बर्तन में पानी भरा है और उसकी तली में सूराख है - उसको हुक्का दो पानी उस नीचे के सूराख से गिरने लगेगा - और हुक्का दो फ़ौरन बन्द हो जावेगा और उस सूराख से को ई उंगली भी नहीं लगाई जाती है - इसको देखकर लोग बहुत हंसते हैं - मूल्य ॥) तर्कीब खेल बनाने की पूछो तो १)

७ जादू के चने

भुने चनों में पानी का छींटा देते ही किल्ले निकल आवें - यह बड़ आश्चर्य का खेल है मूल्य ।) फ़ी चना पांच चनों का १)

तर्कीब चने बनाने की १)

८ बांस की पोंगिया

दो पोंगिया हैं उनमें धागा पिरोया हुआ है इसका धागा खींचो तो इसका खिचता है और उसका खींचो तो इसका खिंचता है हैरत उत्पन्न करने वाला खेल है मूल्य १) बनानी तर्कीब ५) रु०

जादू की पीक ९

कान की राह पानी पिलाओ और इस पीक से चूनड़ी की राह पानी निकालो बड़ी हंसी का खेल है - मूल्य ॥) तर्कीब १) में

जादू के ताश का खेल १

चारों पत्तों के इक्के ही रह जावें और इक्कों के खाली वर्क़ हो जावें और फिर पत्तों के पत्ते ही रहे - इनमें कोई पर्द वगैर: नहीं होता और न अधिक पत्ते होते हैं चार ही पत्तों में काम होता है मूल्य ॥) तर्कीब बनाने की पूछो तो १)

सब खेल लें तो ५) में और तर्कीब के ५) एक खेल की तरह बढ़ी रहेगी -

४ मेमों के चारों बादशाह होजावें मूल्य ॥) तर्कीब ५) रु०

(३) पत्ता जिसको [illegible] की गावे रखली मन में उसको भूल कर पता नहीं होता है और न दो मने होते है

मूल्य ।) तर्कीब ।)

(४) दो मेम दो बादशाहों के खाली बर्ग होजावे और फिर नहीं के वहां मूल्य ।) तर्कीब ≈)

५ उड़ने पत्ते

दो आदमियों के रूमाल के नीचे दो पत्ते सब को दिखाकर रखदो - और उनसे कहिदो कि इनको खूब मजबूती से दबाये रहिना इसका पत्ता इसमें आजावेगा और उसका इसमें

मूल्य ।) तर्कीब ≈)

(६) एक बंडल मेंसे चाहे जहां से पत्ता खींचो उसको एक दम में बता देना - सिर्फ इसकी तर्कीब बताई जाती है ।)

इनके अलावह ताश के और जादू के बंडल से खेल हैं जो बाजीगर अकसर किया करते हैं वह सब मेरे पास हैं - गुंजायश न होने के कारण नहीं लिखे गये - ताश के यह छै खेल इकट्ठे लेने वाले को सब छैओ ≈) में देंगे अगर तर्कीब पूंछे गे तो ≈) में मगर एक लेंगे या एक की तर्कीब पूंछेंगे तो वही दाम लगेंगे सब तरह का पत्र व्यौहार खेल वगैरः का इसपते से करो - ललता प्रसाद एल·पी·जे·स्थान

कायमगंज जिला फर्रुखाबाद

पश्चिमोत्तरदेश समाप्त:

गुज़ारिश है

यह पुस्तक बहुत ही नायाब है - और अपने समय में बहुमोल है -
इसकी प्रचलित (जारी होने के लिये) में सब जैनी भाइयों को तन
मन, धन, से कोशिश करना चाहिये - १ ईश्वर
इस पुस्तक में भले प्रकार जता दिया है कि इस संसार को ने नहीं
बनाया - बल्कि अनादि है - २
और माया जालको भी अच्छी तरह दरशाया है - ३
मूल्य भी कुछ नहीं ७) ही रक्खा है इस पुस्तक की एक २ दलील ७)
की है - इस पवित्र पुस्तक से किसी जैनी भाई का भी घर खाली न
रहना चाहिये - ४
शीघ्र मंगाओ नहीं तो द्वितीय बार छपनेकी बाट
देखना पड़ेगी - थोड़ी साथ पुस्तकें निकल रही हैं
पीछे करके अफ़सोस मलना पड़ेगे - ५

प्रार्थी

ज्वाला प्रसाद तनुज परमेश्वरी लाल
बुरैले - जाती पोरवाला - जैन -
कायमगंज

जिला फ़र्रुखाबाद